TELUGU AUR HINDI LOKOKTIYAN

by K. V. V. L. NARASIMHARAO, Pp. vii+244

CENTRAL INSTITUTE OF INDIAN LANGUAGES

FOLKLORE SERIES–1

CIIL Folklore Series-1

तेलुगु और हिंदी लोकोक्तियाँ

लेखक :

कनुमूरि वीर वेंकट लक्ष्मी नरसिंहाराव

सत्यमेव जयते

भारतीय भाषा संस्थान

मानसगंगोत्री, मैसूरु-५७०००६

First Published : *October* 1975 / *Karttika* 1897

Price: Rs. 12/-

Published at the Central Institute of Indian Languages, Manasagangotri, Mysore-570006
by D. P. Pattanayak, Director, and Printed at M/s. Alli Printers, Bangalore-560046 by C. N. A. Gouthaman

Foreword

Study of Folklore is an excursion into forgotten times. Study of Proverb being a part of the mythic consciousness of a society is also part of the Folkloristic studies in general. Histories of cultures, whether studied as a synchronic continua in space or diachronic continua in time, compliment each other and yield similar insights. Insofar as all recollected experience is contemporaneous, past and present are co-existent. This continued contemporaneity is tradition and shapes not only the present but also the future.

Scanning the cultural horizon, one finds that certain experiences are perceived as though they existed without history. These persisting experiences express themselves in a language which is simple and intense at the same time. They become idioms and not generally affected by the surface structural changes in the language concerned. It is only when the changes in depth make the experience indefinable that new clothes are given to the experience by some anonymous genius. Thus it would be clear that proverbs are epigrammatic condensation of the experiences of many through the wit of one.

Structurally, proverbs though simple, use such stylistic devices as contrast, alliteration, rhyme and repetition. Content-wise, almost anything summing up everybody's experience in a familiar world enters into the proverb. Yet proverbs are neither cliches, conventional phrases, nor blazon populaire. They are in a sense invariable and yet admit of local variations.

Proverbs vary from one sub-culture to another and yet they also define a Culture Area. In India, for instance, one can build a single model of mythic consciousness in spite of the divergent languages and ethnic groups. The variant of the Paraśurāma story obtained in Tamil Nadu, wherein Paraśurāma killed his mother and the protective Pariah woman in one stroke and later brought back both of them to life by switching the heads, is a pointer to the cultural miscegenation that has taken place in the country.

Comparison of subcultures on the basis of proverbs for establishing regional universals is not an easy task. It is relatively easy to find individual proverbs which have apparent formal semantic echo in a proverb in another language. That is what most scholars do, including the author of this book when dealing with proverbs of two or more languages. However, no significant systemic conclusions can be drawn from such studies unless manifestations and abstractions are kept apart within each sub-culture and comparisons attempted at the abstraction level.

The present book, comparing Hindi and Telugu proverbs, provides a wealth of data and, though weak, attempts at generalisations at different levels. But it is far from presenting a theoretical model for structural comparison hinted above. Now that the data are made available, it is hoped that either the author or some scholar will work at building a model of systemic comparison of abstractions between sub-cultures and thus provide another basis for establishing India as one Culture Area.

(Debi Prasanna Pattanayak)

Director

विषय—सूची

१. लोकोक्तियों का महत्व, परंपरा एवं स्वरूप

१. १ लोक जीवन में लोकोक्तियों का महत्व

लोकजीवन में लोकोक्तियों का बड़ा महत्व है। प्रत्येक प्रदेश की जनता अपने सामान्य व्यवहार में लोकोक्तियों का प्रयोग करती है। दैनिक जीवन में इसके साथ ही मुहावरों तथा सूक्तियों का भी प्रयोग होता है। लोकोक्तियों के अध्ययन से जनता की चित्तवृत्तियों और जाति विशेष के गुण–अवगुण[1] तथा जन – जीवन का चित्र उपस्थित किया जा सकता है। साथ ही किसी भी देश की जन – संस्कृति का भी पता लगाना संभव हो जाता है। शताब्दियों से किसी जाति की विचारधारा किस ओर प्रवाहित हुई है, यदि इसका दिग्दर्शन करना हो तो उस जाति की लोकोक्तियों का अध्ययन आवश्यक है।[2]

लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा और शैली सुंदर तो बन जाती हैं, साथ ही लोक-जीवन में लोकोक्तियों का व्यावहारिक रूप से महत्व भी है। लोक मानस परंपरित उत्तराधिकरण का जन के अवचेतन स्थर पर मिलनेवाला संकलन ही है। इस लोक मानस की अपनी कुछ समस्याएँ होती हैं जिनका समाधन विशेष पद्धति से होना चाहिए। ये समस्याएँ लोक – जीवन के विविध अनुभवों से संबंधित हैं। इसके समाधान में मुख्यतः तीन आवश्यक तत्व हैं। तर्क की अपेक्षा पूर्वपरित दृष्टांत, विश्वास और आस्था। अतः लोक में उत्पन्न होने वाले विविध प्रश्नों को लोकोक्तियों के आधार पर उलझा जा सकता है। सामान्यतः यह देखा गया है कि गाँवों में जातीय पंचायतों के मिलनेवाले अवशिष्ट रूपों में कहावतों और लोकोक्तियों के द्वारा अनेक पेचीले प्रश्नों का निर्णय लिया जाता है। उपयुक्त लोकोक्ति या कहावत के मिलने पर तर्क या विवाद को समाप्त किया जा सकता है। जिस प्रकार आप्त वाक्यों को बिना किसी वाद और अपवाद के स्वीकार कर लिया जाता है, उसी प्रकार लोकोक्तियों की मान्यता भी है। इसी तथ्य को बाइबिल के कोश में स्वीकार किया गया है।[3] लोक मानस की परितृप्ति इसी प्रकार के सर्वमान्य विश्वासमूलक निर्णयों से होती है। व्यावहारिक क्षेत्र में इसीलिए लोकोक्तियों का इतना महत्वपूर्ण स्थान है।

व्यावहारिक दृष्टि से मानव जीवन में लोकोक्तियों के महत्व का एक और पक्ष है। वह है मानसिक संतोष। लोकोक्तियों के रूप में चले आने वाले ज्ञान से सामान्य जनता को एक अपूर्व आत्म विश्वास और सपन्नता प्राप्त हो जाती है। पुस्तकीय ज्ञान से रहित जन समूह लोकोक्तियों की मौखिक ज्ञान परंपरा के कारण हीनता की भावना से बच जाता है। इतना ही नहीं, शिक्षित वर्ग भी पुस्तक ज्ञान की लोक सम्मत संपुष्टि भी लोकोक्तियों से प्राप्त करता है। इन दोनों

---

1. लोक साहित्य विज्ञान, पृ. ४५६
2. कृष्णदेव उपाध्याय: लोक साहित्य की भूमिका, पृ. १३८.
3. "The Proverb is not the pleading of a lawyer in favour of a certain view and claim, but the decision of a judge on behalf of general citizenship"

—*Dictionary of The Bible*, pp. 767-768

प्रकर के ज्ञान से संयुक्त व्यक्तित्व ही ज्ञान की दृष्टि से पूर्णता के समीपतर पहुँचता है। संत व्यावहारिक लोक सम्मत ज्ञान के आधार पर पुस्तकीय ज्ञान के धनी को इस प्रकार ललकारते है :

"तू कहता है कागद की लेखी।
मै कहता हूँ आँखिन की देखी।
मेरा तोरा मनुवा कैसे एक होई रे।"

इस प्रकार लोकोक्ति और कहावतों में समष्टि ज्ञान की परंपरा की अपेक्षा राष्ट्र के आंतरिक जीवन का गहरा प्रभाव पड़ता है। जहाँ तक ज्ञान के मूल्य का प्रश्न है, पुस्तकीय ज्ञान तथा मौखिक ज्ञान––दोनों का अपना महत्व है। पर दोनों के मेल से राष्ट्र-मानस भिन्नता की दृष्टि से दूर होकर एकता का अनुभव करता है। लोकोक्तियों का यह एक राष्ट्रीय महत्व है।

डा. वासुदेव शरण अग्रवाल ने लोकोक्ति साहित्य को नीति-साहित्य का अंग माना है। उनका कथन है :––

"लोकोक्ति साहित्य संसार के नीति-साहित्य का प्रमुख अंग है। मिश्र आदि प्राचीन संस्कृतियों में भी इस प्रकार के बुद्धिमूलक साहित्य का अच्छा विकास हुआ है। विद्वानों का विचार है कि बैबिल में जो प्रोवेर्ब शीर्षक प्रकरण है, जिसमें व्यवहार साधक ज्ञान के अत्यंत प्रदीप्त और परिमार्जित सूत्र पाये जाते हैं, उस पर मिश्र, बाबिलोन आदि के बुद्धिमूलक नीति साहित्य का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है।"[4]

इस प्रकार जीवन निरपेक्ष ज्ञान ही नहीं, नैतिक धाराओं के बीज भी इस साहित्य में निहित है। इतना ही नहीं, युग-युग से चला आता हुआ जीवन-दर्शन भी लोकोक्तियों में पाया जा सकता है। नीति शास्त्र या दर्शन शास्त्र के उच्च सिद्धांतों और अध्ययन तक जिनकी पहुँच नहीं है, वे एक जीवित, परिमार्जित और व्यापक जीवनदर्शन और व्यवहार समीक्षा की एक संतुलित और विशुद्ध दृष्टि भी इसमें पा सकते है। इसी कारण लोक जीवन का अधिकांश नैतिक आधार लोकोक्तियों से निर्मित होता है। "मनोबैज्ञानिक दृष्टि से लोकोक्तियाँ वे कड़ियाँ भी हैं जो लोक-मानस के अवचेतन में अंर्तनिहित मूल या आदिम उपकरणों का उसके समाजोन्मुख चेतन से सामंजस्य कराती हैं। यही समन्वित रूप लोक व्यवहार की भूमिका तैयार करता है। संक्षेप में यह लोक जीवन में लोकोक्तियों या कहावतों का महत्व है।"[5]

उक्त विवेचन की संक्षिप्ति डा. सत्येन्द्र जी के मत से इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है। "लोकोक्तियों में हमें उपयोग की चार दृष्टियाँ मिलती है।"[6]

१. पोषण की –– यदि किसी ने कोई बात देखी या सुनी तो वह उसकी पुष्टि में कोई कहावत कहकर अपने निरीक्षण पर प्रमाण की छाप लगा देता है। वह इस प्रकार विशष की सामान्य से पुष्टि करता है।

२. शिक्षण की –– शिक्षा संबंधी कहावतें कोई शिक्षा देने की नौबत पर उपयोग की जाती हैं।

---

4. डा. वासुदेव शरण अग्रवाल: राजस्थानी लोकोक्ति संग्रह की मूमिका.
5. तेलुगु और हिन्दी लोकोक्तियाँ, पृ. २२.
6. ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ ५३९–५३१.

३. आलोचना की —— किसी बात पर हम आलोचना करना चाहते हैं तो उसके लिए ऐसी उपयुक्त उक्ति को छोड़ देते हैं जिससे वह हक्का-बक्का हो जाए जैसे——

"बंदर का जाने अदरक का स्वाद"

४. सूचना की —— ऐसी कहावतों में ऋतु, खत, व्यवसाय, व्यापार आदि की सूचना मिलती है। ये ज्ञानवर्द्धक कहावतें होती हैं। जो बातें यों ही याद नहीं रहती हैं, वे कहावतें बनकर याद रहती हैं। खेती संबंधी अनेक कहावतों में यही दृष्टि रहती है।

इसके अतिरिक्त लोकोक्तियों का वार्तालाप में भी पर्याप्त महत्व है। साग-सब्जी में जो नमक का स्थान है, वार्तालाप में लोकोक्तियों का भी वही स्थान है। जिस प्रकार स्वादिष्ट भोजन के अभाव में बड़े घराने का मूल्य ही नहीं रह जाता है, उसी प्रकार वार्तालाप में लोकोक्तियों के प्रयोग के अभाव में रोचकता का अंश नष्ट हो जाता है। इस तथ्य के आधार पर तेलुगु मे एक लोकोक्ति प्रसिद्ध है–"समेत लेनि माट, आमेत लेनि इल्लु" अर्थात् बिना लोकोक्ति के प्रयोग के वार्तालाप उसी घर के समान है जहाँ कभी स्वादिष्ट भोजन बनता ही नहीं। हिंदी साहित्य में भी विद्धानों ने लोकोक्ति की प्रधानता को स्वीकार किया है। श्री गोपाल प्रसाद व्यास ने लोकोक्ति के द्वारा कथन में तीव्रता आने की बात कही है——"कहावतों के गर्म में चमत्कार और इनके कथन में वक्रता होती है, इसीलिए बात जितनी जल्दी कहावतो द्वारा घर उतरती है, उतनी और किसी माध्यम से नहीं।"[7]

डा. शशिशेखर तिवारी ने भी लोकोक्तियों के महत्व के संबंध इस में प्रकार कहा है——"लोकोक्तियाँ परंपरा की संवाहिका और ऐतिहासिक चेतना की प्रतिध्वनि होती हैं। इसलिए उनमें किसी देश या जनपद के राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास की प्रचुर सामग्री संचित रहती है। लोकोक्ति–साहित्य भी इतिहास के मुख्य अंगों–मुद्रा अभिलेख और भग्नावशेष की भांति परम्परा के उद्‌घाटन में विशेष रूप से सहायक होता है।"[8] इस संबंध में डा. कृष्णदेव उपाध्याय का कथन भी देख लेना असंगत न होगा :——

डा. उपाध्याय का कथन है——"लोकोक्तियों के द्वारा किसी कथन में तीव्रता और प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। इससे भाषा में बल आ जाता है और श्रोताओं के हृदय पर अपना प्रभाव डालती है।[9] वार्तालाप में लोकोक्तियों का दो प्रकार से महत्व है——(१) भाषा की शक्ति में वृद्धि करना, (२) कथन में वक्रता और चमत्कार उत्पन्न करना। काव्यात्मक भाषा में जिस प्रकार अलंकार विधान भाषा की शक्ति वृद्धि करता है, उसी प्रकार लोकोक्तियों के द्वारा वार्तालाप में शक्ति और सुंदरता का समावेश हो जाता है। कभी-कभी वार्तालाप सामान्य रूप से अर्थ की अभिव्यक्ति वक्ता और श्रोता दोनों ही को संतुष्ट नहीं कर पाती है। उसमें एक वक्रता और चमत्कार की सृष्टि आवश्यक होती है। समान्य वार्तालाप में यह कार्य लोकोक्तियों के प्रयोग से बहुत कुछ संपन्न होता है। वक्रता के साथ ही अर्थ में स्पष्टता और व्यापकता भी आती है। भाषा का सौंदर्य दो प्रकार से होता है–१–बाह्य सौंदर्य और–२–आंतरिक सौंदर्य। बाह्य सौंदर्य में किसी कथन में शब्द-क्रम और विविध उपमानों के रूप में प्रयुक्त अप्रस्तुत सामग्री की कल्पना के द्वारा ये दो तत्व आ जाते हैं।

---

7. "कहावतों द्वारा मानव जीवन की अभिव्यक्ति"——व्रज भारती——वर्ष ३, अंक ४, पृ. ३.

8. भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन, पृ. ७४

9. लोक साहित्य की भूमिका, पृ. १३७.

कहने की आवश्यकता नहीं कि लोकोक्ति के द्वारा ये दोनों ही तत्व वार्तालाप को प्राप्त हो जाते हैं। भाषा के आंतरिक सौंदर्य में उसके अर्थ को पुष्ट आधार, अर्थ परिवर्तन शैली, बौद्धिक रूप से मान्य तर्क और कुछ भावात्मक मधुवेष्टन आते हैं। ये सभी तत्व लोकोक्तियों में विद्यमान होते हैं। अत: वार्तालाप की भाषा बाह्यांतर सौंदर्य से युक्त होने के लिए लोकोक्तियों से सहारा लेती है। इस संबंध में प्रो. इन्द्रपालसिंह इंद्र जी का कथन प्रासंगिक है––

"किसी भी भाषा की यथार्थ शक्ति का आभास उस में प्रयुक्त लोकोक्तियों एवं मुहावरों के प्रयोग से मिलता है। अर्थ सौंदर्य, भावाभिव्यंजना, अभीष्ट प्रभाव एवं वांछित अनुभूति की दृष्टि से पद्य में जो स्थान अलंकारों का है, गद्य में वही स्थान लोकोक्तियों एवं मुहावरों का है।"[10]

साथ ही भाषा का यह सौंदर्य-विधान कथन के उद्देश्य से भी संबंधित है क्योंकि कथन का उद्देश्य श्रोता के द्वारा अर्थ का अविकल और स्पष्ट ग्रहण होता है। लोकोक्तियों का जितना संबंध वक्ता से है, उतना ही संबंध श्रोता से भी है। इसलिए वक्ता के साथ श्रोता का साधारणीकरण लोकोक्ति के माध्यम से सरल हो जाता है और अर्थ ग्रहण इस प्रकार होता है कि हृदय का भी संयोग हो जाता है। यही वार्तालाप में लोकोक्तियों का महत्व है।

राष्ट्रीय और सामूहिक रूप में लोकोक्तियों का महत्व

वैयक्तिक ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय अथवा सामूहिक शैली का भी स्पष्ट रूप वहाँ की लोकोक्तियों के आधार पर देखा जा सकता है। यदि राष्ट्रीय शैली जैसी कोई वस्तु है या हो सकती है, तो उसका आधार लोकोक्तियाँ या कहावतें ही हो सकती हैं। क्योंकि इनकी पृष्ठभूमि में किसी देश के सांस्कृतिक तत्व भी समाविष्ट रहते हैं और उस देश की परंपरित विचारधाराओं का भी इनसे परिचय मिलता है।

१.२ लोकोक्ति का स्वरूप

लोकोक्ति की परिभाषा के संबंध में विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न विचार प्रकट किए हैं। अनेक भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वान और शोधकों ने अपने-अपने दृष्टिकोणों से लोकोक्ति की परिभाषा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। भारतीय विद्वानों में डा. वासुदेव शरण अग्रवाल,[11] डा. सुनीत कुमार चटर्जी[12], मौलाना हाली[13],

---

10. हिंदी गद्य में लोकोक्तियों तथा मुहावरों का प्रयोग : गद्य साहित्य का उद्भव और विकास.
11. लोकोक्तियाँ मानवीय ज्ञान के चोखे और चुभते हुए सूत्र हैं। वे मानवी ज्ञान के घनीभूत रत्न हैं जिन्हे बुद्धि और अनुभव की किरणों से फूटने वाली ज्योति प्राप्त होती है।

    ––'मधुकर' पत्रिका में संगृहीत डा. वासुदेव शरण अग्रवाल का "लोकोक्ति साहित्य का महत्व" शीर्षक लेख, मार्च १९४६.
12. लोक अपने लाभ और नुकसान, सुख और दुःख से भरे हुए जीवन में इन सूक्तियों का स्मरण करते हुए अपनी अवचेतना में मस्त हो जाते हैं––कहते हैं, हाँ, **ठीक ही** कहा है। कहावतों में भाव साम्य मिलने के कारण लोगों का दुःख_भार का लाघव होता है, सुख भी गाढ़ा हो जाता है। ––'राजस्थानी कहावतें' अवतारिका, पृ. १४.
13. मौलाना हाली ने लिखा है–– मुहावरा का इतलाक खास कर उन उफहाल (क्रियाओं) पर किया जाता है जो किसी इस्म (संज्ञा) के साथ मिलकर अपने हकीकी माने में नहीं बल्कि मजाजी मानों में इस्तेमाल होते हैं। जैसे उतारना इस के हकीकी मानों किसी को ऊपर से नीचे लगने का है। जैसे घोडे से सवार का उतारना . . . . . . । हाँ, नकशा उतारना, दिल से उतारना . . . . यह सब मुहावरे कहलाएगें। क्योंकि इन सब मिसालों में उतारने का इतत्ताक मजाजी मानों पर किया गया है।"

    ––मौलाना हाली कृत "मुकदमा शेर व शायरी" का अंश, हरिऔध के 'बोलचाल' से उद्धृत, पृ. १२६

डा. सत्येन्द्र[14], डा. कन्हैया लाल सहल[15], डा. कृष्णदेव उपाध्याय[16], श्री यशदत्त शर्मा[17], हिंदी विश्वकोश कार[18] और डा. शशिशेखर तिवारी[19] ने जो परिभाषाएँ दी हैं, अधिक महत्व पूर्ण और विषय को स्पष्ट करने वाली हैं। सभी विद्वानों ने लोकोक्ति के अनेक तत्व बतलाएँ हैं। इन परिभाषाओं का विश्लेषण करने से लोकोक्ति के ये सभी तत्व निकलते हैं--लघुता, हास्य व्यंग्यात्मकता, लोकानुभव, जन सामान्य की स्वकृति, परंपरित ज्ञान, सत्यता, आलंकारिकता, नीति, प्रभावोत्पादकता, चमत्कार, सूत्रात्मकता, जन जीवन के तथ्य एवं आलोचना, भविष्य की सूचना का होना, देश की समसामयिक विचारधारा आदि। लोकोक्तियों का मुख्योद्देश्य किसी विशिष्ट कथन की पुष्टि, शिक्षा एवं चेतावनी कहा गया है।

लोकोक्ति और कहावत की अन्य परिभाषाएँ कुछ कोश ग्रंथो में भी विद्यमान हैं जिनमें द आक्सफोर्ड डिक्शनरी आफ इंगलिश प्रोवेब्स्, द आक्सफोर्ड इंगलिश डिक्शनरी, इन्साइक्लापीडिया आफ रेलीजन एण्ड एथिक्स्, स्टैन्डर्ड डिकशनरी आफ फोकलोर, माइथोलाजी एण्ड लीजेंड, द रैप्यल प्रोवेब्स्, कलेक्शन आफ प्रोवब्स्, इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, इन्ट्रोडक्शन टु प्रोवेब्स् आफ जर्मनी, डिक्शनरी आफ क्लिचेज, द डिक्शनरी आफ इंगलिश प्रोवेब्स्, कैसेलस् इनसाइक्लोपीडिया आफ लिटरेचर आदि में दीं हुई परिभाषाएँ मुख्य हैं।

---

14. "लोकोक्तियाँ मानवीय ज्ञान के घनीभूत रत्न हैं जिन्हें बुद्धि और अनुभव की किरणों से फूटने वाली ज्योति प्राप्त होती है।" -- डा. सत्येन्द्र, ब्रज लोक साहित्य--पृ. ४८३.

15. अपनी कथन की पुष्टि में, किसी को शिक्षा या चेतावनी देने के उद्देश्य से किसी बात को किसी की आड़ में कहने के अभिप्राय से अथवा किसी को उपालंभ देने व किसी पर व्यंग्य करने आदि के लिए अपने में स्वतंत्र अर्थ रखनेवाली जिस लोक प्रचलित तथा सामान्यतः सारगर्भित एवं चटपटी उक्ति का लोग प्रयोग करते हैं, उसे लोकोक्ति अथवा कहावत का नाम दिया जा सकता है।

--कन्हैयालाल सहल, राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन, पृ. २.

16. "लोकोक्तियाँ चिरकालीन अनुभूत ज्ञान के सूत्र हैं".

17. "लोकोक्ति अथवा कहावत को हम पारिभाषिक रूप से ऐसा मुहावरेदार वाक्य समझते हैं जिसे व्यक्ति अपने कथन की पुष्टि में प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत करते हैं। किसी अपालंभ, व्यंग्य अथवा चेतावनी के लिए भी लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। लोकोक्ति वास्तव में वह तीखी उक्ति है जो श्रोता के हृदय पर सीधा प्रभाव डालती है।"

--प्रवंध सागर, यज्ञदत्त शर्मा.

18. "काव्य में वह अलंकार जिसमें किसी लोकोक्ति का प्रयोग करके कुछ रोचकता या चमत्कार लाया जाय।"

--हिंदी विश्व कोश ((विंशति भाग)

19. लोकोक्तियाँ परम्परा की संवाहिका और ऐतिहासिक चेतना की प्रतिध्वनि होती है। इसलिए उनमें किसी देश या जनपद के राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास की प्रचुर सामग्री संचित रहती है। लोकोक्ति साहित्य की इतिहास के मुख्य अंगों--मुद्रा, अभिलेख और भग्नावशेष की भांति परम्परा के अद्धाटन में विशेष रूप से सहायक होता है।

--भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन, पृ. ७४.

द आक्सफोर्ड डिक्शनरी आफ इंगलिश प्रोवेर्ब्स् में युग–युग के परंपरित धनीभूत कथन–बद्ध ज्ञान को ही लोकोक्ति माना गया है।[20] आक्सफोर्ड इंगलिश डिक्शनरी में दी हुई परिभाषा में अनुभूति सिद्ध ज्ञान की अभिव्यक्ति वाले तत्व पर जोर दिया गया है।[21]

इनसाइक्लोपीडिया आफ रेलीजन एण्ड एथिक्स की परिभाषा के अनुसार लोकोक्ति लोक प्रसूत या लोक मान्य सत्य है।[22] इसी ग्रंथ में जे. आयसेलेन की परिभाषा के अनुसार सर्वसामान्य स्वीकृत तथ्य तत्प्रचलित सत्य वाले तत्वों को लोकोक्ति के लिए प्रधान माना गया है।[23] स्टैंडर्ड डिक्शनरी आफ फोकलोर, माइथोलाजी एण्ड लीजेंड में प्रस्तुत परिभाषा इस प्रकार है :—

> A Proverb is a terse didactic statement that is current in tradition . . . . or as an Epigram says " the wisdom of many and the wit of one. It ordinarily suggests a course of action or passes judgement on a situation.[24]

इस परिभाषा में लोकोक्ति के संबंध में परम्परा के प्रचलित होने तथा सर्वजन स्वीकृत होनेवाले तत्वों पर जोर दिया गया है।लोकोक्ति साहित्य के क्षेत्र में डा. सेलविन शैम्पियन कृत रेशियल प्रोवेर्ब्स् का अत्यंत महत्व है। इस ग्रंथ की भूमिका में लोकोक्ति की अनेक परिभाषाएँ दी गई हैं जिनके रचयिता भिन्न हैं। किसी ने लघुता[25] पर बल दिया है तो किसी ने समय का प्रतिनिधित्व करने वाले निरंतर प्रभावशाली होने वाले तत्वों पर जोर दिया है[26]। श्री मोल ने लोकोक्ति को जीवन का मार्गदर्शक कहा है।[27] सेरवैन्टूस् के अनुसार लोकोक्तियाँ अनुभवजन्य ज्ञान से अद्भूत लघु वाक्य है[28]। डा. शैम्पियन ने स्वयं लोकोक्ति की परिभाषा के संबंध में अपना मत प्रकट किया है।

---

20. Proverbs are the concentrated wisdom of the ages, the dark sayings of wisemen, p. XVII, Introduction.

21. A concise sentence which held to express some truth ascertained by experience or bserva-tion and familar to all.

22. To attain the rank of a Proverb, a saying must either spring from the masses or accepted by the people as true. In profound sense, it must be Vox Populi.
Encyclopaedia of Religion and Ethics, Vol. X, p. 412 (1952)

23. A Proverb is a sentence coined with public stamp, current and acknowledged value among the people. —*Ibid.*, Vol. X, p. 412 (1952)

24. Standard Dictionary of Folklore, Mythology and Legend, Vol. II, p. 902 (1950).

25. " A Proverb is much matter decocted into few words " —*Thomas Fuller.*

26. Jewels five words long, that on the stretched forefinger of time, sparkle for ever ".

27. The guiding oracles which man has found out for himself in that great business of hours of learning how to be, to do, to do without, and to depart " —*Racial Proverbs*, p. 4.

28. Proverbs are short sentences drawn from long experience. —*Racial Proverbs* p. 6.

इन्होंने सामान्य प्रयोग में प्रचलित जनता को सलाह देनेवाले और आंलकारिक वाक्य को लोकोक्ति माना है। स्टैंडर्ड डिक्शनरी आफ फोकलोर, माइथोलाजी एण्ड लीजेंड में एक यह भी परिभाषा दी गई है कि कुछ लोकोक्तियाँ परिचित कथाओं के लघु रूप ही हैं।[29]

बाइबिल में लोकोक्तियों को विज्ञों के कथनों की व्याख्या कहा गया है।[30] प्राय: विज्ञों से तात्पर्य उन्ही तत्व-साधकों से है जो सांसारिक अनुभवों को ग्रहण करके उनमें व्याप्त सत्य को जान कर व्यक्त करते हैं। लोकोक्ति उनकी व्याख्या इसलिए है कि किसी लोकतत्व, दृष्टान्त आदि से संयुक्त होकर ही वह जन प्रचलित होती है। अरस्तू ने पुरातन ज्ञान की बात कही है। लोकोक्तियाँ उस पुरातन ज्ञान के अवशिष्टांश हैं जो अपने अर्थ की सूत्रात्मक विशदता और प्रयोग की उपयुक्तता के कारण प्रचलित रहती हैं।[31]

इस संबंध में वर्तमान काल के प्रसिद्ध वैज्ञानिक एवं दार्शनिक बर्ट्रेंड रसेल की परिभाषा को देखना आवश्यक है। इनके अनुसार लोकोक्ति सामूहिक ज्ञान और प्रयोग की व्यक्तिगत व्यंग्य-वृत्ति का सम्मिश्रण है। होवेल ने लोकोक्ति की बड़ी सुन्दर व्याख्या की है। उनके मतानुसार लोकोक्ति जन वाणी है, इसकी संरचना पहले हुई है और अपने ज्ञान के गुरुत्व और सत्य के कारण सामयिक रूप से प्रयोग में आ गयी[32]। डा. सेलविन चाँम्पिन ने दो नवीन तत्वों की ओर अपनी परिभाषा में संकेत किया है—पहला तत्व जातीयता और दूसरा तत्व रूपक आदि अलंकारों का[33]। लेकिन जातीयता लोकोक्ति के सत्य से उतनी संबंधित नहीं जितनी उसके घटन और शृंगार से। सत्य तो सामान्यत: मानवीय सत्य ही होता है। उसको किसी जाति विशेष का एकाधिकार नहीं कहा जा सकता।

उक्त सभी परिभाषाओं को ध्यान में रखते हुए हम लोकोक्ति का तत्व निरूपण इस प्रकार कर सकेंगे—लोकोक्ति शब्द का विश्लेषण करने से दो शब्द निकलते है-'लोक' और 'उक्ति'। 'लोक' शब्द परंपरा बोधक है और 'उक्ति' अभिव्यक्ति शैली का बोधक। लोक से संबंधित प्रत्येक वस्तु की एक सुदीर्घ परम्परा है। इसी कारण जन जीवन या लोक जीवन के विकास क्रम के अध्ययन में लोकवार्ता और लोक साहित्य का उपयोग वैज्ञानिक माना जाता है। लोक मानस की प्रमुख विशेषता परंपरित और ज्ञान भाव राशि में उसका विकास है। साथ ही अव्यक्त रूप से लोक मानस में उस परंपरा को अक्षुण्ण रखने का प्रयत्न भी चलता रहता है। परंपरित ज्ञान और विश्वास की दीर्घ परंपरा को अविछिन्न रखने में जहाँ उस ज्ञान की व्याप्ति, गंभीरता और सार्थकता का हाथ रहता है, वहाँ शैली का भी विशेष योग रहता है। शैली की भव्यता लोक रुचि को आकर्षित करती है। उसी शैली के माध्यम से परंपरायुक्त ज्ञान नवीन पीढ़ी म स्थान पाता रहता है। शैली के निर्माण में भी लोकतत्व का हाथ है। लोक परंपरा की रक्षा करने वाली शैली के लिए

---

29. Racial Proverbs, Introduction, p. XV.
30. Some Proverbs are condensation of familiar tales, especially Aesopic Tales, Vol. 2, p. 902.
31. A Proverb is the interpretation of the words of the wise—*The Bible.*
32. A Proverb is the remnant of the ancient philosophy preserved amidst very many destructions on account of its brevity and fitness for use (Aristotle).
33. The People's Voice, the voice of God we call. And what are the Proverbs but the peoples' voice; Coined first and current made by common choice. Then sure they must have weigh and truth with all, *Racial Proverbs*, p. 4.

'सूत्रता' और प्रभावोत्पादकता' अत्यंत आवश्यक अंग हैं। 'सूत्रता' में संक्षिप्ति का भाव निहित है। लेकिन हम संक्षिप्ति में एक व्यापक पृष्ठभूमि का प्रतिनिधि होना चाहिए। सूत्र के पाठन से पूरी पृष्ठभूमि का चित्र पाठक का श्रोता के सामने आ जाना अत्यंत आवश्यक है। इसी सूत्र में कथन की अद्भुतता और अनूठापन होना चाहिए। ये तत्व सूत्र को सजीव करते है। लोकोक्तियाँ इसी सूत्र शैली में बंधी रहती हैं। सूत्र निर्माण के इन तत्वों के सम्यक् संयोजन से प्रभावोत्पादकता शब्दों की ही नहीं होती। शब्द शक्ति की पहुंच से परे जो प्रभाव है, वह लोकोक्ति में व्याप्त रहता है। लोकोक्ति का संबंध किसी व्यक्ति विशेष से न होकर किसी जाति, समाज या राष्ट्र से होता है। इस प्रकार लोकोक्ति किसी व्यक्ति विशेष के अंतर्मन के चिंतन का संबंध लोक की चिंतन धारा से जोड़ देती है। इस स्थिति में जन का चिंतन लोक चिंतन से संबद्ध होकर अत्यंत व्यापक हो जाता है। इसी कारण लोकोक्ति का प्रयोग करने वाला व्यक्ति और श्रोता—दोनों ही उसके धरातल पर आकर एक सजीवता और सुसंपन्नता का अनुभव करते अर्थात् दोनों का साधरणीकरण हो जाता है। यही लोकोक्ति की प्रभावोत्पादकता है।

सूत्र शैली के संबंध में एक बात ध्यान देने की है। जब किसी उक्ति-सूत्र का संबंध पृष्ठभूमि से इतना विच्छिन्न हो जाता है कि पृष्ठभूमि विस्तृत हो जाती है और उसके निचोड़ के रूप में सूत्र ही जीवित रह जाता है, तब वह लोकोक्ति नहीं कही जा सकती, पर वह मुहावरे के रूप में रहता है। जब सूत्र के कथन से पृष्ठभूमि स्पष्ट हो जाय तब वहाँ लोकोक्ति हैं। का यथार्थ रूप प्रस्तुत होता है।

लोकोक्ति कलात्मक तत्वों के साथ अनुप्राणित होती है जिसके कारण उसमें प्रभावोत्पादकता रहती है। यही लोकोकि-कला का आधार बनती है। लोकोक्ति सूत्र किसी छंद में भी व्यक्त हो सकता है। छंद बद्ध सूत्र कला-क्षेत्र के अधिक निकट आ जाता है।

उक्त विवेचन के आधार पर लोकोक्ति या कहावत की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है:

"लोकोक्ति या कहावत एक ऐसा सजीव सूत्र है जो मानवमात्र के परम्परित अनुभूत ज्ञान की पुष्टता, लोकसिद्धता, प्रभावोत्पादकता, कलात्मकता तथा पृष्टभूमि की विचित्रता आदि तत्वों से संपन्न हो।"

१.३ लोकोक्ति की उत्पत्ति और परंपरा

१.३.१. लोकोक्ति की उत्पत्ति

जिस प्रकार लोक साहित्य के अन्य प्रकारों की उत्पत्ति अस्पष्ट है उसी प्रकार लोकोक्ति-साहित्य की उत्पत्ति भी अस्पष्ट है। कुछ विद्वानों के विचार मै लोकोक्तियाँ सामूहिक रूप से स्फुरित हुईं। कुछ अन्य विद्वानों के विचार से इनके रचयिता जरूर होंगे मगर वे अज्ञात हैं। इस संबंध में कुछ महत्वपूर्ण मतो का सर्वेक्षण करना समीचीन होगा। इनसाइक्लोपीडिया आफ रेलीजन एण्ड एथिक्स् में लोकोक्तियों के अज्ञात रचयिताओं का उल्लेख है—

> The Author of a genuine Proverb is unknown . . . . . It is originated with the people and has gained circulation and authority throughuniversal acceptance

---

34. A Proverb is a racial aphorism which has been or still is in common use conveying advice or council invariably common flagged figuratively disguised in metaphor or allegory, —*Racial Proverbs, Introduction*, p. XV,

of its truth. The genuine popular Proverbs take us back to the infancy of races and civilizations. In their origins they belong to the age which gave birth to the folk-song and the ballad[35].

इनकी प्राचीनता के संबंध में कुछ विद्वानों का मत है कि ये मानव जातियों और सभ्यताओं के शैशव काल से उत्पन्न हुई हैं। हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास इस बात का प्रमाण देता है[36]।

न्यू यूनीवर्सल इनसायक्लोपीडिया में लोकोक्तियों के निर्माता को निश्चित करना असंभव माना है। पर किसी ज्ञानी संत से आरंभ में उनका उद्भव माना गया है। वस्तुतः वे सामूहिक चेतना से संबद्ध हैं। कालक्रम में उनको मान्यता और प्रयोग क्षेत्र का विस्तार प्राप्त हुआ है[37]। श्री रतनलाल मेहता के मतानुसार आदि कवि के पूर्व या कम से कम इनके समय में भी लोकोक्तियों का प्रचलन था[38]। फ्रेजर के मतानुसार इनका आविर्भाव उस समय हुआ होगा जब कुछ कारणों से वक्ता को स्पष्ट बात कहने में किसी बात की कुछ अड़चन या असुविधा पड़ी होगी[39]। लोकोक्ति की प्राचीनता किसी ने वेद, उपनिषदों से मानी है[40] तो किसी ने लेखन कला के आविष्कार से[41] और किसी ने सृष्टि के विकास के साथ[42]। दी आक्सफ़र्ड डिक्शनरी आफ इंग्लिश प्रोवेब्स् में लोकोक्तियों के दो उत्पत्ति श्रोत माने गये हैं। पहला स्रोत सामान्य जन है जिसके परिपक्व और स्पष्ट अनुभव ने कहावतों का रूप धारण किया। दूसरा स्रोत उन विद्वानों के आप्त कथनों में है जिनके मनन और चिंतन के निष्कर्ष रूप में कुछ उक्तियाँ उद्भूत हुईं और वही लोक जीवन में प्रचलित हो गईं। इस प्रकार विद्वानों के गंभीर मनन और चिंतन से रिक्त लोक-मानस को जीवन के मौलिक सत्य प्राप्त हुए और वे नियमवत् पालन किए गए[43]।

डा. कन्हैयालाल सहल ने लोकोक्तियों के उद्भव के तीन स्रोत माने हैं-१-लोक कथाएँ, २-ऐतिहासिक घटनाएँ तथा, ३-प्रज्ञा ज्ञान[44]। लोक कथाओं के अंत में निष्कर्ष रूप में प्रयुक्त वाक्य कथा से विच्छिन्न होकर लोक में संपूर्ण अर्थ को लेकर व्यवहृत होने लगते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ लोकोक्तियों का संबंध निश्चित रूप से एतिहासिक घटनाओं से होगा। कवि या मनीषियों द्वारा प्रयुक्त कुछ कथन भी लोकोक्ति के रुप में जन-जीवन के अंग बन जाते

---

35. *Encyclopaedia of Religion and Ethics*, Vol. X, p. 412, under 'Proverb'.
36. हिंदी साहित्य का बृहत इतिहास, १६ वां भाग, प्रथम संस्करण, पृ. १३३
37. It is impossible to name the author of any Proverb. Some obscure sage must have formulated each one of them in words, but they seem rather to have emanated from the common consciousness and crystallised into phrases., *New Universal Encyclopaedia* Vol. 8. p. 6735.
38. रतनलाल मेहता, मालवी कहावतें-भाग १, पृ. ९.
39. Golden Bough, Vol. 9, P. 121–122.
40. डा. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, पृ. १३७.
41. मालवी कहावतें-भाग १, पृ. १.
42. डा. सत्यव्रत सिन्हा, भोजपुरी लोकगाथा, पृ ३.
43. The Oxford Dictionary of English Proverbs (From Introduction by Janet E. Haseltine.)
44. डा. कन्हैयालाल सहल, राजस्थानी कहावतें: एक अध्ययन, पृ. ३९.

]

हैं[45]। डा. वासुदेवशरण अग्रवाल ने लोकोक्तियों का कोई कर्ता नहीं माना तथा अन्य साधारण साहित्य की अपेक्षा देश काल से भी उनको कम संबद्ध माना है[46]।

ऊपर के मतों के विश्लेषण से तीन बातें स्पष्ट होती हैं :—१. लोकोक्ति यदि व्यक्तिगत रचना है तो इसके रचयिता का पता नहीं चलता, २. इसकी रचना सामूहिक रूप से भी हुई है तथा, ३. इसके बल और प्रचलन का स्रोत लोक की सामूहिक चेतना में है। लेखक के अज्ञात होने का कारण यह है कि मौखिक परंपरा में जीवित साहित्य अपने आंतरिक मूल्यों के कारण जीवित रहता है, रचयिता के मूल्य के कारण नहीं। लेखक को जो महत्व और अमरत्व प्राप्त होता है, वह लिखित साहित्य के अस्तित्व में आने के पश्चात ही। हाकेट के अनुसार लेखन कला का त्रिविध प्रभाव साहित्य पर पड़ता है, शैली विधान सुस्थिर होता है, उसके जीवित रहने की संभावना बढ़ जाता है और लेखक का महत्व पूर्ण हो जाता है[47]। इतना निश्चित है कि लोकोक्ति चाहे लिखित साहित्य से ग्रहण की गयी हो अथवा मैखिक परंपरा से, उसका लेखक महत्वपूर्ण नहीं रहता क्योंकि लोकोक्ति मनुष्य के दैनिक जीवन में प्रयुक्त मौखिक संविधान स्वरूप है। इसी कारण लोकोक्ति के रचयिता का ज्ञान समाप्त हो जाता है और लोकोक्ति अपनी आंतरिक महत्व से परंपराभूत हो जाती है। जहाँ तक सामूहिक रचना का प्रश्न है, बहुत से विद्वानों ने लोक-साहित्य के विधाताओं की व्यक्तिगत रचना नहीं मानकर श्रम और दैनिक व्यवहार में स्वयमेव उद्भूत और प्रयुक्त माना है। मैक्समूलर ने संगीत की उत्पत्ति के संबंध में भी इसी प्रकार की बात कही है। लोक की सामूहिक चेतना और उपचेतना का अस्तित्व मनो-विज्ञान सिद्ध है। अनेक लोकवार्ताविद समस्त मानव जाति की लोक स्वाभाविक मूल मानसिक प्रक्रिया का अनुसंधान भी कर चुके हैं तथा विभिन्न देशों और जातियों के लोक साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन ने लोक-मानस की प्रक्रिया की मौलिक एकता भी सिद्ध कर दी है। पर जहाँ तक इस लोक मानस की ज्ञान-लहरी के उक्ति-बद्ध होने का प्रश्न है, ऐसा लगता है कि कभी न कभी किसी एक व्यक्ति के मुख से ही वह निकली होगी। पर वह काल की गति के साथ व्यक्तिगत संपत्ति न रहकर लोक की संपत्ति बन जाती है। इसके फलस्वरूप लोकानुभूत ज्ञानांश को शब्द देनेवाला व्यक्ति भी लोक से पृथक न होकर उसी में लीन हो जाता है, चाहे संदर्भ ऐतिहासिक घटना का हो, चाहे अन्य प्रकार का। इसके संबंध में लोकानुभव प्रायः एक सा ही होगा। जन के अंतर्मन में व्याप्त उसका कथन किसी व्यक्ति के लोकबद्ध व्यक्तित्व का अंश ही होगा और उस पर सब का समानाधिकार भी होगा। लोकोक्तियाँ उत्पन्न होने के पश्चात् अपने चमत्कारपूर्ण अंश से जन को आकर्षित करती हैं। फिर उसमें जनता अपने ही जीवन की अनुभूति से सिद्ध सत्य को अपनी आत्मा में प्रकट पाकर आह्लाद से भर उठती है। अपनी व्यक्तिगत सीमाओं को कुछ देर केलिए भुलाकर उस सत्य उक्ति को हृदयंगम करता है। लोकोक्ति इस प्रकार उसके जीवन की एक अमूल्य निधि बन जाती है जिसका प्रयोग विशेष अवसरों पर किया जाता है। इस प्रकार यह लोकोक्ति वह सूत्र बन जाती है जो व्यक्तिगत चिंतन को लोक चिंतन से जोड़ देता है और व्यक्तिगत अनुभव लोकानुभव बनकर चिंतन को सजीव कर देता है। इस प्रकार लोकोक्ति का बल भी बढ़ जाता है और प्रचार क्षेत्र भी।

---

45. तेलुगु के नीति वांङ्मय में वेमन्ना शतकमु, सुमती शतकमु आदि इसी तरह के साहित्य के अंतर्गत आते हैं।

46. राजस्थानी लोकोक्ति संग्रह की भूमिका.

47. "The development of writing in relatively recent times (the last few thousand years; and only in certain parts of the world) has brought about certain transformations. We shall take these up under three headings the impact of writing style, the survival factor, and emphasis on authorship", —*A Course in Modern Linguistics*, p. 559.

हनिष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि लोकोक्ति की उत्पत्ति में जनमानस और मुनिमानस दोनों का सहयोग रहा है। कभी मुनिमानस प्रभावशाली उक्ति के माध्यम से जनमानस में प्रविष्ट हुआ और लोक तत्वों में घुलमिल गया। कभी लोकमानस ने ही चिंतन की अपेक्षा अनुभव के आधार पर एक सत्य कहा और उसे चिंतन जन्य ज्ञान की सी मान्यता, सार्वभौमिकता और शक्ति प्राप्त हो गई। इस प्रकार सूत्र बद्ध ज्ञानांश जन की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहे अथवा, अन्य शब्दों में वे भिन्न रुचि और मतों से मुक्त समाज में व्यक्ति विशेष के कथन को जनमत से पुष्ट करके मान्य बनाने के लिए लोकोक्तियों की छाप की आवश्यकता की भी पूर्ति कर सके। फिर यह संचित सूत्रबद्ध ज्ञान हमारे समाज के उपचेतन में अपना उपयोगी अस्तित्व बनाए रहा, ताकि समय-समय पर काम आ सके। कभी इनकी पुष्टि में लोक कथाएँ रचित होती रहीं और कभी विशिष्ट घटना लोक कथा बनकर फिर उसके सार के रूप में लोकोक्ति स्वरूप निकलती रही।

१.३.२. लोकोक्तियों की परम्परा

लोकोक्तियों की परम्परा के संबंध में हमारे सामने दो प्रश्न उपस्थित होते हैं-पहला उसकी प्रागैतिहासिकता के संबंध में और दूसरा उसके इतिहास के संबंध में। इतिहास के संबंध में विचार करते समय दो बातें हमारे सामने आती हैं-एक तो वह सामग्री जिससे लोकोक्तियों का निर्माण हुआ और दूसरी वह वृत्ति जिसके द्वारा लोकोक्तियों की संरचना हुई। सामग्री की दृष्टि से प्रकृति से संपृक्त मानव जीवन की घटनाएँ, उन घटनाओं से उद्भूत अनुभव और निरीक्षण से उपलब्ध प्राकृतिक रूपों का ऐंद्रिक परिज्ञान-ये ही वे उपकरण हैं जिनसे लोकोक्तियों का निर्माण हुआ। इस सामग्री को संचित करने की वृत्ति ने इनकी संरचना की भूमिका तैयार की। संचय की वृत्ति के साथ व्यावसायिक या उपयोगितावादी तथा कलात्मक या सौंदर्यवादी वृत्तियाँ भी सहायक रूप में क्रियाशील रहीं जिन्होंने परम्परित ज्ञान के कलात्मक संचयन को लोकोक्तियों का रूप दिया। प्रागैतिहासिक लोकोक्तियों की प्रकृति को देखते हुए इसका अनुमान ही किया जा सकता है।

जहाँ तक लोकोक्तियों के इतिहास का प्रश्न है, कुछ ही कहावतों का कालगत इतिहास देखा जा सकता है। ये वे लोकोक्तियाँ हैं जिनमें कुछ ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख पाया जाता है। उदाहरण के लिए ब्रज में राजा भोज के संबंध में यह कहावत प्रचलित है—

"कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली"

इस कहावत का आरंभ निश्चित रूप से राजा भोज के राज्यकाल में हुआ है। गंगू तेली के संबंध में भी विद्वानों ने कुछ ऐतिहासिक विचार-विमर्श किया है[48]। इसी प्रकार कुछ अन्य राजाओं के संबंध में भी कुछ लोकोक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

"जिनको न दे मौला, उसको दे असफुद्दौला"

तेलुगु भाषा में भी एसी कहावतों का प्रचलन कम नहीं है जैसे—

"कालिदासु कवित्वमा, नी स्वंत पैत्यमा"

ऐसी कहावतों का समय-निर्धारण ऐतिहासिक दृष्टि से सरल है। लेकिन जिन लोकोक्तियों में किसी ऐतिहासिक घटना या पुरुष के नाम का उल्लेख नहीं हैं, उसके रूप और विषय वस्तु के आधार पर ही कुछ अनुमान लगाया

---

48. मरु भारती, वर्ष ४, अंक ३, 'एक कहावती लोक गाथा' —पृ. ११४–११६.

जा सकता है। लेकिन लोकोक्तियों के कुछ ही रचयिताओं के नाम प्राप्त होते हैं। अधिकांश लोकोक्तियों में रचयिताओं के नाम अप्राप्य हैं। भाषा भी इस संबंध में सहायक नहीं हो सकती है क्योंकि युग के अनुसार मूल्यवान और सशक्त लोकोक्तियाँ भाषा परिधान को बदलते हुए प्रचलित रहती हैं। विषय वस्तु प्रायः युग की सीमाओं से नहीं बनती, वह युग-युगों के लिए है। अतः लोकोक्तियों की कालगत परम्परा को निश्चित करना प्रायः असंभव है। केवल इतना कहा जा सकता है कि मनुष्य समाज के आदि से आज तक लोकोक्तियों की परंपरा अक्षुण्ण चली आयी है और अगे भी चलती रहेगी।

१.४. लोकोक्ति के अध्ययन का महत्व

लोकोक्तियों में लोक-समाज का प्रतिबिम्ब होता है। वे लोक का रहन-सहन, आचार-व्यवहार, जीवन परिस्थितियाँ आदि से संचित रहती हैं। साथ ही इनमें राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का भी रूप प्राप्त हो सकता है। अतः लोकोक्तियों का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

लोकोक्तियों का मानव जीवन या समाज के साथ बहुत ही निकट संबंध है। ये अतीत की परम्परा एवं आचार-व्यवहार का चित्र वर्तमान को प्रदान कर भविष्य के लिए (सूचनात्मक) मार्गदर्शक भी होती हैं। अतः इनके अध्ययन से मानवीय ज्ञान की अज्ञात उपलब्धियों और मानव जीवन के भले बिसरे पक्षों के यथार्थस्वरूप को समझने में सहायत प्राप्त हो जाती है।

लोकोक्तियों का बड़ा विस्तृत क्षेत्रहै। इनके अंतर्गत मानव तथा मानवेतर जगत भी समा जाता हैं। इतना ी नहीं, इतिहास और भूगोल के भी क्षेत्र लाकोक्तियों के आवरण से परे नहीं है। लोकोक्ति-साहित्य की विशालता के संबंध में पं. नरोत्तमदास स्वामी का विचार है-" मानव जीवन से संबंध रखने वाला कौन-सा ऐसा विभाग है जो उनके (लोकोकिक्तयों के) दायरे के भीतर न आया हो। वे जीवन के सभी प्रकार के विविध रंगो को लिए हुए मिलती हैं। उनमें कहीं गंभीरता जन्य चातुर्य भरा है तो कहीं प्रतिदिन के गृहस्थ जीवन का पथ-प्रदर्शक व्यावहारिक ज्ञान छलछल रहा है। कहीं सुकुमार भावों की सुमधुर योजना दृष्टिगत होती है, कहीं कोमल कल्पनाओं का निराला माधुर्य अपनी छटा दिखा रहा है। कहीं लक्ष्य चूकने वाले चुटीले व्यंग्य के बाण सीधे हृदय में पैठ जाते हैं कहीं विनोदमय लघु रहस्य के छीटे रोम-रोम हिला देते हैं [49]। इस विशाल साहित्य के अध्ययन से ऐतिहासिक तथा भौगोलिक तथ्यों का परिचय मिल सकता है।

लोकोक्तियों का उद्भव वैदिक काल या उससे पहले ही माना गया है [50]। फ्रेजर के कथनानुसार इनका आविर्भाव उस समय हुवा होगा जब कुछ कारणों से वक्ता को स्पष्ट बात कहने में किसी प्रकार की कुछ अड़चन या असुविधा पड़ीहोगी [51]। इस संबंध में डा. त्रिलोचन पांडे का मत यह है कि वैदिक साहित्य, लौकिक संस्कृत, उपनिषद, स्मृति ग्रथों एवं पुराणों में

---

49. रास्थानी कहावतें, अवतरणिका, पृ. ३.
50. लोक साहित्य की भूमिका, पृ. १३९.

कहावतों के व्यापक प्रयोग मिलते है। इसलिए इनके अध्ययन से देश की सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का कालगत परिचय हो जाता है, साथ ही समय-समय पर इन परिस्थितियों में कैसे कैसे परिवर्तन होते गए यह बात भी स्पष्ट हो जाती है।

लोकोक्ति-साहित्य में जन-साहित्य में व्याप्त मानव समाज का दर्शन होता है[53]। इनमें लोक के भिन्न-भिन्न मनोरागों के चित्र निहित रहते हैं। अतः इनमें मनुष्य समाज की भौतिक और आध्यात्मिक संस्कृति, अर्थ व्यवस्था, सामाजिक संरचना, धार्मिक, नैतिक और राजनैतिक परिस्थितियाँ प्रतिबिंबित होती हैं। अतः लोकोक्तियों के अध्ययन के द्वारा राजनीति-शास्त्र, समाज-शास्त्र, अर्थ-शास्त्र, भूगोल, इतिहास, नृ-शास्त्र आदि का अध्ययन संभव है।

लोकोक्तियों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वे समाज की पथ-प्रदर्शिका बनती हैं अर्थात् अतीत के मनीषियों के जीवनानुभवों का परिचय दे कर वर्तमान समाज के लिए भविष्य के अंधकारमय मार्ग को देदीप्यमान करतीं हैं। ये प्रत्यक्ष और परोक्ष--दोनों रूपों में जीवन के आदर्श मार्गों का निर्माण और निर्देशनक रती हैं। शिष्ट समाज के अतिरिक्त अशिक्षित जनता या लोक के जीवन मे लोकोक्तियों का अधिक महत्व है। यह शिक्षित-अशिक्षित, राजा-रंक, स्त्री-पुरुष सभी के लिए जीवनोपयोगी होती हैं। इनके द्वारा समाज के अनेक उलझन सुलझाए जा सकते हैं। इतना ही नहीं, सामान्य लोक को नीति शास्त्र प्रदान कर उनका स्थर शिक्षित और शिष्ट वर्ग से किसी भी दृष्टि से कम होने नहीं देती। इनकी शिक्षा के द्वारा समाज का दुराचार, विरोध और मूढ़ता आदि दूर हो जाते हैं और हमेशा ये समाज के स्थर को बनाए रखने में सहायता प्रदान करती हैं। डा. सुनीत कुमार चटर्जी ने कहा है-" लोग अपने लाभ और नुकसान, सुख और दुःख से भरे हुए जीवन में इन सूक्तियों का स्मरण करते हुए अपनी अवचेतना में मस्त हो जाते है--कहते हैं, हाँ ठीक कहा है। कहावतों में भाव-साम्य मिलने के कारण लोगों का दुःख भार का लाघव होता है, सुख और भी गाढा हो जाता है।

लोकोक्ति साहित्य का उद्देश्य ही महत्व पूर्ण है। सामान्य लोक की यह ज्ञान-राशि का उज्वल भांडार मानव समाज को एक प्रतिष्ठित मार्ग पर लाकर भविष्य उज्वल बनाने में सहायक होता है। इसके अलावा शिक्षण पद्धति में भी लोकोक्तियाँ उपादान के रूप में भी सहायता करती हैं। शिक्षक विद्यार्थियों की प्रत्युत्पन्नमति, स्मरण शक्ति और सामान्य ज्ञान के विकास के लिए लोकोक्तियों को प्रश्न के रूप में विद्यार्थियों के सामने रखते हैं। विद्यार्थी लोकोक्तीयो के लिए उपयुक्त प्रकरण या घटना गढते हैं[55]। शिक्षण के अतिरिक्त लोकोक्तियाँ बालक्रीड़ा के विषय भी रही हैं। जापान में लोकोक्ति पर आधारित कुछ बाल क्रीड़ाएँ अत्यन्त लोक प्रिय हैं[56]।

---

51. गोल्डन बाउ, वा. ९, पृ. १२१-१२२.
52. कुमांऊँ का लोक साहित्य, पृ. १२०.
53. रेशियल प्रोवेर्ब्स्, पृ. ५.
54. राजस्थानी कहवताँ, अवतरणिका, पृ. १४.
55. भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन, पृ. ३६.
56. *Racial Proverbs*, Introduction p. XV.

लोकोक्तियाँ विचारों की अभिव्यक्ति के प्रश्न को हल कर देती हैं। इनके द्वारा गूढ़ातिगूढ़ विचार भी किसी प्रयास के बिना व्यक्त किए जाते हैं। ये भाषा शास्त्र के अध्ययन में भी अत्यन्त सहायक सिद्ध होती हैं। इस संबंध में डा. वासुदेव शरण अग्रवाल का मत है-' भाषा शास्त्र में रुचि रखनेवाले व्यक्ति के लिए जनपदीय अध्ययन कल्प-वृक्ष के समान समझना चाहिए। किसान के जीवन की जो विस्तृत शब्दावली है, उसमें वैदिक काल से लेकर अनेक शताब्दियों के शब्द संचित हैं[57]। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि लोकोक्तियाँ प्राचीन ज्ञान की संरक्षिका एवं संवाहिका हैं। अंत में यह कहना अनुचित न होगा कि लोकोक्तियों का अध्ययन अनेक दृष्टियों से निशिचत ही महत्व रखता है।

१.५ लोकोक्तियों के तुलनात्मक अध्ययन का महत्व

लोकोक्तियों के तुलनात्मक अध्ययन के इतिहास और महत्व पर चर्चा करने से पहले तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता पर थोड़ा बहुत प्रकाश डालना अनुचित न होगा।

भारत देश में सांस्कृतिक तथा भाषागत विभिन्नता अत्यधिक है। एक सामान्य भारतीय तत्व के नर्माण के लिए जातीय तत्व घुलमिल गए हैं। आज की सब से बड़ी राष्ट्रीय आवश्यकता है---इन्हीं जातीय तत्वों का सांस्कृतिक तथा साहित्यक दृष्टियों से अनुसंधान करना जो समूचे भारत में एकता की भावना स्थापित कर सके। साथ ही देश के भिन्न-भिन्न प्रदेशों की (भौगोलिक भिन्नता के आधार पर) संस्कृति आदि में साम्य और वैषम्य का भी अध्ययन करना आवश्यक है। इसी प्रेरणा के आधार पर साहित्य में कुछ तुलनात्मक अनुसंधान कार्य आरंभ हुआ है। आंध्रप्रदेश के विभिन्नसाहित्यिक रूपों का तुलनात्मक अध्ययन भी इस दृष्टि से ज़रूरी है। भारतीय संस्कृति के अनेक तत्वों को हिन्दी ने भी ग्रहण कर लिया है। इस दृष्टि से तेलुगु और हिन्दी साहित्य के विविध रूपों का तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा अनेक महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकालने की संभावनाएँ हैं।

तुलनात्मक साहित्यिक शोध के क्षेत्र में कार्य उतना नहीं हो पाया जितना होना चाहिए था। इस प्रकार के शोध के संबंध में तेलुगु और हिंदी के क्षेत्र में शोधकों की रुचि बढ़ गई है। राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता ने इस प्रकार के तुलनात्मक शोध कार्य को पर्याप्त बल दिया है। हिंदी और तेलुगु के तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में कार्य तीव्रगति से नहीं हो पा रहा है।

पहले पर्याप्त विवेचन के पश्चात् कहा जा चुका है कि लोकोक्तियों के अध्ययन से राजनीति-शास्त्र, समाज-शास्त्र, अर्थ-शास्त्र, भूगोल, इतिहास, नृशास्त्र आदि का अध्ययन संभव है। पर किन्हीं दो प्रांतों की लोकोक्तियों के तुलनात्मक अध्ययन से दोनों प्रांतों के भिन्न-भिन्न शास्त्रों, रहन-सहन, आचार-व्यवहार आदि के विभिन्न तत्वों का रूप प्रस्तुत किया जा सकता है।

१.६ तेलुगु और हिंदी क्षेत्र में हुए लोकोक्तियों संबंधी कार्य का सर्वेक्षण

भारत में लोकोक्ति संबंधी अध्ययन और शोध दो प्रकार से हुआ है। पहला तो लोक-साहित्य के अध्येताओं ने लोकोक्तियों का अध्ययन अपने क्षेत्र का एक प्रमुख अंग मान कर संक्षिप्त अध्ययन प्रस्तुत किया है। दूसरा,

---

57. पृथिवी पुत्र, पृ. ५५.

'कहावतों' पर पूरे शोध प्रबंध ही प्रस्तुत किए गए हैं जो एकाध ही हिंदी क्षेत्र में मिलते हैं और तेलुगु के क्षेत्र में जहाँ तक लेखक का ज्ञान है, ऐसा कोई परिनिष्ठित कार्य आज तक नहीं हुआ है। जितना गहन और वैज्ञानिक अध्ययन होना अपेक्षित था, उतना प्राप्त नहीं होता। वैसे लोक-साहित्य पर भारत में बहुत कम कार्य हुआ है। पर दोनों ही भाषाओं में संकलन कार्य अवश्य हुआ है जिसका कोई कम महत्व नहीं है। जहाँ तक शोध का संबंध है, हिन्दी में सर्वप्रथम डां. कन्हैयालाल सहल ने 'राजस्थानी कहावतें: एक अध्ययन' प्रस्तुत किया है जो इस दिशा में अत्यंत महत्व रखता है और इसी ग्रंथ को लोकोक्तियों पर शोध के क्षेत्र मे प्रथम सोपान कहा जा सकता है। इस दिशा में एक दूसरा शोध प्रबंध आगरा विश्व-विद्यालय में प्राप्त है। इसके लेखक डा. शाशिशखर तिवारी ने "भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन" प्रस्तुत करके इस क्षेत्र में दूसरा कदम उठाया है। इन दोनों के अतिरिक्त दो और ग्रंथ हैं। एक तो सागर विश्वविद्यालय में प्राप्त "बघेल खंड लोकोक्तियाँ" जिसके लेखक श्री रामदास प्रधान हैं और दूसरा रांची विश्वविधालय में प्राप्त "भोजपुरी कहावतों का सांस्कृतिक अध्ययन" है। इस अध्ययन के लेखक श्री सत्यदेव ओझा हैं। इन ग्रंथों के अतिरिक्त संकलन ग्रंथ प्राप्त हैं जो तेंलुगु भाषा में भी उपलब्ध हैं। पर शोध कार्य भारत के प्रत्येक भाषा की लोकोक्तियों पर होना राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से भी बहुत महत्व रखता है। इतना तो ज़रूर स्वीकार करना होगा कि ऐसा बृहत कार्य किसी एक व्यक्ति के बस का नहीं है। ऐसी परिस्थिति में जैसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा अनेक परियोजनाएँ चलाई जाती हैं, इसी प्रकार भारत भर की लोकोक्तियों पर बृहद् कार्य के लिए एक परियोजना चलाना अत्यंत आवश्यक है। ऐसी परियोजना के द्वारा होने वाले कार्य से निकलने वाले निष्कर्ष निश्चित ही मूल्यवान होंगे। साथ ही वे राष्ट्रीय जीवन के संगठन तथा राष्ट्रीय शैली के निर्माण में सहायक हो सकेंगे।

१.७ लोकोक्ति के स्रोतों का अध्ययन

लोकोक्तियों के अनेक स्रोत हो सकते हैं। प्रत्येक देश या प्रांत में लोकोक्तियों के संकलन जरूर प्राप्त होते हैं। इनके अलावा कुछ भाषाओं मे ऐसी भी फुटकल संकलन या रचनायें प्राप्त होती हैं जिनमें अन्य भाषाओं की लोकोक्तियों को सभ्यता के आधार पर जोड़ दिये गय हों। इनके साथ ही कुछ ऐसी भी पुस्तकें मिलती हैं जिनमें लोकोक्तियाँ विषय की दृष्टि से वर्गीकृत की गयी हैं। लेकिन इस प्रकार की रचनाएँ बहुत कम मिलती हैं।

लोक में जनता के वार्तालाप में कुछ कहावतें मिलने की संभावनायें कम नहीं हैं। बहुधा लोकोक्तियाँ तो संकलनों से ही प्राप्त होती हैं। लेकिन इनकी अपेक्षा दिन-ब-दिन जो नई लोकोक्तियों का सृजन होता है, इनकी प्राप्ति लोक व्यवहार से ही संभव है। अतः लोकोक्तियों वाले विषय पर अनुसंधान करने वालों के लिये यह अत्यंत आवश्यक होगा कि उन-उन प्रांतों का सर्वेक्षण कार्य करें जिनकी लोकोक्तियों का अध्ययन अपेक्षित है। यह तो सर्वविदित तथ्य है कि इस प्रकार के सर्वेक्षण के लिये एक प्रश्नावली बनाना बहुत जरूरी है। प्रश्नावली के माध्यम के अलावा यह कार्य इस प्रकार भी संपन्न किया जा सकता है कि डाक व्यवहार के द्वारा अनेक व्यक्तियों को प्रश्नावलियाँ भेज कर उनको भरवा लिया जाए जिन में लोकोक्ति का पाठ या प्रचलित रूप, प्रयुक्त प्रसंग की सूचना, प्रयोक्ता का स्थर, धर्म, जाति और क्षेत्र आदि की बातें स्पष्ट हो सकें। इन सभी बातों के उपलब्ध हो जाने से लोकोक्तियों का प्रत्यक दृष्टिकोण से अध्ययन हो सकता है।

किसी भी भाषा के साहित्य से उसमें प्रयुक्त लोकोक्तियाँ ग्रहण की जा सकती हैं। इस वजह से साहित्य का गहरा अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

अध्येता किसी भी स्थान पर रहे, उसको दैनिक जीवन में होने वाली घटनाओं, अन्यों के साथ आचार-विचार, वार्तालाप आदि पर ध्यान देते हुये तत्प्रयुक्त लोकोक्तियों को ग्रहण करना चाहिए। इसके साथ ही अन्य जनों के आपस की बातचीत से भी कहावतों को प्राप्त करने की आदत बना लेना अध्ययन-कर्ता के लिए बहुत ही आवश्यक है।

अब यहाँ प्रस्तुत अध्ययन के लिए उक्त प्रकार के जो स्रोत प्राप्त हुए हैं, उनका संक्षिप्त परिचय देना उचित होगा।

हिंदी लोकोक्यिों के स्रोतों का अध्ययन

१. संकलन

१. कहावत कोश: यह कोश बिहार राष्ट्र भाषा परिषद की तरफ से प्रकाशित हुआ है। इसके संपादक डा. भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र 'माधव' हैं। उन्होंने बड़े परिश्रम के साथ हिंदी लोकोक्तियों का बृहद् संकलन किया है। इसके साथ लोकोक्तियों का अर्थ समझाकर उनके प्रयोग का परिचय भी दिया है। भोजपुरी क्षेत्र की लोकोक्तियों की मात्रा अधिक है। फिर भी यह ग्रंथ पर्याप्त महत्व रखता है।

२.	हिंदी लोकोक्तियाँ और मुहावरे	.. ले. बा. गुलाबराय
३.	हिंदी मुहावरें और कहावतें	.. ले. श्री बालमुकुंद 'अर्श'
४.	नवीन लोकोक्तियाँ और मुहावरे	. ले. श्री धर्मचंद 'मलसियानी'
५.	हिंदी लोकोक्ति कोश	.. श्री विश्वंभरनाथ खत्री
६.	भोजपुरी लोकोक्तियाँ, मुहावरे तथा पहेलियाँ	.. डा. उदयनारायण तिवारी
७.	मुहावरें और कहावतें	.. श्री राज किशोर पांडे
८.	हिंदी लोकोक्तियाँ और मुहावरें	.. श्री बहदूर चंद्र शास्त्री
९.	हिंदी लोकोक्तियाँ और मुहावरें	.. सं. डा. चंद्रभान रावत

उक्त सभी पुस्तकें, एक तरह से संकलन मात्र हैं। इतना होते हुए भी कुछ पुस्तकों में लोकोक्तियों के अर्थ भी दिये गये हैं। यत्र-तत्र प्रयोगात्मक वाक्य भी मिलते हैं। लेकिन इन पुस्तकों के बारे में एक बात कहना आवश्यक होगा कि ये सब लघु ग्रंथ मात्र हैं। अतः इन ग्रंथों से प्राप्त लोकोक्तियों की संख्या बहुत कम है।

२०.	डिक्शनरी आफ हिंदी प्रोवेर्ब्स	.. श्री फैलेन

हिन्दी लोकोक्तियों संबंधी पुस्तकों में यह अत्यंत मूल्यवान ग्रंथ है और हिंदी लोकोक्तियों संबंधी यह ग्रंथ सर्व प्रथम है तथा इसका महत्व भी अधिक है क्योंकि लोकोक्ति के साथ ही उसका अर्थ भी प्राप्त हो जाता है।

२. सर्वेक्षण, प्रश्नावली आदि

लेखक को हिंदी प्रांत में अधिक सर्वेक्षण कार्य करने का अवसर प्राप्त नहीं हो सका। थोड़ा बहुत तो किया जा चुका है जिससे बनारस, इलाहाबाद, जयपुर, मथुरा, आगरा, दिल्ली आदि प्रांतों में प्रचलित कुछ लोकोक्तियाँ प्राप्त की गई हैं। साथ ही प्रश्नावली के आधार पर कुछ व्यक्तियों से भी कहावतें मिली हैं।

३. हिंदी साहित्य के अध्ययन से प्राप्त लोकोक्तियाँ

हिंदी साहित्य के कुछ ग्रंथों के अध्ययन से भी बहुत कुछ लोकोक्तियाँ प्राप्त हुई हैं। कविता, उपन्यास, नाटक कहानी आदि संबंधी कतिपय पुस्तकों के अध्ययन से भी कुछ कहावतें ली गयी हैं। साथ ही कुछ नवीन उपन्यासकारों जैसे गुलशन नन्दा आदि की रचनाओं से कुछ नवीन लोकोक्तियाँ मिली हैं।

४. दैनिक जीवनानुभव से प्राप्त लोकोक्तियाँ

लेखक के दैनिक जीवन में घटनेवाली घटनाओं, वार्तालाप और साथियों के व्यवहार से भी कुछ लोकोक्तियाँ प्राप्त हुई हैं। यद्यप लोकोक्तियाँ अधिकतर वही हैं जो अन्य स्रोतों से प्राप्त हुई हैं, पर कहीं-कहीं उनके रूप में परिवर्तन दिखायी पड़ता है कुछ अन्य लोकोक्तियाँ कम मात्रा में ही सही मूल रूप में मिल गयी हैं।

५. अन्य स्रोत

अन्य स्रोतों के अंतर्गत शोध-कार्य घाघ और भड्डरी की रचनाएँ, पं. रामनरेशत्रिपाठी की प्रसिद्ध कृतियाँ कविता-कौमुदी, ग्राम-साहित्य आदि मुख्य हैं। इनका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है। इनके अतिरिक्त हिंदी की अनेक पत्र-पत्रिकाओं से लोकोक्तियों संबंधी लेख, और कुछ लोकोक्तियाँ भी मिली हैं। इन पत्र-पत्रिकाओं का विवरण परिशिष्ट में जोड़ा गया है।

तेलुगु लोकोक्तियों के स्रोतों का अध्ययन

तेलुगु की लोकोक्तियों के १०-१२ संकलन ग्रंथ मिलते हैं, इनमें कुछ बड़े हैं और बाकी छोटे। इन ग्रंथो में संकलन के अतिरिक्त और कुछ नहीं प्राप्त होता। जिस प्रकार हिंदी में लोकोक्तियों के प्रयोग और अर्थ के संबंध में पर्याप्त सामग्री मिलती है, उस प्रकार तेलुगु में नहीं। इनमें दो ग्रंथ बहुत महत्व रखते हैं जिनका उल्लेख निम्न सूची में किया गया है।

१.	तेलुगु सामेतलु	.. विश्वनाथ सत्यनारायण
२.	पसिडि पलुकुलु	.. नेदुनूरि गंगाधरम
३.	तेलुगु सामेतलु	.. साहित्य भूषण नंदिराजु चलपति राव
४.	लोकोक्ति मुक्तावलि	.. दक्षिणामूर्ति
५.	लौकिक न्यायांजलि	.. कर्नल जि. रा. जाकोब
६.	तेलुगु सामेतलु (अंग्रेजी अनुवाद साहित)	.. वाविल्ल पब्लकेषन्स
७.	आंध्र लोकोक्ति चंद्रिका	.. सी. एल. रास
८.	तेलुगु प्रोवेर्ब्स (हैदराबाद)	.. सी. एल. रास
९.	तेलुगु सामेतलु	.. रामुलु सीरीस
१०.	सुभाषित रत्नाकरमु	.. मुसुनूरि वेंकट शास्त्री
११.	न्याय मुक्तावलि और जातीय मंजरि	.. मुसुनूरि वेंकट शास्त्रि
१२.	लोकोक्ति मुक्तावलि	.. विद्वान पी. कृष्णमूर्ति
१३.	व्यवसाय सामेतलु	.. नेदुनूरि गंगाधरम

प्रथम दो पुस्तकें अधिक महत्व रखती हैं क्योंकि इनमें तेलुगु लोकोक्तियों का बृहत संकलन किया गया है। तलुगु सामेतलु में विश्वनाथ सत्यनारायण जी ने लोकोक्तियों की परिभाषा, जन्म आदि के बारे में एक गवेषणात्मक लेख भी लिखा है।

२. सर्वेक्षण, प्रश्नावली आदि

तेलुगु क्षेत्र में संकलनों में संगृहीत लोकोक्तियों के अतिरिक्त विभिन्न जिलों में सर्वेक्षण थे द्वारा भी उन प्रान्तों मे प्रचलित बहुत कुछ लोकोक्तियाँ प्राप्त की गयी हैं जो प्रश्नावली हिंदी क्षेत्र के सर्वेक्षण के लिए अपनायी गयी है, तेलुगु क्षेत्र में भी उसी को आधार बनाया गया है।

३. तेलुगु साहित्य के अध्ययन से प्राप्त लोकोक्तियाँ

हिंदी की तरह तेलुगु में भी साहित्यिक ग्रंथों के से भी कहावतें पर्याप्त संख्या में ली गई हैं। इसके अंतर्गत काव्य, शतक-साहित्य, उपन्यास, नाटक, कहानी आदि आ जाते हैं। इनके अलावा आधुनिक साहित्य, उपन्यास आदि से भी काफी सहायता प्राप्त हुई है। जिन ग्रंथों का अध्ययन किया गया है, उन सब की विस्तृत सूची यहाँ देना अनावश्यक होगा।

४. दैनिक जीवनानुभव से प्राप्त लोकोक्तियाँ

प्रबंध लेखक शोध कार्य की अवधि में अधिक समय हिंदी प्रांत (आगरे) में ही रहा है परन्तु जब कभी आन्ध्र प्रांत में रहने का अवसर प्राप्त हुआ है, अन्यों के साथ व्यवहार, वार्तालाप आदि से भी कुछ कहावतें प्राप्त की गयी हैं। इनमें कुछ ऐसी लीकोक्तियाँ भी है जो संकलनों या अन्य स्रोतों में अप्राप्त हैं। अतः इस प्रकार की लाकोक्तियों का अधिक महत्व है।

हिंदी लोकोक्तियों संबंधी जो भी शोध-प्रबंध प्राप्त होते हैं, उनसे प्रस्तुत अध्ययन के लिए अत्यत सहायता मिली है। ऐसे शोध प्रबंधों में दो मुख्य हैं।

१. राजस्थानी कहावतें: एक अध्ययन
२. भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन

१. राजस्थानी कहावतें: एक अध्ययन

डा. कन्हैयालाल सहल ने "राजस्थानी लोकोक्तियों" पर एक बहुत बड़ा कार्य संपन्न किया है। लोकोक्तियों विषयक शोध के क्षेत्र में यह ग्रंथ जैसे प्रथम सोपान रही है। इस ग्रंथ का बड़ा महत्व इसलिए है कि इसमें बड़े ही विस्तार के साथ कतिपय दृष्टिकोणों से अध्ययन प्रस्तुत किया है। विषय वस्तु परक वर्गीकरण, शैलीगत वर्गीकरण या रूपात्मक तथा विषयानुसार लोकोक्तियों का वर्गीकरण करके इस शोध प्रबंध को पूर्णता प्रदान की गयी है। साथ ही आरंभ के "कहावत का उद्भव और विकास" शीर्षक दो अध्ययों में उसकी परिभाषा महत्व, उद्भव तथा विकास वाले विषयों का बड़ा ही स्पष्ट चित्र अंकित किया गया है। इस प्रबंध ने ही लोकोक्तियों के शोधा में एक ज्योति जलाकर रास्ते को देदीप्यमान किया है। इससे अनेकों व्यक्तियों को प्रेरणा भी मिलती है कि इस क्षेत्र में अधिक कार्य करें।

२. भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन

डा. शशिशेखर तिवारी ने आगरा विश्वविद्यालय की पी.एच.डी. की उपाधि केलिए इस ग्रंथ को प्रस्तुत किया है । लोकोक्तियों संबंधी खोज के क्षेत्र में यह दूसरा सोपान है । इसमें लेखक ने अपने क्षेत्र को भोजपुरी तक ही सीमित रखकर अध्ययन को गहन बनाने का भरसक प्रयत्न किया है जिसमें लेखक को बहुत हद तक सफलता भी प्राप्त हुई है । इस ग्रंथ में लेखक ने अनेक भोजपुरी लोकोक्तियों को लेकर विस्तार के साथ विचार विश्लेषण किया है, यह भी लोकोक्ति क्षेत्र के शोधकों की रुचि बढ़ाकर कार्यान्वित करने में काफी मदद देती है ।

इन दोनों शोधे प्रबंधों के अतिरिक्त बघेल खंड की लोकोक्तियों पर सागर विश्वविद्यालय में कार्य हुआ है । लेकिन इस प्रबंध को देखने का सौभाग्य लेखक को नहीं मिला ।

घाघ और भड्डरी की रचनाएँ

इन दोनों कवियों की रचनायें अनेक प्रकार की लोकोक्तियों से ओत प्रोत हैं । अधिकांश लोकोक्तियाँ तो कृषि संबंधी हैं । इस विषय की जितनी लोकोक्तियाँ इन ग्रंथों से प्राप्त हैं, उतनी अन्यत्र नहीं मिलती । इन ग्रंथों से कृषि संबंधी लोकोक्तियों के अध्ययन वाले अध्याय को संपन्न करने में काफी सहायता ली गयी है । इन ग्रंथों का निश्चित ही अधिक महत्व है ।

कविता कौमुदी और ग्राम साहित्य

पंडित राम नरेश त्रिपाठी का हिन्दी क्षेत्र में बहुत महत्व है । "कविता कौमुदी" के पाँचवे भाग में और "ग्राम साहित्य" में पंडित जी ने लोक-जीवन को ध्यान में रखकर हिन्दी प्रदेश की जनता के आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज, धार्मिक विश्वास आदि सभी विषयों पर प्रकाश डालते हुए विस्तार पूर्वक विवरण प्रस्तुत किया है । प्रस्तुत प्रबंध को लिखने में ये दोनों ग्रंथ अधिक सहायक हो सके । लोक साहित्य के क्षेत्र में पंडित जी की रचनाओं का बड़ा महत्व है ।

५. अन्य स्रोत:—अन्य स्रोतों के अंतर्गत पत्र-पत्रिकाएँ तो हैं ही, मगर हिंदी की तरह तेलुगु में कोई शोध प्रबंध आदि नहीं मिलते हैं । पत्र-पत्रिकाओं में आंध्र प्रभा, अंध्र पत्रिका, भारती मुख्य हैं ।

१.८ विषय का वैशिष्ट्य एवं शोध पद्धति का स्पष्टीकरण

प्रस्तुत शोध प्रबंध में तेलुगु तथा हिंदी की लोकोक्तियों का तुलनात्पक तथा भाषावैज्ञानिक अध्ययन करने का उचित प्रयास किया गया है । अध्ययन विषय के क्षेत्र की विशालता के होने पर भी इसको पूर्ण बनाने का यत्किंचित् प्रयत्न किया गया है । पर यह दावा नहीं किया जा सकता कि प्रस्तुत प्रबंध में तृटियाँ नहीं है । यत्र-तत्र तृटियों के होने पर भी लेखक क्षम्य इसलिए है कि अहिन्दी प्रांत के होने पर भी धैर्य के साथ इस प्रकार का अध्ययन संपन्न करने का भार उठाया है ।

तेलुगु और हिंदी की कुछ साहित्यिक विधाओं पर शोध कार्य अवश्य हुआ है पर लोकोक्तियों पर शोध के स्तर पर कोई काम नहीं हुआ है । तेलुगु की लोकोक्तियों पर तो शोध कार्य जैसे आरंभ ही नहीं हुआ । जो भी तेलुगु लोकोक्तियों संबंधी पुस्तके उपलब्ध हैं, वे प्रायः संकलन मात्र हैं । हिन्दी में भी संकलन कार्य तो पर्याप्त हुआ है पर

लोकोक्ति साहित्य पर शोध उतना नहीं हुआ जितना अपेक्षित था । प्रस्तुत अध्ययन से इस क्षेत्र की दिशा को प्रकाश मिलता है, अतः इसका अपना महत्व है । इस प्रबंध की प्रेरणा हिन्दी साहित्य के अध्ययन में मिलनेवाली लोकोक्तियों से मिली है जिनका साम्य तेलुगु क्षेत्र की लोकोक्तियों से मिलने लगा है । प्रबंध की मूल प्रेरणा यही है ।

इस प्रबंध को पूर्ण तथा अध्ययन को गहन बनाने के लिए लेखक को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है । लोकोक्तियाँ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न होने के कारण सर्वेक्षण कार्य भी करना पड़ा । सर्वेक्षण कार्य का अधिक अंश तेलुगु प्रांत में इसलिए किया गया है कि वहाँ प्राप्त लोकोक्तियों की संख्या हिन्दी की लोकोक्तियों की तुलना में कम हैं । सर्वेक्षण के लिए जो प्रणाली अपनायी गयी है वह अंत के परिशिष्ट में दिए हुए नमूने से स्पष्ट है ।

जहाँ तक लेखक का ध्यान है, लोकोक्तियों पर इस प्रकार का अध्ययन अब तक नहीं हुआ है । साहित्यिक मूल्य के अतिरिक्त तेलुगु और हिंदी क्षेत्र की जनता के रहनसहन और संस्कृति के अध्ययन की आधार शिला के रूप में भी इस ग्रंथ का मूल्य कम नहीं है । इस अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर दोनों प्रदेशों के जीवन के विभिन्न तत्वों का रूप प्रस्तुत किया जा सका है ।

२. लोकोक्तियों का वर्गीकरण तथा विवेचन

१. लोकोक्तियों का वर्गीकरण

अध्ययन और विवरण की सुविधा के लिए लोकोक्तियों का वर्गीकरण आवश्यक है। वर्गीकरण करते समय कभी उसकी आत्मस्थानीय विषय वस्तु सामने आती है तो कभी उसकी रूप संरचना। अर्थात् लोकोक्तियों का दो प्रकार से वर्गीकरण संभव है—१. विषय की दृष्टि से और, २. शैली की दृष्टि से। उक्त दोनों ही दृष्टियों से अनेक विद्वानों ने अपने भिन्न भिन्न वर्गीकरण प्रस्तुत किए है। यहाँ कुछ प्रमुख विद्वानों के वर्गीकरणों को देख लेना समीचीन होगा।

'मेरिया लीच' द्वारा संपादित 'स्टैन्डर्ड डिक्शनरी आफ फोकलोर, माइथोलोजी एण्ड लीजेंड' में लोकोक्तियों का वर्गीकरण इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है[1]—

(१) स्वास्थ्य संबंधी
(२) अर्थ संबंधी
(३) विधिनियम संबंधीध
(४) रंग को उपमान के रूप में ग्रहण करने वाली
(५) संवादात्मक

उक्त वर्गीकरण में विषय और शैलीगत वर्ग दोनों ही सम्मिलित हैं। प्रथम तीन वर्ग विषय के अनुसार है तथा अंत के दो वर्ग शैली के अनुसार। तृतीय वर्ग इनमें अत्यंत महत्वपूर्ण है। सामान्यतः विधि या कानून के समान ही लोकोक्तियाँ सामान्य जीवन में प्रयुक्त होती हैं। स्वास्थ्य और अर्थ के संबंध में भी इस ग्रंथ में विधियों पर ही बल दिया गया है। इस प्रकार सभी प्रकार के विधि तथा नियम लोकोक्तियों में सुरक्षित रहते हैं। यही इस वर्गीकरण की पृष्ठभूमि है।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन तथा डा. कृष्णदेव उपाध्याय द्वारा संपादित "हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास के १६दें भाग "हिंदी का लोक साहित्य" में लोकोक्तियों का वर्गीकरण निम्न रूप से किया गया है[2]—

(१) स्थान संबंधी
(२) जाति संबंधी
(३) प्रकृति तथा कृषि संबंधी
(४) पशुपिक्षी संबंधी
(५) प्रकीर्ण लोकोक्तियाँ—नीति के वचन

---

1. Standard Dictionary of Folklore, Mythology and Legend, Part II, p. 902.
2. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, १६वाँ भाग, पृ. १३६।

इस वर्गीकरण में केवल विषय-वस्तु को ही ध्यान में रखा गया है पर शैलीगत वर्गीकरण की उपेक्षा की गई है। शैली को दृष्टि में रखकर यदि वर्गीकरण न किया जाए तो वह वर्गीकरण अपूर्ण ही माना जाता है। अतः यह वर्गीकरण अनैज्ञानिक है।

"मराठी प्रोवर्ब्स" के संपादक श्री मनवारिग[3] ने लोकोक्तियों के १४ प्रकार माने हैं, जो इस प्रकार हैं:—

(१) कृषि
(२) जीव–जंतु
(३) अंग और प्रत्यंग
(४) भोजन
(५) धर्म
(६) नीतियज्ञ
(७) स्वास्थ्य और रुग्णता
(८) गृह
(९) धन
(१०) नाम
(११) प्रकृति
(१२) संबंध
(१३) व्यापार और व्यवसाय
तथा (१४) प्रकीर्ण

वैसे इस लंबी सूची को लघु करना भी संभव है। जैसे मानव जीवन संबंधी लोकोक्तियों के अंतर्गत भोजन, धर्म, स्वास्थ्य गृह, धन, नाम अदि आ सकते हैं। लेकिन इस वर्गीकरण में शैलीगत वर्गीकरण का पूर्ण अभाव है।

डा. त्रिलोचन पाण्डेय[4] विषयानुसार लोकोक्तियों के ८ वर्ग मानते है :

(१) सामाजिक कहावतें
(२) जीवनदर्शन संबंधी कहावतें
(३) ऐतिहासिक कहावतें
(४) स्थान-विशेष संबंधी कहावतें
(५) नीतिउपदेश संबेधी कहावतें
(६) हास्यव्यंग्य प्रधान कहावतें
(७) कृषि, वर्षा संबंधी कहावतें
(८) प्रकीर्ण.

---

3. Munwaring: Marathi Proverbs.
4. कुमाँऊ का लोक साहित्य, पृ॰ १११

अगे उन्होनें सामाजिक कहावतों का उप-वर्गीकरण इस प्रकार प्रस्तुत किया है---

सामाजिक :

(१) जातीय, (२) नारी संबंधी, (३) धर्मनीति संबंधी, (४) अचार, रीति, प्रथा संबंधी, (५) व्यक्ति प्रधान, (६) भोज पदार्थ संबंधी, (७) अर्थ राजनीति संबंधी, (८) अन्य।

इस वर्गीकरण में भी शैलीगत वर्गीकरण का अभाव है। किन्तु विषय की दृष्टि से उक्त वर्गीकरण को पूर्ण कहा जा सकता है।

'भेवाड़ की कहावतें"[5] के लेखक श्री लक्ष्मीलाल जोशी के अनुसार लोकोक्तियाँ ७ प्रकार की हो सकती है।

(१) नीति परक
(२) मानव प्रकृति संबंधी
(३) अन्योक्तियाँ
(४) जाती संबंधी
(५) इतिहास संबंधी
(६) पशु संबंधी
(७) विविध।

श्री जोशी के उक्त वर्गीकरण में यद्यपि विषयगत तथा शैलीगत वर्गीकरण सम्मिलित हैं, फिर भी विशेष रूप से शैली की दृष्टि से वर्गीकरण अपूर्व है। इस वर्गीकरण में तीसरे प्रकार को छोड़कर बाकी सब विषथगत वर्गीकरण के अंतर्गत आते हैं।

डा. सत्येन्द्र ने लोक साहित्य विज्ञान"[6] में लोकोक्तियों के तीन भेद माने हैं------

(१) गंभीर कथा से संबंध रखने वाली सामान्य कहावतें
(२) गंभीर कथन विषयक स्थान अथवा लोक विशिष्ट कहावतें और
(३) शैली वक्र लोकीक्तियाँ या वक्रोक्ति गर्भित लोकोक्तियाँ।

इस वर्गीकरण का आधार स्पष्ट नहीं दीखता। इस वर्गीकरण के प्रथम दो वर्ग विषयगत लोकोक्तियों के अंतर्गत आते हैं। शैलीगत वर्ग के अंतर्गत केवल वक्रोक्ति-गर्भित, लोकोक्तियों को रखा गया है। अतः उस वर्गीकरण को भी पूर्ण नहीं कहा जा सकता है।

"राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन"[7] में डा. कन्हैयालाल सहल ने लोकोक्तियों के दो प्रकार के वर्गीकरण प्रस्तुत किए हैं।--

(१) विषयगत, और
(२) शैलीगत

---

5. मेवाड की कहावतें, पृ. ११५
6. लोक साहित्य विज्ञान, पृ. ४५७-४५८
7. राजस्थानी कहावतें : एक अथ्ध्ययन, पृ. ५८-५६

यह डा. सहल की सबसे बड़ी विशेषता है। उनके अनुसार विषयगत वर्गीकरण इस प्रकार है––

(१) ऐतिहासिक कहावतें
(२) स्थान संबंधी कहावतें
(३) कहावतों में सामाजिक चित्र––(अ) जाति संबंधी, (आ) नारी संबंधी
(४) शिक्षा, ज्ञान और साहित्य––
  (अ) शिक्षा संबंधी
  (आ) मनोवैज्ञानिक
  (इ) साहित्यिक
(५) धर्म और जीवन दर्शन––
  (अ) धर्म और ईश्वर विषयक कहावतें
  (आ) शकुन संबंधी कहावतें
  (इ) लोक विश्वास संबंधी कहावतें
  (ई) जीवन दर्शन संबंधी कहावतें
(६) कृषि संबंधी कहावतें
(७) वर्षा संबंधी कहावतें
(८) प्रकीर्ण कहावतें।

डा. सहल का शैलीगत वर्गीकरण ६ प्रकार का है––

(१) तुकांत कहावतें
(२) आलंकारिक कहावतें।
(३) कथात्मक कहावतें।
(४) संवादात्मक कहावतें।
(५) छंदोबद्ध कहावतें।
(६) संख्यात्मक कहावतें।

अब तक जितने विद्वानों ने लोकोक्तियों के वर्गीकरण अपनी-अपनी दृष्टियों से भिन्न-भिन्न वर्गीकरण प्रस्तुत किए हैं; उनमें से डा. सहल का वर्गीकरण अधिक वैज्ञानिक और तर्क संगत प्रतीत होता है।

डा. शशिशेखर तिवारी ने अपने शोधप्रबंध में लोकोक्तियों के ८ वर्ग माने हैं––

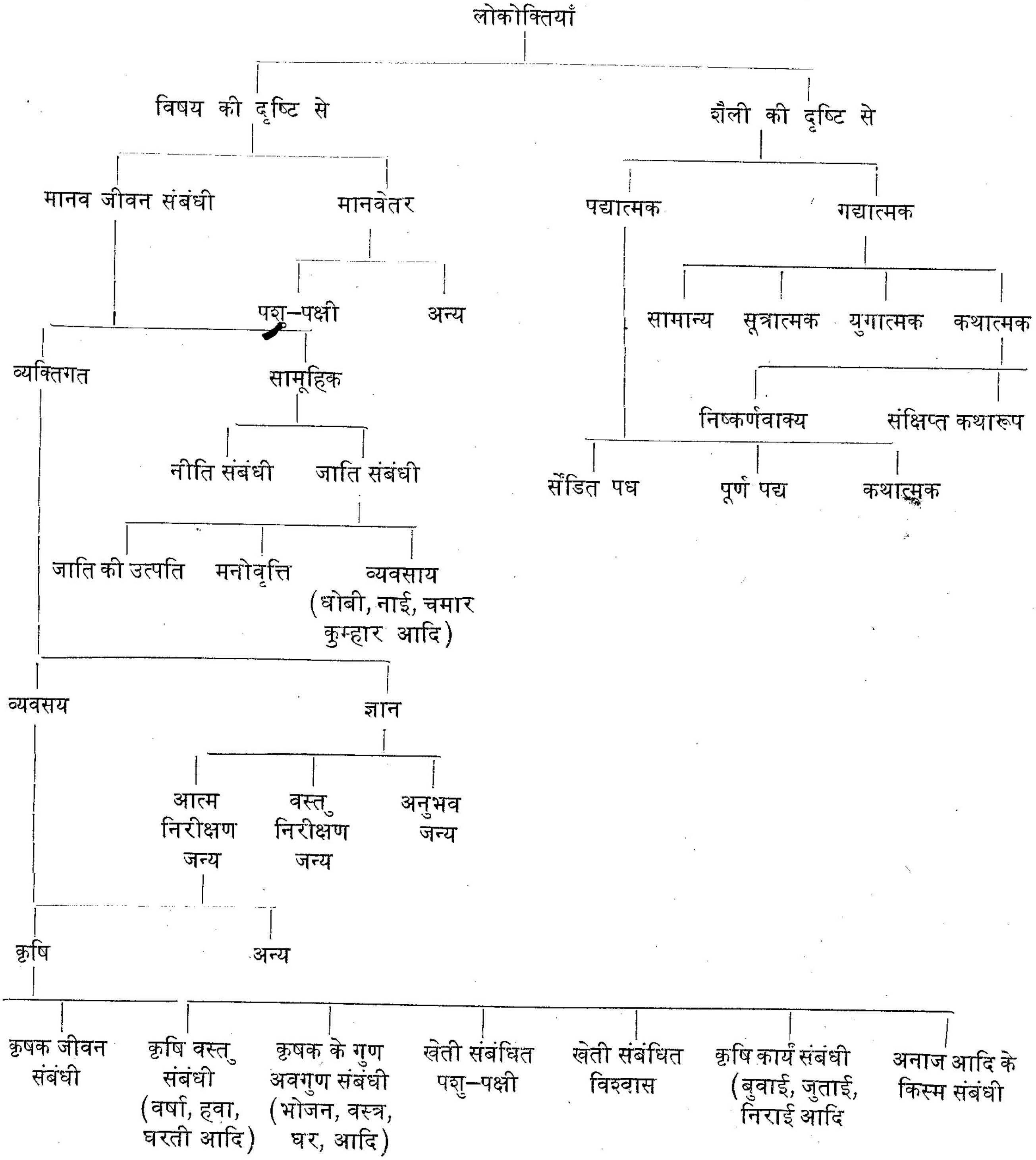
(१) इतिहास संबंधी
(२) प्राकृतिक–भूगोल संबंधी
(३) सामाजिक जीवन संबंधी
(४) जातिपांत संबंधी
(५) नीति और लोक व्यवहार संबंधी
(६) धर्म और दर्शन संबंधी
(७) लोक विश्वास संबंधी
(८) स्वास्थ्य संबंधी

डा. तिवारी का यह वर्गीकरण विषय-वस्तु के आधार पर है। उनका प्रकरण के आधार पर वर्गीकरण इस प्रकार है——

(१) वाच्यार्थ के प्रकरण, और

(२) व्यंग्यार्थ प्रकरण

लोकोक्तियों के वर्गीकरण की पूर्णता और वैज्ञानिकता के साथ ही सभी प्रमुख विद्वानों के वर्गीकरणों को ध्यान में रखते हुए निम्न वर्गीकरण प्रस्तुत किया जा सकता है:



१. लोकोक्तियाँ के प्रकार

लोक साहित्य के प्रसिद्ध विद्वानों के द्वारा किये गये लोकोक्तियों के वर्गीकरणों को ध्यान में रखते हुए और वर्गीकरण की पूर्णता तथा वैज्ञानिकता को प्रधानता देते हुए ऊपर जो तालिका प्रस्तुत की है, उसके अनुसार लोकोक्ति-साहित्य को प्रधानतः दो दृष्टियों से अध्ययन किया जा सकता है—

(१) विषय की दृष्टि से

(२) शैली की दृष्टि से।

२.१.१. विषय की दृष्टि से

विषय की दृष्टि से जो अध्ययन सम्भव है, उसके अंतर्गत निम्न प्रकार की लोकोक्तियाँ आ जाती हैं—

(१) कृषि संबंधी लोकोक्तियाँ

(२) अन्य प्रमुख व्यवसाय संबंधी लोकोक्तियाँ

(३) जाति संबंधी लोकोक्तियाँ

(४) सामान्य जीवन संबंधी लोकोक्तियाँ

(५) पशु-पक्षियों संबंधी लोकोक्तियाँ

(६) अन्य प्रकार की लोकोक्तियाँ।

अन्य प्रकार की लोकोक्तियों के अंतर्गत कथात्मक लोकोक्तियाँ, स्थान संबंधी लोकोक्तियाँ आदि रखी जा अकती हैं। प्रस्तुत अध्याय में उपर्युक्त सभी तरह की लोकोक्तियों का संक्षिप्त विवरण देना पर्याप्त होगा क्योंकि आगे प्रत्येक विषय की लोकोक्तियों का विस्तारपूर्वक पृथक-पृथक अध्यायों में अध्ययन तथा विवेचन किया गया है।

२.११.१. कृषि संबंधी लोकोक्तियाँ :—

इस शीर्षक के अंतर्गत कृषि संबंधी अनेक पक्षों से संबधित लोकोक्तियाँ आती हैं। इनका वर्गीकरण इस प्रकार संभव है—

कृषि संबंधी महत्वपूर्ण वस्तुएँ—इसमें हवा, वर्षा, भूमि आदि से संबंधित लोकोक्तियों का अध्ययन होगा। तेलुगु क्षेत्र में हस्त और चित्त कार्तियों में वर्षा नहीं हो तो खेती के नष्ट होने की बात कही गयी है—

"हस्त चित्तलु वरुपैते अंदरि सेद्यं ओकटे"

इसी प्रकार हिंदी क्षेत्र में प्रचलित कहावत के अनुसार यदि हस्त नक्षत्र में वर्षा हो और चित्र में वर्षा होने की संभावनायें हों, तो किसान बड़े आनन्द के साथ घर बैठे-बैठे आराम कर सकता है—

"हथिया बरसे चित्रा मंडराय। घर बैठे किसान रिरियाय।।"

तेलुगु और हिंदी क्षेत्रों में खेती के लिए काली मिट्टी वाली जमीन श्रेष्ठ मानी गयी है। तेलुगु में तत्संबंधी लोकोक्ति इस प्रकार है—

"रेगडि भूमिनि, राजुनु चे विड्वकु"

अर्थात् काली मिट्टी वाली जमीन को और राजा को कभी मत छोड़ो।

दोनों क्षेत्रों में कृषि कार्य के लिए पानी के अत्यंत आवश्यक होने की बात कही गयी है। हिंदी में लोकोक्ति इस प्रकार है---

"धान पान ऊखेरा, तीनों पानी के चेरा"

इससे तुलनीय तेलुगु की कहावत में कहा गया है कि पानी के अभाव में खेत उसी बाल के समान है जिसमें कभी तेल नहीं लगाया जाता हो---

"नीरु लेनि पैरू, नूनै लैनि जु ट्टु"

इस प्रकार कृषि के लिए वर्षा संबंधी शकुनों, खाद, कृषि कार्य से संबंधित पशु-पक्षी, कृषि यंत्र, बुवाई, निराई, सिंचाई आदि के संबंध में उपलब्ध लोकोक्तियों के साथ कृषि प्रशंसात्मक लोकोक्तियों का भी अध्ययन द्वितीय, अध्यय में सम्पन्न किया गया है।

२.११.२. जाति संबंधी लोकोक्तियाँ

तृतीय अध्ययन में तेलुगु और हिंदी क्षेत्रों की जाति व्यवस्था और उसके वर्गीकरण के बारे में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। उन क्षेत्रों में मुख्य जातियाँ हैं: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों की। इनके आचार-विचार लेन-देन, मान-मर्यादा आदि से संबंधित लोकोक्तियों के आधार पर दोनों क्षेत्रों में प्राप्त होने वाले साम्य तथा वैषम्यों को सकारण समझाया गया है। शूद्र जाति की उप-जातियाँ दोनों क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न हैं। लेकिन जो भी तुलनीय या समान उप जातियाँ-जैसे चमार, कायस्थ, कापु---मिलती हैं, उनका भी विचार किया गया है। जहाँ कहीं तुलना सम्भव न हो सकी है, वहाँ जातियों के पृथक अध्ययन के द्वारा बात स्पष्ट की गयी है।

इसके पश्चात् कुछ पेशेवार जाति संबंधी लोकोक्तियों पर विचार किया गया है। प्रत्येक वृत्ति तथा उन वृत्तियों के कर्ताओं की प्रकृति-प्रवृत्ति आदि के सम्बन्ध में प्राप्त लोकोक्तियों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन सविस्तार तृतीय अध्याय में किया गया है। उदाहरण के लिए नाई के संबंध में जो विश्वास और लोकोक्तियाँ तेलुगु और हिंदी प्रान्तों में प्रचलित हैं, उनमें साम्य है। दोनों प्रदेशों में नाई को धूर्त कहा गया है। इस संबंध में हिंदी और तेलुगु की तुलनीय लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं---

"मनुष्यों में नाई, पक्षियों में कौआ"---"मानवुललो मंगलि, पक्षुललो काकि"

साम्यता के साथ ही जो भी वैषम्य दोनों प्रकार की लोकोक्तियों में मिलता है, उसको भी स्पष्ट किया गया है। नाई के अतिरिक्त धोबी, सुनार, लुहार, ग्वाला आदि कतिपय व्यवसाय वाली जातियों के संबंध में प्राप्त होने वाली कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए साम्य और वैषम्य को चित्रवत स्पष्ट करने की चेष्टा की गयी है।

२.११.३. मानव जीवन मंबंधी लोकोक्तियाँ:

इस अध्याय में नीति-उपदेश संबंधी, मानवीय विश्वासों संबंधी, और गार्हस्थ्य जीवन संबंधी लोकोक्तियों का पूर्ण साम्य शुद्ध कथनात्मक, अन्योक्तिवत् प्रयुक्त अलंकृत शैली आदि की कोटियों में विभक्त करके सुचारु ढंग से अध्ययन किया गया है। यहाँ पर इन लोकोक्तियों का अध्ययन करना अवांछित है क्योंकि पाँचवें अध्याय में विस्तार के साथ विचार विश्लेषण किया गया है।

२.११.४. पशु-पक्षियों संबंधी लोकोक्तियाँ :

इस प्रकार की लोकोक्तियाँ दोनों क्षेत्रों में काफी मात्रा में प्राप्त होती ही हैं। लेकिन इस कोटि की लोकोक्तियों के लिए पृथक अध्याय इसलिए नहीं रखा गया है क्यों कि द्वितीय और पंचम अध्यायों में यथास्थान आवश्यक विवेचन कर दिया गया है।

२.११.५. अन्य प्रकार की लोकोक्तियाँ :

पाँचवें अध्याय में कथात्मक लोकोक्तियों का वर्गीकरण करके हिंदी और तेलुगु क्षेत्रों में प्राप्त लोकोक्ति कथाओं की तुलना करते हुए साम्य और वैषम्य को दिखाया गया है। अतः यहाँ तत्सम्बन्धी लोकोक्तियों का विवेचन आनावश्यक है।

वर्गीकरण की तालिका के अधार पर लोकोक्तियों का एक अन्य दृष्टि से भी अध्ययन सम्भव है और वह है शैलीगत अध्ययन। इसके अंतर्गत लोकोक्तियों का गद्यात्मक, पद्यात्मक, युग्मात्मक आदि दृष्टियों से अध्ययन संभव है। इन शीर्षकों को उपविभाजन करके प्रत्येक दृष्टि से आगे अध्ययन किया गया है।

२.११. लोकोक्तियों का शैलीगत अध्ययन :

जिस प्रकार रसहीन काव्य का महत्व न्यून है उसी प्रकार कलात्मक अभिव्यक्ति के अभाव में लोकोक्ति का भी महत्व घट जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जब तक लोकोक्ति के कथन में एक प्रभावोत्पादक विशिष्ट शैली अपनाई नहीं जाती, तबतक उसकी सार्थकता में पूर्णता नहीं आती। यह तो सर्वमान्य तथ्य है कि लोकोक्तियों के इतने लोकप्रिय ग्रामीण जनता या लोकमानस के गले के हार बन गयी है। लोकोक्तियों के इतने लोकप्रिय होने का कारण यह है कि या तो वे जन सामान्य के जीवनगत वों अनुभवों से उद्भूत तथ्य कथन हैं या किसी विशेष महापुरुष या ज्ञानी के द्वारा लोक के सम्बन्ध में अनोखे ढंग से व्यक्त की गयी उक्तियाँ हैं। यह जन साधारण के लिए असंभव है कि प्रत्येक मामूली बात को हमेशा के लिए याद रखे। यह **क्रिया** तभी संपन्न या संभव हो सकती है जब कि ऐसे कथनों को याद करने में सुविधा हो। यह सुविधा आम जनता केलिए तभी प्राप्त हो सकती है जब कोई भी बात पद्यात्मक हो या गद्यात्मक होते हुए उनमें तुक मिलती हो, उससे किसी सूत्र की अभिव्यक्ति हो, या शैली तुलनात्मक हो या अलंकृत हो। यदि **अभिव्यक्ति पद्यात्मक हो** तो उसमें छंद, लय, तुक आदि का भी समावेस होना कोई अतिशय की बात नहीं है। कुछ लोकोक्तियाँ खंडित पद्य और कुछ पूर्ण पद्यों के रुप में भी हो सकती हैं। इसके अलावा कुछ लोकोक्तियों की पृष्ठभूमि में प्रसिद्ध लोक-कथाएँ या अन्य कथाएँ हो सकती हैं। इस प्रकार यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि लोकोक्तियाँ तभी लोकप्रिय या लोक प्रसिद्ध हो सकती हैं जब उनके कहने का ढ़ंग अनोखा हो या उनकी अभिब्यक्ति की शैलो विशिष्ट और प्रभावोत्पादक हो। लोकोक्ति अपनी अर्थवत्ता के कारण अपना क्षेत्र व्यापक से व्यापकतर तथा व्यापकतर से व्यापकतम बनाती जाती हैं। इनके माध्यम से लक्षित होने वाला अर्थ उक्तिबद्ध होकर प्रभावोत्पादक होती है। इनमें प्रभावोत्पादकता लाने के लिए अनेक अप्रस्तुत विधानों का संयोग होना अत्यावश्यक है। यह लय, तुक, छंदक्रम, अलंकार, तुलना, संवाद आदि के द्वारा ही संभव है।

इस अध्याय का मूल उद्देश्य यह है कि हिंदी और तेलुगु क्षेत्रों में उपलब्ध लोकोक्तियों का शैलीगत अध्ययन तुलनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया जाय। इसके अंतर्गत लय, छंद, तुक, संवाद आदि की विवेचना तुलनात्मक ढंग से नीचे प्रस्तुत किया गया है।

२.१२.१. पूर्ण छंदवाली लोकोक्तियाँ :—

तेलुगु और हिंदी क्षेत्रों में उपलब्ध कुछ लोकोक्तियाँ पूर्ण छंदों के रूप में हैं। यह छंद विधान दोनों भाषाओं में भिन्न है। हिंदी क्षेत्र के लोक-मानस के अत्यंत निकट या प्रिय छंदों में से दोहा और चौपाई मुख्य हैं। इसके अलावा कुछ मात्रिक छंद भी मिलते हैं। तेलुगु प्रान्त के साहित्य में संस्कृत के वर्णवृत्त अधिक मान्य हैं। जहाँ हिंदी आरम्भ से ही अधिकांशतः मात्रिक छंदों से संपन्न है, वहाँ तेलुगु भाषा में वर्णवृत्तों का ही प्रचलन प्रायः दर्शनीय है। यद्यपि तेलुगु क्षेत्र के लोक साहित्य में संस्कृत के वर्णवृत्तों की अपेक्षा मात्रिक छंदों की ही लोकप्रियता अधिक है, फिर भी दोनों भाषाओं में मिलने वाले इस प्रकार के छंदों में पर्याप्त भिन्नता है। इससे यह नहीं कहा जा सकता कि उनम साम्य नहीं है। तेलुगु और हिंदी क्षेत्रों से संग्रहीत छंदबद्ध लोकोक्तियों की जो तुलना नीच प्रस्तुत की गई है, उसमें भाव-साम्य पर ध्यान नहीं रखा गया है, क्योंकि प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र लोकोकिक्यों का शैलीगत अध्ययन तक ही सीमित है। आगे क्रमशः इन छंदों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

(१) ७ मात्राओं वाले छंद — 'तेलुगु' — माटकु सोंपु।
पाटकु इंपु ॥
'हिंदी' — माया अंट।
विद्या कंट ॥

(२) ८ मात्राओं वाले छंद — 'तेलुगु' — मति लेनि माट।
शृति लेनि पाट ॥
'हिंदी' — जाको रेरी।
ताको सेरी ॥

(३) ९ मात्राओं वाले छंद — 'तेलुगु' — चदुवु रानि मोद्दु।
कदल लेनि येद्दु ॥
'हिंदी' — राज सत्ला को।
काज पल्ला को ॥

(४) १० मात्राओं वाले छंद — 'तेलुगु' — इंटिकि मुसलि कीडु।
येटिकि मोसलि कीडु ॥
'हिंदी' — मर्द को खटाई।
नारि को मिठाई ॥

(५) ११ मात्राओं वाले छंद — 'तेलुगु' — तानु वलचिंदि रंभा।
तानु मुनिगिंदि गंगा ॥
'हिंदी' — राजा का दूसरा।
बकरी का तीसरा ॥

इसी प्रकार तेलुगु और हिंदी में १२, १४ मात्राओं के छंदों में निबद्ध लोकोक्तियाँ समान रूप से मिलती हैं। परन्तु हिंदी में चौपाई छंद में निबद्ध लोकोक्तियाँ सोलह मात्राओं की हैं। जैसे––

"पांच पंच मिलि कीजै काज।
हारे जीते न होइ लाज॥"

तेलुग प्रान्त में भी १६ मात्राओं वाले भी मिलते हैं, किन्तु नहीं के बराबर हैं। अतः यहाँ पर उदाहरण देना कठिन है। कुछ विषम मात्रिक छंदों में निबद्ध लोकोक्तियाँ दोनों प्रान्तों में उपलब्ध हैं। ऐसे छंदों की प्रथम पंक्ति में कम मात्राएँ और द्वितीय पंक्ति में अधिक मात्राएँ होती हैं। ये नीचे तेलुगु और हिंदी में प्राप्त दो-चार लोकोक्तियाँ उदाहृत हैं:––

(१) तेलुगु १––"चदुवु चारेंडु। (८ मात्राएँ)
बलपालु मूरेंडु॥" (९ मात्राएँ)

२––"सरि लेनि तगवु। (८ मात्राएँ)
हास्यमु लेनि नगवु॥" (१० मात्राएँ)

(२) हिंदी १––"दुपहरिया पीर। (९ मात्राएँ)
राँधे दलिया हो जाय खीर॥" (१६ मात्राएँ)

२––"मीजे गान। (७ मात्राएँ)
भय असनान॥" (८ मात्राएँ)

३––"मन चंगा। (६ मात्राएँ)
तो कठौती में गंगा॥" (१३ मात्राएँ)

उक्त उदाहरणों के विपरीत तेलुगु में कुछ ऐसी छंदात्मक लोकोक्तियाँ मिलती हैं जिनकी पहली पंक्तियों में ज्यादा मात्राएँ तथा द्वितीय पंक्तियों में कम मात्राएँ होती हैं। हिंदी में ऐसे उदाहरण बहुत कम ही मिलते हैं। तेलुगु के दो उदाहरण इस प्रकार हैं––

१. कत्ति तलगड काट। (१० मात्राएँ)
कलं निजं कादु॥" (८ मात्राएँ)

२. कडपुलो कत्तेर। (९ मात्राएँ)
नोट चवकेर॥" (७ मात्राएँ)

२.११.२. खंडित छंदों या छंदांशों के रूप में उपलब्ध लोकोक्तियाँ :

तेलुगु और हिंदी प्रान्तों में कुछ ऐसी लोकोक्तियाँ भी प्राप्त होती हैं जो खंडित छंद या पद्यांश हों। य किसी प्रसिद्ध कवि के छंदों के अवशिष्टांश हैं और लोकोक्ति के रूप में छंद से विच्छिन्न हो कर प्रचलित हो गए हैं। कुछ ऐसी भी लोकोक्तियाँ हैं जो स्वभावतः छंद के अंश के रूप में ही रचित हुई और प्रचलित हो गई।

हिंदी में कबीर, तुलसी, सूर आदि कवियों के छंदांश लोकोक्तिवत् प्रयुक्त होने लगे हैं जिनके ये कुछ उदाहरण हैं :—

१. "पराधीन सपनेहूँ सुख नाहीं" — तुलसी।
२. "प्राण जाहिं पर वचन न जाहीं" — तुलसी।
३. "दो पाटन के बीच में साबित बचा न कोय" — कबीर।
४. "डूबा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल" — कबीर।
५. "प्रेम करि काहू सुख न लयो" — मीराबाई।
६. "सूरदास प्रभु खल कारी कामरि चढै न द्वजो रंग"— सूरदास।
७. "जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी फिर जहाज पै आवै" — सूरदास।

आन्ध्र प्रान्त में नन्नय्या, तिक्कन्ना, पेद्दन्न, वेमन्न आदि के छंदांश इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इन कवियों की कुछ छंदाश लोकोक्तियाँ उदाहृत हैं :—

१. "गत कालमु मेलु वच्चु कालमु कटेन्" — नन्नय्या।
२. "दासि पुत्रुडैन कानि कासुगलवाड राजु" — पेद्दन्ना।
३. "अनवु गानि चोट अधिकुलमनरादु" — वेमन्ना।
४. "कामि कानि वाडु मोक्षगामि काडु" — वेमन्ना।
५. "अन्निदानमुलकन्न नन्नदानमें गोप्प,
कन्न तल्लिकन्न धनमु लेदु।" — वेमन्ना।

इस प्रकार की कुछ हिंदी और तेलुगु की लोकोक्तियों की पृथक् रूप से संक्षिप्त सूचियाँ परिशिष्ट- में दी गई हैं।

कुछ ऐसी लोकोक्तियाँ जो छंदाश के रुप में तो हैं ही, किन्तु या तो उनके कवियों के नाम अज्ञात हैं या उसी रूप में उनका सृजन हुआ है जिस रूप में वे प्राप्त हैं। हिंदी की कुछ लोकोक्तियाँ प्रथम या द्वितीय पंक्ति के रूद में प्राप्त हैं जिनमें कुछ उदाहरण नीचे द्रष्टव्य हैं—

१. 'सात-पांच की लाकड़ी एक जने का बोझ'।
२. 'बाप न मारी मूसरी, बेटा तीरंदाज'।।

दोहे के अतिरिक्त अन्य छंदों के अवशिष्ट रूप भी मिलते हैं। ये मात्रिक छंद हो सकते हैं। उदाहरण—

१. नई जवानी मांझा ढीला (१६ मात्राएँ)
२. लेना एक न देना दो (१४ मात्राएँ)
३. घर की मुर्गी दाल बराबर (१६ मात्राएँ)

इस प्रकार के अनेक छंदांश हिंदी में लोकोक्ति के रूप में मिलते हैं।

तेलुगु प्रान्त में ऐसी छंदबद्ध लोकोक्तियाँ उपलब्ध हैं जो वहाँ के जन-जीवन की भावाभिव्यक्ति के साधन हैं। उमका एक छंद लोकोक्तिवत प्रचलित मिलता है। अब न पूरे छंद का रूप और स्रोत खोज ना संभव है और न उस के कवि का नाम। ऐसे कुछ उदाहरण ये हैं :—

१. "ओड्डुन वोसिन उदकमु वले" (१४ मात्राएँ)
२. "उन्न माटंटे उलकेककुव" (१६ मात्राएँ)
३. "उन्न लोभि कंटे लेनि त्यागि मेलु" (१८ मात्राएँ)

२.१२.३. **लय** :

जीवन क्रम में लय के संयोग हो जाने से उसमें एक विशेष आनन्द या सरसता आ जाती है। जीवन तमी आनन्दमय हो सकता है, जब कि उसके कृम में रसीली घटनाएँ बीतती हैं या अन्य कोई विशेष कारण हो। जैसे बेसुरा राग निकलने से बंशी का आनंद किरकिरा हो जाता है और उसका महत्व बिल्कुल ही नहीं रह जाता है', उसी प्रकार जीवन रूपी मुरली का राग बेसुर और लय हीन हो जाने से नीरस मरुभूमि की तरह नष्ट हो जाता है। इससे जीवन की सार्थकता नहीं रह जाती। सामान्य मानव-समाज अपनी बोली के शब्द गठन या उक्तियों को रसीले तथा प्रभावोत्पादक बनाने के लिए सुर और लय का आ श्रय पाताहै और इन्हीं दो महत्वपूर्ण वस्तुओं को मूल में रखकर अपन मुँह से निकलनेवाले प्रत्येक वक्तव्य को प्रभाव-शाली बनाकर अन्य जनता को अपनी तरफ आर्काषित करता है। तभी उसका जीवन आनन्दमय होता है। अनादिकाल से साधारण मनुष्य कीयही प्रवृति रही है कि शब्द में उत्पन्न होने वाली लय इस जगत की प्राकृतिक लय के साथ संबद्ध होती हुई प्राणों के साथ सामंजस्य करती है।

"लय" शब्द की परिपूर्ण या सूक्ष्म परिभाषा प्रस्तुत करना तो संभव नहीं है, किन्तु स्थूल परिभाषा प्रस्तुत करते हुए डा. पुत्रूलाल शुक्ल ने कहा है—"एक विशिष्ट प्रकार की अविच्छिन्न प्रवध्यमान नियमित सुरलहरी या ध्वनि समूह को लय की संज्ञा दी गयी है।"[6] लय की निष्पत्ति गति, प्रवाह और यति विराम के पारस्परिक एवं कृमिक संधात से होती है। लय की एक महत्वपूर्ण विशेषता है उसकी सम्भरण शक्ति (Power of Intgration) जिसके द्वारा वह विभिन्न तत्वों को संग्रथित करती हुई संश्लिष्टता प्रदान करती है। उसका एक और उल्लेखनीय गुण है अपने कृमिक संस्पर्श से भावावेग को उद्दीप्त करने की क्षमता।[7] लय एक सुनिश्चित शब्द गति का परिणाम है। लोकोक्ति की प्रमावोत्यादकता में लय के संयोग से वृद्धि हो जाती है।

लय से युक्त लोकोक्तियाँ तीन प्रकार की हो सकती हैं :—

(१) लय और तुक से युक्त लोकोक्तियाँ
(२) तुक-मुवत लयात्मक लोकोक्तियाँ
(३) तुकों की झड़ी से युक्त लोकोक्तियाँ।

---

6. ले. डा. पुत्तूलाल शुक्ल "मुक्तक छंदों का विश्लेषण" (हिंदी अनुशीलन, वर्ष ४, अंक ३)।
7. हिंदी साहित्य कोश (प्रथम भाग) पृ. ६८०–६८१।

१.१२.४. लय और तुक से युक्त लोकोक्तियाँ

लय और तुक–दोनों से युक्त जो लोकोक्तियाँ तेलुगु और हिंदी प्रदेशों में प्राप्त होती हैं, वे दो प्रकारों की मिलती हैं। एक छंदात्मक हैं और दूसरी ऐसी लोकोक्तियाँ हैं जिनमें एक ही वाक्य हो और उसमें दो या अधिक तुकान्त शब्दों का प्रयोग हो और इस तुकान्त शब्द समह को लय एक सूत्र में बांधकर रखती हो। हिंदी लोकसाहित्य के प्रसिद्ध विद्वानडा. सत्येंद्र के अनुसार "इस लय को तुक और भी सुविधामय बना देती है"[3]। किसी भी लोकोक्ति में शब्द के तुकान्त होने से सुविधा यह होती है कि जन-साधारण को बडे ही शौक के साथ आसानी से याद करने और उपयुक्त स्थानों पर उनका पुनः प्रयोग करने का मौका मिलता है। इस संसार की यह एक प्रवृति रही है कि बच्चों को विद्यारंभ से पहले घर पर किसी बात को सिखाने में बहुधा तुकान्त शब्दों का सहारा लिया जाता है। इसके मूल में यही कारण दिखाई देता है कि ऐसे वाक्यों या घटनाओं को याद करना सुलभ हो जाता है। अनेकों का अनुभव भी इसी बात को सिद्ध करता है कि तुकान्त कविता के अध्ययन में जो आनन्द प्राप्त होता है, वह अन्यत्र प्राप्त होना संभव नहीं है। इसी प्रकार तुकात्मक लययुक्त लोकोक्तियों की प्रभावोत्पादकता के सामने अन्य लोकोक्तियों का प्रभाव उसी प्रकार फीका लगता हैं, जैसे पूर्णिमा की चांदनी के सामने नक्षत्र टिमटिमाते हुए लुप्त हो जाते हैं। जो लोकोक्तियाँ जन-साधारण के गले के हार बनी हुई हैं, उनमें अधिकांशतः यह देखा गया है कि वे तुक और लय दोनों आभूषणों से अलंकृत हैं। यहाँ तेलुगु और हिंदी के दो-दो उदाहरणों का उल्लेख करना अधिक संगत होगा।

तेलुगु : १. ऊरु अंता उल्लि, नीवेंदुके तल्लि। (उल्लि और तल्लि में तुक है)।
२. येकुलेनि आराटमु, मोगुडु लेनिपोराटमु। (आराटमु और पोराटमु में तुक है)।
३. उल्लि तोटलो मल्लि वले। (उल्लि और मल्लि में तुक है)।

हिंदी : १. स्यारी आप ही ते न्यारी (स्यारी और न्यारी में तुक है)
२. अगायो सो सवायो। (अगायो और सवायो में तुक है)

इस प्रकार की अनगिनत लोकोक्तियाँ हिंदी और तेलुगु–दोनों ही क्षेत्रों में मिलती हैं।

१.१२.५. तुक-मुक्त लयात्मक लोकोक्तियाँ

लोकोक्तियों के उक्त प्रकार के समान इस कोटि की लोकोक्तियों में भी दो विशिष्ट गुण दर्शनीय हैं। यद्यपि लोकोक्तियाँ एक ही वाक्य की होती हैं फिर भी कुछ में लय का समावेश है, परन्तु तुक नहीं। लोकोक्ति कथन के वाक्य को लय उसी प्रकार का सौंदर्य प्रदान करती है, जो सौंदर्य कविता को अलंकारों के द्वारा प्राप्त है। काव्य में अलंकारों की प्रधानता को स्पष्ट करते हुए हिन्दी साहित्य के रीतिकालीन आचार्य केशव ने कहा भी है कि

"जदपि सुजाति सुलच्छनी, सुबरन सरस सुवृत।
भूषण बिनु न विराजहीं, कविता बनिता मित्त॥"

केशव की इस उक्ति को लोकोक्तियों के सम्बन्ध में भी उचित ठहराया जा सकता है कि लय और तुक के अभाव में लोकोक्तियाँ सोहती नहीं हैं।

---

8. डा. सत्येन्द्र : ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन, पृ. ५३२।

लोकोक्तियों में निश्चित मात्राओं की संख्या ही लय को उत्पन्न करती है। इस प्रकार के निश्चित मात्राओं से युक्त लयात्मक लोकोक्तियाँ तेलुगु और हिन्दी प्रदेशों में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। उनके दो-चार उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं। :

१५ मात्राओं वाली : १. भक्ति लेनि पूज पत्रि चेट्टु (तेलुगु)
२. नकटा जिये बुरे हवाला (हिन्दी)

१६ मात्राओं वाली : १. भाग्यमुंटे बंगारं तिंटारा (तेलुगु)
२. खाय खराम के गुण गाए यार के (हिंन्दी)

१७ मात्राओं वाली : १. चीर सिंगारिचे टप्पटिकि पट्टणं कोल्ल बोयिदंट (तेलुगु)
२. बनिया के बहकाये और धोबी के फटकारे (हिंन्दी)

इस प्रकार की तुक-मुक्त और लय युक्त लोकोक्तियाँ दोनों प्रदेशों में अनेकों मिलती हैं।

१.१२.६. तुकों की झडी से युक्त लोकोक्तियाँ

जहाँ तक तुकों की झड़ी से युक्त लोकोक्तियों का सम्बन्ध है, उसमें चरणों की कोई निश्चित संख्या या उनकी सीमा नहीं होती। अर्थात् इनमें चरणों की संख्या सामान्यत : अधिक मात्रा में होती है। प्रत्येक चरण में तुकों के होने के कारण उनकी एक झड़ी-सी लग जाती है। तुकों की यह झड़ी प्रवाह और लय के साथ अग्रसर होती चली जाती है।

हिन्दी क्षेत्र में प्राप्त होने वाली कुछ ऐसी लोकोक्तियों में समस्त धर्मवाले कथनों की अभिव्यक्ति होती है। तुकों के समावेश होने से कथन या उक्ति चमत्कारपूर्ण होती है और इसीलिए यह अधिक प्रभावोत्पादक भी बन जाती है। हिंदी प्रान्त में तुकयुक्त पद्यात्मक कथनों को तुक्के कहते हैं। तेलुगु में इस प्रकार की उक्तियों के लिए इस प्रकार का कोई विशेष नामकरण नहीं हुआ है। ऐसी तुकात्मक उक्तियों से शायद ही कोई भी प्रान्त वंचित है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक प्रान्त में इस प्रकार की उक्तियाँ प्रायः मिल जाती हैं। राजस्थान प्रान्त में इस प्रकार की उक्तियाँ मिलने की बात डा० कन्हैयलाल सहल ने स्पष्ट कही है[9]। उत्तर प्रदेश के ब्रज प्रान्त में प्रचलित एक तुक्क यहाँ उदाहरण के रूप में द्रष्टव्य है :—

पांति पूआ की
खेती कूआ की
खरि दूंआ की
मू मड़िया कारौ
अलीगढ़ को तारौ
चाक लवारौ
चौबे भारौ
चलतौ ज्वारौ
ज्वान हरहारौ

—अच्छे लगतेहैं[10]।

---

9. राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन, पृ० ६०।

10. राष्ट्रवाणी—मार्च १९५६ में लोकोक्ति सम्बन्धी लेख से उद्धृत।

जिस प्रकार का हिन्दी का तुक्का ऊपर दिया गया है, इस प्रकार के तुकों की बहु संख्या से युक्त कहावतें तेलुगु प्रान्त में बहुत कम मिलती हैं। लेकिन तेलुगु में दो-दो तुकों वाली कहावतें पर्याप्त संख्या में प्राप्त हैं। यहाँ उदाहरण के रूप में तेलुगु की दो लोकोक्तियाँ दी गयी हैं :––

१. येंत पंडिना कूटिके,
येंत उंडिना काटिके।

२. तमलमु वेयनि नोरू,
कमलमु पूयनि नीरू।

इनके अलावा हिंदी प्रान्त में कुछ ऐसी भी लोकोक्यिाँ प्राप्त हैं, जिनमें तुकों की शृखंला तो नहीं है, परन्तु तथ्यों की एक लयात्मक शृंखला के साथ अन्त में इन सभी का एक निष्कर्ष वाक्य रहता है। इस प्रकार की उक्तियाँ तेलुगु के प्रसिद्ध द्विपद काव्य के रचियता वेमन्ना की कविता में प्रचुर मात्रा मे मिलती हैं। साथ ही तेलुगु के अन्य नीति-शतकों में भी ऐसे उदाहरण मिलते हैं। आगे उदाहृत उक्तियों से यह शैली स्पष्ट हो जाती है।
हिंदी :––

नल को पानी
बिजली की रोशनी
रेल की सवारी
अड़ुवा बर्द्ध
सड़ुवा नातो
पड़ुवा खेत
व्याह में बातें
खेत में अरहर

––ये भी गैर खराब की हैं।

(अड़ुवा––अड़ने वाला : सड़ुवा––पत्नी की बहिन का पति साढू कहलाता है; पड़ुवा––जिसमें सिंचाई की सुविधा न हो।

१. "आडुदानि माट, गोड बेट्टनयट्लु।
पुरुष वरुनि माट पूरि तड़िक।
स्त्रील नेर्पु मगल जीकाकु परचुरा
विश्वदाभिराम विनुरवेमा।" –– वेमन्ना।

२. "कनरानिदि परतत्वमु
विनरानिदि गुरुनि निंद, विनि कनियुनु दा
नन रानिदि पेद्दल गति
मन रानिदि मान हानि महिलो वेमा।" –– वेमन्ना।

३. "काकि कन्न बिड्ड काकिकी यंदंबु
कोति कन्न बिड्ड कोति कंदं
योगि कन्न कललु योगिके यंदंबु
विश्वदाभिराम विनुरवेमा।।" ––वेमन्ना।

४. "अन्निदानमुलकु नन्न दानमे गोप्प
कन्नतल्लि कन्न घनत लेदु
एन्न गुरुनि कन्न नेक्कुव लेदया
विश्वदाभिराम विनुरवेमा।" —वेमन्ना।

तुक से युक्त पद्यात्मक लोकोक्तियाँ हिंदी के प्रसिद्ध कवि "मैथिल कोकिल" विद्यापति की पदावली में भी प्राप्त हैं। कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं।

१. "जाबे रहइ धन अपना हाथ
ताबे से आदर कर संग साथ।" —विद्यापति।

२. "हृदयक वेदन बान समान।
आनक दुःख आन नहीं जान।" —विद्यापति।

३. "अपने कर हम मूंड मुडाएल,
कानु से प्रेम बढाई।" —विद्यापति।

इस प्रकार की अनेक लोकोक्तियाँ तेलुगु और हिंदी साहित्य में प्रचुर मात्रा में प्राप्त हैं। उदाहरण के रूप में दो-चार उक्तियाँ प्रस्तुत करना ही पर्याप्त होगा।

१.१२.७. संवादात्मक लोकोक्तियाँ

संवादात्मक लोकोक्तियों की शैली प्रायः वार्तालाप या प्रश्नोत्तर की शैली होती है। इस प्रकार की लोकोक्तियाँ कम से कम दो खंडों में विभक्त की जा सकती हैं। ऐसा लगता है-कि ऐसी लोकोक्तियों का सृजन कम से कम दो व्यक्तियों द्वारा ही हुआ होगा। एक व्यक्ति प्रश्नकर्ता के रूप में रहा होगा और दूसरा समाधान प्रस्तुत करने वाले के रूप में। इन लोकोक्तियों की सृष्टि किसी विशिष्ट वार्तालाप के द्वारा ही संभव दीखता है। उसी विशिष्ट वार्तालाप के दो मुख्य वाक्य लोकोक्ति का रूप धारण करके लोक प्रिय हो गए होंगे। इस विशेष प्रकार की लोकोक्तियों से न तेलुगु प्रान्त मुक्त है और न हिंदी प्रदेश। दोनों ही प्रदेशों में ऐसी लोकोक्तियाँ मिलती हैं। इन लोकोक्तियों के भी भिन्न प्रकार हो सकते हैं। इन प्रकारों में सबसे सरल वह है जिसमें एक प्रश्न और एक उत्तर की योजना संबद्ध हो। तेलुगु प्रदेश में इस प्रकार की अनेकों लोकोक्तियाँ मिलती हैं। उदाहरण के लिए दोनों ही प्रदेशों में प्राप्त होने वाली इस प्रकार की लोकोक्तियों के दो-दो उदाहरण प्रस्तुत करना समीचीन होगा।

हिंदी: १. "बंदर क्या जाने
अदरक का स्वाद।"

२. "अंधा क्या चाहे?
दो आँखे

३. "नाई नाई बाल कितने?
यजमान आगे आगे जाते हैं।"

तेलुगु: १. "एक्कडुन्नावे कंबली?" अंटे
"वेसिन चोटे उन्नानं गोंगली।" अन्नट्टु

२. "शुभं पलकरा पेंड्लि कोडका?" अंटे
"रेंड्लि कूतुरु मुंड एक्कड" अन्नट्लु

३. "एमि चेसुकोनि बुतुकुदुनम्मा ?" अंटे
नोरु चेसुकोनि बुतुकम्मा।" अन्नट्लु
४. "एट्लु वर्धिल्लने महातल्ली ?" अंटे वेधवमुंड
"नीवु कूडा ना मादिरे वद्धिल्ल" मन्नट्लु

इस प्रकार की लोकोक्तियों की पूर्ण सूची दी जाय तो वही एक बृहदाकार धारण करेगा। अतः उक्त उदाहरणों तक सीमित रखना ही लेखक का ध्येय है। आगे कुछ संख्यात्मक लोकोक्तियों पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

१.१२.८. संख्यात्मक लोकोक्तियाँ

संख्यात्मक लोकोक्तियों में किसी एक संख्या वाचक का प्रयोग आवश्य होता है। साथ ही एक लोकानुभव से उद्भूत सत्य का निर्देश होता है। इस प्रकार की लोकोक्तियाँ तेलुगु और हिंदी प्रान्तों में भी उपलब्ध हैं। इन लोकोक्तियों में जो संक्ख्या वाचक का प्रयोग मिलता है वह कभी न कभी किसी अनुभव से ही हुआ होगा।

हिंदी प्रान्त में यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के प्रति छल करता है या चालाकी दिखाता, है, तो दूसरा व्यक्ति चालाकी दिखाने वाले का तिरस्कार करते हुए अपनी बुद्धिमत्ता की श्रेष्ठता बताते हुए ३६० संख्या का प्रयोग करता है और कहता है कि——

"तुम जैसे ३६० देखे हैं।"

तेलुगु प्रान्त के गोदावरी जिले में इस प्रसंग में एक लाख नब्बे का प्रयोग होता है और कहा जाता है कि——

"लक्षा तोंभै मंदिनि चूशानु"

रायलसीमा के चित्तूर जिले में इस संख्या के स्थान पर एक सौ इकहत्तर संख्या का प्रयोग मिलता है।

दोनों ही क्षेत्रों में पंचों के लिए पाँच शब्द का प्रयोग मिलता है। उनकी असली संख्या पांच भी हो सकती है, या उससे कम और अधिक होना भी संभव है। इसके अतिरिक्त दोनों क्षेत्रों में चार शब्द का भी बहुधा प्रयोग देखा जाता है। तेलुगु में कहा गया है——

"नलुगुरि तो पाटु नारायणा, कुलं तो पाटु गोविन्दा"

अर्थात् यदि सभी लोगों की भलाई हो तो हमारी भी भलाई होगी। इसी प्रकार हिंदी में भी कहा गया है——

"चार आदमी कहै तो सिर भावै।"

'पांच' संख्या का प्रयोग हिंदी की निम्न एक लोकोक्ति में हुआ हैं——

"पाँच पंच मिलि कीजै काज, हारे जीते हो नहीं लाज"

तेलुगु में ५ के स्थान में १० का प्रयोग इसी प्रकार की एक लोकोक्ति में मिलता है। किन्तु भाव भिन्न है——

"पदिमंदी नडचिंदि बाट, पदिमंदी पलिकिंदि माट"

अर्थात् जिस रास्ते को सभी लोग अपनाते हैं वही सच्चा रास्ता है और दसों व्यक्तियों की सम्मति ही मान्यता है। दस संख्या वाली और भी १०–१२ लोकोक्तियाँ तेलुगु में मिलती हैं। तेलुगु क्षेत्र की एक लोकोक्ति के अनुसार सात शब्द बोलने या सात कदम रखने से आदमी का गुण पहचाना जा सकता है——

"एडु माटलु मात्लाडिना, एडु अडुगुलु वेसिना गुणं तेलुस्तुंदि"

'राजस्थानी कहावतें' पुस्तक के एक पद्य भाग में सात संख्याओं का प्रयोग मिलता है जो कहावतों के रूप में भी चल पडा है।

"पहले सुख नीरोगी काया। दूजो सुख हो घर में माया।।
तीजो सुख पुत्र अधिकारी। चौथो सुख पतिव्रता नारी।।
पांचवें सुख राजा में पासा। छठो सुख सुस्थानो बासा।।
सातवों सुख विद्या फलदाता। ए सातों सुख रच्यो विधाता।।"[11]

तेलुगु की एक युग्मात्मक लोकोक्ति में ४ और ७ का प्रयोग मिलता है---

"नव्वु नालुगु[12] विधाल चेटु, एड्पु एडु विधाल चेटु"

अर्थात् हंसी के कारण चार प्रकार से नाश होता है और रोने से सात प्रकार से।

किसी भी वस्तु या व्यक्ति की अमूल्यता या अज्ञानता को सिद्ध करने के लिए प्रायः दोनों भाषाओं में "साढे तीन" का प्रयोग होता है। विशेषता इस बात की है कि तेलुगु में भी इसके स्थान पर तेलुगु शब्द प्रयुक्त न होकर हिंदी के शब्द ही प्रयोग में पाये गये हैं। हिंदी प्रान्त में किसी व्यक्ति को धोखेबाज या चोर ठहराने के लिए ४२० संख्या का प्रयोग होता है। तेलुगु में भी इस संख्या के पहले अतिशयोक्ति की प्रष्टि से "श्री" शब्द जोड़ कर कहा जाता है कि "श्री ४२०"। ४२० संख्या को तेलुगु में न कहकर अंग्रेजी के शब्दों में "श्री फोरटुअन्टी" कहते हैं।

हिंदी क्षेत्र में संख्यात्मक लोकोक्तियों में "तीन पाँच करना", "नौ दो ग्यारह होना", "उन्नीस बीस का फरक", "तीन का तेरह होना" आदि लोकोक्तियाँ प्रचलित हैं। यद्यपि तेलुगु प्रान्त में ऐसी लोकोक्तियों की कमी है, लेकिन उदाहरण के लिए दो-तीन उक्तियाँ मिल ही जाती हैं। जैसे---

१. "ओकटी ओकटी पदकोंडु" (एक और एक ग्यारह होते है)
२. "नूटिकि तोंभै तोम्मिदिकि गल्ल तेडा" (सौ और निन्यानबे का फरक) आदि।

तेलुगु में अधिक संख्यावाली बात को व्यक्त करने के लिए ९९ संख्या का प्रयोग होता है। हिंदी की एक विशिष्टता ३, ६ संख्या ओं की है। घनिष्ठ मित्रता को बताने के लिए हिंदी में ६३ का और शत्रुता के लिए ३६ का प्रयोग होता है। मित्रता के सम्बन्ध में कहा जाता हैं---

"उनमें ६३ की-सी दोस्ती है" या वे ६३ की तरह रहते हैं।"

इसके विपरीत कथन इस प्रकार है ---

"उनमें ३६ की-सी शत्रुता है" या "वे ३६ की तरह रहते हैं।"

हिंदी तथा आन्ध्र प्रान्तों में ३, १३, ८, १८ अशुभ संख्याएँ मानी गयी हैं।

तेलुगु क्षेत्र में कुछ लोग ७ संख्या को अशुभ मानते हैं और कुछ इस संख्या को अत्यन्त श्रेष्ठ समझते हैं। इसके अतिरिक्त एक सामान्य मान्यता यह है कि सम संख्या शुभ का प्रतीक है और विषम संख्या अशुभ का।

तेलुगु और हिंदी दोनों ही क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न संख्याओं के आधार पा अनेक विश्वास और उक्तियां प्रचिलत हैं। ऊपर ऐसी कुछ प्रतिनिधि उदाहरणों का उल्लेख किया गया है। यद्यपि दोनों ही क्षेत्रों में संख्यात्मक उक्तियाँ उपलब्ध हैं, परन्तु उनमें साम्य बहुत कम है।

---

11. राजस्थानी कहावतें: एक अध्ययन, पृ० ९४।
12. कहीं-कहीं चार के स्थान पर चालीस का प्रयोग भी मिलता है।

१.१२.९ अध्याहार युक्त लोकोक्तियाँ :—

कुछ लोकोक्तियों में संक्षिप्तता लाने के लिए उद्देश्य या विधेय का अध्याहार भी प्राप्त होता है। जिसका अध्याहार मिलता है, वह वर्णित बस्तु से पूर्ण स्पष्ट हो जाता है, क्योंकि लोकमानस में यह प्रसंग सम्बन्ध सुदृढ़ रूप से बना हुआ होत। है। हिंदी और तेलुगु के दो-दो उदाहरण नीचे उद्धृत हैं।

तेलुगु : १. बयट पुलि इंट्टलो पिल्लि (आदमी)
२. पनिकि पंदिराजु तिंडिकि तिम्मराजु (आदमी)
३. तिंडिकि तिम्मराजु पनिकि पोतुराजु (आदमी)
४. इंटिलो पुलि बयट पिल्लि (आदमी)

हिंदी : सवाने को अगमनों, काम को पिछमनों (आदमी)
२. हलक से निकली खलक में पड़ी !।

कुछ विशेष अध्याहार वाली लोकोक्तियाँ भी तेलुगु और हिन्दी में मिलती हैं जिनके दो तीन उदाहरण नीचे दिये गये हैं।

तेलुगु : १. राल्लगुट्ट लोनि मणिवले (शोभा देने वाली वस्तु)
२. कड्पुन पुट्टिन बिड्डु कोंगुन कट्टिन रूक (कभी न कभी काम आते हैं।)
३. काकुल मध्य कोइल (शोभा देती है)

हिंदी : १. विद्या कंठ पैसा अंट (काम आते है)
२. राजा का दूसरा, बकरी का तीसरा (व्यर्थ है)
३. बय्यर का नहाना, मर्द का खाना (जल्दी होते हैं)

तेलुगु और हिंदी में प्राप्त होने वाली अध्याहार युक्त लोकोक्तियों की लम्बी-लम्बी सूचियां बन सकती हैं।

१.१२.१०. अलंकार :

शिष्ट समाज, मार्गी साहित्य को जो प्रधानता प्रदान करता है, वही जन सामान्य लोक साहित्य को देता है। यह माना हुआ सत्य कथन है कि लोक साहित्य के सभी अंगों में लोकोक्तियों का अत्यधिक महत्व है। जिस प्रकार शिक्षित समाज में काव्य को अलंकारों से सुसज्जित करता है, उसी प्रकार जन सामान्य भी अपने पहुंच के लोक साहित्य को अलंकृत किये बिना नहीं रह सकता है। अतः यह कहना अनुचित नहीं होगा कि शिष्ट साहित्य और लोक साहित्य दोनों ही के क्षेत्र में अलंकारों का महोन्नत स्थान है। प्रबन्ध के एक अन्य स्थान पर उल्लेख किया भी गया है कि काव्य के लिए अलंकारों की वही प्रधानता है, जो स्त्री के लिए आभूषणों की, सुवर्ण के लिए कांति और मित्र के लिए जाति की आवश्यकता है।[13]

अलंकारों के प्रयोग से लोकोक्ति के सौंदर्य और वृद्धि में चार चांद लग जाते हैं। आगे तेलुगु और हिंदी क्षेत्रों की अलंकारयुक्त लोकोक्तियों का अध्ययन किया गया है। इन लोकोक्तियों में तरह-तरह के अलंकारों का प्रयोग दर्शनीय है। अनुप्रास अलंकार के दो-दो उदाहरण नीचे दिये गये हैं।

हिंदी : १. जभी जोरू जोर की जोरु हूंटा और की
२. पूत के पाय पालने में दीखते हैं।

---

13. इस संबंध में केशव की उक्ति द्रष्टव्य है।

तेलुगु : १. एन्नडू एरुगनि वानिनि एद्दुल बेरानिकि पंपिते
येर्र येद्दु येनभै अन्नट्लु।

२. इत्तु पोटील इल्लु चेड्नु, वात नोप्पुल ओल्लु चेड्नु

३. ईगलु ईगले जोगुलु जोगुले

४. ईड्पु काक्कु ईड्पु चेतुलु, इतडेनम्मा इल्लटपु टल्लुड्

इसके अतिरिक्त लोकोक्तियों की दृष्टि से अधिक प्रभावशाली अलंकार क्रमालंकार है। ऐसी लोकोक्तियों में कई बातें एक साथ गिनकर क्रमानुसार उनके धर्म या स्वभाव का उल्लेख होता है। उदाहरणार्थ यहाँ दो तीन उक्तियाँ प्रस्तुत है।

"तीतर पंखी बादरा विधवा काजर रेख
जे बरसै वे घट करै जा में मीन न मेख।।"

पहली पंक्ति में बादलों और विधावा का उल्लेख करके दूसरी पंक्ति में उनके स्वभाव या गुणों को व्यक्त किया गया है। हिंदी की एक अन्य लोकोक्ति इस प्रकार है––

"काल कुसुंभन मरै बामन, बकरी, ऊंट।
जो माँगें ओ फिरि चरै जो सूखा चाकै टूंट।

अर्थात् अकाल दुकाल में भी ब्राह्मण, बकरी, और ऊंट नहीं मरते है। ब्राहमण भीख मांगकर, बकरी इधर उधर चरकर और ऊंट सूखी लकड़ी को भी चबाकर अपना समय बिताते है। इस प्रकार की क्रमालंकारयुक्त लोकोक्तियाँ तेलुगु में भी मिलती हैं। तेलुगु का एक उदाहरण है––

"उरिमिन मेघमु, तरिमिन पामु, कुरुवक करुवक मानवु"

अर्थात् गरजने वाले बादल और पीछे पड़ने वाला साँप बिना बरसे और बिना काटे नहीं रहते।

प्राय: उक्त अलंकारों के अलावा लोकोक्तियों में उपमा, रूपक आदि अलंकारों का भी प्रयोग पाया जाता है। ऐसे अलंकारों से युक्त लोकोक्तियों का विवेचन प्रस्तुत पुस्तक के विषय सम्बन्धी लोकोक्तियों के अध्ययन वाले अध्याय में यत्र-तत्र किया जा चुका है। शैलीगत तुलना से प्राप्त निष्कर्ष प्रत्येक विषय की विवेचना के अंत में दिये गये हैं।

१.३. भाषा की दृष्टि से लोकोक्तियों का अध्ययन

भाषा की दृष्टि से भी लोकोक्तियों का अध्ययन संभव है। इसके अन्तर्गत विवेचन निम्न शीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है––

१. पद-क्रम, २. पद-लोप, ३. शब्द-सामर्थ्य, ३.१. प्राचीन शब्द भंडार, ३.२. नाम-पद।

१.३.१. पद-क्रम

व्याकरण के अनुसार किसी भी वाक्य में पहले कर्ता, फिर कर्म, तत्पश्चात् क्रिया का प्रयोग होना चाहिए। लेकिन लोकोक्ति के वाक्यों में पद-क्रम का निर्वाह होना असंभव ही कहा जा सकता है। इसका कारण यह है कि लोकोक्तियों में प्राय: गद्यात्मकता की अपेक्षा पद्यात्मकता अधिक होती है। एक अन्य विशेषता इस बात की है कि

उक्ति के वाक्यों में तुक और लय अधिकतर दर्शनीय है। अतः लोकोक्तियों में पद-क्रम का निर्वाह बहुत कम देखा जाता है। इस की अपेक्षा करना भी उचित नहीं होगा। तेलुगु तथा हिंदी-दोनों ही भाषाओं में अल्प संख्या में ऐसी लोकोक्तियाँ देखने को प्राप्त हो सकती है जिनमें पद-क्रम का निर्वाह हुआ है। पर ऐसे उदाहरण रूप प्रस्तुत करना कठिन है। फिर भी एक–आध उदाहरण देने का प्रयास किया गया है––

१. अटकल बनिया सौदा करे। (हिंदी)

२. कोमटितो आट कोतितो सय्याट। (तेलुगु)

३. एक हाथ से ताली नहीं बजती। (हिंदी)

४. ओक चेतिकि तप्पेटलु म्रोगुना। (तेलुगु)

इसके साथ ही लोकोक्तियों में बलाघात, प्रयत्न-लाघव आदि का भी प्रयोग होता है। लोकोक्ति का प्रयोक्ता उसकी भाषा के अलावा भाव पर अधिक ध्यान देता है। इसी कारण वह जिस बात को प्रमुखता देता है। उस में शब्द का या तो उक्ति के दो-एक शब्दों पर अधिक बल का प्रयोग होता है और वही बलाघात है। इस प्रकार की तेलुगु तथा हिंदी की एक-आध लोकोक्तियाँ दृष्टव्य है।––

(१) तिंटे गारेलु तिनालि, विंटे भारतं विनालि, कंटे कोडुकुन् कनालि। (तेलुगु)

(२) जहाँ जाय भूखा, तहाँ पड़े सूखा। (हिंदी)

उक्त उदाहरणों में जो शब्द रेखांकित है ; वे बलाघात युक्त हैं। इस प्रकार के अनेक उदाहरण आन्ध्र तथा हिंदी प्रान्तों में प्राप्त होते हैं।

लोकोक्ति में प्रयुक्त भाषा साधारण जनता या लोक-सामान्य की होती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि लोकोक्ति व्यावहारिक भाषा में प्रयुक्त की जाती है। लोक-सामान्य की साधारण प्रवृत्ति प्रयत्न-लाघव की होती है जो तथ्य लोकोक्यियों में भी दर्शनीय है। अर्थात् कभी-कभी ऐसा हो जाता है कि लोकोक्ति के प्रयोग करते समय पूरा वाक्य न कहा जाकर उसका संक्षिप्त रुप ही प्रयुक्त होता है। जैसे––

"तिंटे गारेलु तिनालि, विंटे भारतं विनालि, कंटे कोडुकुनु कनालि"

के स्थान पर प्रायः निम्न रूप का प्रयोग देखा गया है––

"तिंटे गारेलु, विंटे भारतं, कंटे कोडुकु" (तेलुगु)

इस लोकोक्ति में तीन शब्द लुप्त हो गए हैं जिसका कारण प्रयत्न लाघव की प्रवृत्ति ही दीखती है। हिंदी का भी एक उदाहरण देखिए––

"पहले पिए जोगी, बीच में पिए भोगी, पीछे पिए रोगी" का संक्षिप्त रूप यह है––

"पहले पिए जोगी, बीच में भोगी, पीछे रोगी"

इसमें "पिए" शब्द का दो स्थानों पर लोप हो गया है जिसका कारण प्रयत्न लाघव के अतिरिक्त दूसरा कुछ नहीं हो सक्ता।

इस प्रकार के कतिपय उदाहरण हिंदी और तेलुगु दोनों भाषाओं में प्राप्त होते हैं।

१.३.२. **पद-लोप** :

पद-लोप की प्रक्रिया प्राय: प्रत्येक भाषा में देखा जाता है। एक तरह से ऐसे प्रयोगों में पद-विलोपन के माध्यम से ही अभिप्रेत अर्थ की व्यंजना होती है।[14]

पद-लोप के अनेक कारण हो सकते हैं। किसी एक भाव को प्रधानता देकर अभिव्यक्ति करने में अप्रधान या अनावश्यक शब्दों का लोप हो जाना स्वाभाविक है। दूसरा कारण यह है कि कभी प्रयत्न-लाघव या सुविधा केलिए लोकोक्ति का प्रयोक्ता कुछ शब्दों को लुप्त कर देता है। तीसरा कारण यह हो सकता है कि भावावेश में लोकोक्ति का प्रयोग करते समय कुछ शब्दों के लुप्त हो जाने से उनका लघु-रूप भी हो जाता है। नीचे तेलुगु तथा हिंदी प्रान्त में मिलने वाली इस प्रकार की लोकोक्तियों के दो-दो उदाहरण प्रस्तुत हैं।

(हिंदी) आधा साधे, कमर बांधे –– कमर बांध लेने से आधा कार्य सिद्ध होता है।
(तेलुगु) नडु कट्टिते संग पूर्ति –– कमर बांध लेने से आधा कार्य सिद्ध होता है।
(तेलुगु) राइ वेस्ते मुखमंता चिंदिनटलु –– पत्थर फेंकने से कीचड़ मुँह पर गिरे।
(हिंदी) पत्थर फेंको तो मुँह पर गिरे –– पत्थर फेंकने से कीचड़ मुँह पर गिरे।

उक्त उदाहरणों में रेखांकित शब्दों का लोकोक्तियों में लुप्त होना स्पष्ट है।

१.३.३१. **प्राचीन शब्द भंडार** :

लोकोक्तियों की परम्परा बहुत प्राचीन है। कुछ विद्वानों के अनुसार इनका जन्म वैदिक काल से हुआ है और कुछ के अनुसार सृष्टि की आदि से[15]। इस कारण अधिकांश लोकोक्तियों में अनेक प्राचीन शब्दों का उपलब्ध होना स्वाभाविक है। इस स्थान पर तेलुगु और हिंदी की लोकोक्तियों में जो पुराने शब्द प्रयुक्त हैं, उनकी संक्षिप्त सूची मात्र देना अभिप्रेत है।

	हिंदी		तेलुगु
१.	टिकट	––	टिक्कट्टु।
२.	आँवा	––	आँवँ।
३.	खलिहान	––	कल्लमु आदि।

१.३.३२. **नाम-पद** :

लोकोक्तियों के प्रयोग में अनेक नाम-पद प्रयुक्त होते हैं। प्रयोग के अभिप्राय के आधार पर इन नाम-पदों को ५ भागों में विभक्त करना युक्ति संगत होगा[16]। वे इस प्रकार हैं :

(१) आक्षेपार्थक,
(२) उदाहरण परक

---

14. भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन, पृ. ३३० तथा
The Philosophy of Grammar by Jospeson, P.309—"It is important to notice that an impression is often Produced not only by what is said expressly,but also by what is suppressed. Suggestion is impression though Suppression."

15. लोकोक्ति की प्राचीनता के संबंध में प्रबंध की "प्रस्तावना" वाले अध्याय में पर्याप्त विवरण दिया गया है।

16. डा. शशिशेखर तिवारी : भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन, पृ. ३५०।

(३) लय-पूरक,
(४) व्यक्तिबोधक, और
(५) मानवीकृत।

(१) आक्षेपार्थक :

यदि किसी व्यक्ति के नाम के विपरीत गुण हो तो ऐसे नाम-पद व्यंग्य करते समय प्रयुक्त होते है। शतपथ ब्राह्मणों से ही यह बात स्पष्ट होती है कि वैदिक काल में लोग सफलता और सम्मान प्राप्त करने के लिए अपने नाम चुन-चुन कर रखते थे [17]। ऐसी लोकोक्तियाँ तेलुगु और हिंदी दोनों में मिलती है, जो व्यग्यार्थ में प्रयुक्त हों और जिनमें नाम-पद का प्राधान्य हो। तेलुगु में प्रयुक्त एक लोकोक्ति के अनुसार घर का नाम "कस्तूरी" और घर में देखो तो चमगादड़ों की बदबू :—

"इंटिपेरु कस्तूरिवारु, इंट्लो गब्बिलाल कंपू"

एक हिंदी का भी उदाहरण देखिए——

"आंख का अंधा, नाम नयनसुख"

तेलुगु और हिंदी में प्राप्त इस प्रकार की अनेक लोकोक्तियाँ "परिशिष्ट" में दी गई है।

(२) उदाहरण परक :

यदि कोई व्यक्ति अपने रूप, गुण या स्वभाव के कारण प्रसिद्ध हो जाता है तो उसके नाम का सामान्यीकरण होकर उन-उन गुणों को रखने वालों के प्रति उस प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम का प्रयोग होता है। जैसे यदि कोई उदार प्रवृत्ति वाला व्यक्ति मिले तो उसे "धर्मराज" कहना ; दानी व्यक्ति हो तो "कर्ण" कहना ; बलवान हो तो 'भीम" कहना आदि इसी के उदाहरण है। आधिकतर ऐतिहासिक तथा राजनैतिक क्षेत्रों के व्यक्तियों के नाम ही इस प्रकार के उदाहरण स्वरूप मिल जाते हैं। वे प्रायः तेलुगु और हिंन्दी भाषाओं में समान है।

(३) लयपूरक :

कुछ लोकोक्तियों में लय या तुक की पूर्ति के लिए कुछ नाम-पदों का प्रयोग हो जाता है। इस प्रवृत्ति से न तेलुगु प्रान्त की लोकोक्तियाँ मुक्त है न हिंदी प्रान्त की। जैसे——

(हिंदी) दाल भात में मूसरचन्द।
(तेलुगु) काशीकि पोयिना गंगलो मुनिगिना।

ऐसे और भी उदाहरण दोनों भाषाओं में प्राप्त हो सकते है।

(४) व्यक्तिबोधक :

कुछ ऐसी भी लोकोक्तियाँ हैं जिनमें ऐसे नाम-पदों का प्रयोग पाया जाता है जो केवल व्यक्ति सामान्य के बोधक हों। ये नाम पद किसी व्यक्ति विशेष के बोधक नहीं बन सकते। इस प्रकार की एक हिंदी की लोकोक्ति देखिए——

"न <u>ऊधो</u> से लेना, न <u>माधो</u> को देना"

---

17. शतपथ ब्राह्मण : ३।६।२।२४ ; ५।३।३।१४।

एक तेलुगु का भी उदाहरण देखिए—

"पनिकि पंदिराजु, तिंडिकि तिम्मराजु"

उक्त उदारहणों में रेखांकित शब्द व्यक्ति सामान्य के बोधक हैं न कि व्यक्ति विशेष के। इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण परिशिष्ट में दर्शनीय हैं।

(५) मानवीकृत :

कुछ लोकोक्तियों में पशु-पक्षियों ; निर्जीव वस्तुओं या प्राकृतिक व्यापारों को मानवीकृत रूप देकर उनका नामकरण किया जाता है। ऐसी लोकोक्तियाँ तेलुगु तथा हिंदी दोनों ही भाषाओं प्राप्त हैं। तेलुगु का एक उदाहरण देखिए—

"आकाशं विरिगि मीद पडिनट्लु" (आसमान टूटकर गिरना)

हिंदी का भी एक उदाहरण—

"न सावन हरे न भादों सूखे"

उक्त उदाहरणों में रेखांकित पद मानवीकृत नाम-पदों के उदाहरण हैं।

३. कृषि संबंधी लोकोक्तियाँ

भारत वैदिक काल से कृषि प्रधान देश रहा है। इसकी मुख्य जीविका खेती है। भारत के धर्मशास्त्रों में भी कृषि की महिमा का वर्णन हुआ है। पराशर--स्मृति में कहा गया है---

"कृषेरन्यतमो धर्मो न लभेत कषितोन्यतः।
न कुषितोन्यत्र यदि धर्मेण कर्षति।।" --५.१८५

अर्थात् कृषि से तुलनीय कोई अन्य धर्म नहीं है, और इसके समान लाभदायक कोई दूसरा व्यवसाय नहीं है। धर्म के अनुसार कृषि-कार्य संपन्न किया जाए तो इससे अधिक प्रसन्नता का अवसर ही नहीं मिलता।

पूरे भारत में ७५ प्रतिशत से अधिक जनता कृषि को अपनी जीविक का मूलाधार बनाए हुए है। अन्ध्र और हिंदी प्रान्त दोनों ही प्रदेशों में कृषि की प्रधानता है और अधिकतर लोग इसी व्यवसाय से अपने पेट का पालन करते हैं। जिस प्रकार भारत के अधिकतर प्रान्तों में कृषि संबंधी अनेक लोकोक्तियाँ प्रचलित है, उसी प्रकार आन्ध्र तथा हिंदी प्रान्त में भी लोकोक्तियों की राशि भरी पड़ी है। लोगों ने कृषि और कृषक-जीवन संबंधी जो अनुभव प्राप्त किय हैं उनको कहावतों या लोकोक्यियों का रूप देकर भावी पीढियों के लिए अपने अनुभवों और उनसे होनेवाले लाभ-हानि की सूचनाओं को पत्थर की लकीर की तरह अमिट बनाया है। इसी कारण कृषकों को कृषि संबंधी बहुत-सी उपयोगी बातों का पता इन्हीं लोकोक्तियों के आधार पर चल जाता है, चाहे वे कृषि-शास्त्र या ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त न करें। जिस किसान के लिए "काला अक्षर भैंस बराबर" है, उसे भी कृषि संबंधी अनेक लोकोक्तियाँ कंठस्थ रहती हैं। ये कहावतें साधारण बोलचाल की भाषा में और छोटे-छोटे छंदों में प्राप्त होने के कारण मामूली अनपढ व्यक्तियों या सामान्य मानव केलिए यदि रखना अत्यन्त सरल कार्य हो जाता है।

कृषि-संबंधी लोकोक्तियाँ अनेक प्रकार के वर्गों में विभक्त की जा सकती है---१. कृषि संबंधी महत्वपूर्ण वस्तुओं (जैसे, हवा, वर्षा, भूमि आदि से संबंधित, २. कृषक के गुण-अवगुण संबंधी, ३. खेती-पशु संबंधी, ४. खेती संबंधी यंत्र विषयक, ५. खेती संबंधी विश्वास, ६. कृषि कार्य संबंधी आदि।

उक्त प्रकार की जो लोकोक्तियाँ तेलुगु और हिंदी प्रांत में प्राप्त होती हैं, उनमें कुछ तुलनीय लोकोक्तियों को चुनकर यहाँ विवेचन प्रस्तुत किया जायगा। अन्य लोकोक्तियाँ परिशिष्ट में दी जाएँगी।

३.१. कृषि में सहायक या बाधक प्राकृतिक स्थितियों से संबंधित लोकोक्तियाँ :---

कर्षक के लिए प्राकृतिक सहयोग की अत्यंत आवश्यकता होती है। इसके अभाव में उसका समस्त परिश्रम विफल हो सकता है। कृषि-कार्य में प्रकृति की जो क्रियाएँ साधक या बाधक होती हैं, उनके संबंध में भी लोक-मानस का निरीक्षण-जन्य अनुभव परकतथा व्यवहारिक ज्ञान की सँज्ञापरक लोकोक्तियाँ प्रचलित हुई हैं। वर्षा होने या न होने के संबंध मे कुछ प्राकृतिक स्थितियों को शकुन के रूप में ग्रहण किया गया है। कुछ नक्षत्र भी वर्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। यहाँ नक्षत्रों और वर्षा संबंधी शकुनों का कथन करने वाली लोकोक्तियों पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार प्रस्तुत किया गया है।

३.१.१. नक्षत्रों संबंधी लोकोक्तियाँ :

ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार पृथ्वी के वायु मंडल पर नक्षत्रों का प्रभाव पड़ता है। इस ज्योतिष ज्ञान का संयोग लोक-मानस-जन्य अनुभूत ज्ञान से हुआ और भिन्न-भिन्न नक्षत्रों में होने वाली वर्षा से सुपरिणाम और दुष्परिणाम का निर्णय करने वाली लोकोक्तियों का जन्म हुआ। पं. रामनरेश त्रिपाठी ने नक्षत्र संबंधी कहावतों के संबंध में लगभग यही बात कही है।[1] नक्षत्रों की संख्या २७ है। तेलुगु क्षेत्र में मृगशिरा से विशाखा तक नक्षत्रों (कार्तो) के संबंध में विशेष लोकोक्तियाँ होती हैं।[2] इन लोकोक्तियों के संबंध में डा. कन्हैयालाल सहल का मत भी उल्लेखनीय है––

"भारत के प्राचीन विज्ञानवेत्ताओं ने एक और यज्ञ के द्वारा ऋतुओं में होने वाली परिवर्तनों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में भी सफलता प्राप्त की है। इसी के लिए उन्होंने खगोल का सहारा लिया। ऋतुओं पर नक्षत्रों का प्रभाव पड़ता है। अतएव ऋतु परिवर्तनों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए नक्षत्रों का आश्रय लिया।"[6]

हिंदी और तेलुगु क्षेत्र में नक्षत्रों से संबंधित लोकोक्तियों में अर्थगत समानता तो है, पर कथन कहीं निषेधात्मक शैली में है तो कहीं स्वीकारात्मक शैली में। क्रम की दृष्टि से यहाँ मृगशिरा, आर्द्रा, मघा, हस्त, चित्रा, स्वाति और उत्तरा से संबंधित कुछ लोकोक्तियों पर विचार किया गया है।

मृगशिरा नक्षत्र में न्यून या वर्षाभाव ही श्रेयस्कर माना गया है। तेलुगु की एक कहावत में कहा गया है कि मृगशिरा में कम वर्षा होना भविष्य की अधिक वर्षा की सूचना देता है––

"मृगशिर बिंदिस्ते मिगिलिन कार्तेलु कुरुस्ताइ"

हिंदी में भी इस प्रकार की एक लोकोक्ति है :––

"तपै मृगशिरा जोय। तो बरखा पूरन होय।"

अर्थात् मृगशिरा के तपने से पूर्ण वर्षा होती है। इन दोनों लोकोक्यिों में आंतरिक समानता मिलती है।

आर्द्रा नक्षत्र प्रायः जून के महीने में आता है। आर्द्रा नक्षत्र के आरम्भ में ही वर्षा होनी चाहिए। यदि आर्द्रा के आरम्भ में वर्षा न हो, तो किसान को पछताना पड़ेगा।

हिंदी की लोकोक्ति इस प्रकार है :––

"आवत आदर नादियो, जात न दीनो हस्त।
ये दोऊ पछतायेंगे, पाहुन और गृहस्त।।"

तेलुगु में भी इसी प्रकार की एक लोकोक्ति प्रचलित है जिसका तात्पर्य है कि अर्द्रा की कृपा से किसान को महादेव से भी भय का अनुभव नहीं होगा––

"आरुद्र कनिकरिस्ते रुद्रुनिकैना रैतु जडुवडु"

आन्ध्र और हिंदी प्रान्त-दोनों ही क्षेत्रों में मघा, बहुत ही महत्वपूर्ण माना गया है। मघा को खेती के लिए उसी प्रकार हितकर बताया गया है जिस प्रकार बच्चे के लिए माँ का खिलाना––

"मघा के बरसे। माता के परसे।।"

---

1. धाध और भड्डरी––"भूमिका" पृ. ७।
2. ले. श्री नेदुनूरि गंगाधरम, "व्यवसाय सामेतलु", पृ. १३।
3. राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन, प. २३०।

अर्थात् मघा के बरसने से किसान तृप्त हो जाता है और उसे भगवान से भी कुछ माँगने को नहीं रह जाता है। इसी प्रकार "मघा भूमि अघा" कहकर यह स्पष्ट किया गया है कि मघा की वर्षा भूमि को तृप्त कर देती है। इस विषय के साथ यह भी कहा गया है कि मघा नक्षत्र के शुष्क होने पर ऊसर भी सूख जाय;——

"चटका मघा मरकि का ऊसर।
दूध भात में परिगा मूसर।।"

इस प्रकार न घास होगी न चावल। इसी प्रकार एक तेलुगु लोकोक्ति भी मघा के न बरसने पर अवश्यंभावी अका की सूचना देती है :——

"मख पुब्बलु वरपैते महत्तर क्षामं"

'हस्त' और 'चित्रा' नक्षत्र की वर्षा के संबंध में दोनों स्थानों पर एक-सी बात कही गयी है। तेलुगु की एक लोकोक्ति में इन दोनों नक्षत्रों की अनाबृष्टि का दुष्परिणाम बताया गया है——

"हस्तचित्रलु वरुपैते अंदरि सेद्यं आकटे"

अर्थात् 'हस्त' और चित्रा' नक्षत्रों में यदि वर्षा न हो, तो खेती में कुछ भी पैदावार नहीं हो सकती। हिंदी में भी इसी आशय को एक अन्य प्रकार से व्यक्त किया गया है——

"हथिया बरसे चित्रा मंडराय। घर बैठे किसान रिरियाय।।"

अर्थात् हस्त् नक्षत्र की वर्षा हो रही हो और चित्रा की वर्षा होने वाली हो तो किसान अपने घर में आनंद की बंशी बजाता है। हिंदी क्षेत्र में यह भी विधान किया गया है कि 'चित्रा, का चढ़ते समय बरसना अच्छा होता है और 'हस्त' का उतरते समय——

"चढत जो बरसै चितरा, उतरत बरसै हस्त।
कितनौ राजा डाडले, हारे नहीं गृहस्त।।"

स्वाति नक्षत्र की वर्षा को हिंदी और तेलुगु दोनों ही क्षेत्रों में श्रेष्ठ माना गया है। हिंदी की एक लोकोक्ति में तो यहाँ तक कहा गया है कि स्वाति नक्षत्र की वर्षा से इतनी अधिक उपज होती है कि निम्न वर्ग की स्त्रियाँ भी सोने से लद जाती हैं :——

"यह पानी जो बरसे स्वाती। कुरमिनि पहिरै सोने की पाती।।"

तेलुगु क्षेत्र में प्रचलित लोकोक्ति के अनुसार स्वाति की वर्षा से उस क्षेत्र में भी अधिक उपज होती है जिस में वर्षा के अतिरिक्त सिंचाई का कोई साधन न हो :——

"स्वाति वान चेनुकु हर्षं"

उत्तरा के संबंध में हिंदी की लोकोक्ति में यह कहा गया है कि इस नक्षत्र की वर्षा से इतना अन्न उपजता है कि कुते भी अन्न से ऊब जाते हैं :——

"जब बरसैगा उत्तरा। नाज न खावै कुत्तरा।।"

तेलुगु में इसी बात को नकारात्मक शैली में कहा गया है——

"उत्तर चूचि एत्तर गंपा"

अर्थात् 'उत्तरा' में वर्षा न हो, तो सिर पर टोकरी रखकर दूसरे काम की खोज में चलो।

नक्षत्रों संबंधी लोकोक्तियों की संख्या दोनों क्षेत्रों में बहुत है। दोनों स्थानों की कुछ प्रतिनिधि लोकोक्तियां पर ऊपर तुलनात्मक दृष्टि से जो विचार किया जा चुका है, उससे स्पष्ट हो जाता कि दोनों क्षेत्रों में प्राप्त लोकोक्तियां पूर्ण साम्य रखती हैं। कहीं भी बहुत अधिक वैषम्य प्राप्त नहीं होता।

३.१.२. वर्षा संबंधी शकुनों की लोकोक्तियाँ :

वर्षा संबंधी शकुन और तत्संबंधी लोकोक्तियाँ तीन भागों में विभवत की जा सकती हैं :—

१. आकाश, हवा या बादल अदि की गतिविधि से संबंधित शकुन

२. सप्ताह के वारों से संबंधित शकुन तथा

३. कीट-पतंग, पशु-पक्षियों की क्रियाओं से संबंधित शकुन।

तेलुगु और हिंदी क्षेत्र में तीनों प्रकार की तुलनीय लोकोक्तियां प्राप्त होती हैं। जो भी अन्तर प्राप्त होता है, वह भौगोलिक स्थिति के अन्तर का परिणाम ही दीखता है।

आकाश यदि रक्ताव हो तो दोनों पर वर्षा होने की दृढ़ संभावना मानी जाती है —। हिंदी की रक्ताव-आकाश संबंधी लोकोक्ति यह है :—

"आभारता। मेहभारता।।"

अर्थात् आकाश यदि लाल हो तो वर्षा बहुत होगी। तेलुगु की लोकोक्ति इस संबंध में इस प्रकार है :—

"मिन्नु येर्रनैना, कन्नु येर्रनैना कारक मानदु"

अर्थात् आकाश लाल हो या आँख लाल हो, बरसे बिना नहीं रहते।

आकाश के अतिरिक्त इंद्रधनुष की स्थिति को देखकर भी लोक मानस ने वर्षा के संबंध में अनुमान लगाए हैं। इन्द्र धनुष यदि पूर्व दिशा में दिखाई दे तो तेलुगु क्षेत्र में विश्वास है कि कहीं दूर पर वर्षा होगी :—

"तूरुपुन इंद्र धनसु, दूरान वर्षं"

हिन्दी की कहावत में पूर्व के स्थान पर बंगाल की दिशा का उल्लेख है। बंगाल की दिशा पूर्व दिशा ही है। यदि बंगाल की दिशा में इंद्र धनुष हो, तो वर्षा होना निश्चित है :—

"धनुष पड़े बंगली। मेह सांझ या सकाली।।"

चंद्रमा के आसपास यदि परिवेष्टन हो तो तेलगु और हिंदी दोनों ही क्षेत्रों में वर्षा होने का निश्चय होता है। इस परिवेष्टन का चंद्रमा के दूर और पास होना भी इस संबंध में महत्व रखता है। तेलुगु की कहावत इस प्रकार है :—

"चंद्र परिवेषमु वर्ष योगमु"

इससे तुलनीय हिंदी की लोकोक्ति इस प्रकार है :—

"रवि ससि बैठे जब कुंडारी। ऐरावति मघवा असवारी।"

अर्थात् जब सूर्य और चंद्र के आसपास कुंडली हो तो इंद्र ऐरावत हाथी पर सवार होकर आएगा। एक और कहावत ब्रज क्षेत्र में प्रचलित है जिसका तात्पर्य है कि यदि चंद्रमा पारस में बैठे, तो इतनी बर्षा हो कि आदमी का सिर डूब जाएगा :—

"चंदा बैठे पार्स। मेहा बरसै धारसि।।"

यदि बादल शनीचर को अवै या शुक्र को आकर शनीचर तक बना रहे तो एक सप्ताह तक अनवरत वर्षा होगी। यह विश्वास तेलुगु और हिंदी दोनों क्षेत्रों में पाया जाता है। तेलुगु की लोकोक्ति इस तथ्य की अभिव्यक्ति इस प्रकार करती है :—

"शनिवारपु वान शनिवार में विडुस्तुंदि"

हिंदी में एक सप्ताह तक वर्षा होने की बात लोकोक्ति में तो नहीं कही गयी है, पर विश्वास यह है कि निश्चित रूप से वर्षा होगी।:—

"शुक्रवारी बादरी रही शनिश्चर छाय।
घाघ कहै सुनि भड्डरी बिन बरसे नहीं जाय।।"

(वारों) दिनों के नामों का उल्लेख करने वाली लोकोक्तियों के अतिरिक्त कुछ ऐसी भी लोकोक्तियाँ हैं जिनमें दिन के किसी भाग में वर्षा आरंभ होने से भविष्य की सूचना दी जाती है। हिंदी में तुलनात्मक तथ्यों से युक्त एक लोकोक्ति इस प्रकार है :—

"सबेरे का मेह सांझ का मेहमान"

इसका तात्पर्य यह है कि यदि वर्षा प्रातःकाल आरंभ हो तो इसका दीर्घकालीन होना आवश्यंभावी है जिस प्रकार सायंकाल में आया हुआ अतिथि जल्दी नहीं जाएगा। तेलुगु में इससे पूर्ण साम्य रखने वाली एक लोकोक्ति प्रचलित है :—

"संदकाड वच्चिन वान, सगपोद्दुकाड वच्चिन चुट्टं"

कभी-कभी ऐसा होता है कि धूप भी निकली रहती है और वर्षा भी होती रहती है। इस स्थिति में हिंदी में एक लोकोक्ति प्रचलित है :—

"कानी गीदड़ी का विवाह"

इस लोकोक्ति के रहस्य का उद्धाटन कठिन है। तेलुगु क्षेत्र में कानी गीदडी के विवाह की बात तो नहीं है, पर गीदड़ और कुतिया के विवाह का कथन अवश्य है :—

"एंडा वाना कुक्का नक्कल पेल्ली"

इस प्रकार की रहस्यात्मक लोकोक्तियाँ विश्वव्यापी हैं।[4]

"जल्दी कुहके मोरा। तो मेह पड़ेगा जोरा।।"

---

4. अंग्रेजी में एक लोकोक्ति प्रचलित है जिसका तात्पर्य है कि धूप और वर्षा के साथ होने पर नरक में होने वाली किसी मेले की सूचना मिलती है; चुड़ैल भी 'केक' पकाती हैं :—
   1. When it rains and the Sun shines; there is a fair in the Hell.
   2. When it rains and the Sun shines, witches are baking Pan Cakes.

साथ ही पपीहे के "पी-पी" रटने से भी निकट वर्षा की संभावना होती है। राजस्थान की एक कहावत इस प्रकार है—

"भल भल बके पपइयो वाणी। कुपल करै तपी कमलापी।
जब हल तो आगे रवि जाणी। पहराँ माँघ अवसरें पापी"।।[5]

चिड़ियों के पंख फैलाकर नहाने जैसी क्रिया करने से भी वर्षा की पूर्ण संभावना होती है—

"नीर बिना चिड़िया रज नहावै।
मेहा बरसै घर न समावै।।"

अर्थात् यदि चिड़िया धूल में स्नान करे तो इतनी वर्षा होगी कि घर में नहीं समाएगी। तेलुगु क्षेत्र में मोर और पपीहे की बात तो प्रायः नहीं मिलती पर मुर्गा-मुर्गो के पंख फैलाकर सुखाने से वर्षा होने का अनुमान अवश्य किया जाता है। चिड़ियों का धूल में नहाना भी पंख सुखाने सा होता दीखता है। तेलुगु की लोकोक्ति इस प्रकार है—

"कोडि रेक्क आरवेस्ते गोप्प वर्षं"

चींटियों के अपने बिल से बाहर आने की क्रिया भी दोनों ही क्षेत्रों की लोकोक्तियों में वर्णित है। हिंदी क्षेत्र की लोकोक्ति में ऐसा उल्लेख है कि चींटी अपने अंडों को लेकर यदि बाहर आ जाए तो समझना चाहिए कि जल्दी ही वर्षा होगी—

"अंडा चींटी बाहर लावै। घर भागो अब वर्षा आवै।।"

तेलुगु की लोकोक्ति में चींटी के पेड़ पर चढ़ने की बात कही गयी है—

"चीमलु चेट्लेक्किते भूमुलु पंडुनु"

अर्थात् यदि चींटी पेड़ पर चढ़ती हैं तो भूमि अच्छी उपज देती है। इस लोकोक्ति में भी अव्यक्त रूप से वर्षा अधिक होने की बात ही कही गयी है।

३.२. भूमि :—

खेत के जमीन के प्रकार और उसकी उर्वरा की मात्रा का अनुभव भी लोक के मस्तिष्क ने अपने कृषि कार्य में प्राप्त किए और इस मूल्यवान अनुभूत ज्ञान को कुछ लोकोक्तियों में ढालकर खरे सिक्के की भाँति लोक में प्रचलित किया। परन्तु हिंदी और तेलुगु क्षत्रों की भूमि के प्रकारों में तथा उनके गुणों मे भेद है। उदाहरण केलिए आन्ध्र में "रेगडि"[6] तथा काली मिट्टी वाले[7] खेतों को उर्वरा की दृष्टि से श्रेष्ठ माना जाता है। हिंदी क्षेत्र में "दुमर" और चिकनी मिट्टी वाले खेतों को अच्छा माना जाता है। पर "ऊसर" भूमि को दोनों ही स्थानों पर त्याज्य माना है क्योंकि इसमें जो भी श्रम किया जाय, व्यर्थ ही साबित होगा। हिंदी की कहावत इस प्रकार है—

"खेत न जातै राडी, न भैंस बेसा है पाठी। न मेहरि मर्रफ छाडी।"

---

5. पं. रामनरेश त्रिपाठी, घाघ और भड्डरी, पृ. १२३।
6. "रेगडि भूमिनि, राजुनु चे विडुवकु ("रेगडी" के जमीन को और राजा को मत छोड़ो)
7. वरिकि पात चविटि नेल।

इसका तात्पर्य यह है कि ऊसर खेत को जोतना, छोटी भैंस को बेचना और किसी अन्य पुरुष के द्वारा त्याज्य स्त्री को ग्रहण करना अनुचित है। इसी प्रकार तेलुगु की एक लोकोक्ति में भी ऊसर भूमि के प्रति ऐसी ही बात कही गयी है——

"ऊसर[8] क्षेत्रंलोनि पैरू, उदकं लेनि चेरुवु"

अर्थात् ऊसर क्षेत्रों में खेती उसी तालाब के समान लाभ रहित है जिसमें एक बूंद भी पानी न हो।

आन्ध्र प्रदेश में लाल मिट्टी वाले खेत की उर्वरा शक्ति अत्यंत न्यून मानी गयी है। इस संबंध में प्रचलित लोकोक्ति इस प्रकार है——

"एर्र नेल पंट ओक नाटि पंट"

अर्थात् लाल मिट्टी वाले खेत की फसल एक ही दिन के लिए पर्याप्त होती है। हिंदी प्रांत में प्रायः इस प्रकार की लोकोक्ति प्राप्य नहीं है पर पीली मिट्टी को वहाँ किसी ने अच्छा नहीं बताया है।

३.३. **खाद** :——

प्रत्येक क्षेत्र में खेत की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने के लिए खाद का प्रयोग और महत्व है। हिंदी क्षेत्र में खाद के अभाव में खेती निरर्थक कही गयी है——

"खाद परै तो खेत। नहीं तो कूडा रैत।।"

इसी प्रकार आन्ध्र प्रांत में एक लोकोक्ति प्रचलित है जिससे यह अर्थ निकलता है कि खाद के ही कारण अनाज की बालें अधिक भरी पूरी रहती हैं :——

"येरुवु वेस्तेने वेन्नुतीरुतुंदि"

गोबर की खाद को दोनों ही स्थानों पर श्रेष्ठ माना गया है। तेलुगु की लोकोक्तियाँ इस संबंध में दृष्टव्य हैं :——

"पशुवुल एरुवु पंटकु बाट" और
"पशुवुल बट्टे पेंट, पेटंनु बट्टे पंट"

अर्थात् गोबर पैदाबार के लिए राजमार्ग के समान है और जितनी पशु संपदा होगी उतनी ही खाद और जितनी खाद होगी उतनी ही फसल होगी। गोबर के अलावा नीम तथा मूंगफली की खली को भी खाद के रूप में मुख्य स्थान प्राप्त है। निम्नांकित लोकोक्ति में नीम की महत्ता खाद के रूप में व्यक्त की गयी है——

"वेप पिंडि एरुवु"

अर्थात् नीम की खली ही खाद है। हिंदी में भी एक लोकोक्ति प्रचलित है जिसमें गोबर और नीम की खली से खेत की उपज दूनी होने की बात कही गयी है——

"गोबर मैला नीम की खली।
या से खेती दूनी कली।।"

इस प्रकार तेलुगु और हिंदी प्रांतों में खाद की महत्ता और खाद की सामग्री से संबंधित अनेक समान लोकोक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

---

8. 'ऊसर' शब्द तेलुगु और हिंदी दोनों ही भाषाओं में समानार्थक है।

३.४. पानी :—

आन्ध्र प्रांत का बहुत भाग ऊपजारु है अतः यहाँ अन्न बहुत अधिक उपजता है। विशेष, कर धान की खेती आन्ध्र में अधिक होती है। हिंदी प्रांत के पूर्वी भागों में धान की खेती होती है। साधारण प्राणी को जीने के लिए हवा की जितनी आवश्यकता है, अनाज की खेती के लिए पानी उतना ही आवश्यक है। पानी के बिना फसल उसी बाल समान है जिसमें कभी तेल न लगता हो—इस भाव को व्यक्त करने वाली एक लोकोक्ति तेलुगु में प्रचलित है—

"नीरु लेनि पैरु नूने लेनि जुट्टु"

हिंदी में धान, पान और ऊख की खेती के लिए पानी की अनिवार्यता बताई गयी है—

"धान पान ऊखेरा तीनों पानी के चेरा"

तेलुगु में एक दूसरी कहावत प्राप्त होती है—

"वरिचेनु पोट्टकि पुट्टेडु नीरु"

अर्थात् अनाज के बाल निकलने से पूर्व पर्याप्त पानी की आवश्यकता होती है। हिंदी में इससे पूर्ण साम्य रखने वाली एक लोकोक्ति प्रचलित है। धान का फूल जब काला पड़ता है, तब धान में बाल निकलने का समय होता है। उस समय यदि पानी अपरियाप्त हो, तो खेती की अकाल मृत्यु हो जाती है—

"काले फूल न पाया पानी।
धान मरा अध बीच जवानी।।"

गेहूँ, जौं आदि में पानी के संबंध में हिंदी में अनेक लोकोक्तियाँ मिलती हैं। पर तेलुगु क्षेत्र में इनसे संबंधित लोकोक्तियाँ न मिलना कोई अचरज की बात नहीं है।

३ .५. कृषि से संबंधित पशु-पक्षी विषयक लोकोक्तियाँ :—

कृषि के उपकरणों के रूप में बैलों का बहुत ही महत्वपूर्ण योग रहा है। तेलुगु और हिंदी दोनों ही प्रांतों में बैलों की प्रशंसा कुछ लोकोक्तियों में मिलती है। हिंदी की एक लोकोक्ति है—

"बैलन खेती घोड़न राज"

अर्थात् खती के लिए बैलों की उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि राज्य की स्थापना एवं सुरक्षा करने में घोड़ों की। हिंदी में प्राप्त एक दूसरी लोकोक्ति है—

"बिन बरदन खेती करै, बिन भैयन के रार।
बिन हरारू घर करे, चौदह साख लवार।।"

अर्थात् बिना बैलों की खेती, बिना भाइयों के सहयोग की लड़ाई तथा बिना स्त्री के घर-गृहस्थी की व्यवस्था जो कोई करना चाहे, वह मिथ्याचारी होगा।

तेलुगु में भी इसके तुलनीय एक लोकोक्ति मिलती है जो इस प्रकार है—

"एटटुतो व्यवसायं आलुतो संसारं"

इसका अर्थ यह है कि खेती के लिए बैल का और गृहस्थ के लिए स्त्री का समान रूप से महत्व है। उक्त हिंदी और तेलुगु की लोकोक्ति म अन्तर केवल इतना ही है कि तेलुगु में बिना भाइयों के लड़ाई की बात नहीं कही गई है। अन्यथा दोनों

ही भाषाओं की लोकोक्तियों में पूर्ण रूपेण साम्य है। तेलुगु में एक और कहावत मिलती है जो वास्तव में तो कृषि से बिलकुल संबंध नहीं रखती, परन्तु उक्त हिंदी लोकोक्ति के तीसरे खंड से साम्य रखती है।

लोकोक्ति इस प्रकार है—

"इंटिकि दीपं इल्लालु"

अर्थात् घर के लिए गृहिणी ही ज्योति है। इसी भाव को व्यक्त करने वाली हिंदी की भी कहावत है—

"बिन घरनी घर भूत के डेरा"

इतना निश्चित है कि कृषि प्रधान देश में बैलों की कृषि कार्य में आवश्यकता मानी जाती है। किन्तु बैल के लक्षण भी शुभ होने चाहिए। जब किसान लोग बैलों का क्रय-विक्रय करते हैं, तो रूढ़ियों के रूप में चले आते हुए शुभ और अशुभ लक्षणों की परीक्षा अवश्य करते हैं। इन लक्षणों से युक्त लोकोक्तियाँ हिंदी और तेलुगु दोनों ही क्षेत्रों में प्राप्त होते हैं। हिंदी में एक लोकोक्ति, जिसमें कि श्रेष्ठ बैलों के लिए आवश्यक लक्षणों का उल्लेख है, प्राप्त है जो इस प्रकार है—

"सींग मुड़े मथा उठा मुंह का होवे गोल।
रोम नरम चंचल बरन, तेज बैल अनमोल।।"

अर्थात् श्रेष्ठ बैल के लिए मुड़े हुए सींग, गोलाकार मुँह, मुलायम रोम, और चंचल कान आवश्यक गुण हैं। जिस बैल में उक्त सभी गुण उपलब्ध हैं; उसको अनमोल बैल माना जाता है। किन्तु आन्ध्र प्रांत के बैलों के लक्षण सभी प्रकार समान नहीं हैं। विशेषकर दोनों क्षेत्रों के बैलों के सींग भिन्न होते हैं। उक्त हिंदी कहावत के अनुसार हिंदी प्रांत में श्रेष्ठ बैल के लिए मुड़े हुए सींगों का होना अवश्यक बताया गया है। किन्तु इसके विपरीत आन्ध्र प्रांत में श्रेष्ठ बैल के सींग लगभग समानांतर और कुछ सीधे चलकर मुड़े हुए होने चाहिए--

"चप्पि कोम्मुल एद्दुनु चेप्पकुंडा कोनुमु"

अर्थात् उक्त लक्षणों से विभूषित वृषभ को किसी से पूछे बिना खरीद लेना चाहिए।

ऊपर उद्धृत हिंदी की लोकोक्ति के अनुसार श्रेष्ठ बैल के लिए गोल मुँह का होना आवश्यक माना गया है। इसके साथ ही हिंदी प्रांत में बैल के लिए मोटा मुँह होना अच्छा नहीं बताया गया है। बैल के लिए गाय जैसा पतले माथे का होना ही श्रेष्ठ माना गया है—

"मुँह का मोटा माथा का महुआ।
इन्हें देखि जनि मूस्यो रहुआ।।"

बैल के मुँह की बनाबट के संबंध में तेलुगु में प्राप्त लोकोक्ति भी प्राय: समान अर्थ वाली है—

"आवुतला अंटु बोड्डु येद्दुकु" (जारु बोड्डु चनुकट्टु आक्कु)

तेलुगु की उक्त लोकोक्ति में मुतान[9] के संबंध में यह कहा गया है कि बैल का मुतान ढीला नहीं होना चाहिए। ढीले मुतान वाला बैल ग्रहणय नहीं है—

---

9. संभवत: "मुतान संस्कृत के मूत्र-स्थान का ही अपभ्रंश है।

"लम्बे-लम्बे कान और ढीला मुतान।
छोड़ो-छोड़ो किसान न हो जात है प्राण।।"

अर्थात् ढीले मुतान वाला और लम्बे-लम्बे कान वाले बैल को छोड़ देना चाहिए, अन्यथा किसान का जीवन संकट में पड़ जायगा।

हिंदी प्रांत में "हिरन मुतान" वाले बैल को श्रेष्ठ माना गया है—

"हिरन मुतान और पतली पूँछ। बैल बैसा हो कतबे पूँछ।।"

इस प्रकार हिंदी और तेलुगु प्रांतों में बैलों के शुभ और अशुभ लक्षणों वाली अनेक लोकोक्तियाँ प्राप्त होती हैं। इन लोकोक्तियों में सींग संबंधी लक्षण को छोड़कर प्रायः अन्य लक्षण सभी समान हैं। तुलनात्मक विवेचन से दोनों ही क्षेत्रों की लोकोक्तियों में प्राप्त होने वाली समता की दिशाएँ स्पष्ट हो जाती हैं।

कृषि कार्य की सफलता मूलतः दो बोतों पर आधारित है—कर्षक की श्रम साधना और उसका कृषि कार्य के लिए उपयुक्त समय आदि का ज्ञान। जहाँ तक कृषि कार्य के लिए किसान की श्रम-साधना का प्रश्न है, उसके स्वकीय श्रम को ही खेती के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है—

"खेती पाती मीनती और घोड़ा का तंग।
अपने हाथ सम्हारिए, लाख लोग हो संग।।"

इस लोकोक्ति में किसान के खुद की श्रम साधना पर इतना जोर दिया गया है कि यह भी कहा गया है कि चाहे लाख लोग भी साथ कार्य करने के लिए क्यों न हों, फिर भी इस कार्य को खुद ही संभालना चाहिए। साथ ही खुद के श्रम उठा के साथ उसकी कुछ नियमितता का भी होना आवश्यक है। श्रम के साथ-साथ कृषि कार्य में सहायक सामग्री की भी आवश्यकता होती है। यहाँ पहले कृषक-साधना संबंधी लोकोक्ति पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार प्रस्तुत किया गया है।

किसान के आलसीपन से खेती नष्ट हो जाती है। जो भी किसान आलसी हो, उसका आर्थिक दृष्टि से नाश आवश्यंभावी है—

"आलसी नींद किसानै सोवै, चोरै खोवै खाँसी।
ठका व्याज बैरागी खोवै, रांड ऐ खोवै हांसी।।"

लेकिन इस बात से भी आवश्यक यह है कि कृषि संबंधी प्रत्येक कार्य को उचित समय पर करना चाहिए। इस तथ्य को व्यक्त करने वाली तेलुगु की लोकोक्ति इस प्रकार है—

"अदुनेरिगि सेद्यं, पदुनेरिगि पैरु"

अर्थात् ठीक समय पर खेती के कार्य का श्रीगणेश करना चाहिए और फसल की पक्वता को देखकर काटना चाहिए। हिंदी में भी समय से पूर्व कृषि-कार्य करने के महत्व पर जोर देने वाली लोकोक्ति प्राप्त होती है —

"आगाय सो सवाय"

अर्थात् जो व्यक्ति आगे (ठीक या उचित समय पर) कृषि-कार्य करता है उसके श्रम से सवा गुना फसल प्राप्त होगी। एक दूसरी भी लोकोक्ति इस संबंध में प्राप्त होती है—

"धीरे बंज उलायती खेती"

अर्थात् व्यापार धीरे-धीरे और खेती जल्दी-जल्दी करनी चाहिए। दोनों ही उक्त लोकोक्तियों से तुलनीय तेलुगुकी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :—

"अदनुलो पोदलो चल्लिना पंड्तुंदि"

इस कहावत का अर्थ यह है कि उचित समय पर बोआई कहीं भी हो, फसल जरूर होगी। एक अन्य कहावत इस प्रकार है—

"अदनु लेनप्पुडु पदुनैते नेमि"

अर्थात् अनुचित समय पर खेत पक भी जाय तो व्यर्थ ही है।

इस प्रकार हिंदी और तेलुगु दोनों ही प्रांतों में अनेक लोकोतयाँ मिलती हैं जिनमें साम्य है पर साथ ही स्थानगत वैषम्य भी।

३.६. कृषि-यंत्रों संबंधी लोकोक्तियाँ :—

भारत-भर के प्रत्येक क्षेत्र में कृषि-कार्य के लिए कृषक की श्रम—साधना के साथ ही कुछ एक उपकरणों की भी आवश्यकता पड़ती हैं। इन उपकरणों से संबंधित लोकोक्तियाँ दोनों ही भाषाओं में उपलब्ध हैं। नीम का बना हुआ हल खेती के लिए नष्टकारी है। इस बात को व्यक्त करने वाली तेलुगु की लोकोक्ति इस प्रकार है—

"अदनु, पदनु चेरचुनदि वेप[10] नागलि"

तेलुगु में दूसरी हल संबंधी लोकोक्ति इस प्रकार है—

"नागलि मंचिदि काकपोते एड्लेमि चेस्ताइ"

अर्थात् यदि हल अच्छा नहीं हो, तो बिचारे बैल क्या करते? इसका मतलब यह है कि खेती के लिए श्रेष्ट बैलों के साथ ही बढ़िया हल का भी होना नितांत आवश्यक है।

कृषि कार्य के लिए महत्वपूर्ण उपकरण बैल, खाद आदि हैं जिनके संबंध में पहले विचार किया जा चुका है।

३.७. कृषि-कार्य संबंधी लोकोक्तियाँ :—

इस शीर्षक के अंतर्गत मुख्य रूप से बोआई, तथा सिंचाई से संबंधित लोकोक्तियों का तुलनात्मक दृष्टि सेविचार किया जाएगा।

३.७.१. बोआई से संबंधित लोकोक्तियाँ :—

प्रत्येक क्षेत्र में कृषि-कार्य संबंधी अनेक विश्वास एवं नियम प्रचलित हैं। यह जरूरी नहीं कि प्रत्येक क्षेत्र के विश्वास तथा नियम एक ही हों। यद्यापि वैषम्य है, उसका कारण स्थानगत विषशता मात्र होगी। हिंदी प्रांत में धान की बोवाई के लिए आद्रा नक्षत्र श्रेष्ठ माना गया है। वँ

"आद्रा धान पुनर्वसु पैया। रोवैं किसान जो बोबैं चिरैया।।"

तेलुगु क्षेत्र में भी अर्द्रा नक्षत्र बोवाई के लिए बहुत ही श्रेष्ठ माना गया है। तेलुगु की लोकोक्ति इस प्रकार है—

"आरुद्र कार्ते बित्तनानिकी, अन्नमुपेट्टिन इंटिकी सेगि लेदु"

---

10. वेप — नीम; नागलि — हल।

अर्थात् आर्द्रा की बोवाई और अन्नदान करने वाले घर की कोई भी त्रुटि नहीं है। धान की बोवाई के लिए आर्द्रा को श्रेष्ठ बताने वाली हिंदी की दूसरी लोकोक्ति इस प्रकार है––

"अर्द्रा रेड़ पुनर्वसु पाती। लाग विरैया दिया न बाती।।"

इस लोकोक्ति में आर्द्रा नक्षत्र में धान बोने से इसके पुंज मोटे-मोटे और उसकी उपज आदि सब कुछ अच्छी होने की बात कही गयी है। इसके विपरीत पुनर्वसु की बोवाई से उसकी फसल में पत्तियाँ अधिक होने की बात भी स्पष्ट है।

यद्यपि तेलुगु क्षेत्र में पुनर्वसु के संबंध में प्रचलित लोकोक्ति नहीं मिलती, फिर भी एक लोकोक्ति वर्षा के संबंध में प्रचलित है जिससे परोक्ष रूप से यही अर्थ निकलता है कि बोवाई के लिए पुनर्वसु लाभदायक नहीं है––

"पुनर्वसु पुष्यालकु पूरेडु अडुगैन तडुवदु"।

हिंदी क्षेत्र में "चित्रा" नक्षत्र के आधा व्यतीत हो जाने पर धान फूटने की बात कही गयी है––

"आधे चित्रा फूटी धान। विधि का लिखा न होई आन।।"

तेलुगु में भी इसी भाव को व्यक्त करने वाली एक लोकोक्ति इस प्रकार है––

"चित्तकु चिरुपोट्ट"

क्वार में कन्या की संक्रांति आने पर जिसके धान की खेती तैयार हो जाए और इसी प्रकार मीन की संक्रांति लगने पर जिसके खेत में जौ की फसल तैयार हो, वह लौनी करे। इस भाव को व्यक्त करने वाली हिंदी की लोकोक्ति है––

"कन्या धान मीन जौ। जहाँ चाहे तहाँ।"

यद्यपि तेलुगु प्रांत में इस प्रकार की लोकोक्ति नहीं मिलती, फिर भी वहाँ यही विश्वास है। पर कन्या में बोवाई का कार्य यदि कोई करे तो उसके लिए फसल जो होगी, वह बिलकुल नहीं के बराबर है। तेलुगु की एक लोकोक्ति इस भाव को प्रकट करती है––

"कन्यलो चल्लिते ऊदुकोनि तिनडानिकि उंडवु"

अर्थात् कन्या में यदि बीज बोए जाएँ तो फूँक-फूँक कर खाने के भी बीज नहीं होंगे। एक अन्य कहावत भी इस भाव को व्यक्त करती है––

"कन्यलो चल्लिते कनुगुंतल कैना चालवु"

अर्थात कन्या में यदि बीज बोए जाएँ, उससे होने वाली फसल के बीज उतने भी नहीं होंगे जिनसे आंख का गड्ढा भर सके। हिंदी क्षेत्र में पुष्य-पुनर्वसु नक्षत्र में धान और श्लेषा नक्षत्र में जोन्हरा के बोने का प्रमाण माना गया है––

"पुष्य-पुनर्वसु बोवै धान। असलेषा जोन्हरी परमान।।"

आन्ध्र में भी धान की बोवाई के लिए भी वही विश्वास है।

बोवाई के संबंध में हिंदी में प्राप्त एक लोकोक्ति के अनुसार बुधवार को बोना और शुक्रवार को काटना श्रेष्ठ माना गया है–

"बुद्ध बावणी, सुक्कर लावणी,,"

किन्तु तेलुगु में प्राप्त लोकोक्ति के अनुसार बुधवार को खेत जोतना श्रेष्ठ माना गया है––

"बुधवारं दुन्न भमिनि दुन्निना, त्रोक्कि ना पोंगिपोंगि पंडुतुंदि"

अर्थात् बुधवार के दिन भसा यदि खेत की जुताई करे तो फसल बहुत ज्यादा होगी। तेलुगु में एक और कहावत प्राप्त है जिसके अनुसार शुक्रवार बोवाई के लिए और बृहस्पतिवार फसल काटन के लिए श्रेष्ठ हैं—

"वित्तुटकु शुक्रवारं, कोयुटकु गुरुवारं"

इस प्रकार बोवाई से संबंधित और भी अनेक लोकोक्तियाँ दोनों ही क्षेत्र में मिलती हैं।

३.७.२. सिंचाई से संबंधित लोकोक्तियाँ :—

खेती के प्राण सिंचाई का निर्भर रहते हैं! पानी के अभाव में खेती को सफल बनाने के लिए चाहे कितने ही प्रयत्न किये जाएँ तो भी कुछ लाभ नहीं होता। खेती किसी भी चीज की हो, पानी देना बहुत ही आवश्यक है।

हिंदी में एक कहावत है—

"काले फूल पाया पानी। धान मरा अधबीच जवानी"।।

अर्थात् धान में फूल लगते ही यदि वह पानी न पावे और काला हो जावे तो उसे यथा शीघ्र पानी देने की व्यवस्था करे ; अन्यथा वह अपनी जवानी के आधे अंश में पहूँचते ही मर जायेगा। तेलुगु प्रांत में भी कृषि कार्य केलिए पानी का होना बहुत ही आवश्यक माना गया है। कभी-कभी इतना अकाल पड़ जाता है कि खेती के लिए जितने भी पैसे खर्च कियो, कितनी ही मेहनत करनी पड़ी और कितनी ही तकलीफें झेलनी पड़ी ; सब के फल स्वरूप किसान को कुछ भी नहीं मिलता। इसका एकमात्र कारण है कि इस कार्य के लिए पानी का अभाव है। इसी कारण बिना पानी के खेत को संतान रहित स्त्री से तुलना की गयी है। तेलुगु में कहा भी गया है—

"नीरु लेनि सेद्यं गोड्रालितो समानं"

हिंदी में खेती के लिए पानी देना अत्यंत कठिन कार्य समझा गया है। यहाँ तक कहा गया है कि खेत को पानी देना प्राणार्पण करने के समान है[11]।

तेलुगु क्षेत्र में यद्यपि इस क्रिया के संबंध में इस तरह का विवरण अप्राप्य है, पर कर्षक लोगों के अनुभव और कथनों में प्रायः यही देखा जाता है कि सिंचाई का कार्य अत्यंत कठिन है। इस कार्य को संपन्न करने केलिए कृषक समाज जमीन आसमान को एक कर देता है जैसा कि ऊपर स्पष्ट रूप से कहा जा चुका है कृषि कार्य पर सिंचाई का बहुत ही महत्वपूर्ण असर है। हिंदी में कहा गया है—

"सभी किसान हेठी। अगहनियाँ पानी जेठी।।"

अर्थात् खेती में सिंचाई की प्रधानता को देखते हुए उसे अगहन का पानी मिलना श्रेष्ठ है। इसके आगे किसान की योग्यता न्यून है।[12]

सिंचाई के संबंध में एक और बात कहना अनुचित नहीं होगा। कभी कभी ऐसा हो जाता है कि खेत में ज्यादा पानी आ जाता है। इससे धान के पौधे पानी में डूबकर सड़ जाते हैं। अतः खेती खतम हो जाती है और कर्षकों को

---

11. श्रीरामलग्न पाण्डेयः कृषि के आचार्य "घाघ और भड्डरी", (प्र. हिंदी साहित्य मंदिर, वाराणसी, पृ० ४७))
12. श्रीरामलग्न पाण्डेय कृषि के आचार्य "घाघ और भड्डरी", (प्र०. हिंदी समाहित्य मंदिर, वाराणसी) पृ. ४७।

आठ-आठ आँसू रोने पड़ते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि कृषि कार्य के लिए जल-गंगा की आवश्यकता के साथ ही उसकी नियमितता का भी होना अत्यंत जरूरी है।

३.८. कृषि प्रशंसात्मक लोकोक्तियाँ:—

तेलुगु और हिंदी दोनों ही क्षेत्रों में कृषि प्रमुख व्यवसाय है। भूमि के कणों के साथ-साथ कृषक जनता के श्रम बिंदुओं का समन्वय करके यहाँ के जनजीवन की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उत्पादन करता है। इस व्यवसाय के साथ कितनी लोकोक्तियाँ संबद्ध हैं; यह उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है।

कृषि कार्य से संबंधित जन भूमि पर मातृत्व का आरोप करके उसे जननी माता के गुणों से विभूषित कर देता है और इस प्रकार भूमि या खेत एक मातृदेवी के रूप में प्रतिष्ठित हो जाती है। अथर्वण वेद में "माता भूमिः पुत्रोहम् पृथिव्याः" वाले मंत्र की आत्मा में यही भाव मुखरित है। यह मातृत्व कल्पना तेलुगु और हिंदी दोनों क्षेत्रों में प्राप्त है।[13] इसके अलावा दोनों प्रांतों में कुछ प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीकात्मक दिव्य रूप प्राप्त होते है। आंध्र में "गंगम्मा" या "गंगानम्मा" उर्वरा शक्ति और उत्पादन की देवी प्रतीत होती है। साथ ही कुछ देवताओं की भी पूजा की जाती है और प्रत्येक वर्ष कुछ चुने हुए स्थानों में मेले भी होते हैं। उदाहरण के लिए "कोटप्प" आदि देवताओं की पूजाएँ आंध्र के गुंटूर जिले में जोर-शोर से की जाती है। इसी प्रकार आन्ध्र के पश्चिम गोदावरी जिले में "सिरिबोम्मा तीर्थम" मनाया जाता है। आन्ध्र प्रान्त के सर्कार जिलों में कृषि कार्य में सफलता की खुशी मनाते हुए कृषक लोग अपने-अपने बैलों और गाड़ियों को रंग-बिरंगे कागजों तथा तरह-तरह के फूलों से सुसज्जित कर बड़े हर्ष के साथ उत्सव मनाते हैं। इन सब क्रियाओं की पृष्ठभूमि में खेती ही मूल कारण प्रतीत होती है।

ऊपर जो "गंगम्मा" का उल्लेख किया गया है; उस पर चढ़ी हुई बली के रक्त से कृषि भूमि का अभिसिंचन करके[14] तेलुगु क्षेत्र के किसान लोग जमीन की उर्वरा शक्ति की वृद्धि और सुरक्षा में विश्वास रखते हैं। ऐसा माना जाता है कि इसी देवी की संतुष्टि पर वर्षा का होना या न होना निर्भर है।

हिंदी क्षेत्र "बहिमता"[15] खेती से संबंधित देवी है। "मेहासिन" वर्षा की तथा "सीता" कृषि की उपज की देवी मानी जाती है। इस आदि-दैविक वातावरण में लोक विश्वास और उन विश्वासों का पौराणिक रूप दोनों स्थानों पर प्रायः समान मिलता है। इस सब की विस्तृत व्याख्या विषय के बाहर की वस्तु बन जाती है। अतः इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि कृषि भूमि को दिव्यरूप में कल्पना जन की कृतज्ञता और भूमि के मातृ-सुलभ गुणों की

---

13. तेलुगु : "तल्लिपेंचग वलयु धरणि पेंचग वलयु
तल्लि इच्चिन पालु कन्न धरणि इच्चिन पालु मिन्न"

हिंदी : हिंदी में भू देवी, धरती माता आदि शब्दों से इन्हीं लोकोक्तियों के अर्थ को व्यक्त किया गया है और "धरती माता सबसे बड़ी" जैसे वाक्य भी हिंदी प्रांत में सुनाई पड़ते हैं।

तेलुगु में भी गौ और भूमि दोनों को "माता" शब्द से सम्बोधित किया गया है जैसे— "गो माता" और "भू माता" वाले शब्द लोक प्रयोगों में प्राप्त हैं।

14. इस क्रिया को तेलुगु में "पोलि" (   ) कहते हैं। हो सकता है कि इस शब्द का मूल "बलि" शब्द ही हो।

15. इसका मूल "महिमता" में दीखता है।

आनन्दात्मक स्वीकृति की ही अभिव्यक्ति है। हिंदी क्षेत्र में एक बहु प्रचलित लोकोक्ति है जिसमें कृषि कार्य को अन्य सभी व्यवसायों से श्रेष्ठतर कहा गया है——

"उत्तम खेती मध्यम बान[16]।
नीच चाकरी भीख निदान ।।"

यद्यपि इसी शैली की लोकोक्तियाँ तेलुगु में अप्राप्त है फिर भी कृषि कार्य की प्रशंसा में अनेक कहावतें प्रचलित हैं। एक तेलुगु लोकोक्ति में कहा गया है कि यदि कृषि कार्य में थोड़ा भी लाभ हो तो इस कार्य को छोड़ना नहीं चाहिए——

"वित्तनालु बंचिना व्यवसायं वदलकु"

पराशर खेती की प्रशंसा करते हुए कहते हैं——

"अवस्त्रत्वं निरन्नत्वं कृषितो नैव जायते।
अनातिथ्यं च दुःखत्वं दुर्मना न कदाचन।"

इसका अर्थ यह है कि कृषि कार्य के कर्ताओं को अन्न या वस्त्र संबंधी संकट सहना नहीं पड़ता। साथ ही अतिथि सेवा भी, जो गृहस्थ जीवन का सबसे प्रमुख धर्म है, खेती के द्वारा सुचारु रूपेण चलती रह सकती है। तेलुगु में एक कहावत है जिसका तात्पर्य है कि किसान स्वयं अन्न से अपना पालन नहीं करता, सभी को वह भोजन कराता है——

"अंदरकु अन्नं पेट्टेवाडु रैते"

हिंदी में भी कुछ लोकोक्तियाँ हैं जिनमें संसार का आधार अन्न माना गया है और अन्न का उत्पादक कृषक इस दृष्टि से महान् कहा गया है। डा. सत्येन्द्र द्वारा संपादित जाहरपीर गुरु गग्गौ में इस प्रकार की एक लोकोक्ति का प्रयोग है——

"अन्न बिहूना अभि जग सूना यस्तर सूनी काया।
कंठनारि बिनु कविता सूनी देग बिन सूनी माया।।[17]

साथ ही अन्न-धन की प्रशंसा में कहा गया है कि अन्न में समस्त धनों का समावेश है: "अन्न धन अनेक धन"। साथ ही अन्नदान को श्रेष्ठता प्रदान करते हुए "अन्नदान महादान" हिंदी में भी कहा गया है और तेलुगु में भी इस दान की प्रशंसा में एक लोकोक्ति कही गयी है——

"अन्निदानमुलकन्ना अन्नदानमु मेलु"।

---

16. बान —— वाणिज्य।
17. जाहरपीर गुरु गुग्गा——पृ. ६७।

३.९. **निष्कर्ष :**

ऊपर तेलुगु और हिंदी दोनों ही प्रांतों में उपलब्ध कृषि-संबंधी लोकोक्तियों पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार प्रस्तुत किये गए हैं। दोनों ही कृषि प्रधान होने के कारण तत्संबंधी लोकोक्तियाँ प्रचुर मात्रा में मिलती हैं। भौगोलिक भिन्नता के कारण दोनों प्रदेशों में भिन्न-भिन्न धानों की खेती होती है। परन्तु कुछ फसलें समान भी हैं। हिंदी प्रांत में अधिकतर गेहूँ, मटर, चना, अरहर, जौ, धान, उड़द आदि के फसल मुख्य हैं जब कि तेलुगु प्रांत में धान की प्रमुखता है। साथ ही जौ, रागुलु, पेसलु (मूंग) आदि के फसल प्रमुख हैं। जो भी भिन्नता पाई जाती है, वह प्रायः भौगोलिक भिन्नता ही के कारण है। फसलों का क्रम भी प्रायः समान है। उपज की प्रथाएँ और जलवायु में जो अंतर मिलता है, वह उक्त विवेचन से स्पष्ट ही है। इस प्रकार के अध्ययन से दोनों प्रदेशों में प्राप्त कृषि संबंधी साम्य और वैषम्य स्पष्ट हो जाता है।

४. जाति संबंधी लोकोक्तियां

४. जातियों से संबंधित लोकोक्तियाँ :

भारत मे अनादि काल से वर्णाश्रम व्यवस्था तथा जाति प्रथा का आचार रहा है। प्रत्येक प्रान्त के सामाजिक जीवन पर इन व्यवस्थाओं की गहरी छाप है और कोई भी क्षेत्र इस प्रकार के आचारों से मुक्त नहीं है। पुराण या वैदिक काल से ही वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार मुख्यत: चार जातियाँ बनाई गई हैं--(१) ब्रह्मण, (२) क्षत्रिय, (३) वैश्य और (४) शूद्र। शूद्र जाति के अंतर्गत अनेक उपजातियों का समावेश हो जाता है। उपजातियाँ प्रत्येक प्रान्त में भिन्न-भिन्न हैं। परन्तु पेशा या वृत्ति की दृष्टि से समान हो सकती हैं। भारत भर के प्रत्येक क्षेत्र में जाति व्यवस्था के होने के कारण उन जातियों से संबंधित लोकोक्तियाँ प्रत्येक क्षेत्र में प्राप्त होती हैं। जो जातियाँ तेलुगु और हिंदी क्षेत्र में समान हैं, उन जातियों से संबंधित लोकोक्तियों में साम्य के साथ ही वैषम्य भी मिल जाता है। साथ ही दोनों क्षेत्रों में ऐसी भी लोकोक्तियाँ पृथक्-पृथक् देखने को मिलती हैं जो एक ही जाति से संबंधित होने पर भी बिलकुल भिन्न अर्थ व्यक्त करती हैं। अत: आगे दोनों प्रान्तों में मिलने वाली जाति संबंधी लोकोक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। जहाँ भी तुलना संभव हो सकी, वहाँ तुलना तो की गई है, साथ ही जहाँ ऐसी तुलना असंभव हुई वहाँ पृथक् रूप से ही दोनों क्षेत्रों की तत्संबंधी लोकोक्तियों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यहाँ के अध्ययन के लिए वही क्रम अपनाया गया है जो वैदिककाल से ही प्रचलित है। एक बात और भी यहाँ कह देना ठीक रहेगा कि जाति संबंधी लोकोक्तियों के संबंध में प्रधानत: उनके आचार-विचार, लेन-देन, मान-मर्यादा आदि बातों पर ध्यान रखा गया है।

४.१. ब्रह्मण-जाति संबंधी लोकोक्तियाँ :

सबसे पहले ब्राह्मण जाति संबंधी लोकोक्तियों का अध्ययन किया गया है। प्राचीन सामाजिक व्यवस्था में ब्राह्मण जाति सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वोच्च ठहरायी गयी पर युग परिवर्तन के साथ ही जाति संबंधी विश्वासों और मान्यताओं में परिवर्तन हो रहा है। वैदिक काल में जो गौरव ब्राह्मण जाति को प्राप्त था, वह आज नहीं। तेलुगु और हिंदी क्षेत्रों में प्राप्त ब्राह्मण जाति संबंधी लोकोक्तियों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्ययन किया गया है।

राजस्थान में ब्राह्मणों के संबंध में मिलने वाली एक कहावत के अनुसार साठ वर्ष तक तो उसको बुद्धि आती ही नहीं है और उसके पश्चात् वह मर जाता है—

"बामण नै साठ बरस ताई तो बुध आवै कोन्या अर पछै आ मर"[1]

तेलुगु प्रान्त में ब्राह्मण को मोटी बुद्धिवाला सिद्ध करने वाली लोकोक्ति इस प्रकार है--

"बापन वरुस बंड वरुस"[2]

ब्राह्मण के पास धन-दौलत जितनी भी हो, पर वह अपनी माँगने वाली प्रवृति को नहीं छोड़ सकता।

---

1. राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन, पृ. १३५।
2. ब्राह्मण के साथ व्यवहार और मोटी अकल वाले के साथ व्यवहार बराबर है।

ब्राह्मण की इस प्रवृत्ति को व्यक्त करने वाली हिंदी की एक लोकोक्ति है--

"ब्राह्मण हाथी पर भी चढ़े, पर भीख नहीं छोड़ता"

इससे तुलनीय तेलुगु की कहावत इस प्रकार है--

"ब्राह्मडु एंत गोप्पवाडैना यायवारं मानडु"१

ब्राह्मण की प्रवृत्ति भिक्षा माँगने की होने के कारण उसके संबंध मे प्रचलित हिंदी लोकोक्ति के अनुसार चाहे अकाल भी क्यों न पड़े ब्राह्मण नहीं मरता--

"काल कुसुम्मै ना मरै, बामण बकरी, ऊँट।
बो भागे बा फिरि चरै, बो सूखा चावै टूट॥"

यद्यपि तेलुगु प्रान्त में भी यही लोक विश्वास है, पर इस संबंध में कोई कहावत नहीं मिलती।

यह तथ्य सर्वमान्य है कि ब्राह्मण प्रायः हमेशा खाने की चिंता करते हुए बड़ी आशा व्यक्त करता रहता है। संस्कृत में प्रचलित एक कहावत हिंदी और तेलुगु प्रान्तों मे भी प्रसिद्ध है--

"ब्राह्मणः भोजन प्रियः।"

तेलुगु में ब्राह्मण को दाल की आशा रखने वाला भी कहा गया है--

"बापडिकि पप्पाश, अल्लुडिकि अत्ताश"।

अर्थात् ब्राहमण को दाल खाने की चिंता रहती है और दामाद को सास की आशा बनी रहती है।

ब्राह्णों की अन्य वृत्तियों के लिए असमर्थ ठहराते हुए तेलुगु में कहा गया है कि यदि ब्राह्मण खेती करे और कापु (शूद्रों की एक उपजाति) पढ़ने लगे तो पैसा व्यर्थ हो जाता है--

"बापन सेद्यं बत्तों नष्टं, कापुल चदुवुलु कासुल नष्टं"

ब्राह्मणों को दैव तुल्य बताकर उनकी पूजा करने से मोक्ष मिलने का विश्वास तो दोनों प्रदेशों में है, किन्तु तत्संबंधी कोई उक्ति नहीं मिलती। ब्राह्मणों को अधिक धार्मिक विश्वासी ठहराते हुए तेलुगु में कहा गया है--

"ब्राह्मडा ब्राह्मडा नी आचारमेंत अटि नीटि कोद्दी अन्नाडट"

अर्थात् जब ब्राह्मण से पूछा गया है कि तुम्हारा आचार कितना ? तो उसने जवाब दिया है "जितना पानी हो," इसी संबंध में हिंदी की एक कहावत है--

"जल सूर ब्राहमण, रण सूर क्षत्रिय"

इसके अलावा काले ब्राह्मणों के अविश्वसनीय होने की बात दोनों ही क्षेत्रों में कही गयी है। **हिंदी में** कहा गया है--

"काला ब्राह्मण गोरा चमार।
इनको मत पतियायो यार ।।"

तेलुग् में भी इसी प्रकार की लोकोक्ति प्राप्त है--

"नल्ल बापनोण्णी, एर्र मादिगोण्णी नम्मरादु"।

इस प्रकार की अन्य लोकोक्तियाँ ब्राह्मणों के संबंध में दोनों प्रान्तों में मिलती हैं। साथ ही अन्य जातियों के संबंध में प्रचलित लोकोक्तियों का भी अध्ययन आगे किया गया है।

४.२. **क्षत्रियः**

वर्णाश्रम धर्मों एवं धर्मशास्त्रों में ब्राह्मणों के पश्चात् द्वितीय स्थान क्षत्रियों को प्रदान किया गया है। तेलुगु और हिंदी प्रान्तों में भी यही महत्व क्षत्रियों को दिया गया है। दोनों ही क्षेत्रों के राजपूत लोग एक दूसरे से भिन्न हैं। असली राजपूत व्यक्ति तो राजपूताने के हैं जो शूरवीर समझे जाते थे, किन्तु आन्ध्र प्रदेश में मौजूद व्यक्ति यद्यपि राजपूत नहीं कहे जाते, पर "राजू" कहलाते हैं। हो सकता है इनका संबंध कभी राजपूतों से रहा हो। अतः इस स्थान पर उत्तर के राजपूतों तथा आन्ध्र की "राजू" जातियों के संबंध में प्राप्त लोकोक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करना समीचीन होगा।

राजपूत लोग अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके संबंध में कहा जाता है कि जब धरती को उनसे कोई छीनना चाहे तो उसकी रक्षा करने लिए अपने प्राणों तक को न्योछावर करने में कभी कदम पीछे नहीं रखते---

"धर जाता धरम पटलताँ तिया पडंता ताव।
तीन दिवस ए मरण का, कूण रंक कुण राव ।।"[3]

तेलुगु क्षेत्र में इससे पूर्ण साम्य रखनेवाली कहावत नहीं मिलती। लेकिन बिना राजा का देश उसी प्रकार महत्वहीन है जैसे भगवान की मूर्ति के बिना मंदिर का महत्व नहीं रह जाता है। कहा भी गया है---

"राजु लेनि ऊरु, पूजलेनि गुडि"

हिंदी की एक अन्य कहावत के अनुसार राजा जिस रास्ते से चलता है, प्रजा भी उसी का अनुकरण करती है---

"जैसे राजा, वैसी प्रजा"

तेलुगु प्रान्त भी इस प्रकार की लोकोक्ति से मुक्त नहीं है--

"राजेदारैते, प्रजलादारि"

अर्थात् प्रजा उसी रास्ते को ग्रहण करेगी जिस रास्ते को राजा अपनाता है।

---

3. राजस्थानी कहावतें: एक अध्ययन, पृ. २३८।

राजा [illegible] को क्रूरता को व्यक्त करने वाली लोकोक्ति तेलुगु में इस प्रकार है।

"राजुकु कंटनु, पामुकु पंटनु विषमु"

अर्थात् राजा की आंखों में और सांप के दांतों में विष रहता है। साथ ही एक अन्य कहावत में कहा गया है कि जो कार्य राजा करे, उनमें उसी प्रकार कोई गलती नहीं हो सकती है जिस प्रकार भगवान राम की क्रियाएं दोष रहित हैं।

"राजु चेसिन कार्यालकु, रामुडु चेसिन कार्यालकू एन्निक लेदु"

ऐश-आराम या ठाट-बाट से रहने के लिए राजा का पुत्र हो कर जन्म लेना ठीक बताते हुए उक्ति बन पड़ी है--

"राजु बिड्डैना कावालि, सानिदानि तम्मुडैना कावालि"

अर्थात् या तो राजा का पुत्र होना चाहिए या वेश्या का छोटा भाई होना चाहिए।

हिंदी क्षेत्र में यद्यपि इस प्रकार का विश्वास कुछ स्थानों पर दर्शनीय है, पर तत्संबंधी कोई लोकोक्ति शायद नहीं बनी है।

पहले जो सच्चे राजपूत थे, वे आज नहीं हैं। असली राजपूती तो प्रायः समाप्त हो गई। इस तथ्य को उद्घाटन करने वाली एक उक्ति है;--

"ठाकुर गया, ठग रह्या, रह्या मुलक का चोर"

तेलुगु की एक कहावत में भी यही भाव व्यक्त किया गया--

"पूर्वपु राजुलु, नेटि बुरद राजुलु"

अर्थात् पुराने जमाने के राजा लोग सच्चे थे, किन्तु आज के राजा यशहीन हैं।

राजपूत जाति के संबंध में एक अन्य कहावत भी है कि उनको धनहीन और निकम्में होने परभी यदि "तू या "अरे" कहकर पुकारने से क्रोध आ जाता है--

"राजपूत को रे, अरे या तू कहकर पुकारना गाली के बराबर।"

लेकिन तेलुगु में प्राप्त एक कहावत के अनुसार राजा लोग मरणासन्न परिस्थिति में भी हाथी पर सवार होने की इच्छा करते हैं--

"चच्चे मुंदु कूडा राजु (एनुगुपै) सवारी चेस्ताडु"

सामान्यतः आन्ध्र के "राजू" लोग धनवान होते हैं। उनके धनी रहने के पीछे यही परम्परा रही होगी कि वे पहले अनेक राज्यों के मालिक रहे होंगी।

उक्त लोकोक्तियों के अलावा "राजपूत" या "राजू" जाति से संबंधित कुछ अन्य लोकोक्तियों आंध्र तथा हिंदी प्रांतों में प्रचलित हैं।

४.३. **बनिया** :

जैसे अनेक कहावतें "ब्राह्मण" जाति के संबंध में हिंदी और तेलुगु दोनों प्रदेशों में प्राप्त होती हैं ; उसी प्रकार "बनिया" या वैश्य जाति के संबंध में मिलनेवाली लोकोक्तियों की संख्या भी कम नहीं है। दोनों क्षेत्रों में जो मान्यताएँ इस जाति के संबंध में प्रसिद्ध हैं ; वे अधिकांशतः समान हैं।

बनिए के संबंध में यह प्रमुख विश्वास है कि वह गरीब नहीं हो सकता। बाहर से गरीब होने पर भी यथार्थता उतना गरीब नहीं हो सकता जितना अन्य जाति वाले होते हैं। हिंदी में प्राप्त एक लोकोक्ति के अनुसार चाहे बनिया दीवाला भी निकालेगा तो कुछ रखकर ही निकालेगा——

"वैश्य यदि दिवाला भी निकालेगा तो कुछ रखकर ही निकालेगा।"

तेलुगु की लोकोक्ति के अनुसार जितना भी गरीब हो, परन्तु उसके पास कम से कम उतना तो सोना जरूर होगा जितना कि एक अंडा होता है——

"कोमटि एंत बीदैना कोडि गुड्डंत बंगारं उंटुंदि"

हिंदी क्षेत्र की एक कहावत है——

"बनिया गिरेगा तो कुछ देख कर ही गिरेगा"

इससे तुलनीय तेलुगु की लोकोक्ति इस प्रकार है——

"ऊरकने सेट्टि वरद बोडु"[4]

बनिए की भीरुता के संबंध में हिंदी और तेलुगु क्षेत्रों में अनेक विश्वास, लोकोक्तियाँ और कहानियाँ प्रचलिता हैं। हिंदी की एक लोकोक्ति के अनुसार यदि वह लड़ेगा तो किसी घर में लगी हुई ईंट को उखाड़ कर वार करना चाहेगा——

"बनिया लड़ेगा भी तो गढी ईंट को ही उखाड़ेगा"

तेलुगु की उक्ति में सीधी बात कही गई है——

"कोमटि पिरिकि, नूतुलो उरिकि"

बनिए को सीधी प्रकृतिवाला न मानते हुए तेलुगु में उसकी तुलना बंदर के साथ की गयी है——

"कोमटितो माट, कोतितो सय्याट"

अर्थात् बनिए के साथ व्यवहार करना बंदर के साथ खेलने के समान है।

बनिए की व्यापार संबंधी बही आदि पुस्तकों में पाई जाने वाली लिखावट को पढ़ना किसी के बस की बात नहीं। हिंदी और तेलुगु प्रान्तों में इस तथ्य कथन वाली लोकोकितयाँ हैं——

"बनिया लिखे पढ़े करतार"——"कोमटि लेक्क भगवंतुनिके एरुक"

---

4. व्यर्थ ही बनिया बाढ़ में नहीं जाएगा।

इस जाति के संबंध में एक अन्य विश्वास यह है कि बनिया पुण्य कर्म, पूजा-पाठ आदि तभी करता है जब वह संकट-ग्रस्त हो जाता है। अतः हिंदी में कहा गया है––

"बनिया खाट में ब्राह्मण ठाट में"

लेकिन तेलुगु में बनिए की भक्ति को झूठी ठहराते हुए कहा गया है––

"कोमटि भक्तुडु कादु, तगरं कत्ति कादु"

अर्थात् बनिया भक्त नहीं है और सीसा तलवार नहीं है।

बनियों के बारे में विश्वास है कि धन की लालच उनको इतनी होती है कि––

"चमड़ी भले ही जाय पर दमड़ी न जाय।"

तेलुगु में इसके समानार्थ वाली कहावत इस प्रकार है––

"कोमटि प्राणंपोइना पैस विडुवडु"।

हिंदी प्रान्त में बनिए के लोभ के बारे में एक अन्य उक्ति इस प्रकार है––

"बनिया डेली न दे भेली दे"

अर्थात् कोई बलात् उससे ठाड की मेली ले सकता है पर उदारतापूर्वक वह ढेली भी नहीं दे सकता। साथ ही उसकी कंजूसी को और पैसे के लिए अन्यों को पीड़ा देने की प्रवृत्ति को देखकर हिंदी में "मक्खी चूस" कहा गया है जहाँ पर तेलुगु में उसकी तुलना खटमल से करते हुए यह कहा जाता है कि वह खटमल की तरह लोगों का खून चूसता है। इसी कारण उसके बारे में "नींबू बनिया आमिया नस के ही रस देइ,," जैसे सुभाषित भी प्रसिद्ध है। आन्ध्र प्रान्त में वैश्य की तुलना एक वृक्ष विशेष (ईत) से की गयी है जिसके पत्ते सूखने पर भी नहीं गिरते––

"ए आकु रालिना ईताकु रालदु"

वैश्य हमेशा अपनी आमदनी पर ही ध्यान रखता है। यहाँ तक कि उसको नींद में भी जगाकर पूछे जाने पर कि "तुम क्या कर रहे हो ?" उसका जवाब यही है कि "मैं गिनकर थैली में डालरहा हूँ" यही कार्य वह बराबर करता है। इस गुण को व्यक्त करने वालीं एक तेलुगु की लोकोक्ति इस प्रकार है––

"कोमटी कोमटी एमि चेस्तुन्नावंटे ; वलक पोसुकोनू, एत्तुकोनू अन्नट्लु।"

हिंदी क्षेत्र में एक ऐसी प्रसिद्धि है कि बनिया चापलूसी करके किसी न किसी तरह अपना काम बना ही लेता है। इस तथ्य को व्यक्त करने वाली उक्ति है––

"और मंत्री सब कीजिए, एक कीजै बनिया।
डरो बुलावे, मीठे बोले, करे मन का पानिया।।"

अर्थात् मंत्रियों में एक पद बनिए को अवश्य देना चाहिए क्योंकि वह मीठा बोलकर जिसे चाहे अपने पास बुला लेता है तदनंतर इच्छानुसार काम करता है। यहाँ तक कहा गया है कि पदाधिकारियों की खुशामद करके किसी न किसी प्रकार घूस देकर भी अपना काम बना लेता है--

"घूँस चलती तो बनिया धर्मराज को भी घूँस दे देता"

मगर तेलुगु प्रान्त में ऐसी कोई उक्ति नहीं मिलती है।

जो बनिया समय पर व्यापार नहीं करता, उसको गँवार ठहराया गया है--

"वक्त पड़े बणिजे नहीं, सो बनिया गँवार"

राजस्थान की एक कहावत के अनुसार व्यापार में फँसा हुआ बनिया तथा दूसरों के खेत में हरा-मरा घास चरने वाली गाय वापस अए तो आए, नहीं तो ये दोनों अपने काम में लगे ही रहते हैं--

"विणजी लग्यो वाणियो, चूंटी लागी गाय।
बावड़ै तो बावड़ें, नहि दूर नीकल जाय।।"[5]

इस प्रकार की एक अन्य उक्ति में उसकी अवसरवादिता को स्पष्ट करते हुए वेश्या, कौआ आदि से उसकी तुलना की गयी है--

"बनिया मीत न वेस्या सती। कागा हँस न गधा जती"

इस कहावत से यह स्पष्ट होता है कि उसी प्रकार बनिए का कोई मित्र नहीं होता जिस प्रकार कोई भी वेश्या पतिव्रता या सती साध्वी स्त्री नहीं होती।

वाणिज्य या व्यापार को बनियों की ही वृत्ति बताते हुए गीता में कहा गया है कि व्यापार करने में केवल बनिया ही समर्थ है और यदि कोई अन्य जाति के लोग व्यापार करने लगेंगे तो झगड़ा मोल लेंगे--

"कृषिगौरक्षवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्"

इस प्रकार की और भी अनेकों अन्य लोकोक्तियाँ वैश्य जाति के संबंध में दोनों क्षेत्रों में प्रचलित हैं जिनके माध्यम से व्यक्त जातिगत वृत्तियाँ प्रायः समान हैं।

ऊपर ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य--तीनों जातियों के संबंध में तेलुगु और हिंदी प्रान्त को ध्यान में रखते हुए दोनों स्थानों पर प्राप्त होने वाली लोकोक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा चुका है। नीचे शूद्रों और उसकी उपजातियों के संबंध में विवेचन किया गया है।

---

5. राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन, पृ. १४०।

४.४. कायस्थ :

हिंदी प्रान्त में एक मुख्य जाति "कायस्थों" की है। इस जाति से तुलनीय जाति आन्ध्र की "कम्मा" जाति है। "कायस्थों" के संबंध में हिंदी क्षेत्र में विश्वास यह है कि इस जाति के लोग बहुधा (हमेशा) झूठ बोलते हैं; कपटी हैं और कोई भी सच्चा नहीं होता है।

"कायस्थ का बच्चा कभी न सच्चा।
यदि हो भी सच्चा तो गधे का बच्चा॥"

तेलुग् प्रान्त के "कम्मा" जाति के संबंध में भी यही धारणा है--

"कम्मनी, तुम्मनी नम्मरादु"

अर्थात् "कम्मा" जाति और "तुम्मा" (वृक्ष विशेष) हमेशा अविश्वसनीय है। आन्ध्र के "कम्मा" जातीकी दो प्रमुख विशेषताएँ हैं--

(१) यह जाति बहुत ही घमण्डी होती है।

(२) इस जाति के लोग प्रायः धनवान होते हैं।

आन्ध्र प्रान्त में प्रायः "कापु" (कम्मा जाति की उपजाति है) जाति की प्रधान वृत्ति कृषि कार्य है। साथ ही ये अनेक अन्य वृत्तियों को भी अपना जीवनाधार बनाते हैं। इनके संबंध में प्रचलित एक उक्ति के अनुसार यदि 'कापु" गरीब हो तो अनाज की फसल भी कम होगी--

"कापु बीदैते कक्कंबीद"

अर्थात् "कापु यदि गरीब हो तो खलिहान भी कमजोर होता है।" एक अन्य कहावत के अनुसार धनवान लोग "कापु" की मजदूरी तथा श्रम लाभ उठाकर कमाते हैं--

"कापुल कष्टं, मूपुल संपद"[6]

इस जाति के लिए पढ़ाई का कार्य अनुपयुक्त माना गया है और कहा गया है कि इनकी पढ़ाई से पैसे खर्च होने के अतिरिक्त लाभ कुछ नहीं है--

"कापुल चदुवुलु कासुल नष्टं"

इस जाति के व्यक्तियों को असत्यवाले बतलाते हुए कहा गया है--

"कापुलवानि की, कंदिगिंजकू सत्यं लेदु"[7]

---

6. "कापु" की मजदूरी या श्रम ही धनवानों की संपदा है।
7. "कापु" और अरहर के दाने सच्चे नहीं होते।

साथ ही इनकी कृषि प्रधान वृत्ति होने के कारण कहा गया है कि इन लोगों का भाग्य पटवारी लोग जानते हैं––

"कापुल भाग्यं करणालकेरुक"

इस प्रकार की कुछ अन्य कहावतें भी इस जाति के संबंध में प्रचलित है।

४.५. चमार :

हिंदी और तेलुगु दोनों क्षेत्रों में एक निम्न जाति मिलती है और वह है " चमार "। चमार को तेलुगु में "मादिगा" कहते हैं और इस जाति की प्रधान वृत्ति जूतों का है। यह जाति दोनों ही प्रदेशों में अस्पृश्य मानी जाती है।

यद्यपि इस जाति वालों की प्रधान वृत्ति जूतों की है, किन्तु फिर भी हमेशा उसके लिए जूते की कमी रहतीहै। तेलुगु प्रान्त में कहा गया है––

"मालवानि आलयिना माडे कालुकि चेप्पु लेदु"

अर्थात् चमार की पत्नी होने पर भी कड़ी धूप में पहनने के लिए जूता नहीं है।

हिन्दी क्षेत्र में चमार के संबंध में उसकी बदनसीबी को कोसते हुए कहा गया है कि चमार के सिर अपना जूता ही पड़ता है––

"चमार के सिर चमार का जूता"

दोनों क्षेत्रों में यही विश्वास है कि वह अस्पृश्य है। तेलुगु प्रान्त में इस भावना का आधिक्य है। इसके संबंध में कहा जाता है कि यदि चमार को छुए तो "मंगळगिरि" (तीर्थस्थान) जाकर भगवान की पूजा करने पर भी मुक्ति नहीं मिलती––

"मालवाडिनि मुट्टकोनि मंगळगिरि पोइना मंचि जरुगदु"

अर्थात् चमार को छूने से "मंगळगिरि" जाकर पूजा करने पर भी भलाई नहीं होती। लेकिन हिंदी प्रान्त में इस प्रकार कोई उक्ति नहीं मिलती है।

इस प्रकार की कुछ अन्य लोकोक्तियाँ हिंदी और तेलुगु प्रान्तों में मिलती हैं। किन्तु ब्राहमण आदि जातियों से संबंधित लोकोक्तियों की संख्या की तुलना में इस जाति की लोकोक्तियाँ नहीं के बराबर हैं।

४.६. पेशेवार जातियों से संबंधित लोकोक्तियाँ :

भारतवर्ष यद्यपि कृषि प्रधान देश है; फिर भी खेती के अतिरिक्त कुछ अन्य व्यवसाय भी प्रत्येक क्षेत्र में फैली हुई हैं। जो अन्य व्यवसाय तेलुगु तथा हिंदी प्रान्तों में प्रचलित हैं उनमें कुछ तो समान हैं। किन्तु कुछ ऐसे भी व्यवसाय हैं जो दोनों क्षेत्रों में भिन्न हैं। कृषि के अतिरिक्त अन्य व्यवसायों के अन्तर्गत व्यापार तथा परम्परागत वृत्तियाँ आती हैं। व्यवसायिक या वृत्तियों पर आधारित जातियों में नाई, धोबी, सुनार, लुहार, ग्वाला, कुम्हार, बढ़ई, दर्जी आदि मुख्य हैं। इनके अलावा और भी कुछ व्यवसाय दोनों ही क्षेत्रों में दर्शनीय हैं। इनके अलावा और भी कुछ व्यवसाय दोनों ही क्षेत्रों में दर्शनीय हैं जो एक दूसरे से तुलनीय नहीं हैं और समान भी नहीं हैं। नीचे उक्त व्यवसायों

सेसम्बद्ध लोकोक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन दोनों प्रान्तों मे प्रचलित तत्संबंधी लोकोक्तियों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

हिंदी प्रान्त में प्रचलित एक लोकोक्ति के अनुसार जिसका जो व्यापार है, उसमें उसी को लाभ हो सकता है। यदि अन्य व्यक्ति उस व्यापार में दखल दें तो उसे लाभ होने की बात तो रही दूर, इसके विपरीत हानी भी होगी। इस नीति कथन की उक्ति इस प्रकार है––

"कसबी किसब करे तो छाजै।
नहीं तो मूढ़ मोंगरा बाजै।"

तेलुगु प्रान्त में यद्यपि इस प्रकार का सामान्य कथन नहीं मिलता पर एक अन्य ढंगसे दो-तीन लोकोक्तियों के माध्यम से यही बात व्यक्त की गई है। जैसे व्यापार करने के लिए ब्राह्मणों की तथा पढ़ाई के लिए बनियों की अनुपयुक्तता बताते हुए एक उक्ति कही जाती है–––

"ब्राहमल व्यापारं, चदुवुल कोंस कोमट्ल आराटं व्यर्थं"

अर्थात् ब्राह्मणों का व्यापार करना और वणिक लोगों का पढ़ाई के लिए प्रयत्न करना व्यर्थ है। इसी प्रकार खेती के लिए ब्राह्मणों की और अध्ययन के लिए "कापु" (शद्रों की एक उप जाति) की अनुपयुक्तता को बताने वाली तेलुग की अन्य उक्ति भी मौजूद है–––

"चदुवुकु कापुलु, सेद्यानिकि ब्राहमलू पनिकिरारु"

अर्थात् अध्ययन के लिए "कापु" और कृषि कार्य के लिए ब्राह्मण काम में नहीं आते।

साथ ही व्यापार के लिए वणिक लोगों की श्रेष्ठता बताते हुए हिंदी में कहा गया है–––

"बनिक करैला वाणिया और करैला रीत"

इस उक्ति का मतलब यह है कि व्यापार अकेले बनियों के द्वारा ही संभव है, यदि अन्य कोई व्यापार करने गए तो समझना चाहिए कि उससे झगड़ा मोल लिया। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि परम्परागत व्यवसाय और उसमें किसी जाति के परम्परागत कौशल में विश्वास दोनों क्षेत्रों में किया जाता है।

व्यावसायिक जातियों के संबंध में हिंदी तथा तेलुगु प्रान्तों में जो लोकोक्तियाँ प्रचलित हैं, उनमें प्रायः यह देखा गया है कि छिद्रान्वेषण और गुण कथन की अपेक्षा दोषकथन की प्रवृत्ति अधिक है। नीचे उपरिलिखित वृत्तियों के क्रम से ही तत्संबंधी लोकोक्तियों का विवेचन किया गया है।

४.६.१. नाई :

नाई की सामान्य वृत्ति केश-खंडन तथा ढोल बजाने की है। नाइयों की मनोवृत्ति साधारणतः धोखा देने वाली होती है। मनुष्यों में नाई, पक्षियों में कौआ तथा जलचरों में कछुआ धूर्त हैं। हिंदी की उक्ति इस प्रकार है–––

"मनुष्यों में नाई, पक्षियों में कौआ" (धूर्त हैं)

तेलुगु की भी उक्ति इससे साम्य रखती है--

"मानवुललो मंगलि, पक्षुललो काकि" (धूर्तुलु)

साथ ही तेलुगु की एक कहावत के अनुसार नाई प्रत्येक व्यक्ति की हजामत (नष्ट पहुँचाने की) करने की ही बात सोचता है--

"मंगलि पानि तडिपि दिगगोरगडं"

अर्थात् नाई का काम पानी से गीला करके हजामत करना ही है। नाई जिस प्रकार बाल काटते समय कभी-कभी पानी से गीला करता है; उसी प्रकार बड़ी ही चालाकी के साथ दूसरों को हानि पहुंचाकर अपने स्वार्थ की प्राप्ति कर लेता है। नाइयों की वृत्ति केश-खंडन की होने के कारण उनके घरों के या दूकानों के चारों तरफ बाल ही बाल दिखाई देते हैं। हिंदी में कहा गया है--

"नाई की दूकान में बारै बार"

इसी बात को व्यक्त करती हुई तेलुगु की लोकोक्ति भी बन पड़ी है--

"मंगलोल्ल इंटेनक बोच्चु दिब्ब काक मरेमुंटुंदि।"

अर्थात् नाई के घर के आस-पास हर कहीं बालही बाल होते है; इसके अलावा और क्या हो सकता है?

नाई लोग अपने आप को गौरवनीय मानते हैं और अपने को ठाकुर भी बताते हैं-"नाई री जान में से कोई ठाकुर"।[8] तेलुगु प्रान्त में यद्यपि इस प्रकार की कोई कहावत नहीं मिलती पर अपने को गौरवान्वित करने की प्रवृत्ति तो आन्ध्र प्रदेश के नाइयों में भी दर्शनीय है। वे अपने को ब्राह्मणों के समकक्ष जाति वाले मानते हुए कहते हैं--" नाई[9] ब्राह्मण समाजं"। जब कोई उनकी जाति के संबंध में पूछे तो कहते हैं कि "हम नाई ब्राह्मण हैं।"

नाई के संबंध में यह एक धारणा है कि यदि वह पुराना या अनुभवी हो तो बाल ढंग से बना सकता है। यह विश्वास हिंदी तथा तेलुगु क्षेत्रों में पायी जाती है। तेलुगु में नाई का पुराना होना और धोबी का नया होना आवश्यक माना गया है--

"पात मंगलि, कोत्त चाकलि"[10]

हिंदी क्षेत्र में भी बिलकुल इसी प्रकार की उक्ति कही गई है--

"नया धोबी, नाई पुराना"।

---

8. राजस्थानी कहावतें: एक अध्ययन, पृ. १४६।
9. "नाई" शब्द तेलुगु में भी प्रयुक्त है।
10. पुराना नाई और नया धोबी श्रेष्ठ हैं।

नाई से संबंधित हिंदी की एक उक्ति इस प्रकार है---

"चारण मत कर चतुर्भुज, नाई कीजे नाथ।
आधी गोदी बैठवो, माथा ऊपर हाथ ।।"

अर्थात् हे चतुर्भुज ! मुझे चारण मत बनाना, नाई बनाना क्योंकि नाई राजा के पास गद्दी पर बैठता है और राजाके मस्तक पर हाथ रखता है।

तेलुगु क्षेत्र में यद्यपि इस प्रकार की एक उक्ति प्राप्त है जो अनेकों के मुँह से निकलती है---

"एंत गोप्पवानि कैना मंगलि एदुट तल वंचटं तप्पदु',

तेलुगु की इस उक्ति का मतलब यह है कि चाहे कोई कितना भी बड़ा या धनी हो पर प्रत्येक व्यक्ति को नाई के आगे सिर झुकाना ही पड़ता है।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, नाइयों की एक अन्य वृत्ति ढोल बजाना है। अतः इनकी इस वृत्ति के संबंध में तेलुगु में कहा जाता है कि नाई की अनुपस्थिति में किसी भी शुभ कार्य का सम्पन्न होना असंभव है---

"मंगलि लेनिदे ए शुभ कार्यं जरुगदु"

क्योंकि प्रत्येक शुभ कार्य के समय ढोल बाजे आदि का प्रबंध होता है और यह बहुत ही आवश्यक माना जाता है।

इसके अतिरिक्त तेलुगु प्रान्त में एक विशिष्ट प्रथा यह है कि अनेक भक्त चित्तूर जिले के तिरुपति नामक पुण्यक्षेत्र में भगवान श्री वेंकटेश्वर पर बाल चढ़ाते हैं। वहाँ भी नाई ही केश खंडन करने का अधिकारी है। इतना सब होते हुए भी नाई को तेलुगु और हिंदी प्रदेशों में भी अस्पृश्य माना गया है।

इस प्रकार की नाई-संबंधी कुछ अन्य कहावतें भी दोनों प्रान्तों में उपलब्ध हैं, लेकिन इनका अधिक महत्व नहीं है।

४.६.२. धोबी :

धोबी की प्रधान वृत्ति कपड़े धोने की है। इस वृत्ति वाले लोग पूरे संसार में व्याप्त हैं। अतः इस वृत्ति के संबंध में प्रत्येक प्रान्त में लोकोक्तियों का उपलब्ध होना बहुत ही स्वाभाविक है। अतः नीचे तेलुगु तथा हिंदी क्षेत्रों में प्राप्त धोबी संबंधी कहावतों का अध्ययन तुलनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है।

एक ऐसी कहावत हिंदी में प्रसिद्ध है जो प्रायः अन्य सभी प्रान्तों में प्रचलित है---

"धोबी का कुता न घर का न घाट का"।

तेलुगु में भी "चाकलिवानि गाडिद" कह कर इसी प्रकार का भाव स्पष्ट किया गया है। क्योंकि धोबी का गधा हमेशा उसके घर और घाट (कपड़े धोने का स्थान) के बीच कपड़े ढोते हुए फिरता रहता है और किसी भी स्थान पर वह बहुत कम समय के लिए ही स्थिर रहता है।

धोबी की वृत्ति कुछ ऐसी है कि इसमें स्वभावतः बेईमानी हो ही जाती है। कभी एक दूसरे के कपड़े बदल जाते हैं तो कभी खो भी जाते हैं। प्रत्येक क्षेत्र में धोबी के संबंध में कहा जाता है कि वह हमेशा दूसरों के कपड़े ही पहन कर ठाट--बाट से रहता है। हिंदी की उक्ति इस प्रकार है--

"धोबी बेटा चान सा चोटी न पट्टा।"

अर्थात् धोबी का बच्चा अन्यों के सफेद चमकदार कपड़ों को पहन कर बड़े ठाट से रहता है। तेलुगु क्षेत्र की कहावत के अनुसार ऐसी कोई भी कपड़ा नहीं रह जाता है जिसे धोबी ने नहीं पहना हो--

"चाकलि कट्टनि बट्ट सैसु एक्कनि गुर्रमु उंडदु"

धोबी संबंधी एक अन्य कहावत के अनुसार यदि धोबी के घर में चोरी हो जाया तो उसकी अपेक्षा अन्यों का ही नष्ट होता है--

"धोबी के घर में चोर, खोता कोई और"

क्योंकि धोबी के घर से चोरी में कपड़े ही खोने की संभावनाएँ हैं जो अधिकतर दूसरों के होते हैं। अतः धोबी के यहाँ की चोरी से पराए लोगों को ही नुकसान उठाना पड़ता है। तेलुगु में भी इससे समानार्थ वाली लोकोक्ति है--

"चाकलि इंट ढोगतनं ; पराइ वाळ्ळकि नष्टं"

धोबी के संबंध में दोनों ही क्षेत्रों में एक अन्य विश्वास है कि यदि नया धोबी हो तो वह कपड़ों की धुलाई ढंग से करता है। अतः धोबी का नया होना आवश्यक बताने वाली उक्तियाँ दोनों प्रान्तों में प्राप्त है--

"नया धोबी, नाई पुराना" -- "चाकलि कोत्त, मंगलि पात"

धोबी का यह दैनिक व्यापार है कि वह घर-घर जाकर धुलाई के लिए कपड़ों को एकत्र करता है। अतः एक कहावत में इसके विपरीत अर्थ निकलने वाली एक कहावत है जिसके व्यंजनार्थ से उक्त तथ्य की घोषणा होती है। तेलुगु में कहा गया है--

"चाकलिदि संदेरुगदु, मालदि मंचमेरुगदु"

अर्थात् धोबिन गलियों को नहीं जानती और शूद्र स्त्री चारपाई को नहीं जानती। इस से व्यंजित होने वाले अर्थ का तात्पर्य यह है कि धोबिन गली-गली को पहचानती है और शूद्र स्त्री बहुधा वेश्यागुणों से युक्त होने के कारण अनेक चारपाइयों को पहचानती हैं।

तेलुगु प्रदेश में एक प्रमुख आचार यह है कि जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो उसकी पत्नी के गले में रहने वाले मंगलसूत्रों को निकलवा दिया है। इस क्रिया को करने के लिए केवल धोबिन ही अधिकारी है और अन्य कोई नहीं।

तेलुगु में धोबी की होशियारी या बुद्धिमता के संबंध में कहा जाता है कि पढ़े लिखे (परन्तु ज्ञानहीन) व्यक्तियों से धोबी ही अच्छा है क्योंकि कम से कम वह अपनी वृत्ति में कपड़ों की धुलाई ढ़ंग से करके होशियारी प्रदर्शित करता है। परन्तु पढ़े लिखे व्यक्ति ज्ञान हीन होने के कारण उसका मूल्य नगण्य हो जाता है--

"चदुवुकुन्न वानि कंटे चाकलिवाडु मेलु"

अर्थात् पढ़े लिखे आदमी से धोबी ही श्रेष्ठ है।

इस प्रकार धोबी के संबंध में उसकी वृत्ति संबंधी लोकोक्तियाँ तेलुगु तथा हिंदी प्रान्तों में मिलती हैं जिनका परिचय उपर्युक्त अध्ययन से प्राप्त हो जाता है।

४.६.३. सुनार :

जिस प्रकार अन्य वृत्तियों वाले व्यक्तियों के संबंध में लोकोक्तियाँ हिंदी और तेलुगु क्षेत्रों में मिलती हैं, उसी प्रकार "सुनार" की वृत्ति के संबंध में भी दोनों क्षेत्रों में लोकोक्तियाँ कम मात्रा में ही सही, प्राप्त हो ही जाती हैं।

सुनार के संबंध में दोनों प्रान्तों में विश्वास यह है कि वह चोरी किए बिना रह नहीं सकता। उसकी इस मनोवृत्ति के संबंध में लोक मानस को व्यक्त करते हुए डा. कन्हैयालाल सहल ने लिखा है—

"सुनार के लिए प्रसिद्ध है कि जब वह गहने गढ़ता है सोने की चोरी किए बिना **नहीं सकता यहाँ** तक कि वह अपनी माता जी के सोने तक को खा जाता है।"[11]

तेलुगु प्रान्त में भी यही विश्वास है और इस संबंध में कही गयी उक्ति के अनुसार उक्त उद्धरण की ही बात स्पष्ट है—

"कन्न तल्लि बंगारमैना कंसालि[12] बदलडु"

एक राजस्थानी कहावत में यह तथ्य प्रकट किया गया है कि 'सुनार' अविश्वासियों की कोटि के अंतर्गत आता है—

"जाट जँवायी भाण जो, रैवारी औ सुनार।
करे न हो सी आपण, कर देखौ व्यौहार।।"

अर्थात् जाट, जमायी, माँझा, रैवारी और सुनार अविश्वसनीय हैं। इससे स्पष्ट होता है कि तेलुगु और हिंदी प्रान्तों में सुनार के संबंध में लोक मानस प्रायः समान है।

तेलुगु की एक अन्य कहावत के अनुसार, सुनार के घर जाने पर सोना तो हाथ नहीं लगता पर कुम्हार के यहाँ जाने से मिट्टी या कीचड़ तो लग ही जाती है—

"कंसालि इंटिकेडिते बंगारमंटदु, कुम्मराडिंटिकेडिते मट्टि अंटुकुंटुंदि"

साथ ही सुनार को धोखेबाज सिद्ध करते हुए कहा गया है कि सुनार को सुनार ही पहचान सकता है। कहा भी गया है—

"सुनार ही जाने सुनार की माया"
"कंसालि माय कंसालिकिगानि तेलियदु"

---

11. राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन, पृ. १५१।
12. कंसालि — सुनार।

तेलुगु में सुनार को अत्यंत नीच ठहराते हुए एक उक्ति कही गई है––

"कंसालि कूडु काकुलु मुट्टवु"

अर्थात् सुनार के खाने को कौए भी नहीं छूते।

सुनार की वृत्ति का चूल्हे के साथ अत्यन्त निकट संबंध है। चाहे उसके अपने घर में विवाह हो या अन्यों के घर में, वह हमेशा गहने बनाने में व्यस्त रहता है और कई चूल्हों से काम लेता है। अतः तेलुगु में कहा गया है कि सुनार के घर में शादी हो तो घर में अनेक चूल्हे जलते हैं––

"कंसालि पेळ्ळिकि इल्लंता पोय्यिले"[13]

तेलुगु प्रान्त में सुनार के अत्यंत अविश्वसनीय ठहराते हुए यहाँ तक कहा गया है कि यदि कहानी भी सुनाना हो, तो सुनार की अनुपस्थिति में ही सुनाना चाहिए––

"कंसालि लेकुंडा चूचि कथ चेप्पमन्नारु"

इस जाति के संबंध में तेलुगु की एक अन्य कहावत का उल्लेख करना ठीक होगा। सुनारों केलिए यदि समय अच्छा हो तो "दूल्हे" की-सी ठाट मनाते हैं, इसके विपरीत कुसमय में वह इतना गरीब हो जाता है कि उसे खाने के लिए भी पर्याप्त धन नही मिलता और वह अत्यंत दुबला-पतला हो जाता है––

"कंसालि वारु कालानिकि पेळ्ळिकोड्कुलु, करुवुकु तोलिपीनुगुलु"

सुनार के संबंध में और भी कुछ लोकोक्तियाँ तेलुगु और हिंदी प्रदेशों में मिलती हैं।

४.६.४. लुहार :

इस वृत्ति के संबंध में हिंदी तथा तेलुगु क्षेत्र में भी कोई विशेष कहावतें नहीं मिलती। लुहारों की प्रायः अपना निजी घर नहीं होता है। इस तथ्य को व्यक्त करती हुई हिंदी में एक कहावत ही चल पड़ी है––

"लुहार का कौन-सा गाँव"

तेलुगु में लुहारों के संबंध में कोई कहावत नहीं मिलती है। एक लोकोक्ति (जिसमें "लुहार"=कम्मरि) शब्द का प्रयोग हुआ है। पर इससे इस जाति का कोई संबंध नहीं है। इस उक्ति का अर्थ व्यर्थ कार्य करने से है––

"कम्मरि बीधिलो सूदुलम्मिनट्लु"

अर्थात् "लुहार" की गली में सुइयों को बेचना व्यर्थ है।

४.६.५. ग्वाला :

ग्वाला जाति की प्रमुख वृत्ति या व्यापार दूध बेचना है। यह जाति एक तरह से मुख्य है और देश भर में यह जाति मिलती है। इस कारण प्रत्येक प्रान्त में तत्संबंधी लोकोक्तियाँ उपलब्ध होना स्वभाविक है। तेलुगु और हिंदी क्षेत्र इसके अपवाद नहीं हैं। मगर एक बात अवश्य है कि हिंदी में इस जाति के संबंध में प्राप्त होने वाली कहावतों की संख्या बहुत कम है।

---

13. पोय्यि –– चूल्हा, पेळ्ळि –– शादी।

तेलुगु की एक कहावत के अनुसार ग्वाला जितना भी अच्छा हो, परन्तु उसमें थोड़ा बहुत (कम से कम नीम के फल के समान) पागलपन निश्चित ही होगा। यह बात एक तेलुगु की लोकोक्ति के माध्यम से व्यक्त हुई है---

"एंत मंचि गोल्लवानि कैना यापकायंत एर्रि"

हिंदी भाषा में यद्यपि ग्वालों के संबंध में कोई ऐसी उक्ति शायद ही मिलती है पर जाटों के संबंध में प्रचलित एक कहावत है---

"लाट जाट पिंगल पढै
एक भुच्छ लागी रहै ।।"

अर्थात् जाट में उसके पिंगल शास्त्र पारंगत होने पर भी थोड़ा बहुत मूर्खता का अंश रह ही जाता है।

तेलुगु की एक कहावत के अनुसार ग्वाले को भेड़ों की ठीक पहचान रहती है और भेड़ों को ग्वाले की पहचान---

"गोरै जाति गोल्लवानिकेरुक, गोल्लवानि जाति गोरैकेरुक"

ग्वाला जाति के संबंध में पर्याप्त कहावतें नहीं मिलती हैं।

अन्य जो पेशेवार वृत्तियाँ हैं; उनके संबंध में लोकोक्तियाँ बहुत कम संख्या में दोनों स्थानों में प्राप्त होती हैं। साथ ही इन सभी वृत्तियों का महत्व लोकोक्तियों की दृष्टि से अधिक नहीं है।

४.७. मुसलमान :

यद्यपि धर्म की और आचार व्यवहार की भिन्नता के कारण यह एक अलग वर्ग होकर भारत के अनेक प्रान्तों में फैल गया है; लेकिन आम जनता मुसलमानों के वर्ग को धर्म न मानकर एक जाति ही मानती है। तेलुगु और हिंदी प्रान्तों के जन भी यही मानते हैं कि यह एक जाति विशेष ही है। अन्य जातियों की तरह मुसलमान जाति के सम्बन्ध में दोनों क्षेत्रों में अधिक कहावतें नहीं मिलती। फिर भी प्राप्त लोकोक्तियों का अध्ययन करना समीचीन होगा।

तेलुगु और हिंदी क्षेत्रों में मुसलमान जाति के सम्बन्ध में यह विश्वास है कि बहुधा वे अविश्वसनीय होते ह इन लोगों के साथ व्यवहार करना व्यर्थ माना गया है। हिंदी में कहा गया है---

"मुसलमान का विश्वास, हमारा सत्यनाश"

तेलुगु में इस तथ्य को व्यक्त करनेवाली एक अश्लील लोकोक्ति प्रचलित है, जिसको सभ्यता को ध्यान रखकर यहाँ उद्धृत करना ठीक नहीं है। लेकिन उस लोकोक्ति से निकलने वाला अर्थ यही है कि मुसलमानों से व्यवहार करने से लाभ होने की गुंजाइश ही नहीं है। आन्ध्र के कुछ प्रान्तों में इसी तथ्य को व्यक्त करने वाली एक अन्य कहावत है---

"सायबु तो बेरं कोंडकि दारं"

अर्थात् मुसलमान के साथ व्यवहार करना इसी प्रकार व्यर्थ है जिस प्रकार पहाड़ में डोरी बांधकर उसे हिलाने का व्यर्थ प्रयास किया जाये।

तेलुगु प्रान्त में मुसलमानों के क्रूर होने की प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर उनको कसाई तक कहा गया है।

इस जाति के संबंध में दोनों क्षेत्रों की कुछ अन्य मान्यतायें तथा तत्संबंधी लोकोक्तियाँ भी हैं। मगर इनम साम्य की अपेक्षा वैषम्य अधिक है।

उक्त जातियों के आतिरिक्त तेलुगु और हिंदी प्रान्तों की अनेकों निम्न जातियाँ हैं। इनका महत्व काम भी है और दोनों क्षेत्रों की जाति व्यवस्था में समानता भी नहीं है। इन कारणों से बाकी जातियों की लोकोक्तियों के विषय में विचार-विश्लेषण प्रस्तुत अध्ययन के क्षेत्र के बाहर की वस्तु मानकर नहीं किया गया है।

५. मानव जीवन संबंधी लोकोक्तियाँ

५.१. नैतिक—जीवन से संबंधित लोकोक्तियाँ :

सामान्य जनता के साधारण जीवन-क्रम से सम्बद्ध अनेक लोकोक्तियाँ प्रत्येक क्षेत्र में प्राप्त होती हैं। इस विषय से संबंद्ध हिंदी और तेलुगु की लोकोक्तियों में से तुलनीय कहावतें भी अधिक मात्रा में मिलती हैं। ऐसी लोकोक्तियाँ सुविधा की दृष्टि से मुख्यतः दो भागों में विभक्त की जा सकती हैं—(१) ऐसी लोकोक्तियाँ जिनमें शकुनों का विवरण देकर मनुष्य-मात्र की क्रियाओं के संबंध में विधि-निषेधात्मक कथन किए गए हैं और (२) ऐसी लोकोक्तियाँ जिनमें किसी स्थिति विशेष को अनुभवजन्य अप्रस्तुत विधान के द्वारा कहीं तुलना से, कहीं अन्य प्रकार से अधिक स्पष्ट किया गया है। इन लोकोक्तियों में व्यक्त या अव्यक्त रूप से किसी कार्य के औचित्य या अनौचित्य का ही विधान प्राप्त रहता है। प्रथम कोटि की लोकोक्तियाँ लोक-विश्वासों पर आधारित हैं। इन विश्वासों में से कुछ को लोकोक्ति का रूप प्राप्त हुआ है और कुछ विश्वास के रूप में ही रह गए हैं। इन लोकोक्तियों का विवेचन सुविधा के लिए दो भागों में विभक्त किया जा रहा है—

(१) पूर्ण साम्यवाली लोकोक्तियाँ, और
(२) आंशिक साम्यवाली लोकोक्तियाँ।

५.११. पूर्ण साम्यवाली लोकोक्तियाँ

इस वर्ग के अन्तर्गत तेलुगु और हिंदी की ऐसी लोकोक्तियों पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया जायेगा जिन में अर्थ के साथ-साथ शब्दों और शैली में भी साम्य है। भाषा की भिन्नता के कारण शब्द भी भिन्न हो सकते हैं परन्तु अर्थ की दृष्टि से दोनों ही भाषाओं के शब्द एक दूसरे के पर्याय हैं। अर्थ की दृष्टि से इन लोकोक्तियों को पुनः दो भागों में विभक्त कर सकते हैं—

(१) शकुन संबंधी लोकोक्तियाँ, और
(२) नीत्यात्मक लोकोक्तियाँ।

५.११.१. शकुन संबंधी लोकोक्तियाँ :

भारत के प्रत्येक प्रांत में शकुनों पर आम जनता का विश्वास होता है। यह प्रवृत्ति हिंदी और तेलुगु क्षेत्रों में भी पाई जाती है। इन शकुनों और विश्वासों में स्थान-स्थान पर भिन्नता का होना स्वभाविक है। साथ ही दोनों ही क्षेत्रों में प्राप्त लोकोक्तियों में साम्य भी मिल जाता है। इसी साम्य और वैषम्य को ध्यान में रखते हुए नीचे तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

तेलुगु और हिंदी प्रदेशों में छींक को किसी कार्य के आरम्भ करने में विघ्नकारक माना गया है। तेलुगु में छींक के संबंध में इस तरह के विश्वास को व्यक्त करने वाली लोकोक्ति इस प्रकार है—

"तुम्मि परायि इंटिकि पोरादु"

इसका अर्थ यह है कि छींकने के बाद तुरन्त कहीं दूसरे घर में जाना नहीं चाहिए। इस तरह के अर्थ को व्यक्त करने वाली एक लोकोक्ति हिंदी में भी विद्यमान है। उसका तात्पर्य है कि चाहे खुद अपने काम का श्रीगणेश छींकने के पश्चात् भी करें लेकिन किसी भी हालत में छींक के बाद अन्य स्थान पर नहीं जाना चाहिए––

"छींकत नहियै छींकत खहियै।
छींकत पराई देहरी न जैहियै।।"

इसके विपरीत भी छींक के संबंध में कुछ एक अपवाद भी मिलते हैं। जैसे पीठ के पीछे यदि कोई छींके तो वह अनिष्ट की सूचना नहीं देती। आगे होनेवाला कार्य नष्टकारी नहीं होगा। इस संबंध में तेलुगु की कहावत इस प्रकार है––

"वेनुक तुम्मिन मुंदुकु लाभमु"

अर्थात् यदि पीछे छींका जाय तो भविष्य में लाभ होगा। हिंदी में भी पीठ पीछे की छींक को भावी संकट की सूचना नहीं मानी जाती––

"पीठ पीछे की छींक। संका ते मत झींक।।"

इसके साथ ही यह भी विश्वास दोनों क्षेत्रों में दर्शनीय है कि यदि कोई व्यक्ति दो बार छींके तो वह शुभ शकुन ही है। हिंदी की लोकोक्ति इस प्रकार है––

"एक नाक दो छींक। काम बनेगा ठीक।।"

इससे तुलनीय तेलुगु की कहावत है––

"ओंटि तुम्मु पनिकि चेटु। जंट तुम्मु पनिकि वाटु।।"

अर्थात् एक छींक काम के लिए हानिकर और दो छींक लाभदायक हैं।

आन्ध्र प्रान्त में बुजुर्ग लोग छोटे व्यक्तियों के छींकने के पश्चात् "चिरंजीवी", "शतायुश्शु" कहते हैं। "शतायुश्शु" वाला शब्द प्रायः संस्कृत के "शतंजीव" का ही रूपांतर है। हिंदी प्रान्त में भी प्राय: यही प्रथा दर्शनीय है। यहाँ के लोगों को "शतंजीवु" कहते हुए देखा गया है। इतना ही नहीं, हिंदी में "छींक छत्रपति" भी कहा जाता है।[1]

इसके अतिरिक्त मानवमात्र के अंग-प्रत्यंगों के आकस्मिक स्फुरण के संबंध में भी शकुन कथनात्मक लोकोक्त्तियाँ दोनों स्थानों पर प्रचलित हैं।

विशेषत: पुरुष के दक्षिणांगों और स्त्री के वामांगों का फड़कना शुभ माना गया है। तेलुगु में प्रचलित लोकोक्ति है––

'मगवानिकि कुडि कन्नु अदिरिना, आडुदानिकि एडम कन्नु अदिरिना मेलु"

---

1. ऐसा लगता है कि समूचे भारत में ही नहीं, बल्कि संसार भर के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में छींक के संबंध में यही विश्वास है। देखिए "दी ओसन आफ स्टोरी भाग ३, संपादित द्वारा एन. एम. पेंज़र वायड स्नीजिंग सेलूटेशन्स" (अपेंडिक्स)।

५. मानव जीवन संबंधी लोकोक्तियाँ

५.१. नैतिक-जीवन से संबंधित लोकोक्तियाँ :

सामान्य जनता के साधारण जीवन-क्रम से सम्बद्ध अनेक लोकोक्तियाँ प्रत्येक क्षेत्र में प्राप्त होती हैं। इस विषय से संबद्ध हिंदी और तेलुगु की लोकोक्तियों में से तुलनीय कहावतें भी अधिक मात्रा में मिलती हैं। ऐसी लोकोक्तियाँ सुविधा की दृष्टि से मुख्यत: दो भागों में विभक्त की जा सकती हैं--(१) ऐसी लोकोक्तियाँ जिनमें शकुनों का विवरण देकर मनुष्य-मात्र की क्रियाओं के संबंध में विधि-निषेधात्मक कथन किए गए हैं और (२) ऐसी लोकोक्तियाँ जिनमें किसी स्थिति विशेष को अनुभवजन्य अप्रस्तुत विधान के द्वारा कहीं तुलना से, कहीं अन्य प्रकार से अधिक स्पष्ट किया गया है। इन लोकोक्तियों में व्यक्त या अव्यक्त रूप से किसी कार्य के औचित्य या अनौचित्य का ही विधान प्राप्त रहता है। प्रथम कोटि की लोकोक्तियाँ लोक-विश्वासों पर आधारित हैं। इन विश्वासों में से कुछ को लोकोक्ति का रूप प्राप्त हुआ है और कुछ विश्वास के रूप में ही रह गए हैं। इन लोकोक्तियों का विवेचन सुविधा के लिए दो भागों में विभक्त किया जा रहा है--

(१) पूर्ण साम्यवाली लोकोक्तियाँ, और
(२) आंशिक साम्यवाली लोकोक्तियाँ।

५.११. पूर्ण साम्यवाली लोकोक्तियाँ

इस वर्ग के अन्तर्गत तेलुगु और हिंदी की ऐसी लोकोक्तियों पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया जायेगा जिन में अर्थ के साथ-साथ शब्दों और शैली में भी साम्य है। भाषा की भिन्नता के कारण शब्द भी भिन्न हो सकते हैं परन्तु अर्थ की दृष्टि से दोनों ही भाषाओं के शब्द एक दूसरे के पर्याय हैं। अर्थ की दृष्टि से इन लोकोक्तियों को पुन: दो भागों में विभक्त कर सकते हैं--

(१) शकुन संबंधी लोकोक्तियाँ, और
(२) नीत्यात्मक लोकोक्तियाँ।

५.११.१. शकुन संबंधी लोकोक्तियाँ :

भारत के प्रत्येक प्रांत में शकुनों पर आम जनता का विश्वास होता है। यह प्रवृत्ति हिंदी और तेलुगु क्षेत्रों में भी पाई जाती है। इन शकुनों और विश्वासों में स्थान-स्थान पर भिन्नता का होना स्वभाविक है। साथ ही दोनों ही क्षेत्रों में प्राप्त लोकोक्तियों में साम्य भी मिल जाता है। इसी साम्य और वैषम्य को ध्यान में रखते हुए नीचे तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

तेलुगु और हिंदी प्रदेशों में छींक को किसी कार्य के आरम्भ करने में विघ्नकारक माना गया है। तेलुगु में छींक के संबंध में इस तरह के विश्वास को व्यक्त करने वाली लोकोक्ति इस प्रकार है--

"तुम्मि परायि इंटिकि पोराडु"

इसका अर्थ यह है कि छींकने के बाद तुरन्त कहीं दूसरे घर में जाना नहीं चाहिए। इस तरह के अर्थ को व्यक्त करने वाली एक लोकोक्ति हिंदी में भी विद्यमान है। उसका तात्पर्य है कि चाहे खुद अपने काम का श्रीगणेश छींकने के पश्चात् भी करें लेकिन किसी भी हालत में छींक के बाद अन्य स्थान पर नहीं जाना चाहिए——

"छींकत नहियै छींकत खहियै।
छींकत पराई देहरी न जैहियै ।।"

इसके विपरीत भी छींक के संबंध में कुछ एक अपवाद भी मिलते हैं। जैसे पीठ के पीछे यदि कोई छींके तो वह अनिष्ट की सूचना नहीं देती। आगे होनेवाला कार्य नष्टकारी नहीं होगा। इस संबंध में तेलुगु की कहावत इस प्रकार है——

"वेनुक तुम्मिन मुंदुकु लाभमु"

अर्थात् यदि पीछे छींका जाय तो भविष्य में लाभ होगा। हिंदी में भी पीठ पीछे की छींक को भावी संकट की सूचना नहीं मानी जाती——

"पीठ पीछे की छींक। संका ते मत झींक ।।"

इसके साथ ही यह भी विश्वास दोनों क्षेत्रों में दर्शनीय है कि यदि कोई व्यक्ति दो बार छींके तो वह शुभ शकुन ही है। हिंदी की लोकोक्ति इस प्रकार है——

"एक नाक दो छींक। काम बनेगा ठीक ।।"

इससे तुलनीय तेलुगु की कहावत है——

"ओंटि तुम्मु पनिकि चेटु। जंट तुम्मु पनिकि बाटु ।।"

अर्थात् एक छींक काम के लिए हानिकर और दो छींक लाभदायक हैं।

आन्ध्र प्रान्त में बुजुर्ग लोग छोटे व्यक्तियों के छींकने के पश्चात् "चिरंजीवी", "शतायुश्शु" कहते हैं। "शतायुश्शु" वाला शब्द प्रायः संस्कृत के "शतंजीव" का ही रूपांतर है। हिंदी प्रान्त में भी प्राय: यही प्रथा दर्शनीय है। यहाँ के लोगों को "शतंजीवु" कहते हुए देखा गया है। इतना ही नहीं, हिंदी में "छींक छत्रपति" भी कहा जाता है।[1]

इसके अतिरिक्त मानवमात्र के अंग-प्रत्यंगों के आकस्मिक स्फुरण के संबंध में भी शकुन कथनात्मक लोकोक्तियाँ दोनों स्थानों पर प्रचलित हैं।

विशेषत: पुरुष के दक्षिणांगों और स्त्री के वामांगों का फड़कना शुभ माना गया है। तेलुगु में प्रचलित लोकोक्ति है——

'मगवानिकि कुडि कन्नु अदिरिना, आडुदानिकि एडम कन्नु अदिरिना मेलु"

---

1. ऐसा लगता है कि समूचे भारत में ही नहीं, बल्कि संसार भर के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में छींक के संबंध में यही विश्वास है। देखिए "दी ओसन आफ स्टोरी भाग ३, संपादित द्वारा एन. एम. पेंज़र वायड स्नीजिंग सेलूटेशन्स" (अपेंडिक्स)।

अर्थात् चाहे पुरुष की दाहिनी आँख फड़के या स्त्री की बाई आँख फड़के दोनों ही शुभ सूचक हैं। इससे तुलनीय हिंदी प्रदेश में प्रचलित कहावत इस प्रकार है—

"आँख फड़कै बाई, कै बीर मिलै कै साई।
आँख फड़कै दहणी, लात घमूका सहणीं॥"

अर्थात् यदि स्त्री की बाई आँख फड़के तो भाई मिले या पति मिलेगा। यदि दाहिनी आँख फड़के तो उसे लात सहना पड़ेगा।

आन्ध्र में प्रचलित पंचांगों के अनुसार यदि छिपकली पुरुषों के दाहिनी अंगों पर गिरे या स्त्रियों के बाएँ अंगों पर गिरे तो अधिक शुभ की सूचना मिलती है।

यात्रा के समय कुछ जातियों तथा पशु-पक्षियों के सामने आने को शुभ और कुछ को अशुभ माना गया है। उदाहरण के लिए दोनों प्रान्तों में तेली का सामने आना अशुभ माना गया है। सुनार भी सामने आकर कार्य की असफलता की सूचना देता है तो अशुभ का सूचक माना जाता है। नाई के संबंध में जो इस प्रकार के विश्वास हैं, वे आन्ध्र प्रदेश के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में एक दूसरे के विपरीत हैं। आंध्र के सर्कार जिलों में विश्वास यह है कि यदि नाई अपनी पेटी को लेकर यात्रा के समय सामने आ जाय, तो शुभ होगा। इसके बिलकुल विपरीत धारणा रायलसीमा जिलों में है कि पेटी लेकर आनेवाला नाई अशुभ सूचना लेकर आता है। कदाचित हिंदी प्रदेश में यही विश्वास है। इस प्रकार के विश्वास दोनों प्रान्तों में प्रायः समान हैं। लोकोक्तियों के साथ ही एसे अनेक विश्वास बहु प्रचलित हैं।

कुछ शकुन संबंधी लोकोक्तियाँ पशु-पक्षियों की स्थिति की अनुकूलता और प्रतिकूलता से संयुक्त हैं। दोनों प्रदेशों पर कौवे का छत पर बैठकर बोलना किसी प्रतीक्षित व्यक्ति के आगमन की सूचना देता है। हिंदी की एक लोकोक्ति इस प्रकार है—

"कौआ बोले बेसी। घर आवै परदेशी॥"

इससे तुलनीय तेलुगु की कहावत यह है—

"इंटिपै काकि कूस्ते चुट्टं राकमानडु"

अर्थात् यदि घर के छत पर बैठकर कौआ बोले तो निश्चित ही मेहमान आयेगा।

इसी प्रकार अन्य घरेलू एवं वन्य पशुओं की चर्चा भी की गयी है। दोनों स्थानों पर इस प्रकार के विश्वासों तथा लोकोक्तियों में पर्याप्त समानता पाई जाती है। राजस्थान की एक कहावत में कहा गया है कि यदि गाय अपने बछड़े के साथ सामने आये तो कार्यसिद्धि निश्चित है—चाँदी ही चाँदी है[2]—

"गौ सबच्ची आवती कबहुंक सामी होय।
सकुन बिचारे लक्ष्मी लाहो होय॥"

---

2. तुलसीदास ने राम की बरात के समय गाय का उल्लेख शकुनों के साथ किया है—"सुरभी सनमुख सिसुहि पियावा"

तेलुगु प्रान्त में सबेरे उठते ही बिल्ली का मुंह देखना अशुभ माना गया है। साथ ही यह भी विश्वास है कि यात्रा करने निकलते समय बिल्ली का सामने आना भी हानिकारक है। इसके अलावा घर के सामने कुत्ते का रोना भी दोनों प्रदेशों में अशुभ माना गया है। हिंदी क्षेत्र में भी बिल्ली के संबंध में उपर्युक्त विश्वास ही है। पूरे भारत में गाय को माता का स्तर प्रदान किया गया है और इसी बात को पृष्ठभूमि में रखते हुए गाय को "गोमाता" कहा गया है। जीवन में शुभ की वांछा करते हुए बहुत लोग हर दिन गाय की पूजा करते हैं। यहाँ तक कि कुछ लोग गाय के मूत्र को रोज अपने सिर पर छिड़कते हैं।

कुछ जातियों के संबंध में भी अनेक विश्वास और लोकोक्तियाँ दोनों प्रान्तों में उपलब्ध हैं। तेलुगु प्रान्त में यह विश्वास है कि कार्यवश कहीं बाहर निकलते समय या किसी यात्रा पर जाते समय यदि अकेला ब्राह्मण सामने आये तो काम नहीं बनेगा। यदि दो बनिये एक साथ सामने आयें तो भी यही धारणा है। इस तथ्य को बताने वाली तेलुग की लोकोक्ति इस प्रकार है—

"ओंटि बापडु, जंट कोमटि पानिकि चेटु।"

हिंदी प्रान्त के लोगों का भी यही विश्वास है। ब्राह्मणों के संबंध में तेलुगु में एक अन्य कहावत इस प्रकार है—

"ओंटि ब्राह्मणुडेदुरैते पनि शून्यम्"

जिसका अर्थ है कि अकेला ब्राह्मण सामने आये तो कार्य संपन्न नहीं होगा। गोस्वामी तुलसीदास ने भी राम की बारात में चलते समय घटित होने वाली घटना में दो ब्राह्मणों के मिलने की बात कही है—

"कर पुस्तक दोई विप्र प्रवीना।"

आन्ध्र में लकड़हारे का कुल्हाड़ी लेकर और मजदूरों का लकड़ी लेकर सामने आना—दोनों ही अशुभ माने गये हैं। जहाँ तक जातियों का संबंध है, आन्ध्र प्रान्त में यह एक विश्वास है कि यदि एरुकलवाळ्ळु[3] अपनी टोकरी में सूअर की टट्टी लेकर सामने आयें, तब भी कार्य बिगड़ जायेगा।

तेलुगु और हिंदी प्रान्तों में मछली, दही आदि पदार्थों का सामने आना शुभ माना गया है।

उक्त तुलनात्मक विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि तेलुगु और हिंदी प्रदेशों में उपलब्ध शकुन संबंधी विश्वास और लोकोक्तियाँ अर्थ की दृष्टि से प्रायः समान हैं। भले ही थोड़ा-बहुत वैषम्य भी हो।

---

3. यह एक जाति विशेष है जिसके लोग सड़कों पर घूमते हुए सूअर की टट्टी को एकत्रित करके खाद के रूप में उसका क्रय करते हैं। इस जाति के लोग इस काम के अलावा सूअरों को पकड कर पालते हैं और उनका मांस भी खाते हैं।

५.११.२. नीति संबंधी लोकोक्तियाँ :

ऊपर शकुन संबंधी लोकोक्तियों पर विशद रूप से तेलुगु और हिंदी लोकोक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा चुका है। अब यहाँ दोनों क्षेत्रों में प्राप्त नीति परक लोकोक्तियों पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार प्रस्तुत किये गये हैं। सुविधा की दृष्टि से नीति संबंधी लोकोक्तियों को मुख्यतः दो भागों में विभक्त किया जा सकता है---

(१) पहला वर्ग उन लोकोक्तियों का है जिन में अलंकृत रूप से बात कही गयी है और जो अपने बल के कारण लोक में प्रचलित हो गए हैं।

(२) दूसरे वर्ग के अन्तर्गत वे लोकोक्तियाँ रखी जा सकती हैं जिनमे किसी व्यापक निरीक्षण के आधार पर प्राप्त घटना के सम्बन्ध में बात कही जाती है और रूपकातिशयोक्तिवत् किसी अवसर पर प्रयुक्त होकर उस अवसर के सत्य की व्यंजना कराती हैं ; या वे लोकोक्तियाँ रखी जा सकती हैं जो अर्थ का स्पष्टीकरण किसी अलंकार के आधार पर करती हैं या तुलनात्मक होती हैं।

शुद्ध कथनात्मक लोकोक्तियाँ :

इस कोटि के अंतर्गत आने वाली लोकोक्तियों के स्रोत दो प्रकार के हो सकते हैं---१. किसी प्रसिद्ध कवि की सटीक तथा लोक मानस के अनुकूल उक्तियाँ, २. अज्ञात रूप से बने हुए वाक्य या वाक्यांश जो लोकोक्ति के रूप में प्रचलित हो गए हों। कुछ ऐसी भी लोकोक्तियाँ उपलब्ध हैं, जो तुलनात्मक शैली को अपनाकर तद्वारा भाव या तथ्य को प्रकट करती हैं। तेलुगु और हिंदी क्षेत्रों में इस प्रकार की लोकोक्तियों में तुलनीय अंश की मात्रा के आधार पर पूर्ण साम्य वाली तथा आंशिक साम्य वाली लोकोक्तियाँ हो सकती हैं।

होनहार व्यक्ति के संबंध में कर्म की प्रधानता को व्यक्त करने वाली तुलसी की निम्नांकित चौपाई हिंदी क्षेत्र में लोकोक्ति के रूप में प्रचलित है---

"कर्म प्रधान विश्व करि राखा। जो जस केरै तो तस फल चाखा।।"

इस तथ्य को व्यक्त करने वाली लोकोक्तियाँ अनेक प्रान्तों में प्रचलित हैं। उक्त तुलसी की उक्ति के अतिरिक्त हिंदी में एक लोकोक्ति भी प्रयोग में है---

"जैसी करनी, वैसी भरनी"

इस अमूल्य सत्य को व्यक्त करने वाली तेलुगु की लोकोक्ति इस प्रकार है---

"एवरु चेसिन कर्म वारनुभविंचक तप्पदु"

अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्म का फल भोगना ही पड़ता है।

इसी प्रकार कबीर ने भी साधु के लक्षणों का निरूपण करते हुए एक दोहे में कहा है---

"परमारथ के कारनै साधुन धरा शरीर।।"

लोक-मानस ने दोहे की पूर्णता पर ध्यान न देकर उक्त पंक्ति को एक लोकोक्ति के रूप में ग्रहण किया है। इस जीवन दर्शन की मान्यता तेलुगु में भी है और इसी अर्थ प्रकट करने वाली एक संस्कृत की उक्ति को तेलुगु ने ज्यों का त्यों ग्रहण किया है––

"परोपकारार्थमिदं शरीरम्"[4]

कुछ ऐसी भी लोकोक्तियाँ दोनों प्रान्तों में मिलती हैं, जो पद्यांश या खंडित छंद के रूप में हों और जिनके रचयिता का नाम अज्ञात हो। उदाहरण के लिए हिंदी की एक कहावत––

"आया है सो जायेगा"

अर्थात् जिसने इस संसार में जन्म लिया है, उसकी मृत्यु जरूर होगी और वह निश्चित ही इस नश्वर संसार को छोड़कर चला ही जाएगा। बिलकुल इसी अर्थ को प्रकट करने वाली तेलुगु की लोकोक्ति इस प्रकार है––

"पुट्टिनवाडु गिट्टक मानडु"

जिसका वही अर्थ उक्त हिंदी की कहावत के समान है। तेलुगु में मानव में बुद्धि या प्रवृत्ति के संबंध में प्रचलित एक लोकोक्ति अत्यंत ही प्रचलित है––

"पुट्टुकतो वच्चिन बुद्धि पुडकलतो गानि पोदु"

अर्थात् जन्म के साथ जो बुद्धि आयी है, वह लकड़ियों के संग ही (मरने पर जलाई जाने वाली लकड़ियाँ) जायगी।

तेलुगु की एक प्रसिद्ध लोकोक्ति के अनुसार जन-सामान्य की प्रवृत्ति यह होती है कि जनता संकट काल में ही भगवान को याद करके उसकी पूजा-पाठ करती है––

"आपद म्रोक्कुलु, संपद मरपुलु"।

इस कहावत का यह अर्थ है कि संकट काल में ही जनता भगवान को याद करती है। यदि संकटों से बच जाए, तो भगवान पर कुछ चढ़ाने की बात करती है। जब सुख-संपदाओं से वह सम्पन्न है, तो भगवान को निश्चित ही भूल जाती है।

बुन्देलखंड की एक लोकोक्ति में ईश्वर के प्रति मनुष्य का स्वार्थी होने की बात की गई है––हे देवि। सुख का अनुभव करते समय मैंने तुम्हारी याद भी नहीं की है और संकटकालीन परिस्थितियों में तुम्हारा स्मरण करके हाथ जोड़कर पूजा करता हूँ––

"संकटे देवि सुमिरे तोय।
सुख में खबर बिसर गई तोय।।"

---

4. इस उक्ति का एक रूपान्तर भी है। सामान्य जनता का प्रयोग इस प्रकार है––
"परोपकारमिदं शरीरं"

इस तथ्य के कथन हिंदी साहित्य के भक्तिकालीन कवियों की रचनाओं में मिलते हैं।[5] इस मनोवृत्ति वाले जन समाज को एक चेतावनी देती हुई एक दोहा हिंदी प्रदेश में प्रचलित है---

"कबिरा वो दिन याद कर पग ऊपर तल शीश।
मृत्यु लोक में आनकर भूल गया जगदीश।।"

यह कोई आवश्यक नहीं है कि इन पद्यात्मक या खंडित पद्यात्मक लोकोक्तियों के रचयिता कोई प्रसिद्ध कवि ही हों। यह भी संभव है कि उनके रचयिता स्वभावतः कवि नहीं हो और उन्होने तुक मिलाकर ऐसे कथन कर दिये हों। हिंदी में पद्य के रूप में प्रचलित एक लोकोक्ति इस प्रकार है---

"आधी छोड़ सारी को धावै।
आधी रहै न सारी पावै।।"

तेलुगु में इस तथ्य कथन वाली लोकोक्ति में आधी या पूरी की बात तो नहीं मिलती पर इतना अवश्य है कि प्राप्त संपत्ति से संतुष्ट न होकर अप्राप्य की इच्छा करते हुए उस के लिए चाहे जितना भी प्रयत्न किया जाय, तो अप्राप्य की प्राप्ति तो रही दूर पर प्राप्य वस्तु भी छिन जाती है---

"लेनिदानिकि पोते उन्नदि ऊडिंदट"

तेलुगु में एक अन्य कहावत भी प्राप्त है जिसके अनुसार अपने आप प्राप्त होनेवाली चीज या सौदे को यदि स्वीकार नहीं करें, तो काशी जाने पर भी फिर से प्राप्त नहीं होगा---

"कालि दग्गरिकि वच्चिन बेरं कालदन्निते काशीकि पोइना तिरिगिरादु"

हिंदी की एक लोकोक्ति के अनुसार विधि के लेख को मिटानेवाला कोई नहीं रहती है---

"विधि कर लिखा को मेटन हारा"

इससे पूर्ण साम्य रखने वाली एक तेलुगु की भी लोकोक्ति **है---**

"ब्रह्म व्रासिनव्रालु चेरपुवारेवरु"[6]

तेलुगु प्रान्त में यह विश्वास है कि किसी भी मनुष्य की साठ वर्ष की अवस्था के पश्चात् बुद्धि स्थिर नहीं रहती है---

"अरवै एंडलकु आर्लु मर्लु"

---

5. "सुख के माथे सिल परो नाम हिए ते जाय।
बलिहारी वा दुःख की पल-पल नाम रटाय।।" (कबीर)
"दुःख में सुमरिन सब करै सुख में करै न कोइ" (तुलसी)

6. इस लोकोक्ति का एक दूसरा भी रूप तेलुगु में प्राप्त है जिसके अनुसार ललाट के लेख को मिटाने वाला कौन हो सकता है?

"नोसटि व्रालु चेरुपुवारेवारु?"

अर्थात् साठ वर्षों के बाद फिर छः साल की-सी बुद्धि आ जाती है। इससे मिलती-जुलती हिंदी की भी लोकोक्ति है —

"साठी बुध नाठी"

हिंदी में एक लोकोक्ति प्रचलित है—

"अपनी अपनी ढपली, अपना-अपना राग"

तेलुगु में भी इस भाव को व्यक्त करने वाली कहावत इस प्रकार है—

"एवारि गोड़व वारिदि"

इस प्रकार की बहुत-सी तुलनीय लोकोक्तियाँ तेलुगु और हिंदी भाषाओं में मिल जाती हैं जिनके कुछ चुने हुए उदाहरण नीचे की तालिका से स्पष्ट हो जाते हैं। इस तालिका में एक ओर हिंदी की, दूसरी ओर तेलुगु की लोकोक्तियाँ दी गई हैं और पाद टिप्पणियों में तेलुगु की कहावतों का अर्थ हिंदी में दिया गया है।

हिंदी की लोकोक्ति	तेलुगु की लोकोक्ति
१. आहारे व्योहारे लज्जा न करे।	आहारमंदु, व्यवहारमंदु सिग्गु पनिकिरादु [7]।
२. इस कान से सुनकर उस कान से उड़ा देना।	ई चेवितो विनि आ चेवितो वदलिनट्लु [8]।
३. इस हाथ का देना, उस हाथ का लेना।	ई चेतो इच्चि आ चेतो पोंदिनट्लु [9]।
४. ऊखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर ?	रोटलो तल पेट्टि रोकटि पोटुकि जडुवनेल [10]।
५. एक हाथ से ताली नहीं बजती।	ओक चेतिकि तप्पेटलु म्रोगुना [11]।
६. कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर।	बंड्लु ओडल मीद, ओडलु बंड्ल मीद [12]।
७. कोआ चला हंस की चाल। भूल गया वह अपनी चाल॥	हंस नडकलु राक पोए, काकि नडकलु मरचिपोए [13]।
८. जहाँ पेड़ न रूख, तहाँ रेंडइ महा रूख।	ए चेट्टू लेनि चोट आमुदपु चेट्टे महावृक्षमु [14]

7. आहार में, व्यवहार में लज्जा नहीं करना चाहिए।
8. इस कान से सुनकर उस कान से छोड़ना।
9. इस हाथ से देकर उस हाथ से पाना।
10. ऊखली में सिर रखकर मूसलों से क्यों डरें।
11. क्या एक हाथ से ताली बजती ?
12. गाड़ी जहाजों पर, जहाज गाड़ियों पर।
13. हंस की चाल भी नहीं आई, कौए की चाल भी भूल गया।
14. जहाँ कोई पेड़ न हो, वहाँ अरंडी ही महावृक्ष है।

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
९. जल में रहकर मगर से वैर।	नीटिलो उंडि मोसलितो वैरमा ?[15]
१०. तंदुरुस्ती हजार नियामत।	आरोग्यमे महाभाग्यमु[16]।
११. दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते।	दानमु चेसिन आवुकु दवुड पंड्लु एंचबोकु[17]।
१२. दीवार के भी कान होते हैं।	गोडकु कूडा चेवुलुंटाइ[18]।
१३. गरीब की जोरू सब की भाभी।	बीदवानि भार्य लोकमंदरिकी वदेन[19]।
१४. पांचों उंगलियाँ बराबर नहीं होती।	चेतिकि ऐदु वेळ्ळु ओकटिगा उंडुना ?[20]
१५. बिना रोए माँ भी दूध नहीं देती।	एडुवकुंडा अम्मैना पालु इव्वदु[21]।
१६. क्या भूख को बासन, क्या नींद को आसन।	आकलि रुचि एरुगदु, निद्र सुख-मेरुगदु[22]।
१७. मछली के बच्चे को तैरना कौन सिखावै।	चेपपिल्लकि ईत नेर्पेदेवरु[23]।
१८. राँड के पाँय सुहागिन लागी।	वेधवमुंड मोहान्नि बोट्टु पेट्टिनट्लु[24]।
१९. लकड़ी के बल पर बंदर नाचै।	कोल आडिते कोति आडुनु[25]।
२०. साँप भी मरे, लाठी भी न टूटे।	कर्र विरुगकुंडा पामु चावकुंडा।[26]
२१. सारी देग में एक ही चावल देखा जाता है।	अन्नमुडिकिंदो लेदो ओके मेतुकुतो तेलुस्तुंदि[27]।
२२. हाथ कंगन को आरसी क्या ?	मुंजेति कंकणानिकि अद्दमेला ?[28]

परिशिष्ट में दी हुई लोकोक्तियों से ऐसी अनेक लोकोक्तियाँ दर्शनीय हैं।

---

15. जल में रहकर मगर से वैर ?
16. आरोग्य ही महाभाग्य है।
17. दान की हुई गाय के जबड़े के दाँत मत गिनो।
18. दीवार के भी कान होते हैं।
19. गरीब की पत्नी सारे लोक की भाभी।
20. क्या, हाथ की पांचों उंगलियाँ बराबर होंगी ?
21. बिना रोए माँ भी दूध नहीं देती। इस लोकोक्ति का एक दूसरा भी रूप तेलुगु में मिलता है—"अडुग कुंडा अम्मैना पेट्टदु" अर्थात् बिना माँगे माँ भी नहीं खिलाती है।
22. भूख रुचि नहीं जानती, नीदं सुख नहीं जानती।
23. मछली के बच्चे को तैरना कौन सिखावे ?
24. विधवा स्त्री के मुँह पर बिंदी लगाना।
25. लकड़ी हिलेगी तो बंदर नाचेगा।
26. न लकड़ी टूटे, न सांप मरे।
27. एक ही चावल को देखने से पता लगेगा कि चावल पके हैं या नहीं।
28. हाथ के कंगन के लिए आइने की क्या आवश्यकता है ?

५.११.२१ अन्योक्तिवत् प्रयुक्त लोकोक्तियाँ:

सामान्य कथनों से सम्बद्ध लोकोक्तियों की जो संक्षिप्त सूची ऊपर दी गयी है, उससे यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि वे एक लोक-सामान्य सत्य का उद्‌घाटन करती हैं और लोक सामान्य सामाजिक व्यवहार के एक विशेष आदर्श का संकेत भी इन लोकोक्तियों में मिल जाती है। ऐसी लोकोक्तियों का अर्थ उन लोकोक्तियों में व्यक्त परिस्थितियों तक ही सीमित होता है लेकिन अन्य घटनाओं तक व्यापक प्रसार पाता है। इसके विपरीत कुछ ऐसी भी लोकोक्तियाँ मिलती हैं, जिनके माध्यम से लोकगत व्यापक अनुभवों के सत्य को प्रकट करती हैं। पर ऐसी प्रत्येक लोकोक्ति उसमें दर्शनीय परिस्थितियों से समानता मिलते-जुलते वातावरण में प्रयुक्त होकर अर्थ की व्यंजना करती है। अर्थात् इन लोकोक्तियों से अभिधार्थ निश्चित परिस्थितियों में लेना चाहिए और अन्यथा व्यंजनार्थ का लेना आवश्यम्भावी हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इन लोकोक्तियों के प्रयोग से परिस्थितियों को समझने के लिए एक तीक्ष्ण बुद्धि की आवश्यकता होती है और शब्द शक्तियों को समझने का सामथ्र्थ रखना भी अत्यन्त जरूरी होगा। ये विशिष्ट अनुभव की व्यंजना करने वाली लोकोक्तियाँ भिन्न घटनाओं के वातावरण में एक उपमेय के रूप में प्रयुक्त होती हैं और उक्ति उपमान पर उपमेय के अप्रस्तुत रहने के कारण इन लोकोक्तियों को रूपकातिशयोक्ति की-सी स्थिति प्राप्त हो जाती है। उदाहरण के लिए एक हिंदी की लोकोक्ति से यह सीधा अर्थ निकलता है कि कुत्ते की पूंछ को नल में बारह सात तक रखने पर भी वह टेढी ही रहेगी––

"कुते की दुम बारह बरस नल में रहे तो भी टेढ़ी ही टेढ़ी"

उक्त कहावत चाहे कुत्ते के संबंध में कही गई है, फिर भी लोक जीवन की परिवर्तनशीलता के सिद्धान्त की व्यंजना प्रत्येक स्थिति में कर सकती है। इसका व्यापक अर्थ यह हो सकता है कि सज्जनों की संगति से मूर्ख व्यक्ति अपना उद्धार नहीं कर सकता। इसी लोकानुभव जन्य तथ्य को व्यक्त करने वाली तेलुगु की उक्ति है–––

कुक्क तोक गोट्टमुन्नंतसेपे

अर्थात् कुत्ते की पूंछ में नली जितनी देर तक लगी रहेगी, उतने समय तक ही वह सीधी रहती है। बाद में वह अपना असली रूप प्राप्त कर लेगी। इसी तरह तेलुगु में प्रयुक्त एक अन्य कहावत के अनुसार चूहे के चमड़े को साल भर धोने पर भी वह कभी सफेद न होकर काला ही रह जायेगा–––

"एलुक चर्ममु तेच्चि एडादि उतिकिना नलुपु नलुपे कानि तेलपु कादु"

इस भाव को प्रकट करने वाली इससे तुलनीय हिंदी की कहावत है––

"कोयला न होइ ऊजरा, सौ मन साबुन धोये"

तेलुगु और हिंदी की इन कहावतों से व्यक्त होने वाला व्यापक अर्थ है कि व्यर्थ ही किसी भी काम को करना नहीं चाहिए।

सामान्यतः प्रत्येक प्रान्त के लोक में ऐसी अनेक लोकोक्तियाँ मिलती हैं, जो कि अपने अभिधार्थ से लोक का एक विशिष्ट अनुभव प्रकट होता है पर लक्षणार्थ या व्यंजनार्थ से इनका क्षेत्र अनेक अन्य परिस्थितियों तक व्यापक हो जाता है। तेलुगु और हिंदी प्रान्त इस कथन के अपवाद नहीं हैं। अतः दोनों ही प्रान्तों में उपलब्ध अन्योक्तिवत् प्रयुक्त लोकोक्तियों की संक्षिप्त सूची यहाँ प्रस्तुत करना अनुचित नहीं होगा। अन्त के परिशिष्ट में ये अधिक मात्रा में दी गई हैं।

	हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
१.	सास की चीज जमाई पुन्न करै। (दूसरों की वस्तु को पुण्य करने या दान देने में हृदय विशालता प्रदर्शित करना)	अत्त सोम्मु अल्लुडु दानमु चेसिनट्लु[29]।
२.	नाच न जानै आंगन टेढ़ा। (गलती अपनी होते हुए व्यर्थ ही दूसरों पर आरोप लगाना)	आडलेनि बोगमुदि मद्देलवानि मीद पडिनट्लु[30]
३.	फलेगा सो झड़ेगा।	पेरुगुट विरुगुट कोरके[31](०)।
४.	बंदर के हाथ में नारियल। (मूर्ख को ऊँचा पद प्रदान करना)	कोतिकि कोब्बरिकाय दोरकिनट्टु[32]।
५.	नानी के आगे ननहाल की बातें करना। (जो सब कुछ जानता हो, उसके सामने उन्हीं बातों को कहना)	तल्लि पुट्टिल्लु संगति मेनमाम वद्द पोगडिनट्लु[33]।
६.	छोटा मुंह, बात बड़ी। (सीमा से बाहर की बातें करना)	चिन्न नोटिकि पेद्द माटलु[34]।
७.	प्यास लगने पर कुआ खोदना। (कठिनाइयों का सामना करने के लिए पहले से तैयार न रहकर हाल ही हाल में तैयारी के लिए उपकृत होना)	दाहमेसिनप्पुडे नुय्यि तव्विनट्लु[35]।

---

29. सास की जायदाद को दामाद का दान में दे देना। इसका एक रूपातर भी तेलुगु में मिलता है—"अत्त सोम्मु अल्लुडु धारवोसिनट्लु"।
30. खेल न जानने वाली वेश्या का ढोल बजाने वाले की कमी बतलाना।
31. बढ़ना नष्ट होने के लिए ही है। (०) इस भाव को प्रकट करने वाली तेलुगु की एक दूसरी भी लोकोक्ति है—"नेय्यमु कय्यमु कोरके, अर्थात् दोस्ती झगड़ा के लिए ही है।
32. जैसे बंदर को नारियल मिल गया हो।
33. मायके की प्रशंसा मामा के आगे करना।
34. छोटे मुंह की बड़ी बातें।
35. प्यास लगने पर कुँआ खोदना।

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
८. बगल में लड़का, शहर में ढिंढोरा। (सावधान न रहने के कारण अपने पास की वस्तु के लिए हल्ला करना)	पिल्लनि चंकनेट्टुकोनि ऊरंता वेतकिनट्लु[36]।
९. उँगली पकड़ते-पकड़ते पहुँचा पकड़ना। (थोड़ा अधिकार प्राप्त कर पूरा अधिकार जमाना)	व्रेलु चूपिस्ते चेय्यंता मिंगिनट्लु[37]।
१०. अंडा सिखावे बच्चे को चीं-चीं मत कर। (छोटे लोगों का बड़ों को शिक्षा देना (या) अज्ञानियों का ज्ञानियों को शिक्षा देना)	गुड्डुवच्चि पिल्ल नेक्किरिंचिनट्लु[38]।
११. अंधा क्या जाने बसंत की बहार। (अल्पज्ञ के ज्ञान के बारे में प्रयुक्त कथन है)	गुड्डिवानिकेमि तेलुसु कुंदनपु छाय[39]।
१२. अंधों में काना राजा। (मूर्खों के बीच में अल्पज्ञानी ही बड़ा व्यक्ति होता है)	गुड्डिलो मेल्ल मेलु[40]।
१३. अधजल गगरी छलकत जाय। (अज्ञानी व्यक्ति का अपने आप बढप्पन दिखाना)	निंडुकुंड तोणकदु[41]।
१४. आस्तीन का सांप (कृतघ्न होना)	मेडलोनि पामु[42]।
१५. आगे कुआँ, पीछे खाई (हर तरफ से परेशान होना या संकट में पड़ना)	मुंदु नुय्यि, वेनुक गोय्यि[43]।
१६. आदमी की दवा आदमी ही है। (किसी भी व्यक्ति को उसके समान प्रवृत्तिवाला व्यक्ति ही पहचान सकता है)	वज्रान्नि वज्रमें कोस्तुंदि[44]।

---

36. बच्चे को बगल में उठाकर गाँव भर में तलाश करना।
37. उँगली दिखाने से पूरे हाथ को ही निगल जाना।
38. अंडे का आकर बच्चे का मज़ाक उड़ाना।
39. अंधे को क्या मालूम सोने की छाया।
40. अंधों में टेढ़ी आँखवाला ही भला।
41. भरी गगरी नहीं छलकती।
42. गले का साँप।
43. आगे कुआँ, पीछे खाई।
44. वज्र को वज्र ही काटता है।

	हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
१७.	उधार के हजार से नकद के नौ सौ भले। (जो अपनी निजी संपत्ति है, उसी का मूल्य है)	अप्पु आरु वेलकन्ना रोक्खं रेंडुवंदलु मेलु[45] ।
१८.	कलाल की दुकान पर पानी भी पियो तो शराब का शक। (दुर्जनों के बीच में सज्जन भी हो तो उस पर दुर्गुणों का शक होता है)	ताटि चेट्टु क्रिंद पालु त्रागिना कल्ले अंटारु[46] ।
१९.	कुतिया चली प्रयाग। (अल्प का व्यर्थ ही पुण्य कर्म करने का प्रयास करना)	कुक्क काशी यात्रकु पोइनट्लु[47] ।
२०.	कुत्तों के भूंखने से हाथी नहीं डरते। (दुर्जनों के व्यर्थ ही चिल्लाने या बदनाम करने पर सज्जनों का मूल्य नहीं घटता)	एनुगुनु चूचि कुक्कलु मोरिगिनट्लु[48] ।
२१.	कंगाली में आटा गीला। (कठिन परिस्थितियों में और भी कठिनाइयों का सिर पर पड़ना)	दरिद्रुडु चेनु वेस्ते वडगंड्ल वान[49] ।
२२.	घर की मुर्गी दाल बराबर। (अपनी चीज़ का असुंदर लगना)	पोरुगिंटि पुल्लकूर रुचि[50] ।
२३.	जहाँ गुड़ होगा, वहीं चीटे भी होंगे। (धनवानों को ही अनेक व्यक्ति घेरे रहेंगे)	बेल्ल मुन्न चोटे चीमलुंडुनु[51] ।
२४.	दमड़ी की बुढ़िया टका सिर मुंडा। (अमूल्य वस्तु के लिए ज्यादे पैसे खर्च करना-व्यर्थ खर्च करना)	दम्मिडी मुंडकु एगानी क्षवरं[52] ।
२५.	सब दिन जात न एक समान। (लोक की सामान्य प्रवृत्ति के बारे में कथन)	अन्निदिनालू ओकला गडुववु[53] ।

उक्त तालिका में उदाहृत लोकोक्तियों की तरह अनेक लोकोक्तियाँ तेलुगु और हिंदी दोनों ही क्षेत्रों में प्राप्त होती हैं। इस प्रकार की तुलनात्मक लोकोक्तियों की बृहद् सूची परिशिष्ट से प्राप्त हो जाती है।

---

45. उधार के छः हजार से नकद के दो सौ भले।
46. ताड़ वृक्ष के नीचे खड़े होकर दूध भी पिएँ, तो शराब कहते हैं।
47. कुत्ते का मानों काशी की यात्रा करना।
48. हाथी को देखकर कुत्तों का भूंखना।
49. दरिद्र व्यक्ति के द्वारा खेती का कार्य शुरू होने पर ओले पड़े।
50. पराई घर की खट्टी सब्जी रुचिकर है।
51. जहाँ गुड होगा, वहीं चीटे होंगे।
52. दमड़ी की बुढिया को दो पैसे की हजामत।
53. सभी दिन एक समान नही बीतते।

इन लोकोक्तियों के अतिरिक्त कुछ ऐसी भी लोकोक्तियाँ प्राप्त होती हैं जिनका भावसाम्य तो है ही, पर बाह्य रूप में भिन्नता है। अर्थात् देखने में तो दोनों क्षेत्रों की लोकोक्तियाँ भिन्न-सी लगती हैं पर उनसे जो अर्थ निकलता है, वह प्रायः समान है। कहने का मतलब यह है कि दोनों ही प्रान्तों की लोकोक्तियों में रूपात्मक भिन्नता होते हुए भी भावात्मक एकता है। जैसे हिंदी की एक लोकोक्ति देखिए——

"मुर्गी को तकुए का घाव काफी"

जिसका अर्थ यह है कि थोड़े ही प्रयत्न से बन जाने वाले कार्य के लिए अत्यंत बड़ा प्रयत्न करना है। इसी भाव को व्यक्त करते हुए भिन्न रूप में प्रचलित तेलुगु की कहावत है——

"पिच्चुक पै ब्रह्मास्त्रमु" या "पिच्चुक पै ब्रह्मास्त्र प्रयोगमु"

हिंदी और तेलुगु की उक्त लोकोक्तियों में प्रायः भाव एक ही है पर दोनों भिन्न-भिन्न रूप के हैं। हिंदी की एक दूसरी भी लोकोक्ति इसी भाव को व्यक्त करती हुई रूपात्मक एकता भी रखती है और वह लोकोक्ति इस प्रकार है——

"करकेंटा की चोट बिटौरा पै"

उक्त कथन की पुष्टि के लिए आगे कुछ उदाहरणों को लेकर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। बात को स्पष्ट करने के लिए यह कहना समीचीन होगा कि इन लोकोक्तियों पर तुलना प्रस्तुत की जायेगी जिनका रूप गठन भिन्न है, मगर अर्थ या भाव एक ही है। तेलुगु क्षेत्र में एक ऐसी लोकोक्ति मिलती है जिसका अर्थ यह है कि एक ही प्रयत्न से अप्रयत्न ही दूसरा भी काम बन जाता है——

"ओकटे देब्बकु रेंडु पिट्टलु"[54]

अर्थात् एक ही मार से दो चिड़िया हाथ लग जाती हैं। हिंदी में प्राप्त लोकोक्ति का यद्यपि भाव यही है परन्तु रूप बिलकुल भिन्न है——

"एक पन्थ दो काज"

कुछ लोकोक्तियों में यद्यपि पूर्ण रूप से रूप की भिन्नता नहीं मिलती पर एक-आध शब्द तो जरूर भिन्न हैं। इसका एक उदाहरण है——

"कलाल की दुकान पर पानी भी पिओ तो शराब का शक"

तेलुगु की लोकोक्ति में कलाल की दूकान के स्थान पर "ताड़ वृक्ष" कहा गया है और "पानी पीने" के जगह पर "दूध पीने" की बात कही गयी है——

"ताटिचेट्टु क्रिन्द नूंचोनि पालु त्रागिना कल्ले अंटारु"
अर्थात् ताड़ वृक्ष के नीचे खड़े होकर दूध भी पियें तो शराब ही कहते हैं।

---

54. इसके रूपांतर भी तेलुगु में प्राप्त है——'देब्बकु रेंडु द्राक्षापळ्ळु" या "ओकटे देब्बकु रेंडुमुक्कलु"।

इसी प्रकार के दो-चार अन्य उदाहरणों को भी देख लेना ठीक होगा। तेलुगु की एक कहावत के अनुसार अंधा सोने का रंग क्या जाने--

"गुड्डिकेमि एरुक कुन्दनपु छाया"

हिंदी मे यद्यपि अंधे व्यक्ति के ही संबंध में बात कही गयी है, किन्तु "सोने के रंग जानने" के स्थान पर "बसन्त की बयार" वाली बात कही गई है--

"अंधा क्या जाने बसन्त की बयार"

हिंदी में प्रचलित एक कहावत है--

"सूत न कपास कोरी में लट्ठम लट्ठ"

इसका अर्थ यह है कि यद्यपि सूत और कपास बिलकुल नहीं हों फिर भी लोग उसके लिए व्यर्थ ही झगड़ा मोल लेते हैं तेलुगु की कहावत के अनुसार कपास खेत में रही, तब भी एक दूसरे से झगड़ा करते हैं कि एक हाथ तू ले और दो हाथ मैं लूंगा--

"चेलो प्रत्ति चेलोन कानि नीकोक मूरेड, नाकु रेंडु मूरलु"

हिंदी और तेलुगु की उक्त उदाहरणों मे अन्तर इतना ही है कि तेलुगु की कहावत में कपास खेत में रहने की बात कही गयी है जहाँ पर हिंदी में ऐसा उल्लेख नहीं मिलता। दूसरा अन्तर यह है कि तेलुगु वाली लोकोक्ति में उसके (सूत के) नाप के बारे में भी कहा गया है जो कि हिंदी में अप्राप्य है। तेलुगु की एक लोकोक्ति के अनुसार गरीब के सिर धोते समा ओले पड़े--

"बीदवाडु तल कडगबोते ओड़गळ्ळु पड्डट्ट"

लेकिन हिंदी में उपलब्ध उक्ति का अर्थ है कि सिर मृडाते समय ओले पड़े--

"सिर मुडाते ही ओले पड़े।"

हिंदी में झगड़ा कराकर अलग होने वाले व्यक्ति के संबंध में कही जाने वाली उक्ति है --

"घर में आग लगाय जमालो अलग खड़ी"

तेलुगु में यद्यपि झगड़ा करने वाली बात तो है परन्तु आग लगाने वाली बात नहीं है। तेलुगु की लोकोक्ति के रचयिता "अलग खड़ी होने वाली बात" से सन्तुष्ट न होकर "तमाशा देखने" वाली बात भी कह दी है--

"तंटालु पेट्टि तमाशा चूचिनट्लु"

तेलुगु और हिंदी प्रान्तों में प्राप्त होने वाली बहुत कुछ ऐसी लोकोक्तियाँ हैं जिन में उसी प्रकार की भिन्नता पायी जाती है जो ऊपर दिये गये उदाहरणों में दर्शनीय है।

उक्त कोटि की लोकोक्तियों के अतिरिक्त एक दूसरी कोटि की लोकोक्तियाँ हैं जिनमें अर्थ साम्य के साथ ही शब्द साम्य भी मिल जाती हैं। इससे अनुमान यह होता है कि दोनों ही क्षेत्रों की भाषायें भिन्न होते हुए भी प्रायः उनका स्रोत एक है। यह भी असम्भव नहीं है कि एक ही स्रोत से उद्भूत होकर लोकोक्तियाँ केवल भाषा के भिन्न परिधानों के माध्यम से व्यक्त हुई है। यह जो स्रोत का साम्य दीखता है कुछ में बिल्कुल स्पष्ट है और कुछ में संकेत मात्र मिलता है। जैसे तेलुगु की एक लोकोक्ति है—

"मुंजेति कंकणमुनकु अद्दमेला"

इससे तुलनीय हिंदी की कहावत है—

"हाथ कंगन को आरसी क्या"

संस्कृत के नाटक "कर्पूरमंजरि" में राजशेखर ने भी ऐसी लोकोक्ति का प्रयोग किया है[55]। इसका मूल स्रोत संस्कृत में है जहाँ से प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए अनेक अन्य भाषाओं में प्रचलित हो गई है। यह एक न्याय के रूप में भी प्रसिद्ध है।[56] इसी प्रकार हिंदी की "जहाँ न पहुंचे रवि तहाँ पहुंचे कवि" वाली लोकोक्ति तेलुगु में भी ज्यों की त्यों मिलती है—

"रवि गांचनिचो कवि गांचुने कदा।"

अपभ्रंश से बहुत कुछ साम्य रखने वाली एक कहावत राजस्थान में प्रचलित है—

"जयि किर सज्जयि मम्सम तावझ्झवि फिम्गले अज"[57]

तेलुगु प्रान्त में भी यही अर्थ रखने वाली एक कहावत है जिसका अर्थ है कि क्या माँस खाने वाले के गले में हड्डी लटकती रहती है—

"मांसमु तिनुवानि मेडलो एमुकलु वेलाडुना"

एक संस्कृत की लोकोक्ति के अनुसार जिस स्थान पर कोई पेड़ नहीं हो, वहाँ अरंडी का पौधा ही महावृक्ष के समान है—

"एरंडोडपि द्रुमायते"

---

55. राजशेखर : "कर्पूर मंजरी" (१।१७)—"हथ्थ कंकणं किं दप्पणेण पेक्खि" आदि।
56. इस न्याय को "करकंकण न्याय" कहते हैं।
57. मरु भारती वर्ष ६, अंक ३।

संस्कृत की इस लोकोक्ति को पृष्ठभूमि में रखते हुए हिंदी में कहावत इस प्रकार चल पड़ी है—

"जहाँ पेड़ न रूख वहाँ रेंडइ महावृक्ष"

तेलुगु प्रान्त में भी बिलकुल इसी भाव को प्रकट करने वाली लोकोक्ति इस प्रकार है—

"ए वृक्षमू लेनि चोट आमुदपु वृक्षमें महावृक्षमु"

तेलुगु और हिंदी की इस लोकोक्ति में कोई अन्तर नहीं है। दोनों ही भाषाओं ने संस्कृत की लोकोक्ति को आधार बनाया है, अतः स्रोत दोनों का एक ही है। इस प्रकार की एक-आध अन्य लोकोक्तियों को भी देख लेना समीचीन होगा।

"चोर की म कोठी में भी मूठ देखकर रोती है"

इस कहावत का तेलुगु रूपान्तर यह है कि--

"दोंगवानि तल्लिकि एडुव भयमु"

अर्थात् चोर की माँ रोने से डरती है।

इस प्रकार पूर्ण साम्य रखने वाली लोकोक्तियों की एक संक्षिप्त सूची नीचे प्रस्तुत की गयी है। ये सभी लोकोक्तियों प्रायः लोक जीवन से घनिष्ठ संबंध रखने वाली लोकोक्तियाँ हैं।

	हिंदी की लोकोक्ति	तेलुगु की लोकोक्ति
१.	बिना मांगे माँ भी नहीं खिलाती।	अडगदे अम्मैना पेट्टदु[58]।
२.	चोर से कहो चोरी कर, शाह से कहो जागते रहो।	दोंगकु तलुपु तेरचि दोरनु लेपिनट्लु[59]।
३.	दमड़ी की बुढ़िया टका सिर मुंडाई।	एगानी मुंडकि डब्बुन्नर क्षवरं[60]।
४.	सांप मरे न लाठी टूटे।	कर्र विरुवकुंडा पामुनु चंपु[61]।
५.	रांड के पाय सुहागिल लागी है जा मैयना मोसी।	वेधव मुंडकि कालु म्रोक्किते नीवु कूडा नालागे वार्धिल्लमन्नट्लु[62]।
६.	चुल्लु भर पानी में डूब मरो।	चेबुंडु तीक्कलो पडि चावु[63]।
७.	गरीब की जोरू सबकी भाभी।	बीदवानि भार्य अंदरिकी वदेन[64]।

58. बिना मांगे माँ भी नहीं खिलाती।
59. चोर के लिए दरवाजा खोलकर मालिक को जगाना।
60. दो पैसे की बुढ़िया को दुगने पैसे की हजामत।
61. लकड़ी को तोड़े बिना सांप को मारो।
62. (सौभाग्यवती) विधवा के पैरों पड़ी तो विधवा का यह आशीर्वाद देना कि तुम भी मेरी तरह तरक्की करो।
63. लोटेभर पानी में गिर कर मरो।
64. गरीब की पत्नी सब की भाभी।

हिंदी की लोकोक्ति	तेलुगु की लोकोक्ति
८. चील के घोंसले में मांस कहाँ।	ग्रद्द गूटिलो मांसमेक्कड[65]।
९. घोड़ा घास से यारी करे तो खाये क्या ?	गुर्रानिकी, गड्डिकी स्नेहमैते अदेमि तिंटुंदि[66]।
१०. जल में रहकर मगर से वैर।	नीटिलो उंडि मोसलितो वैरमा[67]।
११. ताली एक हाथ से नहीं बजती।	ओके चेतिकि चप्पट्लु मोगुना[68]।
१२. खोदा पहाड़ और निकली चुहिया।	कोडनु त्र्व्वि एलुकनु पट्टिनट्टु[69]।

५.११.२ अलंकृत शैली वाली लोकोक्तियाँ :

अलंकृत शैली वाली लोकोक्तियों में उपमान की सहायता से किसी एक तथ्य का स्पष्टीकरण होता है। ऐसी लोकोक्तियों में प्रयुक्त उपमान जनसामान्य के लोकानुभव के आधार पर चुने गए हो सकते हैं। इन उपमानों की तुलना उचित अवसर पर अन्य किसी मानवीय व्यवहार के साथ की जाती है अर्थात् लोक की जनता अपने जीवनानुभव से प्राप्त विशिष्ट अनुभव को उपमान के रूप में हमेशा के लिए ग्रहण कर लेती है और उन अनुभवों को जीवन की अन्य परिस्थितियों के साथ जोड़कर बात को उक्ति के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास करती है।

लोक की जनता ने तोते की किसी भी बात का अर्थ समझे बिना उसको रटते हुए पाया और तोते की इस क्रिया को पृष्ठभूमि में रखकर इस तथ्य को ऐसे लोगों के संबंध में प्रकट करते हैं जो अर्थ या मतलब को समझे बिना ही उसको याद करने का प्रयास करते हैं। यहां "तोता रटना" वाली बात को उपमान के रूप में ग्रहण कर अन्य परिस्थितियों में इसका प्रयोग करते हैं। हिंदी में "तोता रटंत" या "तोते की तरह याद करना" प्रायः प्रयोग में पाए जाते हैं। इसका एक अर्थ तो ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है। एक दूसरा भी अर्थ निकलता है कि किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा समझाई गयी बातों को या कहीं पढ़ी हुई वस्तु को ज्यों का त्यों याद करना। इस प्रयोग में स्पष्टतः उपमालंकार दृष्टव्य है। तेलुगु की भी लोकोक्ति इससे मिलती है—

"चिलुक पलुकुलु पलिकिनट्लु"

हिंदी और तेलुगु की उक्ति में अन्तर केवल इतना है कि तेलुगु में "की तरह" वाली बात न होकर "तोते की बोली बोलने" वाली बात कही गयी है परन्तु हिंदी में एक उपमान स्पष्ट है।

---

65. चील के घोंसले में मांस नहीं मिलता।
66. घोड़े और घास के बीच यारी हो तो क्या खाए ?
67. जल में रहकर मगर से शत्रुता नहीं की जाती।
68. एक ही हाथ से क्या ताली बजती ?
69. पहाड़ खोदकर चूहे को पकडना।

उक्त लोकोक्ति की ही शैली पर आधारित एक अन्य लोकोक्ति भी हिंदी में मिलती है जिससे मिलती जुलती कहावत तेलुगु प्रान्त में भी उपलब्ध है। दोनों ही लोकोक्तियाँ दुष्ट पुरुषों या पाखंडियों से संबंधित हैं। ये लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं।

"बगुला भगत्" (हिंदी)—"कोंग भक्ति"[70] (तेलुगु)

इस लोकोक्ति के सृजन के लिए लोक मानस ने एक बहुत ही सुंदर उपमान को खोज निकाली है और वह है—बगुला। बगुला तालाब में हमेशा मछली की प्रतीक्षा करता रहता है। कभी एक ही पांव पर खड़ा रहता है और कभी दोनों पैरों पर। देखने में अत्यंत गंभीर एवं शान्त स्वभाव का सा लगता है। मगर जैसे ही मछली सामने से गुजरती है तो खटाक से अपने गर्दन को झुका कर तुरन्त पकड़ लेता है। बगुले की इस पाखंडी प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर, उस तरह के स्वभाव वाले व्यक्तियों के संबंध में उक्त प्रकार के कथन करते हैं। ऐसे लोगों के संबंध में यह कथन अत्यंत उपयुक्त तथा सटीक सिद्ध होता है।

एक कठोर या राक्षसी प्रवृत्ति वाले मनुष्य समाज के बीच यदि कोई सज्जन या साधु प्रकृति वाला व्यक्ति रहता है और नित्य बड़ी होशियारी के साथ इन दुष्टों से बचते हुए चुपचाप अपना गुजारा कर लेता है तो ऐसे लोगों के संबंध में भी तेलुगु में एक कहावत प्राप्त है—

"तललोपल नालुक, पूसललो दारमुवले"[71]

यद्यपि हिंदी में भी एक उक्ति मिलती है पर उसमें "सुई में डोरे" की बात तो नहीं मिलती। एक अन्तर यह भी है कि तेलुगु में "सिर में जीभ" कहा गया है, जहाँ पर हिंदी में दांतों के बीच जीभ के रहने की बात है[72]। कठोर या दुर्जनों के बीच में सज्जन का रहते हुए निर्वाह करना अत्यंत कठिन है। इस तरह की परिस्थिति में जीभ जैसी कोमल वस्तु का रहना नित्य प्रति संकटमय होता है और ऐसी संकटाकीर्ण परिस्थितियों का सामना करते हुए आगे बढ़ने के लिए अत्यंत कुशलता की अपेक्षा रहती है। जीभ अपनी व्यवहार—कुशलता के कारण ही दांतों के बीच में रह पाती है।

कुछ लोकोक्तियों में ऐसा होता है कि उनमें व्यक्त उपमान के स्वभाव की मनुष्य रूप उपमेय की प्रवृत्ति से तुलना की गई है। जिस प्रकार तेज घोड़ा एक ही लात से अपनी गति को तीव्र कर लेता है उसी प्रकार समझदार और इज्जतवाले आदमी से एक ही बार किसी भी बात को कहने से समझता भी है और उसको तुरन्त ही क्रियान्वित करता है। लेकिन जो घटिया घोड़े होते हैं उनको चाहे कितनी ही बार पीटा जाय किन्तु वे अपनी गति में परिवर्तन नहीं करते। इसके सादृश्य ही निकम्मा और निर्लज्ज व्यक्तियों पर कितने ही बड़े आदमियों की बातों का असर नहीं पड़ता। समझदार व्यक्ति और तेज घोड़े की बुद्धि के संबंध में तुलनात्मक शैली में हिंदी की एक लोकोक्ति प्रसिद्ध है—

"घोड़े को लात और आदमी को बात"

---

70. तेलुगु में इसका एक रूपान्तर भी मिलता है—"कोंग जपमु" (बगुले का जप)
71. इसका अर्थ यह है कि "सिर में या मुंह में जीभ और सुई में डोरा" की तरह रहना है।
72. "दाँतों के बीच जीभ का रहना"।

यद्यपि तेलुगु की कहावत में आदमी और घोड़े की बात नहीं कही गई परन्तु घोड़ों की जगह कुत्ते का उल्लेख मिलता है। मगर हिंदी और तेलुगु—दोनों ही लोकोक्तियों का भाव एक ही है—

"मनिषिकोक माटा, कुक्ककोक देब्बा"[73]

यह तो सर्व विदित है कि बिहारी ने दोहों के माध्यम से अनेक उक्तियाँ कही हैं। इन में कुछ ने कहावतों का रूप ग्रहण कर लिया है और अन्य वैसे ही प्रसिद्ध हैं।

रीतिकाल के इस प्रमुख कवि की एक लोकप्रिय उक्ति है कि मानवमात्र अपने यौवन काल में न जाने कितने ही गलतियों को कर डालता है—

"कितैन अवगुन जग करत नै बै चढ़ती बार"

इसी भाव को पृष्ठभूमि में रखते हुए हिंदी क्षेत्र में एक कहावत चल पड़ी है—

"बुढ़ापे में सभी सीता बन जाती हैं।

इसका अर्थ यह है कि वृद्ध हो जाने पर स्त्री का शरीर क्षीण हो जाता है और तब वह अपने यौवन काल के अवगुणों को भूलकर लोक को यह दिखाना चाहती है कि वह बड़ी पतिव्रता स्त्री है। सभी स्त्रियाँ तो ऐसी नहीं होती पर अधिकतर ऐसी प्रवृत्ति वाली होती हैं।

तेलुगु में प्राप्त लोकोक्ति में यद्यपि सीता के साथ तुलना नहीं दीखती परन्तु भाव साम्य तो है ही—

"पापटलो वेंट्रकलु नेरिस्ते अंदरू पतित्तुले"

दोनों में अन्तर केवल इतना है कि हिंदी में "सीता" को पातिव्रत्य का प्रतीक बनाया गया है, जहाँ पर तेलुगु में सीधे पतिव्रता शब्द का प्रयोग है।

प्रत्येक प्रान्त में यह सर्वमान्य सत्य है कि वस्तुतः जो वस्तु अपने पास उपलब्ध है उसी को महत्व देना चाहिए। लेकिन ऐसी वस्तुओं को महत्व देना मूर्खता के अतिरिक्त और कुछ नहीं है जिसके प्राप्ति की आशा भविष्य में है। यही तथ्य इस कहावत में दर्शनीय है।

" उधार के हजार से नकद के नौ सौ भले"

तेलुगु की कहावत में यद्यपि धनराशि की मात्रा भिन्न है पर भाव एक है—

"अप्पु आरुवेल कन्ना रोक्खम् रेंड्डु वंदलु मेलु"

---

73. इस कहावत का एक दूसरा भी रूप आन्ध्र प्रान्त में मिलता है—
"मनिषिकोक माट, गोड्डुकोक देब्बा"
दोनों में केवल अन्तर इतना है कि "बैल" के जगह पर "जानवर" की बात है।

इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि तेलुगु और हिंदी के क्षेत्रों में उपलब्ध इस प्रकार की लोकोक्तियों में प्रयुक्त उपमानों में साम्य अधिक मात्रा में है। जो कुछ भी वैषम्य दिखाई देती है वह कोई विशेष नहीं है। जहाँ तक प्रवृत्तिगत साम्य का सम्बन्ध है, पूर्ण साम्यता है। इस प्रकार की तुलना अनेक लोकोक्तियों को लेकर प्रस्तुत की जा सकती है। इससे प्रबन्ध के आकार को बढ़ाने के अलावा अन्य कुछ महत्व नहीं है। अतः संक्षिप्ति की दृष्टि से यहाँ पर कुछ प्रतिनिधि लोकोक्तियों की तुलना करके विषय को समाप्त किया जा रहा है। चाहे जितनी भी लम्बी चर्चा की जाय, उससे निकलने वाले निष्कर्षों में वृद्धि नहीं होगी।

५.११.२३. तुलनात्मक शैली वाली लोकोक्तियाँ :

तुलनात्मक शैली वाली लोकोक्तियों में दो वस्तुओं को लेकर तुलना की जाती है। यह तुलना कभी तुकान्त रूप में हो सकती है और कभी अतुकान्त रूप में। ऐसी लोकोक्तियों में वर्णित वस्तुएँ एक दूसरे के लिए उपमान और उपमेय बनती हैं और तद्वारा व्यक्त भाव को ज्यादा प्रभावशाली बनाती हैं। यह जो तुलना है वह अत्यन्त उचित होती है और तत्सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की चर्चा के लिए अवकाश ही नहीं मिलती। इस तुलना के औचित्य की सुन्दरता में ही लोकोक्ति के प्रभाव का रहस्थ निहित है। इस प्रकार की लोकोक्तियों से हिंदी और तेलुगु प्रान्तों में से कोई भी वंचित नहीं है। तेलुगु की एक कहावत में भूख और निद्रा की तुलना से युक्त कथन है कि न भूख को रुचि का पता है और न निद्रा को सुख का——

"आकलि रुचि येरुगदु, निद्र सुखमेरुगदु"

इससे तुलनीय हिंदी कहावत देखिए——

"क्या भूख को बासन।
क्या नींद को आसन॥"[74]

इसी तुलनात्मक शैली में प्राप्त होने वाली कुछ लोकोक्तियों में जातियों का भी उल्लेख देखने को मिलता है। जैसे तेलुगु की एक कहावत में कहा गया है कि धोबी को नया और नाई को पुराना लेना आवश्यक है——

"चाकलि कोत्ता, मंगलि पाता"

हिंदी की कहावत भी करीब इसी रूप का है——

"नया धोबी, नाई पुराना"

दो एक अन्य उदाहरणों की भी चर्चा करके प्रस्तुत विषय समाप्त किया जायेगा। तेलुगु की एक लोकोक्ति है——

"पेल्लि चेसि चूडु, इल्लु कट्टि चूडु"

---

74. इससे समान राजस्थानी कहावत इस प्रकार है——
"भूख कै लगावण कोणी, नींद कै बिछावण कोणी" (लगावण = साग-सब्जी) अर्थात् भूख लगने पर मनुष्य साग-सब्जी की चिंता नहीं करता और नींद आते समय बिछौना की भी चिंता नहीं करता।

इसके द्वारा इस बात की व्यंजना है कि गृह निर्माण में और विवाह करने की क्रिया में अनेक कठिनाइयाँ हैं जो अनुभव से ही किसी भी व्यक्ति को मालूम हो जाती हैं। राजस्थानी में कहा गया है--

"चेजो कह मनै चलार देख,
व्याह कह मनै माडर देख।"[75]

हिंदी की एक कहावत के अनुसार पथ्य के बिना दवा और सत्यरहित बात व्यर्थ ही हैं।--

"बिना पथ्य की दवा और बिना सत्य की बात"

इससे पूर्ण साम्य रखने वाली तेलुगु लोकोक्ति इस प्रकार है--

"मन्दुकु पथ्यम् माटकु सत्यम्"

इस प्रकार की अनेक लोकोक्तियाँ दोनों ही क्षेत्रों में मिलती हैं जिनकी तुलनात्मक सूची अन्त के परिशिष्ट से उपलब्ध है।

५.२. आंशिक साम्यवाली लोकोक्तियाँ :

आंशिक साम्यवाली लोकोक्तियों में व्यंजित भाव तेलुगु और हिंदी दोनों स्थानों पर पूर्णतः एक है। लेकिन कथन के ढंग में भिन्नता है और प्रयुक्त शब्द भी भिन्नार्थ वाले हैं। इस प्रकार की लोकोक्तियों के तुलनात्मक अध्ययन से भी महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। अर्थ में जो साम्य दीखता है उससे यह बात सिद्ध होती है कि तेलुगु और हिंदी प्रान्त के लोकजीवन के तथ्य प्रायः समान हैं। साथ ही दोनों क्षेत्रों के जीवन की परिस्थितियों और उनसे प्राप्त ज्ञान में बहुत साम्य है। इन लोकोक्तियों में रूपगत भिन्नता होते हुए भी भावगत साम्य है। सुविधा के लिए इन लोकोक्तियों का उपविभाजन इस प्रकार सम्भव है--

(१) ऐसी लोकोक्तियाँ जो हिंदी में अन्योक्तिवत और उदाहरण से युक्त होती हैं, किन्तु तेलुगु में उनका अर्थ सामान्य कथनात्मक लोकोक्तियों द्वारा ही किया गया है। इसका विपरीत रूप भी हो सकता है।

(२) ऐसी लोकोक्तियाँ जो दोनों क्षेत्रों में अलंकृत शैली में प्राप्त हों किन्तु अप्रस्तुत विधान में भिन्नता हो।

कुछ लोकोक्तियाँ ऐसी हैं जो तुलना, उदाहरण या उपमानों के द्वारा अथवा शब्द-शक्तियों के बल पर भाव व्यक्त करती हों और तेलुगु में वही भाव सीधे निकलता हो।

---

75. राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन, पृ. २८३।

तेलुगु की एक लोकोक्ति इस भाव को व्यक्त करती है कि संकटासन्न परिस्थितियों में फँसे हुए व्यक्ति को और भी परेशान करना—

"मूलिगे नक्क मीद ताटिपंडु पडिनट्लु"

अर्थात् पीड़ा से कराहते हुए सियार पर ताड़ का फल गिरना। उस पर ताड़ फल का गिरना उसी प्रकार है कि जिस प्रकार संकट ग्रस्त व्यक्ति को ज्यादा परेशान करना है।

हिंदी में इस भाव को व्यक्त करती हुई यह लोकोक्ति चल पड़ी है—

"गिरे में चार लात जमाना"

तेलुगु की इस लोकोक्ति की शैली अलंकृत है और उपमान की भी योजना है। किन्तु हिंदी में ऐसा नहीं है। इसके विपरीत हिंदी की भी कुछ ऐसी लोकोक्तियाँ मिलती हैं जिनकी अलंकृत शैली हो, परन्तु उनसे तुलनीय तेलुगु की कहावत अलंकृत भाषा में हो। यह भी हो सकता है कि कभी किसी क्षेत्र की लोकोक्ति की शैली अलंकृत होते भी अनलंकृत हो। उदाहरण के लिए तेलुगु की कहावत देखिए—

"चेसिन पापालु चेंगुन मुडिपेट्टि काशीकि पोते कडतेरुना ?"

जिसका अर्थ यह है कि अनेकों दुष्ट कर्मों के कर्ता होते हुए तीर्थाटन करने से कुछ भी लाभ नहीं होगा। कहने का मतलब यह है कि इस दुनिया में हर एक आदमी को अपने किये का फल भुगतना ही पड़ेगा। बिलकुल इसी भाव को व्यक्त करने वाली हिंदी की लोकोक्ति इस प्रकार है—

"उत्तर जाय कि दक्षिण, वही कर्म के लक्षण।"

अर्थात् इस नश्वर जगत में मानव किसी भी दिशा में चला जाय लेकिन कभी भी उसके भाग्य चक्र में या ललाट की रेखा में परिवर्तन होना असंभव है। हिंदी की एक अन्य कहावत का भावार्थ यह है कि चाहे मनुष्य का पेट भरे लेकिन उसकी नीयत भरना कठिन है—

"पेट भरा, नीयत नहीं भरी"

तेलुगु में इस भाव को व्यक्त करने वाली कहावत यह है कि—

"कडुपु चिन्नदि, कळ्ळु पेद्दवि"

अर्थात् देखने में अच्छी लगने वाली वस्तु को यद्यपि ज्यादा खाने की इच्छा होती है लेकिन पेट के छोटे होने के कारण आँख की लालसा तृप्त नहीं हो सकती। अंग्रेजी में प्राप्त कहावत बिलकुल इसका अनुवाद—सा है—

"दी आई इज बिगर दैन दी बेली।" (The eye is bigger than the belly)

५.२१ व्यंग्यात्मक लोकोक्तियाँ:—

व्यंग्यात्मक लोकोक्तियों के प्रयोग से लोकोक्तियाँ जिस व्यक्ति के प्रति कही जाती हैं, उन व्यक्तियों पर व्यंग्य के तीक्ष्ण बाण जा गिरते हैं जिससे वे अपनी प्रवृत्ति को समझकर तिलमिला उठते हैं। वे व्यक्ति जिनके संबंध में ऐसी लोकोक्तियों का प्रयोग होता है; सामान्यत: दुष्ट समाज के प्रतिनिधि या पाखण्डी व्यक्ति होते हैं। इसी लिए उन पर धाव करने वाले लोकोक्तियों के बाण छोड़ दिए जाते हैं। तेलुगु और हिंदी क्षेत्र इस प्रकार की लोकोक्तियों से वंचित नहीं हैं। अत: दोनों ही क्षेत्रों में प्राप्त होने वाली इस प्रकार की लोकोक्तियों का तुलनात्मक दृष्टि से विवेचना प्रस्तुत करना अत्यंत उपयोगी होगा जिससे महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकलने की अनेक संभावनाएँ हैं।

हिंदी की एक लोकोक्ति के द्वारा अवसरवादी लोगों की प्रवृत्ति पर व्यंग्य करने वाली लोकोक्ति प्राप्त है। यद्यपि यह लोकोक्ति का बाण ऐसे लोगों पर गहरी चोट कर जाता है फिर भी उसमें बुराई या दुष्टता की ओर संकेत नहीं मिलता। बस, इतनी ही नीति का कथन है कि मौका पाकर ही व्यवहार करना चाहिए—

"गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास"

लेकिन मौके के अनुरूप या प्रतिकूल होने समझकर कार्य करने के सम्बन्ध में भी कुछ लोकोक्तियों के द्वारा नीति का कथन किया गया है। जैसे "जैसी बहे बयार पीठ तह वैसी दीजै" अर्थात् हवा की रुख को देखकर अपनी स्थिति का निर्णय करना चाहिए। तेलुगु की भी कहावत इसी भाव को प्रकट करती है—

"गालि एटु वीस्ते अटे ओग्गिनट्लु"

इसी भाव से मिलती-जुलती लोकोक्तियाँ तेलुगु और हिंदी में भी अन्य शैली में व्यक्त हुई हैं —

"जैसी धूप वैसी छतरी"—"ये एंडकागोडुगु"

हर स्थान पर कुछ ऐसे लोग मिल जाते हैं जो वास्तव में दुष्ट या निकम्मे कहला सकते हैं। परन्तु अपने को बड़ा दिखाने की व्यर्थ चेष्टा करते हैं। ऐसे लोग सिर्फ बाह्याडंबर के पीछे पागल बनकर पड़े रहते हैं। इस तरह की प्रवृत्तिवाली जनता के सम्बन्ध में दोनों क्षेत्रों में एक ही तरह के व्यंग्य बाण छोड़ने वाली लोकोक्तियाँ मिलती हैं —

नाम बड़े दर्शन छोटे[81]—पेरु गोप्पा, ऊरु दिब्बा

बाह्याडंबर पर अधिक ध्यान रखने वाले व्यक्तियों के संबंध में एक अन्य कहावत भी है जो दोनों प्रान्तों में मौजूद है—

आंखों के अंधे, नाम नयनसुख—कळ्ळु गुड्डिवि, पेरु विशालाक्षि[82]।

---

81. हिंदी में इससे मिलती-जुलती एक अन्य कहावत भी है—"ऊंची दुकान, फीकी पकवान"।
82. तेलुगु में इससे मिलती-जुलती कहावत एक और है—इंटि पेरु कस्तूरिवारु, इंटिलो गब्बिलाल कंपू"
अर्थात् घर का नाम 'कस्तूरी' है पर घर में चमगादड़ों की बदबू।

कोई भी स्थान ऐसे लोगों से वंचित नहीं है जहाँ पर कुछ लोग वृद्ध होते हुए भी जवानी की-सी रसिकता का अनुभव करते हैं और साथ ही उसका प्रदर्शन भी करते हैं। वृद्धावस्था के खंडहरों में रसिकता की मृतप्राय ध्वनि गूँजती रहती है। लोगों की इस प्रवृत्ति पर गहरी घाव छोड़ती हुई एक लोकोक्ति चल पड़ी है—

"बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम"

तेलुगु क्षेत्र भी इस प्रकार की लोकोक्तियों से बचा नहीं है—

"मुसलिवाडिकि दसरा पंडुग"[83]

अर्थात् बूढ़े व्यक्ति के लिए दशहरे का मजा।

तेलुगु में बूढ़ी स्त्री के शृंगार पर व्यंग्य करने वाली एक अन्य कहावत है—

"मुसलि मुतुकुन तोलि समर्त"

उक्त लोकोक्तियों थोड़ी भिन्न परिस्थितियों में इस प्रकार की मनोवृत्तिवाली जनता को लक्षित करती हुई अपनी सार्थकता का परिचय देती हैं।

प्रत्येक समाज में कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो व्यर्थ ही जलते हैं। जब कोई अन्य व्यक्ति दूसरे को दान में कुछ दे तो उसे देखकर जलन महसूस करते हैं इतना ही नहीं बल्कि दुःखी होकर रोने भी लगते हैं। इस प्रवृत्तिवाले मनुष्यों के संबंध में एक व्यंग्यात्मक लोकोक्ति तेलुगु में इस प्रकार है—

"देवुडु वरमिच्चिना पूजारि वरमिव्वडु"

अर्थात् चाहे भगवान् वरदान दे पर पुजारी वर प्रदान नहीं करता। इस से तुलनीय हिंदी की कहावत है—

"तेली का तेल जले और मसालती का सिर जले"[84](+)

---

83. इस भाव को व्यक्त करने वाली तेलुगु की दो-तीन अन्य कहावत भी प्राप्त हैं—
"मुसलिवाडिकि मुंड मुद्दु"—बूढ़े को अपनी रखेल प्यारी लगती है।
"मुसलि वानिकि मुद्दाश"—बूढ़े को चुंबन की आशा बनी रहती है।

84. इस प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों के प्रति कही जाने वाली तेलुगु की एक अन्य कहावत भी है—"तडिगुड्डु वेसि गोंतुक कोसिनट्लु" अर्थात् भीगे हुए कपड़े को रखकर गर्दन काटना।"

+ इसी भाव को व्यक्त करनेवाली हिंदी की एक अन्य लोकोक्ति है—
"दाता दे, भंडारी का पेट फूले"

कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जिनको लाखों गालियाँ सुनाने या बहुत कुछ समझाने पर भी कोई असर नहीं पड़ता। ऐसे व्यक्तियों को हिंदी में "चिकना घड़ा "२ कहते हैं और तेलुगु में एक पूर्ण वाक्य ही चल पड़ा है—

"दुन्नपोतु मीद वर्षं कुरिसिनट्लु"

अर्थात् भैंसे पर वर्षा होने के समान है।

कुछ लोगों की यह भी प्रवृत्ति होती है कि वे अपने साथियों से मीठी बात करते हुए उनको धोखा देने की बात सोचते हैं। ऐसे व्यक्तियों के संबंध में भी दोनों क्षेत्रों में उपयुक्त लोकोक्तियाँ उपलब्ध हैं—

"मुंह में राम, बगल में छुरी"—"अंगिट बेल्लं आत्मलो विषं"[85]
अर्थात् मुंह में गुड़ और दिल में जहर।

लोभी व्यक्तियों के कुछ अन्य रूप भी कहावतों के द्वारा व्यक्त होते हैं। तेलुगु में एक कहावत है कि "अंगटिलो बेल्लम्, गुक्को लिगानिकि नैवेद्यम्" इसी प्रकार बुन्देली की भी कहावत प्रसिद्ध है—

"उड़ो चून पुरखन के नाव"

किसी लोभी व्यक्ति का आटा (चूना) हवा के बहने के कारण उड़ गया। इससे उसको दुःख हुआ तो विवशता में उसने कहा कि मैं ने इस चून को पूर्वजों को उपहार में दे दिया।

यह संसार ऐसे भी व्यक्तियों से मुक्त नहीं है जो दूसरों से सहायता प्राप्त कर उन्हीं का नाश करने के लिए इतना प्रयत्न करते हैं कि उनकी एड़ी चोटी का पसीना एक हो जाये। दूसरे शब्दों में वे इस प्रयत्न जमीन-आसमान को एक कर देते हैं। ऐसी मनोवृत्ति वाले व्यक्तियों के बारे में प्रचलित तेलुगु की लोकोक्ति है—

"तिन्न इंटिकि वासालु लेक्किंचिनट्लु"

अर्थात् जिस घर में उन्होंने पेट की आग को बुझाने के लिए सामग्री पायी है, उसी घर कीछत के बांस गिननें लगे। हिंदी में इससे तुलनीय लोकोक्ति है—

"जिस घर में खाना, उसी में आग लगाना"[86]

एक अन्य प्रवृत्ति वाले भी समाज को घेरे हुए हैं जो अपनी संपत्ति को खर्च करने में पीड़ा का अनुभव करते हैं या खुद कष्ट उठाने को तैयार नहीं हैं, लेकिन यदि दूसरों की संपत्ति को खर्च करने या कठिनाइयों दूसरों के सिर मढ़ने के लिए निरन्तर प्रयत्न करते हैं। ऐसे समाज के बारे में तेलुगु का कथन है कि—

"ना मुड्डि काकपोते काशी दाका देकिनट्लु"

---

85. सूरदास ने इस भाव को व्यक्त करते हुए एक उक्ति कही है—
"सूरदास कलकारी कामरि चढै न दूजौ रंग"

86. हिंदी में इस कहावत का एक अन्य रूप भी प्राप्त है—
"जिस पत्तल में खाना, उसी में छेद करना"

कुछ लोगों की संवेदनशीलता अत्यन्त कुंठित होती है। उनके सामने रसीली या मजेदार बातें करना व्यर्थ है क्योंकि ऐसी चर्चाओं से कोई भी उत्तेजना नहीं होती। ऐसे व्यक्तियों के बारे में तेलुगु और हिंदी के प्रान्तों में प्रचलित दो-तीन कहावतें यहाँ प्रस्तुत की गई हैं।

हिंदी की लोकोक्तियाँ		तेलुगु की लोकोक्तियाँ
१. अंधा क्या जाने बसन्त की बहार	—	गुड्डिवानि केमि तेलुसु कुंदनपु छाया[87]।
२. गधे को नमक दिया, गधा समझा आंख फोड़ी	—	गाडिदकेमि तेलुसु गंधपु वासना[88]।
३. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।	—	पंदिकेमि तेलुसु पन्नीरु वासना[89]।
४. भैंस के आगे बीन बजाना।	—	चेविटिवानि एदुट शंखमूदिनट्लु[90]।

कुछ ऐसे लोग होते हैं जो किसी भी दूसरे व्यक्ति का मान न रखते हुए किसी की एक भी नहीं सुनते हैं चाहे वे उसकी ही भलाई के लिए क्यों प्रयत्न न करें। तेलुगु क्षेत्र में इस अर्थ को व्यक्त करने वाली लोकोक्ति अत्यंत प्रसिद्ध है—

"एलुक चर्ममु तेच्चि एडादि उतिकिना नलुपु नलुपे कानि तेलुपु कादु[91]

हिंदी में इससे समानार्थ को व्यक्त करने वाली कहावत है—

"कोयला न होई ऊजरा सौ मन साबुन धोय।"

उक्त लोकोक्ति से मिलती-जुलती लोकोक्तियाँ दोनों भाषाओं में उपलब्ध हैं—

"गधा धोने से बछड़ा नहीं होता" — पुलि चारलु वेयगाने असलु पुलिकादु[92]।

कुछ लोग व्यर्थ ही बात को बढ़ा बढ़ाकर कहते हैं लेकिन उसको क्रियान्वित करने में बिलकुल असमर्थ हैं। ऐसे लोग ढपोलशंख कहलाते हैं। इनके बारे में दोनोंही क्षेत्रों में कहावतें वर्तमान हैं —

गरजे सो बरसे नहीं — मोरिगे कुक्कलु करुववु[93]।

---

87. अंधा क्या जाने स्वर्ण की (छाया) चमक?
88. गधे को क्या मालूम चंदन की खुशबू?
89. सूअर क्या जाने गुलाब जल की खुशबू।
90. जैसे बहरे के आगे शंख बजाना।
91. चूहे के चमड़े को लेकर सालभर धोने पर भी वह काला ही रह जाता है, किन्तु सफेद नहीं होता।
92. बाघ की लकीरों को (अनुकरणात्मक) धारण करने पर असली बाघ नहीं बन सकता है।
93. भूंखने वाले कुत्ते काटते नहीं।

तेलुगु और हिंदी में कुछ लोकोक्तियाँ ऐसी भी हैं जिनका भाव यह है कि दुष्ट समाज के बीच में सज्जन एक भी हो तो भला ही है—

"चंदन की चुटकी भली गाड़ी भला न काट।
पीताम्बर पटा भला साझा भला न टाट।।"

"गंगिगोवुपालु गरिटेडैननु चालु।
कडिवेडैननु नेमि खरमु पालु[94]।।

प्रत्येक समाज में कुछ पाखंडी लोग भी रहते हैं जो अपनी असली स्थिति को पहचाने बिना ठाट-बाट से रहन का प्रयत्न करते हैं। ऐसे लोगों के संबंध में भी दोनों ही भाषाओं के कथन हैं —

"भरभूजे की लकड़ी, केसर का तिलक — अंबलि त्रागे वानिकि मीसालोत्ते वाडोकडु[95]
"छछूंदर के सिर में चमेली का तेल" — "मिंग मेतुकुलेदु गानि मीसालकु सपेंग नूने[96]।

ऐसे भी व्यक्तियों के उदाहरण लोक में प्राप्त हो जाते हैं जिनके जीवन मे काल की गति के साथ परिस्थितियाँ बदल गयी हों और अत्यंत उच्चावस्था से हीनावस्था में प्रवेश कर गए हों; पर उनका स्वभाव नहीं बदला। इस तथ्य का उद्धाटन करनेवाली दोनों क्षेत्रों की लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं—

"रस्सी जल गई पर बल नहीं गया" — ताडु कालि पोइना पट्टु पोलेदु[97]। (या)
"चिंत चच्चिना पुलुपु चावदु[98]।

कुछ लोगों की प्रकृति को देखकर बाकी लोग यह अनुमान लगाते हैं कि यदि इनको अधिकार मिल जाता तो ये न जाने क्या कर बैठते? हिंदी और तेलुगु में इस संबंध में प्राप्त होने वाली लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं—

गंजे को खुदा ने नाखून नहीं दिए। — "कोतिकि पेत्तनमिस्ते गोदावरिकि अड्डंगा ईदिंदट[99]।

---

94. श्रेष्ठ गाय का दूध चम्मच भर ही काफी है पर गधे के दूध के अनेक घड़े हों; तब भी क्या लाभ होगा?
95. अंबली ("रागि" नामक धान से बना हुआ एक पेय जिसको प्रायः गरीब लोग पिया करते हैं) पीनेवाले की मूछों की मालिश करने वाला भी है।
96. खाने को चावल तक नहीं; पर मूछों पर चमेली का इत्र लगाते हैं।
97. रस्सी के जल जाने पर भी बल खतम नहीं हुआ।
98. इमली के मर जाने पर भी खट्टापन नहीं गया।
99. बंदर को अधिकार सौंपा गया तो वह गोदावरी में तैरने लगा।

लोक के सामान्य व्यवहार में एक विशेष प्रवृत्ति वाले व्यक्ति देखने को मिलते हैं। यदि कोई बलवान आदमी दूसरे को मारे तो वह पराजय की शंका से पीड़ित होकर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से क्षतिपूर्वक भावना का उदय होने के कारण वह अपने से भी कमजोर व्यक्ति को मार बैठता है। इस मनोस्थिति को प्रकट करने वाली लोकोक्तियाँ हिंदी और तेलुगु दोनों ही प्रान्तों में मिलती हैं—

"आप हारे बहू को मारे" — "अत्त मीद कोपान कुंडलु पगुलकोट्टिनट्लु[100]।

तेलुगु में इस विचित्र प्रवृत्ति को व्यक्त करने वाली एक अन्य लोकोक्ति भी है—

"चेरुवुमीद कोपं वच्चि मुड्डि कडुगुकोन्नट्लु"[101]

इस उक्ति में हारे हुए व्यक्ति का किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाने की और संकेत है।

उक्त तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट है कि शैली तथा शब्दगत भिन्नता होते हुए भी अनेक लोकोक्तियाँ दोनों ही क्षेत्रों में समान विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करती है।

५.२२ **सत्य कथनात्मक लोकोक्तियाँ :**

सत्य कथनात्मक लोकोक्तियों का मुख्य उद्देश्य तथ्य का स्पष्ट कथन मात्र है पर इन लोकोक्तियों में व्यंग्य या अलंकारों का कम प्रयोग है। ऐसी लोकोक्तियाँ हिंदी और तेलुगु प्रान्तों में मिलती हैं जिनका तुलनात्मक अध्ययन नीचे प्रस्तुत किया गया है। इन लोकोक्तियों में तथ्य का उद्‌घाटन और उक्ति के सौष्टव की प्रधानता है।

जो व्यक्ति कम खाता है, वह हमेशा सुख-चैन से रहता है। इस तथ्य का उद्‌घाटन करने वाली लोकोक्तियाँ दोनों क्षेत्रों में मिलती हैं।

"अल्पाहारी सदा सुखी" — "रुचि अनि एक्कुवगा तिनरादु"

तेलुगु की कहावत में बात एक दूसरे ढंग से कही गई है कि किसी भी वस्तु के रुचिकर होने से ज्यादा खाना नहीं चाहिए।

अच्छे व्यक्तियों या सज्जनों पर दुर्जनों का असर पडना असंभव है। चाहे दुष्ट जनता लाखों प्रयत्न भी क्यों न करें, पर सज्जन अपनी प्रकृति को बनाए रखते हैं जिस प्रकार पत्थर में झोंक लगना असंभव है, उसी प्रकार सज्जनों का बिगड़ जाना भी प्राय: संभव नहीं है। यही बात हिंदी में कही गई है—"पत्थर पर जोंक नहीं लगते।" इससे तुलनीय तेलुगु की कहावत इस प्रकार है—

"निप्पुकु चेदलंटवु"

अर्थात् आग में दीमक नहीं लगती।

---

100. सास से क्रुद्ध होकर बहू का मटकियों को तोड़ डालना।
101. तालाब पर क्रुद्ध होकर टट्टी करने के पश्चात् सफाई न करना।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी वस्तु चाहे जितनी भी खराब हो, प्यारी लगती है। इस लोक साधारण सत्य को व्यक्त करने वाली लोकोक्ति हिंदी में इस प्रकार है—

"रानी को राना प्यारा; कानी को काना प्यारा"

यही तथ्य तेलुगु में एक दूसरे ढंग से व्यक्त की गई है—

"काकि पिल्ल काकिकि मुद्दु"

अर्थात् कौए का बच्च। कौए को प्यारा है।

उक्त दोनों लोकोक्तियों का यही अर्थ है कि प्रत्येक आदमी को अपनी ही चीज भाती है। इस प्रकार के चार-पांच उदाहरणों की तुलनात्मक सूची नीचे प्रस्तुत की गई है—

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
१. आग खाए मुंह जरे, उधार खाए पेट जरे।	"अप्पु चेसि चेड्डुनु, चेट्टेक्कि चेयि विडिचिन वाडु चेड्डुनु"[102]
२. जाति का मिले नहीं, गैरजाति का खाए नहीं, तो करे क्या?	"अम्म पेट्टा पेट्टदु, अडुक्कु तिनानिव्वदु"[103]
३. राजा कहे उधर ही पछांह।	"राजेदारि पडिते प्रजलू आदारे"[104]।
४. जिहि मारुतगिरि मेक उडाही कहहु तूल केहि लेखे माही।	"तलुपुलु मिंगेवानिकि अप्पडालु पेटपेट"[105]
५. लातों के भूत बातों से नहीं मानते।	"मंत्रालकु चिंतकायलु रालुना"[106]
६. थाली फेंके तो सिर पर ही गिरे।	"इसुक वेसिना रालनंत"[107]

जिस स्थान पर बड़ा निःशब्द है और वहाँ थोड़ी-सी आवाज भी हो तो स्पष्ट सुनाई पड़ती है, ऐसे स्थान के संबंध में तेलुगु में दो मशहूर कहावतें मिलती हैं। एक का अर्थ है कि सुई भी नीचे गिरे तो स्पष्ट आवाज होती है—

"सूदि मोन कूडा चिटुक्कुमन्नट्लु"

दूसरी कहावत है—

"चीम चिटुक्कुमन्नट्लु"

अर्थात् चींटी भी चले तो उससे ध्वनि निकलती है।

---

102. उधार देनें वाला और पेड़ पर चढ़कर हाथ छोड़ने वाला दोनों का नाश अवश्यंभावी है।
103. माँ खाने को देती नहीं, भीख मांगकर खाने भी नहीं देती।
104. राजा जिस रास्ते से जाएगा, प्रजा भी उसी रास्ते से जाएगी।
105. दरवाजों को भी निगल जाने वाले के लिए पापड क्या चीज है?
106. क्या मंत्रपाठ से इमली गिरते?
107. वालू भी फेंकी जाए तो नीचे नहीं गिरती।

इस प्रकार के तथ्य कथन वाली अनेक लोकोक्तियाँ तेलुगु और हिंदी दोनों प्रान्तों में मिलती हैं जिनका परिचय अंत के परिशिष्ट से स्पष्ट हो जाता है। कुछ ऐसी भी लोकोक्तियाँ हैं जिनमें मात्र तथ्य का उद्धाटन है पर उनकी पृष्ठ भूमि में कोई उदाहरण या दृष्टांत नहीं है। इन लोकोक्तियों के माध्यम से एक विशेष सत्य के स्पष्ट होने के कारण इनको निष्कर्षोक्ति भी कहा जा सकता है।

५.२३ उदाहरण या दृष्टांत परक लोकोक्तियाँ :

नीचे जो तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, उसमें संबद्ध लोकोक्तियाँ ऐसी हैं जिनकी भूमिका में एक विशेष घटना या तदुपयुक्त सजीव उदाहरण या घटनाएँ दोनों प्रान्तों की लोकोक्तियों में भिन्न हैं पर उनसे उद्भूत सत्य कथन प्राय: समान हैं।

सभी लोग अपने ही को बड़ा मानने लगेंगे तो काम कौन करे ? इस भाव को व्यक्त करने वाली तेलुगु की एक कहावत है––

"अंदरू पल्लकी एक्केवाल्लैते मोसेदेवरु ?

अर्थात् सभी पालकी में चढ़ें, तो उसको ढोने वाला कौन होगा। इससे तुलनीय हिन्दी की कहावत इस प्रकार है––

"तू भी रानी, मैं भी रानी, तो कौन भरेगा पानी "[108]।

कुछ लोगों के विपरीत कृत्यों को देखकर हिन्दी प्रान्त में इस लोकोक्ति का प्रयोग है––

"अपने ही हाथों कब्र खोदना।"

तेलुगु में "कब्र" खोदने की बात तो नहीं मिलती, पर उस स्थान पर कुआँ खोदने की बात कही गई है।[109] इसी भाव को प्रकट करनेवाली अन्य प्रकार की लोकोक्तियाँ भी दोनों प्रान्तों में प्राप्त हैं।

"अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मारना।"
"तन काळ्ळनु तन गोड्डलितोने नरुक्कोन्नट्लु "[110]

सभी दृष्टियों से भ्रष्ट व्यक्ति की "धोबी के कुत्ते" से तुलना करने वाली कहावत हिन्दी में प्राप्त है––

"धोबी का कुता न घर का न घाट का"

---

108. इस भाव को व्यक्त करने वाली हिन्दी की एक अन्य लोकोक्ति भी है––
"नाइयों की बारात में हुक्का कौन भरे"।
109. "तन चेतुलतो ताने नुय्यि त्रवुकुन्नट्लु" अर्थात् अपने ही हाथों कुआ खोदना है।
110. इस प्रकार की तेलुगु की एक अन्य लोकोक्ति भी है––
"तन्नु बंधिचुटकु ताने ताडु तेच्चुकुन्नट्लु" अर्थात् अपने को बांधने के लिए आप ही रस्सी लानी है।

तेलुगु क्षेत्र में प्राप्त लोकोक्ति में सीधी बात कही गई है--

"रेंटिकी चेड्ड रेवड"

अर्थात् दोनों दृष्टियों से बिगडा हुआ आदमी है। इसके अतिरिक्त एक अन्य कहावत भी संस्कृतनिष्ठ भाषा में तेलुगु में प्राप्त है--

"उभय भ्रष्टुत्वं, उपरि सन्यासं"।

कहीं-कहीं कुछ ऐसे लोग मिल जाते हैं जो अपने सगे-संबंधियों के दोषों का ध्यान नहीं रखते हैं, पर उन दोषों की तरफ इंगित करते हैं। उन्हीं को दोषी ठहराने का प्रयत्न करते हैं; इस प्रकार की मनोवृत्ति वाले व्यक्तियों के संबंध में तेलुगु में कही जाने वाली उक्ति यह है--

"मन बंगारं मंचिदैते कंसालि एमि चेस्ताडु" [111]।

इससे तुलनीय हिन्दी की कहावत इस प्रकार है--

"अपना पैसा खोटा है तो परखैया का क्या दोष"?

जन-साधारण की यह प्रवृत्ति होती है कि अपने साथ की अधिकृत या मूल्यवान वस्तु को महत्व दिए बिना उसको तुच्छ मानते हैं और अप्राप्य और बेमूल्य वस्तु को अधिक महत्व देते हैं। ऐसे व्यक्तियों के संबंध में कही जानेवाली उक्तियाँ भी तेलुगु और हिन्दी क्षेत्रों में मिलती हैं --

"घर की मुर्गी दाल बराबर" -- "पोरुगिंटि पुल्ल कूर रुचि" [112] (+)

"..क एक्कडा, देवलोकं एक्कडा" [113] कहकर तेलुगु में दो व्यक्तियों की विपरीत प्रवृत्तियों का परिचय ... जाता है जिन में आकाश-पाताल का अन्तर है। हिन्दी में भी "कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगुआ तेली" कहकर यही विचार प्रकट किया जाता है।

उपयुक्त अवसर को छोड़कर बाद में पछताने वाले व्यक्तियों के संबंध में एक हिन्दी की कहावत चल पड़ी है--

"अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गयीं खेत"

इससे तुलनीय तेलुगु की कहावत इस प्रकार है--

"निप्पंटुकुन्न तर्वात नुय्यि त्रव्विन लाभमेमि" [114]

---

111. इसका अर्थ यह है कि अपना सोना अच्छा है तो सुनार क्या कर सकता?

112. "पराए घर की खट्टी सब्जी भी रुचिकर होती है।" (+) इसी भाव की एक अन्य लोकोक्ति भी तेलुगु में है, जिसका अर्थ यह है कि अपने घर के पीछे का पेड़ दवा के काम में नहीं आता--"इंटि वेनुक चेट्टु मंदुकि पनिकिरादु"।

113. सियार कहाँ और नागलोक कहाँ?

114. आग लगने के पश्चात् कुंआँ खोदने से क्या लाभ होगा?

इसी भाव को व्यक्त करने वाली तेलुगु की एक अन्य कहावत भी है—

"चेतुलु कालिन तर्वात आकुल पट्टुकोन्न एमि लाभं"[115]

अनमेलया असंबद्ध अर्थात् बेसिर पैर की बातें करने वाले के संबंध में हिन्दी में कहा गया है—

"मारे घोंटू फूँटे आँख"

तेलुगु में भी इस भाव की कहावत मिलती है—

"मुड्डि मीद तंते मूति पळ्ळु रालिनट्लु"[116](+)

अत्यंत शक्तिवाले व्यक्ति का कमजोर बन जाने पर भी उसका आकार बना रहता है। यह भाव हिन्दी में "लटा हाथी बिटौरा" कहकर व्यक्त किया गया है। तेलुगु में यह भाव "पुलि बक्क पडिना चारलु बक्क पडवु"[117] कहकर प्रकट किया गया है।

इस प्रकार के चार-पाँच उदाहरणों की तुलनात्मक तालिका यहाँ देना समीचीन होगा—

हिन्दी की लोकोक्ति	तेलुगु की लोकोक्ति
१. बहन गयी पति के यहाँ घाघरी मुझे मिली।	तात चस्ते बोंत नादि[118]।
२. कानी के ब्याह में सौ जोखो।	बिघ्नेश्वरुनि पेंड्लिकि वेय्यि विघ्नालु[119]।
३. घोड़े को देखकर मेंढ़की नाल ढुकाना चाहती है।	पुलिनि चूचि नक्क वात पेट्टुकुन्नट्लु[120]।
४. मियाँ की जूती मियाँ के सिर।	तनंतटताने गोतुलो पड्डट्लु[121]।
५. कहे खेत की, सुने खलिहान की।	चेप्पेदोकटि, चेसेदोक्कटि[122]।
६. अवाँ का अवाँ ही खराब हो गया।	अकटा विकटपु राजकु अविवेकि प्रधानि[123]।

---

115. हाथों के जल जाने से पत्तों के पकड़ने से क्या लाभ ?
116. पीछे लात मारी तो मुंह के दांत निकल गए। (+) इस कहावत का स्रोत संस्कृत की कहावत से है— "पृष्ट ताडना: दंत भंग:"।
117. बाघ के अत्यंत दुर्बल हो जाने पर भी उस पर लकीरों के चिह्न कमजोर या क्षीण नहीं होते हैं।
118. दादा मरे तो बिस्तर मेरा।
119. गणेश के ब्याह में सौ विघ्न।
120. बाघ को देखकर सियार अपने को जलाकर बाघ की-सी पट्टियां बनाना चाहता है।
121. अपने आप जाकर गड्ढे में गिरना।
122. कहना कुछ और करना कुछ।
123. अज्ञानी राजा का अज्ञानी मंत्री।

उक्त तुलनात्मक अध्ययन की लोकोक्तियों का परीक्षण करने से ऐसा लगता है कि इनके मूल में या तो कोई विशिष्ट घटना होगी या लोक के विशेष परिस्थितियों से उद्भूत अनुभव-जन्य ज्ञानांश होंगे। ऐसी कतिपय लोकोक्तियाँ हिन्दी और तेलुगु प्रान्तों में अवश्य मिलती हैं।

५.३ गार्हस्थ्य जीवन या सामाजिक संबंधों से संबंधित लोकोक्तियाँ :—

मानव कोटि के कुछ सामाजिक सम्बन्ध अत्यंत प्रसिद्ध हैं। सांस्कृतिक भिन्नता के कारण तत्संबंधी मान्यताओं में भी भेद प्राप्त होता है। हिन्दी और तेलुगु प्रान्त भारत के दक्षिण और उत्तर खंडों के मुख्य अंग हैं। अत: भौगोलिक भिन्नता के साथ ही सांस्कृतिक भिन्नताओं का होना स्वाभाविक है। दोनों प्रान्तों की ऐसी मान्यताओं में साम्यता के साथ वैषम्य भी देखने को मिलता है।

तेलुगु क्षेत्र में बहिन की लड़की के साथ भाई का संबंध तो रहा दूर, किन्तु यहाँ तक हो जाता है कि कोई भी अपनी बहिन की लड़की से विवाह कर सकता है। इसके विपरीत हिन्दी प्रदेश में इस प्रकार का सम्बन्ध वर्जित है। इतना ही नहीं किसी भी आदमी का अपनी बहिन की लड़की के साथ भाई का-सा संबंध है।[124] माता, पिता, जामाता, साला आदि कुछ ऐसे सम्बन्ध हैं, जिनसे संबंधित मान्यताएँ दोनों क्षेत्रों में समान हैं।

संसार भर में माँ और बेटे का संबंध अधिक ममतापूर्वक तथा पवित्र होता है। इस संबंध में समूचे संसार की मान्यताएँ एक हैं। आन्ध्र प्रदेश में एक सर्वमान्य मान्यता यह है कि यदि किसी की माँ जीवित नहीं हो तो उसके प्रति अपने पिता का व्यवहार उस सम्बन्धियों का-सा होता है जो संपत्ति के दावेदारों (दायादी) के बीच में होता है—

"तल्लि चस्ते तंड्रि दायादि"

हिन्दी प्रान्त में भी यही विश्वास है कि माँ के अभाव में किसी को भी पितृवात्सल्य प्राप्त नहीं होता। तत्संबंधी हिन्दी की लोकोक्ति इस प्रकार है—

"माँ दूसरी तो बाप तीसरा।"

तेलुगु प्रान्त में यह भी कहा जाता है कि माता की मृत्यु के बाद पिता का व्यवहार चाचा का-सा होता है।

तेलुगु क्षेत्र की एक लोकोक्ति में भी माँ और पत्नी की तुलना करते हुए यह कहा जाता है कि माँ नित्यं प्रति अपने बेटे के सुख-दुख और भूख-प्यास का ध्यान रखती है। जब कि पत्नी निरन्तर अपने पति की कमाई या जेब पर अपनी दृष्टि लगाए रखती है—

"तल्लि कडुपु चूचु, भार्य जेबु चूचु"

---

124. हिन्दी प्रदेश के कुछ स्थानों पर बहिन की लड़की के साथ वही संबंध माना जाता है जो भाई की लड़की के साथ है।

हिन्दी में तेलुगु की इस लोकोक्ति से पूर्ण साम्य रखने वाली उक्ति इस प्रकार है—

"बहू डटोवै जेब को। माय डटोवै पेट।।"

तेलुगु प्रान्त की एक बहु प्रसिद्ध उक्ति के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपनी पत्नी के घर में आ जाने पर मातृ प्रेम को घृणा या द्वेष के रूप में परिवर्तित कर लेता है—

"पेळ्ळामंटे बेल्लमु, तल्ली तंड्री अल्लमु"[125]

बहन के संबंध में प्रचलित हिन्दी कहानियों के निष्कर्षों के आधार पर एक लोकोक्ति चल पड़ी है—

"होते की बहन और अनहोते की भैया"[126]

इसी अर्थ को व्यक्त करने वाली तेलुगु की कहावत है—

"चेडि ऐना चेल्लेलि इंटिकि पोरादु"[127]

तेलुगु और हिन्दी क्षेत्रों में भी स्त्री के संबंध में कुछ अच्छी-अच्छी कहावतें हैं। इनमें दो-तीन तथ्यों पर ओर दिया गया है। पहली बात यह है कि नारी बहुत ही रहस्यमयता रखती है। उसके चरित्र के उलझे हुए होने के कारण यहाँ तक कि भाग्यविधाता भी इस चरित्र को समझ नहीं सकता। इसी प्रकार पुरुष के भाग्य के सम्बन्ध में भी कोई कुछ नहीं कह सकता।

"स्त्रियः चरित्रम् पुरुषस्य भाग्यम् विधौ न जानेति कुतो नराणि"।

संस्कृत की उक्त लोकोक्ति हिन्दी में ज्यों की त्यों प्रचलित है। बिलकुल इसी भाव को व्यक्त करने वाली तेलुगु की उक्ति है—

"आडुदानि हृदयम्, पुरुषल भाग्यम् ब्रह्मकैना तेलियदु[128]"

---

125. इसका अर्थ यह है कि पत्नी उसी प्रकार अधिक प्यारी होती है जैसे गुड़ मीठा होता है। माँ-बाप द्वेष के पात्र उस प्रकार बन जाते हैं जैसे मिर्चीले होने के कारण अदरक किसी को पसन्द नहीं आता। इसकी दूसरी भी मान्यता हो सकती है कि प्यारी होने पर भी पत्नी उसी प्रकार नष्ट पहुंचाती है जिस प्रकार ज्यादा गुड़ के खाने से पेट खराब हो जाता है। बच्चों के प्रति माता–पिता उसी प्रकार अपने प्रेम को प्रकट न करते हुए भी उनकी भलाई का ध्यान रखते हैं जिस प्रकार अदरक अस्वादिष्ट होते हुए भी पेट को ठीक करने में सहायक होती है।

126. "ब्रज की लोक कहानियाँ" (प्रका. ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा) में 'कंजूस साहूकार' नामक एक कहानी में पारस्परिक संबंधों को लेकर कुछ लोकोक्तियाँ दी गयी हैं।

127. निर्धन हो जाने पर या संकटग्रस्त होने पर छोटी बहिन के यहाँ जाना व्यर्थ है क्योंकि वह दैन्यावस्या में सहानुभूति नहीं रख सकती।

128. स्त्री का हृदय और पुरुष का भाग्य विधाता को भी अज्ञात हैं।

स्त्रियों के बारे में यह भी कहा जाता है कि वे कितने ही गूढ़ समाचार को गोपनीय नहीं रख पातीं। तेलुगु में इस विश्वास को प्रकट करते हुए कहा गया है कि स्त्रियाँ अपने पास अत्यधिक गोपनीय विषय को भी इतनी देर तक भी गुप्त नहीं रख सकती हैं जितनी देर में तिल का बीज मुंह में डालने से भीग जाता है——

"आडुदानि नोटिलो नूवुगिंज नानदु"

इससे साम्य रखने वाली हिन्दी की कहावत इस प्रकार है——

"सब करियै तिरिया भेद न दीजै"[129]।

स्त्री जाति के संबंध में एक अन्य धारणा यह है कि उसको परतंत्र होकर रहना आवश्यक है। यदि वह स्वतन्त्र हो तो बिगड़ जाती है——

"आडदि तिरिगि चेड्डुनु, मगवाड्डु तिरुगक चेड्डुनु"[130]।

हिन्दी के भक्तियुगीन प्रसिद्ध कवि तुलसीदास ने "रामचरित मानस" के 'किष्किन्धा कांड' में वर्षा वर्णन करते हुए एक चौपाई के द्वारा इसी प्रकार का कथन किया है——

"महावृष्टि चलि फूटि क्यारी। जिमि स्वतन्त्र मैं बिगरहि नारी"

एक अन्य स्थान पर तुलसी ने स्त्री को अस्वतंत्र रखने की बात पर जोर देते हुए कहा है——

"ढोल गंवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताडन के अधिकारी"

इसके विपरीत तेलुगु में स्त्री के जन्म को कोमल बताते हुए उसकी कदली पत्र से तुलना की गई है——

"आडुदनि ब्रतुकु अरिटाकु वंटिदि"

सके अतिरिक्त स्त्री को अविश्वसनीय बताते हुए कहा गया है——

"आडुदानि माट नीळ्ळ मूट"[131]।

ससुराल के संबंध में दो संबंध अधिक महत्व रखते हैं——

(१) स्त्रियों में सास, और

(२) पुरुषों में साला।

---

129. "ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन" में डा. सत्येन्द्र ने इस कहानी का सुन्दर विवेचन किया है। देखिए पृ. ४७९-८०।
130. स्त्री घूमकर बिगड़ जाती है और पुरुष बिना घूमे बिगड़ जाता है।
131. स्त्री की बात पानी की गांठ के समान है। अर्थात् जिस प्रकार पानी को गांठ में बांधने से टिकती नहीं है, उसी प्रकार स्त्री अपनी बात पर टिकती नहीं।

हिन्दी प्रान्त में ससुराल का समस्त आदर-सत्कार सास पर निर्भर माना जाता है। उसके बिना ससुराल में कोई प्रेम से खिलाता-पिलाता नहीं। तत्संबंधी लोकोक्ति इस प्रकार है—

"बहन के हाथ भैया। सास के साथ जमैया।।"

आन्ध्र प्रान्त में यही उक्ति एक दूसरे ढंग से कही गई है—

"अल्लुडिकि अत्ताश, ब्राह्मडिकि पप्पाश"[132]

लेकिन जामाता की दशा तब बहुत ही दयनीय हो जाती है, जबकि वह ससुराल में ही रहने लगता है और कुछ समय पश्चात् उसका गौरव नष्ट हो जाता है। इस संबंध में बिहारी की उक्ति इस प्रकार है–

"घरहि जमाई लो घट्यौ खरो पूस दिन मान"

इसी से मिलती हुई एक तेलुगु की भी कहावत है—

"इल्लरिकमु कन्ना मालरिकमु मेलु"[133]

साला भी ससुराल में एक महत्वपूण स्थान रखता है। साले की इसी प्रमुखता को मूल में रखते हुए तेलुगु में एक लोकोक्ति बहुप्रचलित हो गई है—

"बंडेडु धनमिच्चिना बावमरदि लेनि चोट चुट्टरिकं चेयकु"[134]।

हिन्दी प्रान्त में "साले की चूल्हे में जड़" कहकर बहनोई के घर में उसके अधिकार का परिचय स्पष्ट किया गया है। साथ ही एक अन्य लोकोक्ति भी हिन्दी में प्रसिद्ध है—

"जिसका नहीं साला[135], उसके घर में ताला"

पति के घर में प्रवेश करने के पश्चात् घर के शासन-विधान में दो विरोधी शक्तियों का सामना करना पड़ता है—सास और ननद। यदि सास शासन करती है, तो ननद गुप्तचर विभाग की अध्यक्षा बनती है। अतः हिन्दी में "सास की बास भी अच्छी नहीं" कहकर उक्ति कही गई है। तेलुगु की लोकोक्ति के अनुसार जिस बहू की सास नहीं है, वह उत्तम है और जिस सास की बहू नहीं है, वह गुणवती है—

"अत्तलेनि कोडलुत्तमुरालु, कोडलु लेनि अत्त गुणवंतुरालु"

---

132. जामाता को सास की आशा उसी प्रकार बनी रहती है जैसे ब्राह्मण को हमेशा दाल खाने की इच्छा बनी रहती है।
133. ससुराल में हमेशा के लिए रहने से बेहतर यह है कि वह एक चमार बनकर नीच जीवन बितावे।
134. चाहे गाड़ी भर (बहुत) धन मिल जाए, पर ऐसे घर से ब्याह करना नहीं चाहिए जहाँ साला न हो।
135. "साले" शब्द के प्रयोग के संबंध में अभी हाल में एक हास्यात्मक कहानी मैंने पढ़ी है। उसके अनुसार जैसे पुरुष अपनी पत्नी के भाई को "साला" कहकर संबोधित करते हैं; उसी प्रकार स्त्रियों को भी अपने पति के भाई को "साला" कहना उचित है।

आन्ध्र प्रान्त में ननद को बहू पर शासन करने की दृष्टि से आधा पति ही माना गया है--

"आडबिड्ड अर्ध मोगुडु"

हिन्दी में ननद और बहू के बीच के व्यवहार की आग-पानी के वैर से तुलना की गई है--

"ननद बहू में आग-पानी का बैर"

सपत्नी की प्रतिद्वंदिता पति प्रेम के विभाजन से संबंधित है। तेलुगु में सपत्नी के संबंध में कहा गया है--

"सवति सागनीयदु, एरालेच्चनीयदु"

अर्थात् सपत्नी निरन्तर काम में बाधक बनी रहती है। हिन्दी में कहा जाता है कि "सौत चून की भी बुरी"। तेलुगु में सपत्नी की पीड़ा के संबंध में कहा गया है कि सपत्नी से दी हुई पीड़ा से स्वर्ग में जाने पर भी मुक्ति नहीं मिलती--

"स्वर्गानिकि पोइना सवति पोरु तप्पदु"

इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात् निष्कर्ष यह निकलता है कि दोनों क्षेत्रों के गार्हस्थ्य जीवन संबंधी तथा सामाजिक जीवनों में साम्य बहुत है और वैषम्य कम। भौगोलिक और सांस्कृतिक भिन्नताओं के होते हुए भी साम्य मिलना विशेष बात है।

५.४. स्थानीय लोकोक्तियाँ :

कुछ ऐसी लोकोक्तियाँ तेलुगु तथा हिन्दी प्रान्तों में मिलती हैं, जो स्थान विशेष से संबंधित हो। अर्थात् कुछ लोकोक्तियों में किसी गाँव या शहर के नामों का उल्लेख रहता है और उस स्थान विशेष की कोई न कोई विशेषता अवश्य होती है। इस प्रकार की लोकोक्तियों का संक्षिप्त अध्ययन नीचे प्रस्तुत किया गया है।

तेलुगु क्षेत्र में कुछ ऐसे स्थान हैं जहाँ अधिकतर मूर्ख जनता कभी न कभी रही होगी। इस बात को ध्यान में रखते हुए अज्ञानी व्यक्तियों को उक्त स्थान विशेष के व्यक्तियों के साथ तुलना करते हुए संबोधित किया जाता है। जैसे "बंदरु पिच्चिवाळ्ळु"-- 'बंदरु' आन्ध्र प्रदेश के कृष्णा जिले का एक शहर है। या तो यहाँ कभी पागल या बेवकूफ लोग रहे होंगे या एक दूसरा भी कारण इस प्रकार माना जा सकता है कि हिन्दी में बंदर एक ऐसा जानवर है जो पागल समझा जाता है। एक अन्य कारण यह हो सकता है कि तेलुगु में "बंदरु" में रहने वाली जनता को हिन्दी 'बंदर' के साथ तुलना करके उनकी बेवकूफी या अज्ञानता प्रकट की गई हो। इसका कारण आन्ध्र में मुसलमान जनता का प्रभाव ही दीखता है।

इसी प्रकार हिन्दी क्षेत्र के भी कुछ ऐसे स्थान हैं, जिनके नामोल्लेख से ही पता लग जाता है कि तत्संबंधित व्यक्ति अज्ञानी हैं। ऐसे स्थान शिकारपुर तथा बलिया हैं। किसी व्यक्ति के संबंध में बलिया के मूर्ख आदि प्रयोग किए जायँ तो उन्हें परममूर्ख समझा जाता है। आगरे में 'गधापाड़ा', मथुरा में 'अंधापाड़ा' तथा मथुरा जिले का 'हौ हाया' गाँव आदि भी मूर्खों के रहने वाले स्थान माने जाते हैं।

आन्ध्र प्रदेश के रायलसीमा प्रान्त में एक अन्य स्थान है "पुंगनूरु"। इस स्थान के रहने वाले भी प्रायः बेवकूफ माने जाते हैं। इस स्थान के नाम का उल्लेख करते हुए कहा जाता है---

"पुंगनूरु जवानु" (=नौकर)

हिन्दी के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने एक बार डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी से एक बार पूछा---"द्विवेदी जी ! सुनते हैं कि बलिया के लोग गंवार होते हैं ?" द्विवेदी जी का उत्तर था--- "मगर वे चिर गंवार[136] नहीं होते।" इन स्थानों के निवासियों के संबंध में अनेक कहानियाँ और लोकोक्तियाँ गढ़ ली गयी हैं। यदि कोई किसी को मूर्ख बनाना चाहे तो झट कहा जाता है---"ऐसे बेवकूफों को शिकारपुर में देखना।"

आन्ध्र के गोदावरी जिला में 'पालकोल्लु' नामक शहर बनियों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ व्यापार भी जोरदार होता है। एक विशेष और है कि इस स्थान के बनिये लोग बड़े धनवान माने जाते हैं। यदि किसी व्यक्ति को धनवान या श्रेष्ठ व्यापारी कहना हो तो लोगों को प्रायः यह कहते हुए पाया जाता है---"पालकोल्लु कोमट्लकेमि कोरत?"[137]

तेलुगु क्षेत्र में एक अन्य स्थानीय कहावत "कोंडवीडु" के गहरे कुओं और उनसे पानी खींचने वाली रस्सी को उपमान के रूप में ग्रहण करके व्यर्थ के लंबे वार्तालाप के संबंध में कहा जाता है---"कोंडवीटि चेंताडु"[138]। इस प्रकार की लोकोक्तियाँ तेलुगु और हिन्दी क्षेत्रों में प्रचलित हैं। स्थानगत भिन्नता होने के कारण लोकोक्तियों को तुलनीय नहीं कहा जा सकता है। लेकिन थोड़ी-बहुत समानता मिल जाती है।

निष्कर्ष :

तेलुगु और हिन्दी क्षेत्रों की सामान्य मानव जीवन से संबंधित लोकोक्तियों का जो तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा चुका है, उससे निम्नलिखित महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं---

(१) तेलुगु और हिन्दी की लोकोक्तियाँ तत्वतः समान होते हुए उनमें रूपगत समानता की मात्रा कम नहीं है। जो कुछ वैषम्य है, उसका मूल कारण स्थानीय वातावरण या भौगोलिक भिन्नता है।

(२) संस्कृत स्रोतीय जो लोकोक्तियाँ तेलुगु में प्राप्त हैं, वे अधिकतर ज्यों के त्यों ली गयी हैं। कहीं-कहीं भिन्नता भी मिलती है तो बहुत कम। लेकिन इसके विपरीत हिन्दी में ऐसा नहीं है। इसका कारण संभवतः यह है कि हिन्दी की अपेक्षा तेलुगु भाषा सर्वभाषा जननी संस्कृत के अधिक निकट है।

---

136. मैथिलीशरण गुप्त जी "चिरगांव" के रहने वाले थे।
137. पालकोल्लु के बनियों के लिए कमी किस बात की ?
138. कुछ लोग "कोंडवीडु" के स्थान पर "पुल्लेटिकुरु" का प्रयोग करते हैं।

(३) दोनों क्षेत्रों के नीति उपदेश सम्बन्धी लोकोक्तियाँ अधिक मिलती-जुलती हैं। जो भी भिन्नता है, वह रूप या शैलीगत है जिसका अधिक महत्व नहीं है।

(४) जितने भी मानवीय विश्वास इस क्षेत्र युग्म में प्रचलित है, प्रायः पूर्ण साम्य रखते हैं।

(५) जो लोकोक्तियाँ दोनों क्षेत्रों के विशेष नगरों या बस्तियों से सम्बन्ध रखती हैं इनमें भिन्नता अवश्य है क्योंकि दोनों क्षेत्रों की परिस्थितियों में भी भिन्नता द्रष्टव्य है।

(६) जहाँ तक गार्हस्थ्य जीवन या सामाजिक सम्बन्धों से युक्त लोकोक्तियों का संबंध है, उनमें निश्चित रूप से साम्य है। साथ ही वैषम्य की मात्रा भी बहुत कुछ है जिसका कारण सांस्कृकित भिन्नता है।

६. लोकोक्तियों में अंतर्कथा के रूप में सूचित कथाएँ

लोकोक्तियों में बहुत -कुछ ऐसी लोकोक्तियाँ हैं, जिनको देखते ही पता चलता है कि उनके मूल में कुछ न कुछ महत्वपूर्ण घटना या तत्सम्बंधी कथा रही होगी। अधिकांश लोकोक्तियों की पृष्ठभूमि में उनके सृजन की आदि में कोई न कोई कथा का होना अवश्यंभावी लगता है। किन्तु काल चक्र के साथ विकास करते-करते ये कहानियाँ घिस-घिसकर लुप्त हो गयी होंगी और निष्कर्षवाक्य कहावत या लोकोक्ति का रूप धारण करके सामान्य जनता के मानसपटल पर पत्थर की लकीर बन गयी होंगी। इस प्रकार की लोकोक्तियों में कथा का आकर्षण और सौंदर्य तथ्य कथन को सजीव बनाये रखते हैं। इस प्रकार अनेक सत्य-कथन दृष्टांतों से युक्त होकर अधिक प्रभावशाली हो गये हैं। इन उक्तियों के मूल में जो कथाएँ मिलती हैं, उनको मोटे तौर पर पांच भागों में विभक्त किया जा सकता है——

(१) पौराणिक कथाएँ

(२) साधारण रूप से प्रचलित लोक कथाएँ

(३) ऐतिहासिक घटनाओं से युक्त कथाएँ

(४) व्यंग्यात्मक कथाएँ और

(५) सामान्य नीतिपरक कथाएं

तेलुगु और हिन्दी—दोनों प्रदेशों में उक्त सभी प्रकार की कथाएँ प्रायः प्राप्त होती हैं। दोनों क्षेत्रों में प्राप्त होनेवाली कथाओं के परिमाण में भिन्नता हो सकती है। जितनी भी कहानियाँ मिलती हैं सभी का विवेचन करना संभव नहीं है क्योंकि ऐसा विषय एक बृहत् शोध-प्रबंध का क्षेत्र बन जाता है। इसलिए इस अध्याय में दोनों क्षेत्रों में मिलने वाली उक्त पांचों प्रकार की दो-दो या तीन-तीन कहानियों का पूरा परिचय दिया जा रहा है।

६.१. पौराणिक कथाएँ :

पौराणिक कथाओं में ज्यादा प्रचलित और अधिक लोकप्रिय कथाएँ रामायण, महाभारत और महाभागवत से संबंधित हैं। इन तीनों से बनी हुई लोकोक्तिपरक कहानियाँ हिन्दी तथा तेलुगु क्षेत्रों में प्रसिद्ध हैं। इसी कारण दोनों क्षेत्रों में समान रूप से मिलने वाली कथाओं का उल्लेख करके तदुद्भूत लोकोक्तियों को स्पष्ट करना लेखक का उद्देश्य है।

दोनों स्थानों पर रामायण के संबंध में यह विश्वास है कि यह एक करुणरसपूर्ण कहानी है। हिन्दी में यदि कोई अपनी दुःख-दर्द भरी कहानी को अन्य लोगों के सामने सुनाने लगेंगे या सुनना चाहेंगे, तो कहा जाता है कि "तुम अपनी राम कथा को खतम करो" या "अपनी राम कहानी सुनाओ"। आन्ध्र प्रान्त में कोई किसी अन्य की करुणा भरी कहानी

को सुनते-सुनते ऊब जाय, तो प्राय: यह कहते हुए पाया जाता है कि "नी रामायणम् कट्टि पेट्टु" अर्थात् अपनी राम कहानी को बन्द करो। एक अन्य तत्व यह मिलता है कि विभीषण को ही ध्यान में रखकर हिन्दी में "घर का भेदी लंका ढावै" आदि कहावतें बन पड़ी हैं। लोक की दृष्टि में सिंहल द्वीप जैसे सुदृढ़ गढ़ के पतन और रावण तथा इंद्रजीत जैसे वीरों के पराजय आदि का रहस्य विभीषण की प्रवंचना मात्र है। तेलुगु प्रदेश में इस भावना को व्यक्त करने वाली लोकोक्ति है--

"इंटि गुट्टु लंककु चेटु"।

यदि कोई व्यक्ति निर्दिष्ट कार्य की अपेक्षा अधिक कार्य कर डाले तो ऐसे व्यक्तियों के संबंध में प्रचलित तेलुगु की उक्ति इस प्रकार है---

"चूचि रम्मंटे कालिच वच्चिनट्लु"

अर्थात् यदि देखकर लौटने को कहा जाय तो जलाकर या सत्यानाश करके लौटना है। इस प्रकार की लोकोक्तियाँ शायद हिन्दी में अप्राप्य हैं।

आन्ध्र प्रान्त में सभी पुराणों में से महाभारत अधिक लोकप्रिय है। अत: इस लोकप्रियता को व्यक्त करने वाली तेलुगु की लोकोक्ति यह है--

"विंटे महाभारतम् विनालि, तिंटे गारेलु तिनालि, कंटे कोडुकुने कनालि"

अर्थात् खाना हो तो बड़े, सुनना हो तो महाभारत और जन्म देना हो तो पुत्र को ही प्रधानता देनी चाहिए। महाभारत में कर्ण के चरित्र ने आन्ध्र जनता को अत्यधिक आर्काषित किया है। अत: कर्ण की प्रधानता बताते हुए तेलुगु में एक अन्य उक्ति ही है---

"कर्णडु लेनि भारतम्, शोंठि लेनि कषायम्"

इसका यह अर्थ हो सकता है कि बिना कर्ण के महाभारत और शोंठ के अभाव में कषाय का होना असंभव है।

यदि किसी स्थान पर जोरदार युद्ध और नाश हो रहा हो, तो हिन्दी और तेलुगु क्षेत्र की जनता उस घटना को महाभारत की संज्ञा देती है---

"महाभारत हो रहा है" -- "महाभारतम् जरुगुतोंदि"।

इस प्रकार दोनों क्षेत्रों में महाभारत की लोकप्रियता का परिचय मिलता है और तत्सम्बन्धी लोकोक्तियाँ दोनों स्थानों पर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।

तेलुगु क्षेत्र में किसी के द्वारा सत्य कथन कराते समय रामायण की सौगंध खाने को कहा जाता है। इसी प्रकार हिन्दी प्रान्त में श्रीमद्भगवद्गीता की कसम खाई जाती है। इन धारणाओं के पीछे लोक मानस के धार्मिक विचारों का परिचय मिलता है।

कुछ लोकोक्तियाँ ऐसी भी मिलती हैं, जिनके सुनने से ऐसा लगता है कि उन की पृष्ठभूमि या मूल में कोई पौराणिक गाथा है। लेकिन वस्तुतः ऐसा न होकर इनका स्रोत लोकानुभव की कोई विशिष्ट घटना मात्र होती है। तेलुगु प्रान्त में एक उक्ति है--

"उडुतकु उडुता भक्ति" -- "गिल्हरे को गिल्हरी की भक्ति"

इस उक्ति का तात्पर्य है कि यथाशक्ति भक्ति-पूजा करने से भी, चाहे वह कितनी भी कम मात्रा में हो ; ऐसा भक्त निश्चित ही भगवान की कृपा का पात्र बन सकता है। हिन्दी प्रदेश में भी गिल्हरी के ऊपर बनी हुई उक्ति या 'कीकारण्य कथा' बहु प्रचलित है। यह कथा तेलुगु की उक्त लोकोक्ति वाली कहानी के समकक्ष है।

कहानी की संक्षिप्ति इस प्रकार है--

जब श्रीरामचन्द्र जी समुद्र पर सेतु बंधन कर रहे थे और हनुमान जी अपार सेना के साथ अपनी शक्ति भर विशाल प्रस्तर खंडों से उक्त कार्य की सिद्धि में निमग्न थे ; उस समय गिल्हरियाँ पानी में भीगकर बालू में लोटती हुई सेतु के स्थान पर फुरफुरी लेकर उस बालू को गिरा देती थीं। वानर सेना के द्वारा सेतु रचना का कार्य जितनी देर तक चलता रहा, उतनी ही देर तक गिल्हरियों का यह क्रम भी बना रहा। अन्त में भगवान श्रीरामचन्द्र जी ने गिल्हरी की पीठ पर हाथ फेरा। इसी कारण आज भी गिल्हरी की पीठ पर राम की उँगलियों की धारियाँ हैं।

यह कहानी तेलुगु और हिन्दी दोनों क्षेत्रों में बहुत प्रचलित है और इस कहानी में पूर्ण साम्य है। "राम राज्य" शब्द स्वयं एक लोकोक्ति के रूप में दोनों ही स्थानों पर प्रचलित है। राम राज्य के दो प्रमुख आधार हैं।--पहला सबका सुखी होना और दूसरा न्याय का पूर्ण निर्वाह होना। न्याय नीति निर्वाह की बात चलते ही दोनों स्थानों में धोबी के अपवाद स्वरूप वैदेही वनवास की कथा को कह दिया जाता है।

इस प्रकार की पौराणिक गाथाओं से संबंधित अनेक लोकोक्तियाँ दोनों क्षेत्रों में प्राप्त हैं। प्रायः कहानियों में साम्य अधिक मिलता है। किन्तु कहीं-कहीं अभिप्राय भेद दृष्टव्य है। रामायण, महाभारत, गीता, उपनिषद् आदि से संबंधित अनेक कहावतें दोनों प्रान्तों में मिलती हैं।

६.२. **साधारण रूप से प्रचलित लोक-कहानियाँ :**

बहुत-सी ऐसी लोकोक्तियाँ उपलब्ध होती हैं जिनके मूल में साधारण रूप से प्रचलित कहानियाँ हैं। भारत में कोई ऐसा प्रान्त नहीं है, जहाँ पर ऐसी कहानियाँ प्रचलित न हों। कुछ कहावतों के मूल में कहानियाँ विशेषतः पक्षियों

या जीवजंतुओं से संबंधित हैं। ऐसे उदाहरण तेलुगु और हिंदी प्रान्तों में अधिक मात्रा में मिलती हैं जिनकी कहानियों में साम्य ही अधिक है। ऐसी लोकोक्तियों में से उदाहरण रूप चार-पांच लोकोक्तियाँ ली जा सकती हैं––

हिन्दी	तेलुगु
१. "खोदा पहाड़, निकली चुहिया"	"कोंडनु त्रव्वि एलुकनु पट्टिनट्लु"
२. "जिसकी लाठी, उसकी भैंस"	"कट्टे एवरिदो, गोर्रे वानिदे"
३. "अंगूर खट्टे हैं"	"अंदनि द्राक्षापल्लु पुल्लन"
४. "जानवर ही तो था"	"वट्टि पशुवे"

इन कहावतों के मूल में दोनों क्षेत्रों में मिलने वाली कहानियाँ प्रायः समान हैं जिनकी संक्षिप्ति आगे प्रस्तुत की जा रही है––

१. "खोदा पहाड़ और निकली चुहिया––कोंडनु त्रव्वि एलुकनु पट्टिनट्लु"

हिन्दी तथा तेलुगु भाषाओं में इस कहावत के मूल में एक छोटी-सी कहानी प्रचलित है जो इस प्रकार है––

"एक पहाड़ में चूँ-चूँ की आवाज निरंतर आया करती थी। उस पहाड़ के पास ही रहने वाली, पहाड़ी जाति के लोगो में से कुछ व्यक्तियों ने इस आवाज का पता लगाने का निश्चय किया। अन्त में सब लोग बड़ी मेहनत के साथ पहाड़ के एक बड़े हिस्से को खोद डाला। खुदाई के पश्चात् तो निकली एक चुहिया। इतनी बड़ी मेहनत करने पर एक चुहिया मात्र को पकड़ा गया।"

इस कथा के आधार पर तेलुगु तथा हिन्दी क्षेत्रों में यह उक्ति व्यर्थ कार्य करने के संदर्भ में कही जाती है। इसका अर्थ यह है कि व्यर्थ ही किसी भी काम को करने से लाभ नहीं होगा। तेलुगु और हिन्दी प्रान्तों में इस उक्ति की पृष्ठभूमि में यही कहानी प्रसिद्ध है।

२. "जिसकी लाठी, उसकी भैंस"––"कट्टे एवरिदो गोर्रे वानिदे"।

इस प्रसिद्ध कहावत के मूल में एक बड़ी ही रोचक कहानी मिलती है। इससे पूर्ण साम्य रखने वाली कहावतें अनेक अन्य भाषाओं में भी मिलती हैं। जैसे बंगाल में प्रचलित कहावत इस प्रकार है––

"जोर जार मुल्लुक तार" "जार लाठी तार माटी" (धरती)

महाकवि अकबर के एक शेर में इस कहावत की पुष्टि मिलती है––

"उन्हीं की भैंस है भाई, कि जिसकी लाठी है।
उन्हीं का गाँव है अकबर, जो बन सके ठाकुर।।"

इस कहावत की कहानी[1] इस प्रकार है--

"एक ब्राह्मण देवता ने कहीं जजमानी में एक अच्छी भैंस पाई। उसे लेकर वह घर को रवाना हुए। बीच में रास्ता दूर तक सुनसान था। वहाँ एक अहीर मिल गया। उसके हाथ में एक लंबी लाठी थी और शरीर से भी हृष्ट-पुष्ट था। उस अहीर ने ब्राह्मण देवता से दो-चार इधर-उधर की बातें करने के बाद कहा--"देवता। भैंस तो मुझे दे दो।"

ब्राह्मण ने कहा--"क्यों भाई?"

उसने कहा--"मैं क्यों-त्यों नहीं जानता। भैंस छोड़कर यहाँ से चुप चाप भाग जाओ, वरना भैंस तो जाइगी ही, तुम्हारे खोपड़ी के भी टुकड़े होंगे।"

ब्राह्मण शारीरिक बल से अहीर से कम न था, लेकिन उसका हाथ खाली था। करे तो क्या करे? किन्तु उसमें बुद्धिबल था।

बात बनाकर बोला, "भैंस ले भले ही लो, पर ब्राह्मण की चीज़ यों लेने से तुम्हें पाप लगेगा। बदले में कुछ देकर भैंस लेते तो तुम पाप से बच जाते।"

अहीर ने कहा--"यहाँ मेरे पास देने को क्या धरा है?"

ब्राह्मण ने कहा--"और कुछ नहीं सही, लाठी से भैंस का बदला कर लो।"

अहीर खुश हुआ। लाठी ब्राह्मण के हाथ में पकड़ा दी और भैंस पर दोनों हाथ रखकर खड़ा हो गया। ब्राह्मण ने कड़क कर कहा--"चल हट भैंस के पास से, नहीं तो खोपड़ी अभी दो होती है।"

अहीर ने पूछा--"क्यों?"

ब्राह्मण बोला--"क्यों का क्या अर्थ? जिसकी लाठी, उसकी भैंस।"

अहीर ने अपनी बेवकूफी समझी और चुपचाप वहाँ से सरक गया।

तेलुगु प्रदेश में भी इस कहावत के संबंध में यही कहानी कही जाती है।

३. "अंगूर खट्टे हैं"--"अंदनि द्राक्षपळ्ळु पुल्लन"

हिन्दी तथा तेलुगु प्रान्त में यह कहावत बहुत ही प्रसिद्ध है। साथ ही विशेष बात यह है कि दोनों ही क्षेत्रों में इस लोकोक्ति के मूल में कही जाने वाली कहानी एक है जिसकी संक्षिप्ति इस प्रकार संभव है:

"भूख से पीड़ित एक लोमड़ी अंगूर के बाग में गई। अंगूर के अनेक गुच्छे बेल से लटक रहे थे लेकिन वे लोमड़ी की पहुँच के भीतर न होकर बहुत ही ऊँचे थे। लोमड़ी को अंगूर खाने की बड़ी इच्छा हुई। उसने अंगूर तोड़ने की

---

1. ले० महावीर प्रसाद पोद्दार, "कहावतों की कहानियाँ," पृ. ७५.

बड़ी कोशिश की। उसने उचक-उचक कर उछल-उछल कर भी अंगूर के गुच्छों तक न पहुँच पायी। बार-बार प्रयत्न करने पर भी वह अपने प्रयत्न में असफल रही। किसी सियार ने यह सब देखा और लोमड़ी से पूछा––

"बूआ, क्या है?"

लोमड़ी ने जवाब दिया––"अंगूर खट्टे हैं।" इस कहावत का अर्थ यह है कि कोई पद पाने में असफल रह जाने पर उसकी बुराई करते हैं। तेलुगु और हिन्दी में भी यही अर्थ व्यंजित होता है।

४. "जानवर ही तो था"––"वट्टिपशुवे"

मूर्ख या मूढ़ व्यक्तियों के संबंध में तेलुगु और हिन्दी दोनों ही क्षेत्रों में कही जाने वाली यह उक्ति है। जानवर के बे-अकल होने के कारण बेवकूफ व्यक्ति की जानवर से तुलना की जाती है। इस कहावत के भी मूल में एक कहानी दोनों प्रदेशों में प्रचलित है जो इस प्रकार है––

एक काजी ने अपना बैल किसी तेली को पालने को दिया। तेली ने काजी की खुशामद में उनके बैल को अपने बैल से भी अधिक भूसा खिलाकर खूब मोटा बनाया। एक दिन काजी का बैल तेली के बैल से लड़ गया और उसे पटक दिया। तेली का बैल मर गया। किसी ने जाकर काजी को उल्टे यह जड़ा कि आपके बैल को तेली के बैल ने मार डाला। काजी ने तेली को तलब किया और बिना उसे सुने ही लाल किताब के मुताबिक हुक्म सुना दिया––

"लाल किताब उठ बोली यों,
तेली बैल लड़या क्यों
खल खिला-खिलाके किया मुसंड,
बैल का बैल और डंड का डंड॥"

अर्थात् मेरा बैल भी दे और दंड भी दे।

तेली ने प्रार्थना की, "हुजूर, किसी ने आप को गलत खबर दी है। मेरे बैल ने नहीं, बल्कि आपके बैल ने मेरे बैल को मार डाला।"

काजी ने फौरन रुख बदल कर कहा––"जानवर ही तो था।"

भारत का कोई भी प्रान्त ऐसा नहीं है जहाँ सामान्य रूप से प्रचलित कथाएँ तथा विश्वास प्रचलित न हो। विशेषता इस बात की है कि भारत के कोने-कोने में प्राप्त होने वाली कथाएँ अधिकतर पूर्ण साम्य रखती हैं। सभी क्षेत्रों में उपलब्ध जातक कथाएँ, उपनिषद् संबंधी कथाएँ अधिकतर साम्य रखनेवाली होती हैं क्योंकि इन सब का मूल स्रोत संस्कृत से है। कहीं-कहीं थोड़ी-सी भिन्नता दर्शनीय है फिर भी वह कोई अधिक महत्व नहीं रखती है। चाहे कुछ भी हो, तेलुगु और हिन्दी प्रान्तों में प्राप्त लोकोक्तियों की पृष्ठभूमि में प्रसिद्ध सभी प्रकार की कथाओं

में अधिक साम्य है । इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि तेलुगु और हिन्दी प्रदेशों की भौगोलिक तथा सांस्कृतिक भिन्नता होते हुए भी दोनों क्षेत्रों का लोक मानस प्रायः समान है । यद्यपि थोड़ा-बहुत वैषम्य भी हो तो कोई विशेष ध्यान देने योग्य नहीं है ।

इस विवेचन के पश्चात् ऐतिहासिक घटनाओं तथा तत्संबंधी कहानियों से उद्भूत लोकोक्तियों का संक्षिप्त विवेचन करना अपेक्षित है ।

६.३. ऐतिहासिक घटनाओं वाली कथाएँ :

ऐतिहासिक दृष्टि से भारत देश एक महत्वपूर्ण उपखण्ड है । हिन्दू देश के दक्षिण प्रान्त से उत्तर प्रदेश का ऐतिहासिक महत्व अधिक है । अतः यह स्वाभाविक ही है कि उत्तर प्रदेश या हिन्दी प्रदेश में ऐतिहासिक घटनाओं से उद्भूत लोकोक्तियाँ दक्षिण प्रांत से अधिक मात्रा में मिलती हैं । इस प्रकार की दो-चार कथाओं का उल्लेख करके तदुद्भूत लोकोक्तियों का स्पष्टीकरण करना उचित होगा । यहाँ निम्नांकित लोकोक्तियों संबंधी कथाओं की संक्षिप्ति प्रस्तुत की गयी है ।

१. अढ़ाई दिन सब ने भी वादशाहत की "--"रेंडुदिनाल राजभोगं" ।

२. "बीरबल की खिचडी"

उक्त दोनों कहानियों की अपेक्षा दो-तीन "राजा" लोगों से संबंधित लोकोक्तियों की कहानियों का उल्लेख भी करना समीचीन होगा ।

१. जैसे को तैसा मिलै	---	"एट्टिवानिकि अट्टिवारे संभविस्तारु"
२. जाति पांति पूछे नहिं कोई ।	---	"गुणं मंचि कावालि गानि, जातिलो एमुंदि ।"
हरि को भजै सो हरि का होई ।।	---	

१. अढ़ाई दिन सब ने भी बादशाहत की :

हिंदी की इस कहावत के मूल में हुमायूँ बादशाह से सम्बन्धित एक छोटी-सी कहानी प्रचलित है जो इस प्रकार है—

एक बार हुमायूँ बादशाह लड़ाई में हार गया । वह जान बचाने को घोड़े सहित नदी में कूद पड़ा । घोड़ा जांघ तले से निकल गया । बादशाह गोते खाने लगा । देखा कि किनारे पर निजाम नामक मिस्त्री खड़ा दरिया में से मशक भर रहा है । जान बचाने को उसे पुकारा । बादशाह को वह पहचानता था, जवाब दिया, "अढ़ाई दिन के लिए मुझे बादशाह बनाइये तो मैं आपको बचाऊँगा ।"

हुमायूँ ने मंजूर किया। अढ़ाई दिन के लिए वह बादशाह हुआ। कहते हैं उस बीच उसने अपनी बादशाहत की यादगार में चमड़े का सिक्का चलाया, जिसमें सोने की कील थी।

तेलुगु में इस प्रकार की कोई विशेष कहानी इस उक्ति के संबंध में नहीं मिलती। लेकिन कुछ लोगों के मुंह से यह कहानी सुनी गई है :

किसी एक राजा ने एक बार कुछ विशेष परिस्थितियों में अपने राज्य में रहने वाले एक धोबी से वादा किया क तुमको आवश्यकता पड़ने पर मुंह मांगा वरदान करूँगा। धोबी ने फूला न समाते हुए राजा से कहा कि मैं कुछ दिन बाद वरदान मांगूगा। एक दिन राजा अपने दरबार में सभी सदस्यों के साथ बैठे हुए थे। अचानक धोबी ने राजा के पास जाकर वर की याचना की। वर तो मामूली नहीं था। धोबी ने अपनी यह इच्छा प्रकट की कि वह दो दिन के लिए बादशाह बने। राजा ने अपने वचन को बनाए रखने के लिए सिंहासन को छोड़ दिया। धोबी ने अपने राज्यकाल में सभी शासनों को अपनी इच्छानुसार बदल दिया। फलतः सारी परिस्थितियाँ अस्त-व्यस्त हो गई। उसके दो दिन की अवधि बीत जाने पर पुनः राजा ने ठीक शासन चलाया और राज्य में शान्ति की स्थापना की। अब धोबी को सामान्य प्रजा के रूप में रहकर राजा की आज्ञा का पालन करना पड़ा। धोबी ने अपनी बादशाहत में जो अधिकार चलाया, वह उसकी अज्ञानता का परिचायक है। उसके इस प्रकार के असभ्य व्यवहार के कारण दुबारा धोबी को कोई सुअवसर प्राप्त नहीं हुआ।

इसी कहानी को पृष्ठभूमि में रखते हुए उक्त तेलुगु की कहावत चल पड़ी।

२. बीरबल की खिचड़ी[2] :

हिंदी क्षेत्र में इस उक्ति के संबंध में निम्नलिखित कहानी प्राप्त होती है।

"एक दिन राजा अकबर घूमने के लिए बाहर निकले। किसी आवश्यकतावश उन्होंने एक तालाब में अपना हाथ धोया और उन्होंने पाया कि उस तालाब का पानी बहुत ही ठंडा था। उसकी ठंडक को दिमाग में रखते हुए उन्होंने सोचा कि कोई भी आदमी इतने ठंडे पानी में खड़ा नहीं रह सकता। इसी बात पर उन्होंने यह नोटिस जारी करवा दिया कि जो कोई आदमी उस तालाब में रात भर खड़ा रहेगा उसको कुछ बड़ा इनाम दिया जाएगा। इस बात की घोषणा करवा दी गई और एक आदमी हिम्मत करके उस पानी में रात भर एक दूर के चिराग के सहारे खड़ा रहा। जब राजा को यह पता लगा कि एक आदमी उस तालाब के पानी में रात भर खड़ा रहा, तो उन्होंने उस व्यक्ति को अपने दरबार में बुलाया और उससे पूछा कि तू उस पानी में कैसे खड़ा रहा। उस आदमी ने जबाब दिया—"हुजूर! महल के एक कमरे में एक चिराग जल रहा था जिस को देखकर मैं रात भर पानी में रह सका"। इतना सुनते ही अकबर बोले कि यह आदमी उस चिराग की गरमी से अपने को सेंकता रहा और इसी वजह से वह खड़ा रह सका। वरना कोई

---

2. यह कहानी लेखक के एक मित्र, श्री रघुनंदन प्रसाद ने बताई है, जो लोकल फंड विभाग के आडीटर हैं।

भी आदमी इतने ठंडे पानी में रह नहीं सकता। राजा का यह फैसला बीरबल को पसंद नहीं आया। दूसरे दिन जब दरबार हुआ, तो बीरबल बादशाह के दरबार में हाजिर नहीं हुए। बादशाह ने वहाँ से उनको बुलवाया। बीरबल तब भी हाजिर नहीं हुए और कहलवा भेजा कि वे खिचड़ी पका रहे हैं। बादशाह ने तीसरी बार बुलवाया किन्तु उनको फिर यही जवाब मिला। बादशाह को इस बात पर बहुत क्रोध आया और वे स्वयं बीरबल के मकान पर चले गये। उन्होंने वहाँ जाकर देखा कि बीरबल एक बाँस के बहुत ही ऊँचे खंभे में एक हाँडिया बाँध कर लटकाए हुए हैं और नीचे आग जला रहे हैं। यह देखकर बादशाह को बड़ी हँसी आई और उन्होंने बीरबल से पूछा कि तुम क्या कर रहे हो। बीरबल ने जबाब दिया--"हुजूर! खिचड़ी पका रहा हूँ।" बादशाह ने कहा--"बेवकूफ। वह हाँडिया इतने ऊँचे बंधी हुई है जिस तक आँच की कोई गरमी नहीं पहुंच रहाहैं, उससे भला खिचड़ी कैसे पक सकती है। बादशाह की इस बात को सुनकर बीरबल को मन ही मन हँसी आई और फिर बादशाह से यह अर्ज किया--"हुजूर! वह गरीब आदमी जो थोड़े-से पैसे के लालच में इतने ठंडे पानी में उस चिराग के सहारे जो इसके यहाँ से मीलों दूर था, खड़ा रहा तो उसको उस चिराग से गरमी कैसे मिलती रही?" बादशाह यह बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। बीरबल को शाबाशी दी और उस गरीब आदमी को इनाम दे दिया।"

इस प्रकार की अनेक कहानियाँ हिंदी क्षेत्र में मिल जाती हैं। आगे दो और कहानियों का विवरण दिया गया है।

३. जैसे को तैसा मिलै। "एट्टिवानिकि अट्टिवारे संभविस्तारु"

उक्त लोकोक्तियों के पीछे तेलुगु और हिंदी क्षेत्रों में इस प्रकार की कहानी मिलती है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है।

एक आदमी ने तीर्थ जाते समय अपने घर के पीतल के बर्तन रक्षा के ख्याल से पड़ौसी के यहाँ रखे। पड़ोसी के मन में बेइमानी आ गई। यात्रा से लौटकर जब वह बर्तनों को लेने गया तो पड़ोसी ने कहा, "भाई, मुझे बड़ा अफसोस है कि आपके बर्तनों को तो घुन खा गये।"

उसने समझ लिया कि पड़ोसी की नीयत बिगड़ गई है। आदमी था होशियार, किसी को कानों-कान खबर न होने दी। दूसरे बर्तन खरीदकर अपना काम चलाया। अपनी तीर्थ-यात्रा के उपलक्ष्य में कुछ दिनों बाद उसने एक भोज दिया। मुहल्ले के सभी स्त्री, पुरूष, बच्चे उसके यहाँ आये। सब तो खा-पीकर वापस चले गए। उस बर्तन वापस न देने वाले पड़ोसी के एक बच्चे से चुपके से उसने एक अलग कमरे में अपने बच्चों के साथ खेलने को कह दिया माँ-बाप ने बच्चे को इधर-उधर बहुत खोजा। कहीं पता न चला तो वहाँ के राजा को यह खबर दी। राजा ने कहा, "तुम्हारा किसी पर शक हो तो कहो।"

उसने इस तीर्थ यात्री पड़ोसी पर अपना संदेह प्रकट किया। राजा ने उसे बुलाकर पूछा, "क्यों जी, तुमने इसके लड़के को देखा है?"

उसने कहा, "महाराज, देखा क्यों नहीं, मेरे सामने से ही तो उसे चील ले गई।"

राजा ने कहा, "इतने बड़े लडके को चील कैसे ले जा सकती है?"

उसने कहा, "महाराज, वैसे ही, जैसे पीतल को घुन खा सकते हैं।"

राजा ने पूछा, "पीतल को घुन कैसे खा सकते हैं ?" उसने कहा, "यह तो मेरे इस पड़ौसी से पूछिए।"

पूरा किस्सा मालूम होने पर राजा ने उसके बर्तन वापस दिलवाये और लड़का अपने माँ-बाप के यहा पहुँच गया ।

४. जाति पांति पूछै नहिं कोई। हरि को भजे सो हरि का होई।।

="गुणं मंचि कावालि गानि, जातिलो एमुंदि।"

अकबर बादशाह के यहाँ एक बार पाँच साधु आए। किसी ने पूछा, "आप लोग किस जाति के हैं ?" जवाब मिला "साधू की जाति क्या ?"

बादशाह ने मन में कहा, "बात तो ठीक ही कहता है कि साधू की जाति क्या, लेकिन पहले तो इनकी कोईन कोई जाति रही ही होगी।"

बीरबल वहाँ हाजिर थे। बादशाह को बोले—"हुजूर, देखें, मैं अभी इनकी जाति का पता लगा देता हूँ। साधुओं से कहा, "आप लोग ईशवर के संबंध में एक-एक पद सुनाने की कृपा करें।"

एक ने सुनाया—

राम नाम लड्डू, गोपाल नाम घी,
हरि का नाम मिसरी, घोल-घोल पी।

बीरबल ने सोचा, खाने का लेभी है, ब्राह्मण होना चाहिए।

दूसरे ने कहा—

राम नाम की शमशेर पकड़कर, कृष्ण कटारा बांध लिया।
दया धर्म की ढाल बनाकर, यम का द्वारा जीत लिया।।

बीरबर ने तय किया कि यह क्षत्रिय है क्योंकि यह ढाल, तलवार और कटारी की बात करता है।

तीसरे ने कहा—

साहब मेरा बनियाँ, सहन करै व्योपार।
बिन डंडी बिन पालड़े, तोले सब संसार।।

बीरबल ने ठहराया कि डंडी तराजू की बात करता है, हो न हो, बनिया है।

चौथे ने सुनाया—

राम भरोसे बैठके सबका मुजरा लेय।
जैसी जाकी चाकरी वैसा वाको देय।।

बीरबल ने कहा, यह तो स्पष्ट शूद्र है, तभी इस गरीब को चाकरी सूझती है।

पाँचवा पहुँचा हुआ था बोला---

जात पाँत पूछे नहीं कोय।
हरी को भजे सो हरि का होय।।

ऐतिहासिक घटनाओं से उद्भूत कतिपय लोकोक्तियाँ हिंदी में मिलती ही हैं। परन्तु तेलुगु में इसलिए कम संख्या में मिलती हैं कि उत्तर भारत की अपेक्षा दक्षिण भारत का ऐतिहासिकता तथा राजनैतिकता की दृष्टियों से कम महत्व है। जो कुछ कथाएँ प्राप्त हैं, तुलना की दृष्टि से साम्य और वैषम्य समान मात्रा में दिखाई देते हैं। यह निष्कर्ष उपयक्त कहानियों के विवरण से स्पष्ट ही है।

६.४. व्यंग्यात्मक कथाएँ

लोकोक्तियों का प्रधान उद्देश्य प्रायः यह रहता है कि वह वे समाज को चुटकी देकर या उस पर व्यंग्य का आघात करते हुए तथ्य का स्पष्ट चित्र लोक के मानस पटल पर अंकित करें। व्यंग्यात्मक कथाएँ कई रूपों में लोकोक्तियों की पृष्ठभूमि की रचना करती हैं। हिंदी क्षेत्र में एक लोकोक्ति "अंधों का हाथी" बहुत प्रसिद्ध है। इसके समान तेलुगु प्रदेश में भी एक कहावत मिलती है---

"गुड्डिवाडु येनुगुनु पट्टिनट्लु"

इस अन्योक्तिपरक लोकोक्ति से यह अर्थ निकलता है कि अपूर्ण ज्ञान को पूर्ण समझकर बेवकूफी के साथ व्यवहार करना है। इन लोकोक्तियों की पुष्टि में दोनों ही प्रान्तों में समान कहानियाँ मिलती हैं। वह इस प्रकार है---

किसी गाँव में चार अंधे रहते थे। उन्होंने गाँव में एक हाथी आने की बात सुनी। चारों देखने चले। रास्ता पूछते-पूछते हाथी के पास पहुँचे। महावत से बोले, "जरा हाथी को कब्जे में रखना, हम उसे देखेंगे।"

महावत ने सोचा, इसमें मेरा क्या बिगड़ता है। इन गरीबों का मन रम जाएगा। बोला, "खुशी से देखो।"

अंधे चीज को टटोलकर देखते हैं। एक ने हाथ बढ़या तो हाथी के कान पर पड़ा। बोला, "हाथी तो सीप की तरह होता है।"

दूसरे का हाथ हाथी के पांव पर पड़ा। बोला, "नहीं, खंभे-सा होता है।"

तीसरे के हाथ के सामने सूंड़ आई। उसने कहा, "नहीं, नहीं, वह तो रस्से जैसा होता है।

चौथे का हाथ हाथी के पेट पर पड़ा। वह कहने लगा, "तुम सब गलत कहते हो, हाथी तो एक-दम मशक-सा होता है।"

चारों अपनी–अपनी बात पर अड़ गये, लगे लड़ने। हर एक अपनी ही कहता, दूसरे की न सुनता था। एक होशियार आदमी पास खड़ा-खड़ा इनकी सब हरकतें देख-सुन रहा था। उसने अपने मन में इनकी लड़ाई का बड़ा अच्छा नतीजा निकाला कि दरअसल हर एक अपनी–अपनी जगह पर सही है, जिससे इनकी समझ में आ जाय कि हमने पूरे हाथी को नहीं, हाथी के सिर्फ एक अंग को ही देखा है। फिर तो सारा झगड़ा समाप्त हो जाय।

तेलुगु में एक कहावत है––

"कालु कालिन पिल्लि"

हिंदी में भी इससे समानार्थ वाली लोकोक्ति बहुत प्रसिद्ध है––

"जले पांव की बिल्ली।"

इन उक्तियों का अभिप्राय यह है कि जले पाँव की बिल्ली जिस प्रकार पूरे गाँव में घूमकर उसका सत्यानाश कर देती है, उसी प्रकार किसी भी गाँव में यदि नारद जैसा व्यक्ति हो, तो गाँव भर में झगड़े की आग लगा देता है। इन लोकोक्तियों की पुष्टि में यह कथा प्रचलित है––

"एक बनिये की बिल्ली थी। उसके पाँव में एक चोट लगी। साहूकार ने उस बिल्ली के इलाज में कपड़े को मिट्टी के तेल में भिगोकर पट्टी बाँधी। अचानक वह बिल्ली रसोई घर में चली गई तो उसमें आग लग गई। आग लगने से वह बिल्ली घर में इधर-उधर भागने लगी। साहूकार के घर में कई अन्य व्यापारियों की रुई थी। बिल्ली अपने जलते हुए पैर के साथ रुई के पास भी पहुँची तो रुई का सारा ढेर राख हो गया। इसके बाद उसी बिल्ली ने अन्य घरों में भी पहुँचकर बहुत-सी चीजों का सत्यानाश कर दिया।

तेलुगु और हिंदी के क्षेत्रों में यही कहानी बहुप्रचलित है।

एक जातक कथा हिंदी प्रान्त में "टंटन पाल" की और तेलुगु क्षेत्र में "पापक" की कथा मिलती हैं। ये दोनों एक दूसरे के रूपान्तर हैं। अंतर इतना ही है कि तेलुगु में 'पापक' के स्थान पर हिंदी में "टंटन पाल" नाम का प्रयोग है। कहानी व्यंग्यात्मक होने के कारण बहुत आकर्षक है।

"एक गाँव में टंटन पाल (पापक) नाम का व्यक्ति रहता था। गाँव के सभी लोग उसके नाम की हंसी उड़ाते थे। इससे वह बहुत दुःखित हुआ और सुन्दर नाम की खोज में चला। रास्ते में उसने कुछ व्यक्तियों को शव को ले जाते हुए देखा। जब उसने मृतक का नाम पूछा तो "अमरसिंह" (तेलुगु में अमर) बताया गया। नाम और रूप में इतने बड़े अन्तर को देखकर टंटन पाल चकित रह गया और आगे चल दिया। थोड़ी देर बाद उसको एक भिखारी मिला। उसने उसके नाम का पता लगाया तो "धनपाल" सुनकर चकित हो गया। नाम और कर्म की भिन्नता को देखकर टंटन ने व्यंग्य पूर्ण हँसी हँसा और भी आगे चला। रास्ते में अब की बार उसकी एक स्त्री से भेंट हुई

जो अत्यंत दीन-हीन दशा में थी। साथ ही वह धनहीन भी थी। टंटन पाल ने उस स्त्री के नाम का भी पता लगाया तो ज्ञात हुआ कि वह 'लच्छमी' थी। तब टंटन पाल ने कहा––

"अमरसिंह मरते देखे, भीख मांगत धनपाल।
लच्छमी ही सो कंडा बीनै ताले भले टंटन पाल।।"

तेलुगु में लोकोक्ति इस प्रकार कही गई है––

"पेरुलो एमुन्नदि चेतुलोने उन्नदंता।

तेलुगु और हिंदी लोकोक्ति में अन्तर केवल इतना है कि तेलुगु की लोकोक्ति में सत्य कथन मात्र है। इसका अर्थ यह है कि नाम में कुछ नही है पर कर्म पर ही सब कुछ आधारित है। हिंदी में यही उक्ति छंदबद्ध होते हुऐ पूरी घटना की संक्षिप्ति भी व्यक्त करती है ––

६.५. सामान्य नीतिपरक कथाएँ

सामान्य नीति संबंधी लोकोक्तियों का वातावरण गंभीर-सा बना रहता है। इस प्रकार की लोकोक्ति के सत्य-कथन में भी गंभीरता प्रकट होती है। तेलुगु क्षेत्र में एक लोकोक्ति मनुष्य के जीवन दर्शन के एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त का उद्घाटन करती है––"अंता मन मेलुकोरके"[3] इससे समानार्थ वाली लोकोक्ति इस प्रकार व्यक्त की गई है––

"भगवान जो कुछ करता है भला ही करता है।"

लोक मानस के इस विश्वास में मानव मात्र का अपार धैर्य, संतोष और विश्वास छिपे हुए हैं। तेलुगु की उक्त लोकोक्ति में "भगवान" शब्द का उल्लेख नहीं है; किन्तु अर्थ तो एक ही है। इस लोकोक्ति की पृष्ठभूमि में कही जाने वाली कथा की संक्षिप्ति इस प्रकार है––

एक राजा अपने मंत्री के साथ आखेट के लिए निकले और दैववश तलवार की धार से उनकी एक उंगली कट गई। मंत्री के मुंह से अचानक निकल पड़ा––"भगवान सब अच्छा ही करता है"। इस पर राजा अत्यंत क्रोधित हुए और मंत्री को पदच्युत कर दिया। इस कथन का सत्य राजा को तब ज्ञात हुआ जब वह अकेले ही आखेट करते गये और किसी अन्य जाति की बस्ती में पहुँचे। उस गाँव के लोगों ने राजा को पकड़कर देवी को बलि चढ़ाने के लिए ले गए। लेकिन जब पुरोहित ने देखा कि राजा की उँगली कटी हुई है तो कहा कि ऐसा व्यक्ति बलि चढ़ाने के लिए उपयुक्त नहीं है। तब राजा ने मंत्री के कथन के सत्य को हृदयंगम करते हुए अपने आप को समझाया कि जो कुछ होता है; हमारी भलाई के लिए ही है। इसी कहानी से उद्भूत सत्य ही लोकोक्ति का रूप धारण करके दोनों ही क्षेत्रों में बहु प्रचलित और जनप्रिय हो गई।

---

3. सब कुछ हमारी भलाई के लिए ही होता है।

अन्तर्कथाओं से युक्त तेलुगु तथा हिंदी क्षेत्रों में उपलब्ध भिन्न-भिन्न प्रकार की लोकोक्तियों का उपर्युक्त अध्ययन से निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पौराणिक, सामान्य रूप से प्रचलित, व्यंग्यात्मक तथा सामान्य नीतिपरक कथाएँ दोनों क्षेत्रों में अधिक साम्य रखती हैं। यहाँ तक कि अनेकों कहानियाँ दोनों प्रदेशों में एक हैं। केवल अन्तर इतना ही है कि नाम आदि भिन्न हैं। जहाँ तक ऐतिहासिक घटनाओं वाली कहानियों का संबंध है, तेलुगु की अपेक्षा हिंदी प्रान्त में अधिक मात्रा में मिलती है। इसका कारण जैसे अन्यत्र कहा जा चुका है; दोनों प्रदेशों के ऐतिहासिक महत्व की भिन्नता है। जो भी साम्य प्राप्त हुआ है; उससे इस बात की पुष्टि हो जाता है कि समस्त भारत की कथात्मक लोकोक्तियों के स्रोत प्रायः समान हैं।

७. निष्कर्ष

भारतवर्ष एक विशाल देश है। इस उपखंड के अन्तर्गत भौगोलिक भिन्नता के साथ ही सांस्कृतिक भिन्नता भी कम नहीं है। एक सामान्य भारतीय संस्कृति के निर्माण के लिए अनेक जातीयतत्व घुल मिल गए हैं। इन्हीं जातीय तत्वों का सांस्कृतिक तथा साहित्यिक दृष्टियों से अनुसंधान अत्यंत आवश्यक है, जो समूचे भारत में एकता की भावना स्थापित कर सके। इसके साथ-साथ भारत के भिन्न-भिन्न प्रदेशों की सांस्कृतिक दशा आदि में साम्य तथा वैषम्य का अध्ययन करना भी आवश्यक है। इस दृष्टि से भारत की विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध साहित्यिक विधाओं का तुलनात्मक अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होता है। इसी दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन में हिंदी तथा तेलुगु भाषी प्रदेशों की लोकोक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करके दोनों प्रदेशों की संस्कृति तथा भूगोल को स्पष्ट करने का उचित प्रयास किया गया है। इसमें तेलुगु और हिंदी क्षेत्र की जनता के रहन-सहन, आचार-विचार आदि पहलुओं पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

मुख्य रूप से भारत के दो भाग हो सकते हैं---उत्तर और दक्षिण। हिंदी प्रान्त उत्तर का प्रतिनिधित्व करता है तो तेलुगु प्रान्त दक्षिण का। यह तो सर्वमान्य तथ्य है कि दोनों क्षेत्रों की संस्कृति, रहन-सहन, आचार-विचार और भौगोलिक परिस्थितियों में साम्य तो है ही, साथ वैषम्य भी है। जैसा कि प्रस्तुत ग्रंथ में स्पष्ट किया जा चुका है कि लोकोक्तियाँ सामान्य जनता के लोक मानस की परिचायिका हैं; इनके अध्ययन से सारी लोक संस्कृति का स्पष्ट चित्र मिल जाता है। अतः तेलुगु तथा हिंदी की लोकोक्तियों के तुलनात्मक अध्ययन से यह बहुत कुछ संभव है कि दोनों प्रान्तों की संस्कृतियाँ स्पष्ट करते हुए उनमें साम्य और वैषम्य का भी स्पष्ट चित्र उपस्थित किया जा सके।

प्रस्तुत ग्रंथ के प्रत्येक अध्याय में आवश्यक स्थानों पर स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकाले गये हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक अध्याय के अन्त में भी निष्कर्ष दिये गए हैं। इस कारण यहाँ निष्कर्षों के रूप में ज्यादा लिखना अधिक समीचीन नहीं होगा। संक्षेप में नीचे प्रस्तुत अध्ययन से सम्पन्न निष्कर्ष दिये गये हैं।

प्रथम अध्याय में लोकोक्तियों का महत्व, परंपरा, स्वरूप तथा परिभाषा संबंधी विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय में लोकोक्तियों का वर्गीकरण विषय की दृष्टि से किया गया है। इसके आधार पर लोकोक्तियों प्रधानतः पाँच प्रकार की हो सकती हैं --

(१) कृषि संबंधी लोकोक्तियाँ

(२) अन्य व्यवसाय संबंधी लोकोक्तियाँ

(३) जाति संबंधी लोकोक्तियाँ

(४) पशु-पक्षी संबंधी लोकोक्तियाँ और

(५) अन्य प्रकार की लोकोक्तियाँ।

उक्त पांचों प्रकार की तेलुगु तथा हिंदी लोकोक्तियों का संक्षिप्त रूप से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसके द्वारा साम्य और वैषम्य की दिशाओं को स्पष्ट करते हुए उनके कारणों का भी उल्लेख किया गया है। अधिकतर यह देखा गया है कि तेलुगु और हिंदी क्षेत्रों के बीच में अधिक दूरी तथा सांस्कृतिक एवं भौगोलिक भिन्नता के होने पर भी भारत भर की संस्कृति आचार-विचार, प्रकृति प्रायः एक होने के कारण साम्य अधिक है। जो कुछ भी वैषम्य है, चाहे कम ही मात्रा में हो, वह यथा स्थान सकारण स्पष्ट किया जा चुका है।

इस अध्याय में हिंदी तथा तेलुगु की लोकोक्तियों का शैलीगत विवेचन भी सविस्तार किया जा चुका है। दोनों क्षेत्रों की लोकोक्तियों का रूप उनमें अलंकार छंद आदि का प्रयोग आदि दृष्टिकोणों से अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला जा चुका है कि दोनों प्रान्तों की लोकोक्तियों में शैलीगत समानता तो निश्चित रूप से मिलती है चाहे समान शैली की लोकोक्तियों के भाव तथा उद्देश्य भिन्न हों। एक अन्य तथ्य भी स्पष्ट होता है कि दोनों ही क्षेत्रों की लोकोक्तियों की संरचना, शब्द-पठन, क्रम आदि प्रायः समान है। तत्पश्चात् भाषा की दृष्टि से भी अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में तेलुगु और हिंदी प्रदेशों की कृषि संबंधी लोकोक्तियों का भिन्न-भिन्न दृष्टियों से विवेचन किया गया है। कृषि संबंधी महत्वपूर्ण वस्तुओं, कृषक के गुण, अवगुणों, खेती संबंधी पशुओं, यंत्रों, विश्वास आदि विषयों पर विस्तारपूर्वक तुलना की गई है। वर्षा, नक्षत्र, शकुन, भूमि, खाद, पानी आदि से संबंधित लोकोक्तियाँ दोनों क्षेत्रों में अधिकतर समान हैं। लेकिन फसलों तथा जमीन भिन्न होने के कारण दोनों क्षेत्रों की तत्संबंधी पृथक्-पृथक् लोकोक्तियाँ भी मिलती हैं। खेती संबंधी पशु आदि प्रायः समान हैं। लेकिन इनके लक्षणों में थोड़ा-बहुत भिन्नता है। जहाँ तक बोवाई, सिंचाई आदि का प्रश्न है, वे अधिकतर एक ही प्रकार के हैं। इसके अलावा कृषि प्रशंसात्मक लोकोक्तियों का भी अध्ययन किया गया है। भौगोलिक भिन्नता के कारण दोनों प्रदेशों में कुछ भिन्न-भिन्न धानों की खेती भी होती है। कुछ फसलें समान भी हैं। उपज के प्रकार और जलवायु आदि सभी बातें इस अध्याय से स्पष्ट हो जाती हैं।

चतुर्थ अध्याय में तेलुगु तथा हिंदी प्रान्तों की जाति संबंधी लोकोक्तियों की तुलना प्रस्तुत की गई है। इस अध्याय में जाति संगठन के आधार पर उन-उन जातियों संबंधित जनता की मनोवृत्तियाँ, रहन-सहन आदि विषयों पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। दोनों क्षेत्रों में वर्णाश्रम धर्म की प्रथम तीनों शाखाएँ अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य समान हैं। इसके साथ ही लोगों की मनोवृत्तियाँ और रहन-सहन भी प्रायः एक हैं। कहीं-कहीं एक विशेष गुण किसी एक क्षेत्र में दर्शनीय हो तो उसका स्पष्ट उल्लेख यथास्थान किया गया है। लेकिन शूद्रों की उप-जातियों की व्यवस्था भिन्न होने के कारण तुलना बहुत हद तक असंभव हो गई है। इसलिए इन जातियों सम्बंधी कहावतों का पृथक्-पृथक् विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इससे दोनों क्षेत्रों में प्राप्त जाति व्यवस्था का चित्र स्पष्ट हो जाता है। साथ ही उनकी वृत्तियों का भी परिचय मिल जाता है।

इसके पश्चात् तेलुगु तथा हिंदी प्रान्तों के अन्य व्यवसायों संबंधी लोकोक्तियों का अध्ययन किया गया है। कृषि के अतिरिक्त दोनों क्षेत्रों में जो समान वृत्तियाँ हैं, उनमें सम्बद्ध जनता की मनोवृत्तियों, आचार-व्यवहार आदि के संबंध में विचार किया गया है। नाई, धोबी, सुनार, लुहार, ग्वाला आदि वृत्तियाँ तो दोनों क्षेत्रों में मौजूद हैं। तुलना की

दृष्टि से तेलुगु तथा हिंदी की लोकोक्तियाँ अधिकतर साम्य रखती हैं। कुछ विशेष वृत्तियों की भिन्नता के कारण कहीं-कहीं तुलना संभव नहीं हो सकी। इन वृत्तियों के अतिरिक्त जो अन्य पेशे हैं, उनका महत्व न्यून होने के कारण और दोनों क्षेत्रों में भिन्नता होने के कारण उन व्यवसायों से संबंधित लोकोक्तियों का अध्ययन नहीं किया गया है। एक बात और ध्यान देने की यह है कि इन गौण व्यवसायों से संबंधित लोकोक्तियाँ भी अल्प संख्या में हैं।

प्रबन्ध के पंचम अध्याय में दोनों प्रान्तों की सामान्य मानव जीवन संबंधी लोकोक्तियों की बड़े ही विस्तार के साथ तुलना प्रस्तुत की गई है। इसमें प्रान्त युग्म की जनता की नीति, मानवीय विश्वास, गार्हस्थ्य जीवन आदि के संबंध में प्रकाश डाला गया है और लोकोक्तियों के आधार पर दोनों प्रदेशों की संस्कृति का चित्र अंकित किया गया है। इस अध्याय से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दोनों ही क्षेत्रों का संस्कृतिक स्तर करीब एक है। थोड़ा-बहुत अन्तर भी दर्शनीय है, तो उसको स्पष्ट करते हुए कारणों का भी उल्लेख आवश्यक स्थानों पर किया गया है। इससे भारत की सांस्कृतिक एकता का परिचय मिल जाता है।

षष्टम अध्याय में कथात्मक लोकोक्तियों का विवेचन किया गया है। भारत भर में प्रचलित पौराणिक, सामान्य रूप से प्रचलित और अन्य संस्कृत स्रोतीय कथाएँ पूर्ण साम्य रखती हैं। अतः तेलुगु तथा हिंदी में प्राप्त लोकोक्तियों की पृष्ठभूमि में जिन कथाओं का अनुमान लगाया जाता है, अधिकतर वे समान हैं। किन्तु ऐतिहासिक घटनाओं से लोकोक्तियाँ तेलुगु की अपेक्षा हिंदी में अधिक हैं।

इस अध्याय में निष्कर्ष विस्तारपूर्वक इसलिए नहीं लिखे गए हैं क्यों कि प्रत्येक अध्याय के अनेक आवश्यक स्थानों पर उपयुक्त निष्कर्ष वाक्य लिखे गए हैं। अन्त के परिशिष्ट–१ में हिंदी और तेलुगु की लोकोक्तियों की बृहुत् तुलनात्मक सूची अकारादि क्रम में दी गई है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस सूची को संपन्न करने में कितनी लोकोक्तियों की निरख-परख की गई होगी।

परिशिष्ट—१

अ

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
१. अकलमंद आदमी का बैल नहीं है, बैलवाले की अकल नहीं है।	एद्दुन्नवाडिकि बुद्धि उंडदु, बुद्धि उन्नवाडिकि एद्दुंडदु । (बैलवाले के पास बुद्धि नहीं होती है, अकलमंद के पास बैल नहीं होता है)
२. अकेली तो लकड़ी भी नहीं जलती	ओंटिगा पुल्लैना कालदु । (अकेली लकड़ी भी नहीं जलती है)
३. अगले पानी, पिछले कीच ।	मुंदु नीरु, वेनुक-बुरद । (आगे पानी, पीछे कीचड़)
४. अगसर खेती अगसर मार । कहैं घाघ तें कबहुँ न हार ।।	सेद्यंलोनू, कोट्लाटलोनू मुंदडुगु वेयुवानिकि ओटमि कल्ल । (खेती-बारी में, लड़ाई-झगड़े में कदम आगे बढ़ानेवाले की हार सपने की बात है)
५. अगहन बवा कहूँ, मन कहूँ सवा	माघमासपु वान मगडु लेनि दान । (माघ की वर्षा विधवा स्त्री के समान है—नष्टकारी होने से मतलब है)
६. अगाई बोवाई । सवाई लवाई ।	मुंदु नाटिते मूटंत पंट । (बोवाई जल्दी करे तो काफ़ी फसल होती है)
७. अति विनयं घूर्त लक्षणम्	अति विनयं धूर्त लक्षणम् । (ज्यादा विनय के साथ रहना धूर्त का लक्षण है)
८. अद्रा गइले तीनि गयल, सन साठी कपास । हथिया गइले सब गयल, आगिल-पाछिल नास ।।	आरुद्र तो अदनु सरि (आर्द्रा से खेती बारी खतम) हस्त कुरवकपोते वित्तिन वाडू, वित्तनिवाडू ओकटे । (हस्ता नक्षत्र में वर्षा नहीं हो, तो बोवाई करने वाला और न करने वाला—दोनों समान हैं—फसल के न होने से मतलब है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
९. अद्रा धान पुनर्बसु पैया। किसान जे बोवें चिरैया ।।	आरुद्र लो अड्डेडु चल्लिना पुट्टेडु पंट (आद्रा में बोवाई कम भी हो (कम बीज भी बोए जायँ). तब भी फसल ज्यादा होती है)
१०. अधजल गगरी छलकत जाय	निंडु कुंड तोणकदु (भरी हुई गगरी छलकती नहीं) तुंबिद कोड़ तुळुकोल्ल (कन्नड) निरैक्कोंड नीरु तुलुंबादु (तमिल) निरकोंड तुलुंपक इल्ल (मलयालम्) अर्धघटो घोषमुपैति नूनम् (संस्कृत) Empty vessels make much noise (अंग्रेजी)
११. अधरमु धनु फलतु ऐ। पाँच बरस या सात बरस ।।	अन्यायपु सोम्मु असड्डालंगा पोतुंदि (अधर्म का धन व्यर्थ ही जायगा)
१२. अनकर धन पर विकरम राजा।	एदुटिवारि सोत्तै तन सोत्तु। (दूसरों की जायदाद ही अपनी है)
१३. अन्दर की बात राम जाने।	लोगुट्टु पेरुमाल्लकेरुक । (अंदर का रहस्य भगवान जाने) या मनसुलोनि माट परमात्मुनिके एरुक (मन की बात परमात्मा ही जाने)
१४. अन्धा क्या चाहे, दो आँख।	गृड्डिवानिकि चूपु वच्चिनट्लु। (जैसे अंधे को दृष्टि प्राप्त हो गयी हो)
१५. अन्धा क्या जाने बसंत की बयार	गुड्डि एरुगुना कुंदनपु छाय। (अंधा क्या जाने सोने की छाया)
१६. अन्धे के आगे रोना अपना दीदा खोना।	चेविटिवानि मुंदु शंखमूदिनट्लु। (जैसे बहरे के सामने शंख बजाना)
१७. अन्धे के आगे रोवे अपने नयना खोवे।	गृड्डिवानि एदुट एड्चि कळ्ळु पोगोट्टुकुन्नट्टु। (अन्धे के आगे रोकर अपनी आँख खोना)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
१८. अन्धे के आगे हीरा कंकड़।	गुड्डि वानि कंटिकि राई, रप्पा ओकटे। (अन्धी आँख को हीरा और पत्थर बराबर लगते हैं)
१९. अन्धे के लिए जगत अन्धा।	गुड्डिवानिकि लोकमंता गुड्डे। (अन्धे को जग भर अंधा ही लगता है)
२०. अन्धे के हाथ बटेर लगना।	कनकपु सिंहासनमुन शुनकमु कूर्चुंडबेट्टु। (सोने के सिंहासन पर कुत्ते को बिठाना) या चाकलि वानिनि सिंहासन मेक्किंचिनट्लु। (धोबी को सिंहासन पर बिठाना)
२१. अन्धे को अन्धा कहना बुरा लगता है।	उन्नमाट अंटे उलुकेक्कुव। (सच्ची बात कहने पर नाराजगी ज्यादा होती है)
२२. अंधेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा।	अकटाविकटपु राजु, अविवेकि प्रधानि, चादस्तपु परिवारमु। (पागल राजा, अविवेकी मंत्री, सनकी परिवार)
२३. अनदेख चोर राजा बराबर।	चूडनंतवरकू दोंग महाराजे। (जब तक पहचाना न जाय, तब तक चोर महाराजा ही है)
२४. अन्न धन अनेक धन, सोनों–चाँदी आधौ धन, पूछ किरामत नास धन।	अन्नि दानमुल कंटे अन्न दानमे मेलु। (सभी दानों में अन्नदान ही श्रेष्ट है)
२५. अपना घर राखिये, चोर न किसी को कहिए।	तप्पुलेन्नुवारु तमतप्पुलेरुगरु। (दूसरों की गलतियों को ढूंढ़ने वाले खुद की गलतियों को नहीं जानते हैं)
२६. अपना पैसा खोटा है तो परखैया का क्या दोष।	मन बंगारं मंचिदैते कम्सालि एमि चेस्ताडु। (अपना सोना अच्छा है तो सुनार क्या करेगा)
२७. अपना मामा मर गइल, जोलाहा धुनियाँ मामा भइले।	मुंदोच्चिन चेवुलकंटे तरुवात वच्चिन कोम्मुल वाडि। (पहले निकले हुए कानों से बाद के सींग तेज होते हैं।)
२८. अपना वही जो आवे काम।	अवुसरानिकि आदुकुन्नवाडे तनवाडु। (जरूरत पड़ने पर सहायता करने वाला ही अपना है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
२९. अपना हाथ जगन्नाथ।	अरचेतिलो स्वर्गम्। (हथेली में स्वर्ग है)
३०. अपना ही राग आलापना।	तानाडिंदि आट, पाडिंदि पाट। (खुद का खेल ही खेल है, और खुद का गीत ही गीत है—दूसरों का कुछ नहीं)
३१. अपनी अढ़ाई ईंट की मस्जिद अलग बनाना। या अपनी ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना।	ओंटि काय सोंठि कोम्मु या एको नारायण (सब से अलग रहने से मतलब है)
३२. अपनी अपनी ढपली, अपना अपना राग।	तन डप्पु ताने वाइंचुकोन्नट्लु। (अपनी शेखी आप मारना)
३३. अपनी अपनी खाल में सब मस्त हैं।	एवरि लोकमु वारिदि। (जिसकी धुन उसकी है)
३४. अपनी अपनी तूती, ओ अपनों अपनों राग।	एवरि पिच्चि वारिकानंदमु। (अपना पागलपन आप ही को संतोष देता है)।
३५. अपनी ओर निबाहिए बाकी कौन जाने।	मन गोडवेदो मनकि गानि, एदुरुवाडि गोडव मनकेंदुकु। (अपना ख्याल आपको रखना है, दूसरों से आप का क्या मतलब ?)
३६. अपनी करनी पार उतरनी।	ई चेत चेसि आ चेत अनुभविंचिनट्टु। (इस हाथ से करके उस हाथ से फल भोगना)
३७. अपनी गली में कुत्ता भी शेर।	स्थान बलिमि गानि, तन बलिमि कादु। (स्थान का बल है पर अपना कुछ नहीं)
३८. अपनी दही को खट्टा कौन कहे।	तन चल्ल पुल्लननि एवरु चेबुतारु। (अपने मट्ठे को खट्टा कौन कहेगा ?)
३९. अपनी नाक कटे तो दूसरे का सगुन तो बिगड़े।	तानु चेड्ड कोति वनमेल्ला चेरिचिंदि। (बिगड़े हुए बंदर ने सारे वन का नाश कर दिया)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
४०. अपनी पीठ नहीं दिखाई देती।	एवरि वीपु वारिकि कनपड्डु। (किसी को अपनी पीठ दिखाई नहीं देती है)
४१. अपनी फूटी न देखे दूसरे की फूटी निहारे।	तप्पुलेन्नुवारु तम तप्पुलेरुगरु। (दूसरों की गलतियों को ढूंढ़ने वाले अपनी गलतियों को नहीं जानते)
४२. अपने पूत को कोई काना नहीं कहता।	एवरि बिड्डतो वारि कानंदमु (हर एक को अपने संतान से ही संतोष प्राप्त होता है)
४३. अपने हाथों अपनी कब्र खोदना।	तन चेतुलतो ताने गोय्यि तव्वुकोन्नट्टु। (अपने हाथों से आप ही खाई खोदना)
४४. अपनोई दाम खोटौ तौ परखनवार ऐ कहा दोस।	मन गुम्मडि कायलु मंचिवैते बजार्लो एंदुकु दोर्लुताइ। (अपने घुमाँडे अच्छे हैं, तो बाजार में क्यों बिकने लगते)
४५. अपनोई में सरग दीख लै।	चस्तेगानि स्वर्गं कनपडदु। (मरने पर ही स्वर्ग दिखाई देता है)
४६. अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।	दोंगलु पड्ड आरु नेललकु कुक्कलु मोरिगिनट्लु (चोरी होने के छः महीने बाद कुत्तों का भूकना जैसा)
४७. अमीर को जान प्यारी, गरीब को जान भारी।	धनवंतुनिकि प्राणं तीपि, पेदवानिकि जीवितं बरुवु। (धनवान को जान प्यारी है, गरीब को जीवन भारी है)
४८. अल खामोसी नीम रजा।	मौनं अर्द्धांगीकारम्।
४९. अल्पाहारी सदा सुखी।	अल्पाहारी सदा सुखी।
५०. अशर्फियाँ लुटे और कोयलों पर मोहर।	काकुलनु कोट्टि गद्दलकु वेसिनट्लु। (कौओं को मार कर चीलों को खिलाना)
५१. अस्तीन का सांप	मेडकु पड्ड पामु। (गले में गिरा सांप (काटे बिना नहीं रहता))

आ

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
५२. आँख और कान में चार अंगुल का फर्क है।	चूचिनदानिकी, विन्नदानिकी चाला तेडा। (देखने और सुनने में बहुत अंतर है)
५३. आँख का अंधा और गाँठ का पूरा।	बुद्धिलेनि धनवंतुडु। (बे अकल धनवान)
५४. आँख के अंधे नाम नयनसुख।	कळ्ळु गुड्डिवी, पेरु मीनाक्षी। (अंधी आँखोवाली, नाम 'मीनाक्षी')
५५. आँख बची माल दोस्तों का।	कन्नु मस्ते क्षवरमैपोइंदे। (आँख मूँद लिया तो बस हजामत हो गया-नष्ट होने से मतलब है)
५६. आँखि कौ काजर, नाक कूँ भारी होइ है।	मुड्डिमीद तंते मूति पल्लु रालिनट्लु। (पीछे लात मारी तो मुँह के दांत निकले)
५७. आंखिन देखे चेतना, मुख देखे व्यौहार।	चूपुलु पसिगट्टि मोहं चूसि प्रवर्तिंचालि। (नजर पहचान कर मुख देखने के पश्चात् ही व्यवहार करना चाहिए)
५८. आँखिये फूटी तडआजन का लगाइब।	गुड्डि कंटिकि काटुक पेट्टिनट्लु। (जैसे अंधी आंख में काजल लगाना)
५९. आँखों की पुतलियाँ फिर गई।	कंटि गुड्लु तिरिगि पोइनट्लु। (आँखों की पुतलियाँ फिर जाना)
६०. आँखो देखी कानो सुनी।	कल्लारा चूचि चेवुलारा विन्नदि। (आँखो देखी कानों सुनी)
६१. आँखो में चकाचौंध आगई।	कल्लु मेरिसिपोइनट्लु। (आंखे चकाचौंध हो जाना)
६२. आँखो से दूर, दिल से दूर।	कल्लकु दूरमैते हृदयानिकि कूड़ा दूरमा। (आँखों से दूर है तो दिल से भी दूर है?)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
६३. आँसुओं से प्यास नहीं बुझती।	कन्नीटितो दाहं तीरुना। (आंसुओं से क्या प्यास बुझती है?)
६४. आँसू एक नहीं, कलेजा टूक टूक।	अर्चि अर्चि एडुस्तुन्ना कंट नीरुरादु। (चिल्ला चिल्ला कर रोने पर भी आँख से पानी नहीं आता)
६५. आई है जान के साथ, जायगी जनाजे के साथ।	पुट्टुकतो वच्चि पुडकलतो पोइनट्लु। (जनम के साथ आकर लकडियों (मृत्यु पर शवको जलने वाली) के साथ जाना)
६६. आए थे हरी भजन को, ओटन लगे कपास।	ओकटि चेयबोते ओकटि अइनट्लु। (एक काम करने गए तो दूसरे काम का बनना जो अनावश्यक है)
६७. आकाश पाताल का अंतर।	भूम्याकाशाल भेदं। (धरती–आसमान का फरक)
६८. आग बिना घुआँ कहाँ।	निप्पु लेकुंडा पोग एक्कडड? (आग बिना घुआँ कहाँ?)
६९. आग खाए मुँह जरे, उधार खाए पेट जरे।	अप्पु चेसिन वाडू, चेट्टेक्कि चेइ विडचिनवाडू चेडुनु (उधार लेने वाला और पेड़ पर चढ़कर हाथ छोडने वाला जरूर नष्ट भोगेंगे)
७०. आग जला आग से अच्छा होता है।	उष्णे उष्णस्य शीतलम्।
७१. आग पानी एक तरह नहीं रह सकते।	उप्पू निप्पू अन्नट्लु। (आग और नमक के बराबर)
७२. आग लगने पर कुआँ खोदना	निप्पंटुकुन्न तरुवात नुय्यि तव्विनट्लु। (आग लगने के बाद कुआँ खोदना)
७३. आग लगाकर पानी को दौड़ना।	निप्पंटिंचि नीटिकि परुगेत्तिनट्लु। (आग लगा कर पानी केलिए दौड़ना)
७४. आग लगाय कर बीबी जमालो अलग खडी।	तंटालु पेट्टि तमाशा चूचुट। (तकलीफों में डालकर तमाशा देखना)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
७५. आगि लगेंते झोंपरे, जो निकसै सो लाभ।	कालिन इंटलो मिगिलिंदे लाभं। (जले घर में जो बचेगा, सो ही लाभ है)
७६. आगे कुआँ पीछे खाई।	मुंदु नुय्यि, वेनुक गोय्यि। (आगे कुआँ पीछे खाई)
७७. आगे पीछे कोई नहीं।	मुंदू वेनुका एवरू लेरु। (आगे पीछे कोई नहीं—निराश्रित से मतलब है)
७८. आज किधर से चाँद निकला।	चंद्रुडुदयिंचिनट्लु। (जैसे चाँद निकल आया हो)
७९. आज जो है, सो कल नहीं।	निन्न उन्नारु, नेडु लेरु। (कल थे, आज नहीं हैं) इंदिद्दवरु नाळे इल्ल (कन्नड़)
८०. आज मरी सासू, कल आए आँसू।	अत्त चच्चिन आरु मासालकु कोडलि कंट नीरु वच्चिनट्लु। (सास के मरने के छः महीने पश्चात् बहू की आँखों मे आँसू) अत्ते सत्त आरु तिंगळिगे सोसे अत्तळंते। (कन्नड) Crocodile tears (अंग्रेजी)
८१. आटे का दिया घर में रक्खूँ चूहा खाय, बाहर रक्खूँ कौआ ले जाय।	उभय भ्रष्टुत्वं, उपरि सन्यासं। (दोनों तरफ से नुकसान होना)
८२. आठ कठोती मट्ठा पीवे, सोरह मकुनी खाय। उसके मरन रोइये, घर का दारिद जाय॥	दरिद्रुनिकि आकलि एक्कुव, अदृष्ट हीनुडुकि निद्र एक्कुव। (दरिद्र को भूख ज्यादा होती है, अभागे को नींद ज्यादा होती है)
८३. आठ गाँव का चौधरी, बीस गाँव का राउ। अपने काम न आवई, ऐसी तैसी में जाउ॥	होदा एंत पेद्दैना उपयोगं लेक पोते व्यर्थम्। (चाहे 'होदा' जितना भी बड़ा क्यों न हो, पर काम न आए तो व्यर्थ है)
८४. आती लक्ष्मी को कौन लात मारता है।	सिरिरा मोकालड्डुवारेवरु। (धन–दौलत के मिलने से रोकने वाला कौन है)
८५. आते को सैहजा कहै। जाते को कहै मुक्त।	ए एंडका गोडुगु (या) एवरि मुंदु वारि पोगड्त। (जैसी धूप वसी छतरी (या) मुख स्तुति)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
८६. आदमी की दवा आदमी ही है।	वज्राग्नि वज्रमे कोयवले। (वज्र को वज्र ही काट सकता है)
८७. आदिन बरसे आदरा, हस्ता न बरस निदान। कहै घाघ सुन मड्डरी, भए किसान पिसान ।।	आरुद्र बिबिस्ते अरवै रोजुलु वरुपु। हस्त कुरवक पोते वित्तिनवाडू वित्तनिवाडू ओकटे। (हस्ता में पानी नहीं बरसे तो बीज बोया हुआ और न बोया हुआ–दोनों बराबर हैं––फसल नहीं होतीं)
८८. आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे।	लेनिदानिकि पोगा उन्नदि पोइंदट। (जो नहीं था उसके लिए गए; तो जो था, वह भी गया)
८९. आधे माघे, कंबल काँधे	माघ मासंलो कंबळ्ळु बुजान वस्ताइ। (माघ के महीने में कंबल कंधे पर आ जाते हैं अर्थात् जाड़ा खतम होता है)
९०. आनक धन पर विकरम राजा।	अत्त सोम्मु अल्लुडु दानं चेसिनट्लु। (सास की जायदाद से दामाद का दान करना)
९१. आपन आपन सब कोइ होइ, दुख भा नहिं संघाती होइ। अन्न वस्त्र खातिर झगडन्ता। घाघ कहै यह विपतिक अंत।	चूडडानिकि अंदरू मनवारे कानी अवसरं आदुकोने वारु एवरु उंडरु। (देखने में सब अपने ही हैं, पर जरूरत पड़ने पर सहारा देने वाला कोई नहीं होगा)
९२. आप की क्या बात है।	मी माट केमिटि (आप की क्या बात है)
९३. आप डूबे तो जग डूबा।	गुड्डिवानिकि लोकमंता चीकटे। (अंधे को जग भर अंधा दीखता है)
९४. आप भला तो जग भला।	नोरु मंचिदैते ऊरु मंचिदि। ((मुंह) बात मीठी हो तो गाँव भी अच्छा होता है) या मनं मंचि अइते लोकमंता मंचे। (यदि हम अच्छे है तो लोक भर अच्छा है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
९५. आप मरे जग परलै।	तानु चच्चुट जगमु कूंगुट (आप मर जाना जग क्रशित होना)
९६. आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता।	एवरि पनि वारे चेसुकोवडमु मेलु। (हरेक को अपना काम खुद करना ही अच्छा है)
९७. आप हारे बहू को मारे	ओकरि पैं कोपमु ओकरि पैं चूपिंचुनट्लु। (एक पर का क्रोध किसी और के प्रति दिखाना) या अत्तमीद कोपं दुत्त मीद चूपिनट्लु। (सास पर का क्रोध मटकी पर दिखाना) या अत्त पेरु कूतुर्नि कुंपटलो वेसिनट्लु। (सास का नाम लेकर बेटी को अंगीठी में डालना) अत्त मेले कोप कुत्ति मेले। (कन्नड)
९८. आम लगावे ना कयल कि मंगरा डेरा डलले।	श्रीराम लो हंसपादु। (शुरुआत में ही विघ्न पड जाना)
९९. आया है सो जायगा।	पुट्टिनवाडु गिट्टक मानडु। (जिसका जनम हुआ है वह जरूर मरेगा)
१००. आयौ और बरात को, दुलहै गाजर खाइ।	पेंडलिकि पोइ पेंडलिकोडुकु चप्पिडि तिन्नट्टु। (बरात में जाकर दूल्हे का अस्वादिष्ट भोजन करना।
१०१. आयौ नाग न पूजिए, बाँबी पूजन जाय।	दरिकि वच्चिन सोत्तु कालदन्नि काशीकि पोइना तिरिगि रादु (आयी लक्ष्मी को ठुकरा कर, बाद में उसी के लिए काशी की भी यात्रा करें, फिर भी प्राप्त नहीं हो सकती।)
१०२. आलस नींद किसानै खोवै, चोरै खोवै खांसी।	कर्षकुनिकि सोमरितनं, दोंगकु नव्वु पनिकि रावु। (किसान की आलसी और चोर की हँसी नष्टकारी है)
१०३. आलस नींद किसानै नासै, चोरै नासै खांसी। अंखिया लीबर बेसवै नासै। बाबा नासै दासी॥	निद्रा, सोमरितनं रैतुकु चेटु स्वामुल वारिकि स्त्री चेटु। (नींद और आलस किसान के लिए हानिकर हैं, (स्वामी) योगी के लिए स्त्री हानिकर है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
१०४. आवें-जाइ सुहारि के लेखें।	चावु-ब्रतुकुलु भगवंतुनि लीललु। (मरना और जनम लेना भगवान के खेल हैं)
१०५. आस बिरानी जे करे, सो जीमंत ई मरि जाइँ।	अत्याश मुंडकु मोगुडु दक्कडु। (ज्यादा कामी स्त्री के लिए पति काम में नहीं आता)
१०६. आसाढ़ी पूनो दिना, बादर भानो चन्दा। सो मड्डुर जोसी कहै, सकल नसै आनन्दा ।।	आसाढ पौर्णमि नाडु चंद्रुनि पै मेघालु व्यापिस्ते मानव कोटिकि सुख संतोषालु। (आसाढ़ पूर्णिमा के दिन चाँद को बादल घेर लें तो मानव समाज सुखी और संतोषी बनेगा)
१०७. आस्तीन का साँप होकर काटना।	ताडु पामै करचुट। (रस्सी का साँप बनकर काटना—बदकिस्मती से मतलब है)
१०८. आहारे व्योहारे लज्जा न करे।	आहारमंदू, व्यवहारमंदू सिग्गु वलदु (आहार और व्यवहार में शर्माना नहीं चाहिए)
१०९. आहिर मिलाई बादर छाँही। होवै होवै नाहीं नाहीं ।।	गोल्लवानि स्नेहं, चेट्टु नीड (ओकटे) (अहीर से यारी और पेड़ की छाया समान है—फायदेमंद है)

इ

११०. इक नागिन अरु पंख लगाई।	चस्तोंटे संधि मंत्रमु। (मरते समय संधि रोग के मंत्र का पाठ करना—ज्यादा परेशान करना)
१११. इक्के—दुक्के की अल्ला बेली।	दिक्कु लेनिवानिकि देवुडे दिक्कु। (जिसका कोई आसरा नहीं है, उसका भगवान ही आसरा बनता है) दिक्किल्लदवरिगे देवरे दिक्कु (कन्नड)
११२. इस कान से सुनकर उस कान उड़ा देना।	ई चेवितो विनि आ चेवितो विडिचिनट्लु। (इस कान से सुनकर उस कान से छोड़ देना)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
११३. इतनी सी जान, गज भर की जवान।	पिट्ट कोंचेमु कूत घनमु। (छोटी सी चिड़िया और बोली घना)
११४. इधर खाई, उधर पर्वत।	मुंदु गोय्यि, वेनुक नुय्यि। (आगे खाई, पीछे कुआँ)
११५. इसकी नाक पर गुस्सा रक्खा ही रहता है।	मुक्कुमीद कोपं। (नाक पर गुस्सा (रहता है))
११६. इनसान ही तो है।	मानव मात्रुड़े कदा। (मानव मात्र ही तो है)
११७. इस घर का बाबा आदम निराला है।	ई इंटि मनुषुले विचित्रम्। (इस घर के आदमी निराले हैं)
११८. इनसान बनाए खुदा ढाए।	तानोकटि तलुस्ते दैवमोकटि तलचिनट्लु। (हम कुछ सोचते है तो भगवान कुछ और सोचता है) तानोंदु नेनेदरे दैववोंदु नेनेयितु (कन्नड़)
११९. इस हाथ का देना, उस हाथ का लेना।	ई चेत इच्चि, आ चेतो पुचुकोन्नट्लु। (जैसे इस हाथ से देकर, उस हाथ से लेना)
१२०. इस हाथ से दे, उस हाथ से ले।	
१२१. इहाँ बाध देखल, तऽबकोट के कर हऽ।	इदुगो पुलि अंटे अदुगो तोक। (किसी ने कहा कि बाध यहाँ है, तो दूसरे ने कहा कि पूँछ वहाँ है—व्यर्थ के बकवास से मतलब है।)
१२२. ईख तक खेती, हाथी तक बनिज।	चेरकुनु मिंचिन सेद्यम्, एनुगुनु मिंचिन व्यापारं उंडवु। (ईख से बढिया खेती और हाथी से बढ़िया व्यापार नहीं होते)
१२३. ईद का चाँद होना।	अमावास्य नाटि चंद्रुडु। (अमावास्या के दिन का चाँद बनना) या चुक्कल्लो तार अइनट्लु। (तारों के बीच में छोटा तारा होना)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
१२४. ईश्वर की माया कहीं धूप, कहीं छाया।	वेलुगु नीडलु भगवंतुनि लीललु। (अंधेरे और उजाले भगवान की लीलाएँ हैं)
१२५. ईश्वर चाहता है तो खाक भी सोना हो जाता है।	देवुडु तल्चुकुंटे मट्टि कूडा बंगारमौतुंदि। (ईश्वर चाहे तो मिट्टी भी सोना हो जाता है)
१२६. ईश्वर देखा नहीं पर बुद्धि से तो पहचाना जाता है।	कळ्ळतो चूडकपोइना गुण चूचि गुर्तिचवच्चु। (चाहे आंखो से नहीं देखें, मगर गुण से तो पहचाना जा सकता है)

उ

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
१२७. उँगली पकडते पकडते पहुँचा पकड़ना।	व्रेलु चूपिस्ते हस्तं मिंगिनट्लु। (उँगली दिखाने पर पूरे हाथ को खा जाना)
१२८. उड़े उड़े फिरते हो।	आकाशंलो एगिरि पोतुन्नावु। (आसमान में उडते जा रहे हो)
१२९. उड़े चून पुरखन के नाँव।	अंगटिलो बेल्लम्, आलयंलो लिगानिकि नैवेद्यम्। (दूकान का गुड़ मंदिर में लिंग (भगवान) के लिए नैवेद्य)
१३०. उतरे जेठ बोलै जो दादर। कहै मड्डरी बरसै बादर॥	कप्पल बेकबेकलकु वर्षं। (मेंढक बोलने लगेंगे तो वर्षा होगी) ऊरिलो कप्पनु ऊरेगिस्ते वर्षं वस्तुंदि। (गाँव में मेंढक का जूलूस निकालें तो वर्षा होगी) कप्पल बेक बेकलु, चिनुकुल चिटपटलु। (मेंढकों को बेक्-बेक करना और बूंदों का टप-टप गिरना)
१३१. उतावला सो बावला, धीरा सो गंभीर।	आत्रगाडिकि बुद्धि मट्टु। (उतावले की अकल कम होती है) आतुरगारनिगे बुद्धि मट्ट (कन्नड) Haste makes waste (अंग्रेजी)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
१३२. उत्तम खेती आप सेती। मध्यम खेती भाई सेती। निकृष्ट खेती नौकरो सेती। बिगड़ गई बलाय सेती।	स्वंत व्यवसायं सर्वश्रेष्टं, कवुल सेद्यम् सर्वनाशनम्। (खुद की खेती सर्व श्रेष्ट है और कवि लोगोंकी खेती जो नोकरों से कराई जाती है, उसका सर्वनाश होगा)
१३३. उत्तम खेती मध्यम बान। निरधिन सेवा भीख निदान।	वृत्तुलन्निटि लोनू व्यवसायं श्रेष्टं, व्यापारं मध्यरकं, उद्योगं नीचं। (सभी वृत्तियों मे खेती श्रेष्ट है, व्यापार दूसरी श्रेणी की है और नौकरी नीच है)
१३४ उत्तम विद्या लीजिए यद्यपि नीच पै होइ या जाति न पूछौ साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान। मोल करो तरवार का, पड़े रहन दो म्यान।।	राळ्ळलो मणुलुंटाइ। (पत्थरों में भी मणियाँ (रत्न) होती हैं)
१३५. उत्तर चमकै बीजुरी, पूरब बहते बाउ। घाघ कहै सुन भड्डुरी, बरखा भीतर लाउ।।	उत्तरन उरिमिना, पामु तरिमिना; कुरवका, करुवका विडुववु। (उत्तर दिशा में बादलों के गरजने से और सांप का पीछा करने से, पानी बरसे बिना, साँप काटे बिना नहीं रहते)
१३६. उत्तर जाय कि दक्षिण, वही करम के लक्षण।	काशीकि पोइना गंगलो मुनिगिना पापालु पोवु। (चाहे काशी जाएँ या गंगा नदी में स्नान करें, फिर भी अपने किए का फल भोगना ही पड़ेगा) या चेसिन पापं चेंगुन कट्टुकोनि काशीकि पोते कडतेरुतारा। (किए हुए पापों को आंचल में बांध कर काशी जाएँ तो क्या मुक्ति पा सकते हैं?)
१३७. उदर निमित्तं बहु कृत वेषां	कोटिविद्यलू कूटिकोरके। (सभी विद्याएँ पेट भरने के लिए ही हैं)
१३८. उधार काढ़ि व्योपार चलावै, छप्पर डारै तारो। सारे के संग बहिनी पठवै, तीनिउ का मुंह कारो।।	अप्पुतो व्यापारं, पाक इंटिकि तालं बाव मरदि तो सोदरि व्यवहारं कलंकं तेस्ताइ। (उधार लेकर व्यापार, झोंपड़ी में ताला, साले के साथ बहिन का व्यवहार कलंक लानेवाली चीज हैं)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
१३९. उधार के हजार से नगद की कौड़ी भली।	अप्पु आरु वेलकन्ना रोक्खं रोंडु वंदलु मेलु। (उधार के छः हजार से नकद के दो सौ भले)
१४०. उधार दिया तो गाहक खोया।	वड्डी आश असलुकु चेटु। (सूद की आशा नकद के लिए खतरनाक है)
१४१. उद्योगिनं पुरुषसिंहनुपैति लक्ष्मी।	उद्योगं पुरुष लक्षणम्।
१४२. उन्नीस-बीस का फर्क होता है।	ओकटि रेंडु तेड़ा सहज। (एक-दो का फरक सहज ही है)
१४३. उपजहिं एक संग जल माहीं। जलज जोंक जिमि गुण बिलगाहीं।	ओके कडुपुन पुट्टिना गुणालु वेरैनवि। (एक ही पेट से पैदा हों, फिर भी गुण अलग अलग होते हैं)
१४४. उलटा चोर कोतवाल को डाँटे	तप्पु चेसि इतरुलनु बेदिरिंचिनट्लु। (खुद गलती करके दूसरों को डराना)
१४५. उलटे बाँस बरेली।	काशीकि पोइ गाडिद गुड्डु तेच्चिनट्लु। (काशी जाकर गधे के अंडे लाना-व्यर्थ कार्य करने से मतलब है)
१४६. उलटे बाँस बरेली को	कुम्मरि वीधिलो कुंडलु अम्मिनट्लु (कुम्हार की गली में घड़े बेचना)
१४७. उसदाता से सूम (कंजूस) भला जो ढाड़ो देय जवाब।	लेनि दातकन्ना उन्न लोभि नयमु। (धनहीन दाता से धनवान लोभी भला)
१४८. ऊखली में सिर दिया तो मसलों का क्या डर।	रोटिलो तल दूर्चि रोकटि पोटुकु वेरुब नेला। (ऊखली में सिर रखकर मूसलों के दबाव से क्यों डरे)
१४९. ऊँच अटारी मधुर बतास घाघ कहै घर ही कैलास	पेद्द इंटिलो चल्लनि पिल्ल वायुवल तो कैलासं अनुभविंचिनट्लु (बडे घर में ठंडी और धीमी-धीमी हवा से कैलास प्राप्त करना)
१५०. ऊँच हवेली, फोकर बाँस करज खाए बारहों मास।	पेद्दिंटिकि चच्चिननि अप्पुलु। (बड़े घर के अनेक उधार होते हैं।

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
१५१. ऊँची दूकान, फीका पकवान।	इंटिपेरु कस्तूरिवारु, इंटलो गब्बिलाल कंपु। (घरका नाम 'कस्तूरी' पर घर में चमगादड़ों की बदबू) या पेरु गोप्पा, ऊरु दिब्बा। (नाम बड़ा, गाव टीला)
१५२. ऊँचे से ऊँचे मिले, मिला नीच से नीच। पानी से पानी मिला, मिला कीच से कीच॥	ओके जाति पक्षुलु गुंपुलुगा चेरुताइ। (एक ही जाति के पक्षी एक जगह इकट्ठे होते हैं) Birds of the same feather flock together (अंग्रेजी)
१५३. ऊँट के मुँह में जीरा।	एनुगु दाहमुनकु चूरु नीळ्ळा। (हाथी की प्यास के लिए छत का पानी?)
	ऋ
१५४. ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।	अप्पु चेसि पप्पु कूडु। (उधार लेकर खिचड़ी खाना)
	ए
१५५. एक अनार सौ बीमार	ऊरिकि ओक बोगमुदि एवरिव द्द आडुनु। (गांव में एक ही वेश्या हो तो वह किसके सामने नाचेगी)
१५६. एक आँख से रोवें, एक आँख से हंसे।	ओक कंटितो एड्चि, रेंडव, कंटि तो नव्विनट्लु। (एक आँख से रोकर, दूसरी आँख से हँसना)
१५७. एक आँखसे सब को देखना।	अंदरिनी ओके कंटितो चूचिनट्लु। (सभी को एक ही आंख से देखना)
१५८. एक और एक ग्यारह होते है।	ओकटी ओकटी पदकोंडु (एक और एक ग्यारह)
१५९. एक अंडा, वह भी गंदा।	ओके गुड्डु, अदी पाडु। (एक ही अंडा, वह भी खराब)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
१६०. एक ईंट केलिए मस्जिद ढाना।	गोट्टुतो पोएदानिकि गोड्डलि एंदुकु। (नाखून से खतम होने वाली चीज़ के लिए कुल्हाडी की क्या जरूरत)
१६१. एक कहो दस सुनो।	ओकटि तिडिते पदि विनालि। (एक गाली दिया तो दस सुनना पड़ेगा)
१६२. एक घाट शेर और बकरी पानी पीते हैं।	ओके गट्टुन पुलो, मेका नीरु तगिनट्लु। (एक ही किनारे पर शेर और बकरी का पानी पीना)
१६३. एक चुप आन बचा सकती है।	मौनं अन्निटिकंटे मंचिदि। (मौन ही सब से श्रेष्ट है)
१६४. एक झूठ को छिपाने के लिए हजारों झूठ बोलना पड़ता है	ओक अबद्धान्नि कप्पि पुच्चुटकु वंद अबद्धालु आडालि। (एक झूठ को छिपाने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं)
१६५. एक तन्दुरुस्ती हजार नियामत।	आरोग्यमे महाभाग्यमु। (आरोग्य ही महाभाग्य है)
१६६. एकता में बल है।	ऐकमत्यमे महाबलमु। (एकता ही महाबल है)
१६७. एक तीर दो निशाने। य एक पंथ दो काज	ओकटे देब्बकु रेंडुमुक्कलु। (एक ही मार से दो टुकड़े) या देब्बकु ·ंडु द्राक्षपळ्ळु। (एक ही मार के दो अंगूर)
१६८. एक तौ बुरी और ुरेइ गीत गावै।	असले तप्पु, दानिकि वंद अबद्धालु। (असल में गलती, उसके लिए सौ झूठ)
१६९. एक थाली में खाना, एक खाट पर सोना।	ओके कंचंलो तिनि ओके मंचंलो पडुकुन्नट्लु। (एक ही थाली में खाकर एक ही खाट में सोना)
१७०. एक दिन मेहमान, दो दिन मेहमान, तीसरे दिन हैरान।	ओक रोजु अतिथि, रंडु रोजुलु अतिथि। (एक दिन मेहमान, द दिन मेहमान)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलगु की लोकोक्तियाँ
१७१. एक नारी सदा ब्रह्मचारी।	एक पत्नीव्रतुडे निजमैन ब्रह्मचारी। (एक पत्नी व्रत का पालन करनेवाला ही सच्चा ब्रह्मचारी है)
१७२. एक नीम सब घर भली।	इंटिकोक वेप चेट्टु चाला श्रेष्टमु। (प्रत्येक घर में एक एक 'नीम' का पेड़ हो तो श्रेष्ठ है)
१७३. एक पानी जो बरसै स्वाती। कुरमिन पहिरै सोने की पाँती॥	स्वाति कुरिस्ते मोती पंट। (स्वाती में पानी बरसे तो मोतियों की सी फसल होगी—अच्छी फसल से मतलब है)
१७४. एक पंथ द्वै काज।	देब्ब रेंडु द्राक्षपळ्ळु। (एक मार से दो अंगूर)
१७५. एक पूत मति जनमें माइ, घर रहै कैबाहर जाय।	इंटिकि ओके पुत्रुंडैते इंट उंटेने शोभ। (घर मे एक ही पुत्र हो तो उसका घर रहने में ही शोभा है)
१७६. एक फूल से माला नहीं बनती।	ओक पुव्वुतो माल कट्टगलमा। (एक फूल से क्या माला बना सकते है ?)
१७७. एक बात तुम सुनहु हमारी। बूढ़ बैल से भली कुदारी॥	सेद्यानिकि मुसलि एद्दुकंटे (पिकास) मुल्लपार मेलु। (खेती के लिए बूढ़े बैल से कुदार अच्छी है)
१७८. एक बात हजार मुंह।	ओके माटिकि वेय्यि सम्मतुलु। (एक ही बात के लिए हजार सम्मतियाँ)
१७९. एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है।	ओके चेपैना चेरुवंता कंपु कंपु। (चाहे मछली एक ही हो, सारा तालाब बदबू से भरा रहता है)
१८०. एक मास ऋतु आगे धावे। आधा जेठ आसाढ़ कहावै॥	ज्येष्ट मासं मध्यनुंची आसाढं सूचनलु कनपडताइ। (जेष्ठ मास के बीच से ही आसाढ़ की सूचनाएँ दिखाई देती हैं)
१८१. एक मास दो गहना। राजा मरै की सहना॥	ओके नेललो रेंडु ग्रहणालु वस्ते राजुकि अरिष्टं। (एक ही महीने में दो ग्रहण हों तो राजा के लिए हानिकारक है) या नेलकि रेंडु ग्रहणालैते राजुकु मरणासन्न समयं। (एक ही महीने में दो ग्रहण हों तो राजा के मरण का समय निकट माना जाता है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
१८२. एक मास में ग्रहण जो दोई । तो भी अन्न गा महंहोई ।।	ओके नेललो रेंडु ग्रहणालु वस्ते ओड्लु प्रियमौतायि । (एक ही महीने में दो ग्रहण हों, तो अनाज महँगा पड़ जाता है)
१८३. एक म्यान में दो तलवार नहीं समाते ।	ओक ओरलो रेंडु कत्तुलिमुडवु । (एक म्यान में दो तलवार नहीं समाते)
१८४. एक लाठी से सब को हाँकना ।	ओके कर्रतो अन्नि पशुवुलनू तोलिनट्लु । (एक ही लाठी से सभी पशुओं को हाँकना)
१८५. एक हाथ से ताली नहीं बजती ।	ओक चेयि्य तट्टिते तप्पेटलु म्रोगुना ? (एक हाथ से क्या ताली बज सकती है ?)
१८६. एकु तौ बुरी और बुरेई गीत गावै ।	असले तप्पु चेसि तप्पुडु माटलु माटलाडिनट्लु । (असल में गलती कर बुरी बात करना)
१८७. एकु लिखतम, सौ बकतम	ओकटि व्रायुट, वंद कोयुट । (एक लिखना, सौ बातें बनाना)
१८८. एड़ी चोटी का पसीना एक करना ।	तल प्राणं तोककु वच्चिनट्लु । (सिर का प्राण पूंछ तक आ जाना)
१८९. ऐसेई नकटी देबी, औरु ऐसोई पेढ़ू पुजारी ।	अकटाविकटपु राजुकु अविवेकि प्रधानि । (बुद्धू राजा का बेवकूफ मंत्री)
१९०. ऐसे जीने से तो मरना बेहतर ।	इट्टुवंटि ब्रतुकु ब्रतुकट कंटे चावडं वेयि्य रेट्लु मेलु । (ऐसा जीवन बिताने से हजार गुना मरना अच्छा है)
१९१. ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देइ ।	मुसलि एद्दुकु दाना वेसेदेवरु । (बूढे बैल को दाना देने वाला कौन है ?)
१९२. एक आँख को खोलै, और के मीचै ।	ओक कन्नु कन्नू कादु, ओक कोडुकू कोडुकु कादु । (एक आँख आँख भी नहीं, एक बेटा बेटा भी नहीं अर्थात् किसी काम के नहीं है)
१९३. एक चणू को दाल ।	देब्बकु रेंडु द्राक्षापळ्ळु । (एक मार से दो अंगूर)

ओ

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
१९४. ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर।	रोटिलो तल पेट्टि रोकलंटे भयमेंदुकु ? (ओखली में सिर रखकर मूसलों से क्या डर ?) या सिहमु नोटिलो तल पेट्टि काळ्ळु गुंजुकुंटे लाभमेमि ? (सिंह के मुंह में सिर रखकर पाँवों को झुंझलाने से क्या फ़ायदा ?)
१९५. ओछा घड़ा छलके बड़ा।	निडुकुंड तोणकदु। (भरा घड़ा छलकता नहीं) या एमीलेनि आकुलु एगिरेगिरि पडताइ। (खाली पत्ते उड़ उड़ कर रह जाते हैं)
१९६. ओछा मंत्री राजै नासै, तालै नासै काई। सान साहिबी फूट बिनासै, घग्घा पैर विवाई॥	अविवेकि प्रधानि राजुकु चेटु, नाचु चेरुवुकु चेटु। (अविवेकी मंत्री राजा के लिए और काई तालाब के लिए नष्टकारी है)
१९७. ओछौ बास, कुलकौ नास।	वंशानिकि ओक चेड्डवाडुन्ना मोदटिके चेटु। (वंश भर में एक भी दुष्ट हो, तो पूरे कुल की बदनामी हो जाती है)
१९८. ओढ़े में कुछ ना दरी बिछौना।	तिनेंदुकु तिंडि लेदुगानि मीसालकु संपेंग नूने। (पेट भर खाने केलिए भी ठिकाना नहीं, मूँछो के लिए संपंगी का तेल)
१९९. औसर चूकी खोमनी, गावे ताल बेताल।	अक्कर तीरिते अक्क मोगुडु कुक्क। (काम बन जाने पर बहिन का पति कुत्ते के समान है) या अवुसरं तीरिते अल्लुडु लंजाकोडकु। (काम बन जाने पर दामाद रांड के बच्चे के समान है)

अं

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
२००. अंगूर खट्टे हैं।	अंदनि द्राक्षपळ्ळु पुल्लन। (पहुंच के बाहर के अंगूर खट्टे होते हैं)
२०१. अंडा सिखावे बच्चे को चीं चीं मत कर।	गुड्डु वच्चि पिल्लनु वेक्किरिंचिनट्लु। (अंडे का आकर बच्चे की हँसी उड़ाना)
२०२. अंडे बबूल में, बच्चे खजूर में।	गुड्डोक चोटा, पिल्लो ओक चोटा। (अंडा एक जगह और बच्चा एक जगह)
२०३. अंडे होंगे तो बच्चे भी होंगे।	गुड्डुंटे पिल्ल कूडा उंटुंदि। (अंडा हो तो बच्ची भी होगी।)
२०४. अंत भला तो सब भला।	कावडि एन्नि वंकलु पोते नेमि इल्लु चेरिते सरि। (काँवर जितनी भी टेढ़ी हो, घर पहुँचे तो ठीक हैं)
२०५. अंधा अंधे ठेलिया दोनों कूप पडंत।	गुड्डिवानिकि मरोक गुड्डि सायमैते चिवरैकु इद्दरू गोतिलो पड्डट्टु। (अंधे का अंधा सहारा बने, तो दोनों गड्ढे में गिर जाते है)
२०६. अंधा क्या चाहे दो आँखे।	गुड्डिवाडु कन्नु रा गोरुना? पो पोरुना? (अंधा क्या चाहेगा? आंख ठीक हो जाय या नष्ट हो जाय?)
२०७. अंधा राजा चौपट नगरी।	गुड्डि राज्यं, गुड्डि दरबारु। (अंधा राज्य और अंधा दरबार)
२०८. अंधे घोड़े की लात।	गुड्डि गुर्र तापु। (अंधे घोड़े की लात)
२०९. अंधो में काना राजा।	गुड्डि कन्ना मेल्ल मेलु। (अंधे से भेंडा भला) या अंधुललो एकाक्षि गोप्प। (अंधों में काना भला)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
२१०. अंधौ बाटी जेबरी पाछे बछरा खाइ।	मुंदु गुड्डिगा खर्चु चेसि वेनुक तन्नुलाडुकुन्नट्लु। (पहले खूब खर्च करके पीछे तकलीफ उठाना)
२११. अंवाझोर चलै पुरवाई। तब जानो बरषा ऋतु आई।	तूर्पु गालि एक्कुवगा वीस्ते वर्ष ऋतुवु वच्चिनट्ले। (पूरब की हवा तेज बहै, तो समझ लेना चाहिए कि वर्ष ऋतु आगई)

क

२१२. कपट की प्रीति मरण की भीति।	दुष्टुनिकि दूरंगा उंडालि। (दुष्ट से दूर रहना चाहिए)
२१३. कब्र में पाँव लटकाए रहना।	काटिकि काल्लु चाचुकोनि उन्नट्लु। (कब्र में पाँव फैलाकर रहना)
२१४. कभी गाड़ी नाव पर कभी नाव गाड़ी पर	ओडलु बंड्ल पैन, बंड्लु ओडल पैन। (कभी नाव गाड़ी पर, कथी गाड़ी नाव पर)
२१५. कमान से निकला तीर और मुंह से निकली बात कभी वापिस नहीं आती।	कालु जारिते परवा लेदु गानि नोरु जारिते चाल प्रमादमु। (पैर फिसल जाय तो परवाह नहीं पर मुँह से बात निकल जाए तो बहुत ही खतरनाक है)
२१६. कमीन यार कुंद हथियार।	विश्वासमु लेनि मित्रुडु, मोटकत्ति एंदुकू पनिकी रावु। (अविश्वासी मित्र और धार के बिना चाकू किसी काम के नहीं हैं)
२१७. करकेंटा की चोट बिटौरा पै।	पिच्चुक पै ब्रह्मास्त्र प्रयोगं। (चिरौटे पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग)
२१८. कर जाय दाढ़ी वाला, पकड़ा जाय मुँछोवाला।	गड्डंवाडु तप्पुचेस्ते मीसालवाडिनि पट्टिनट्लु। (दाढ़ीवाले ने गलती की तो मूछोंवालो को पकड़ना)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
२१९. करत करत अभ्यास तें जड़मति होत सुजान।	अभ्यासं कूसु विद्य (या) तिय्यगा तिय्यगा रागमु, मूलगगा मूलगगा रोगमु। या अनगननग रागमतिशयिल्लुचुनुंडु तिनग तिनग वेमु तिय्य गनुंडु (वेमना) (गाते गाते राग बढ़िया बन जाता है और खाते खाते नीम मीठा बन जाता है)
२२०. करनी खाक की, बात लाख की।	माटलु चूस्ते कोटलु दाटुताइ, काल्लु कंदकालु कूडा दाटवु। (बातें तो किलों को पार कर जाती हैं, पैर कंदकों को भी पार नहीं कर पाते)
२२१. करनी तौं जोई करै, जाके कुल बनि आई होइ।	कुलमंता पेरुतेच्चे पनुलु चेयुटे गोप्प। (ऐसे काम करने में ही बढ़प्पन है जिस से सारे कुल का नाम हो जाय)
२२२. करम धनी कौ।	पेरोकरिदि, ऊरोकरिदी। (नाम एक का, गाँव किसी और का)
२२३. करमहीन खेती करे बैल मरे या सूखा पड़े।	दरिद्रुडु तल कडगबोते वडगंड्लु पड्डुट्लु। (दरिद्र ने सिर पर स्नान करना चाहा तो ओले का बरसना)
२२४. कर सेवा पा मेवा।	कष्टे फले। (कष्ट उठाने पर ही फल मिलता है)
२२५. करिया काछी धौंरे बाल। इन्हैं छाड़ि जनि बेसहो आन ॥	नल्लटि तोक, तेल्लटि वेंट्रुकलु गल एद्दु श्रेष्ठं। (काला पूंछ और सफेद बालों वाला बैल श्रेष्ठ है)
२२६. करेगा सो भरेगा।	चेसिनंदता अनुभविंचच्चु। (कियै का फल भोग सकते है)
२२७. जो बोएगा, सो काटेगा।	चेसिनंदता अनुभविंचच्चु। (कियै का फल भोग सकते है)
२२८. कर्क के मंगल होय भवानी। देव धूलि बरसेंगे पानी	कर्काटकंलो बुधग्रहं संभविस्ते वर्षं जोरुगा कुरुस्तुंदि। (कर्क में बुधग्रह हो जाय तो वर्षा बहुत जोर दार होगी)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
२२९. कर्जदार छाती पर सवार।	अप्पुलवाडु नेत्तिन सवारु। (कर्जदार सर पर सवार)
२३०. कर्म की नहीं मिटती	एवरि खर्म वारनुभविंचक तप्पदु। (हर एक को अपने किए का फल भोगना ही पडता है)
२३१. कर्म प्रधान विश्व करि राखा। या जैसी करनी वैसी भरनी।	एवरु चेसिन खर्म वारनुभविंचक तप्पदु। (हरेक को अपने किए का फल भोगना पड़ता है) कर्मायत्तं फलं पुंसां बुद्धिः कर्मानुसारिणी —सूक्ति
२३२. कर्महीन खेती करै, बैल मरै कि सूखा परै।	वेर्रिवाडुव्यवसायं चेस्ते पोलं एंडि पोतुंदि। (बेवकूफ खेती का काम करे, तो फसल सूख जाती है)
२३३. करम प्रधान विश्व रचि राखा जो जस करहि सो तस फल चाखा।	कर्मानुसारे-फलितम्।
२३४. करै करावै आप ही सिर औरन के देइ।	तप्पु तमरिदि, शिक्ष मरोकरिदि। (गलती अपनी है और सजा दूसरे की)
२३५. कलम तलवार से शक्तिमान है।	कत्तिकन्न कलं गोप्प। (कलम तलवार से शक्तिमान है)
२३६. कलाल की दूकान पर पानी भी पिये तो शराब का शक। या मदिरा मानत है जगत दूध कलाली हाथ।	कल्लुवानि दुकाणंलो नीरु तागिना कल्ले। (कलाल की दूकान में चाहे पानी भी पी जाय, वह भी ताड़ कहलाता है)। या ताटिचेट्टु क्रिंद पालु तागिना कल्ले। (ताड़ वृक्ष के नीचे खड़े होकर चाहे दूध भी पिया जाय, तो भी वह ताड़ ही कहलाता है) या ईतचेट्टु किंद पालु तागिना कल्ले अंटारु।
२३७. कहना आसान, करन मुश्किल।	माटलु चेप्पडं तेलिक, पनुलु चेयडं कष्टं। (बात करना आसान और काम करना कठिन है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
२३८. कहने से करना भला।	माटल कंटे चेतलु मेलु। (बातों से कर्म भले)
२३९. वे कहलाते हैं सैयद, चुराते हैं छूंछी।	इंटिपेरु कस्तूरिवारु, इंट्लो गब्बिलाल कंपु। (घर का नाम 'कस्तूरी' है, पर घर में चमगादड़ों की बदबू)
२४०. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली।	नक्केक्कड नागलोकमेक्कड ? (सियार कहाँ नागलोक कहाँ ?) नक्केक्कडा देवलोकमेक्कडा ? (सियार कहाँ, देवलोक कहाँ)
२४१. कहूँ कहूँ गोपाल की गई सिट्टल्ली भूलि।	चेप्पेवि श्रीरंगनीतुलु दूरेवि दोम्मरि गुडिसेलु । (नीति के वाक्य कहना और बुरे कर्म करना)
२४२. कहे ते कुम्हार गधा पै ना चढ़ै।	कुम्मरिवाडु गाडिदनेक्किनट्लु। (जैसे कुम्हार का गधे पर चढ़ना)
२४३. काँख में लड़का शहर में टेर	पिल्लनु चंकनेत्तुकोनि ऊरंता वेदकिनट्लु। (बच्चे को बगल में लेकर शहर भर में ढूंढ़ना)
२४४. कागज की नाव नहीं चलती।	कागितपु नाव एट्टि पनिकी पनिकिरादु। (कागज की नाव किसी काम की नहीं)
२४५. काँटा काँटे से ही निकाला जाता है।	मुल्लुनु मुल्ले तीयालि। (काँटे को काँटे से ही निकालना चाहिए) कंटकन्यः अथवा कण्टकेनैव कण्टकम्।
२४६. काटे का मंत्र नहीं।	(पामु) काटुकि मंत्रं लेदु। (साँप के काटे का मंत्र नहीं)
२४७. काटो तो खून नहीं।	नरिकिना नेत्तुरुचुक्क लेदु। (काटने पर भी खून का बूंद नहीं है)
२४८. काठ की तौ एकु ई पोत चढ़ै।	ओक पामुचेत रेंडुसार्लु करिपिंचुकुंटामा ? (एक ही सांप से दो बार काट खाएंगे ?)

हिंदी की लोकोक्तियां	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
२४६. काठ की हाँडी बार बार नही चढ़ती	ओक पामुचेत रेंसार्लु करिपिंचुफुंटामा ? (एक ही सांप से दो बार काट खाएंगे ?)
२५०. कातिक सुद पूनो दिवस जो कृतिका रिख होइ। तामें बादर बीजुरी जो संजोग सों होइ। चार मास तौ वर्षा होसी। भली भाँति भाखैं जोसी ।।	कार्तिक वर्षं कर्णुनि युद्धं। (कातिक के महीने की वर्षा कर्ण के युद्ध के समान जोरदार होती है)
२५१. कातिक सुदी एकादशी, बादल विजुली होय। तौ आसाढ़ में भड्डुरी, बरखा पोखी होय ।।०	कार्तीक वर्षं कर्णुनि युद्धं। (कार्तिक की वर्षा और कर्ण का युद्ध जोरदार है) या कार्तीक मासान कडवलु कडग पोद्दडु। (कार्तिक के महीने में घड़ों को साफ करने के लिए भी समय नहीं मिलेगा अर्थत् घड़े हमेशा भरे रहेंगे—जोरदार वर्षा होने से मतलब है)
२५२. काती सब साथी।	कार्तीक पुन्नानिकि कलक पंटलु। (कार्तिक पूर्णिमा तक फसल अच्छी हो जाती है)
२५३. कान छिदाय सो गुड़ खाय	कष्टाल कोर्चुकोन्नने सुखालु दक्कुनु। (कष्टों को सहने पर ही सुखों की प्राप्ति होती है)
२५४. कान दबाकर चले जाना।	चेवुलु मूसुकोनि वेल्लिनट्लु। (कान बंद करके चले जाना)
२५५. कानी की ब्याह में सौ जोखैं।	विनायकुनि पेंड्लिकि वेयिय विघ्नालु। (गणेश की ब्याह में हजारों विघ्न)
२५६. कानी गीदड़ी की ब्याह।	कुक्का, नक्कल पेंड्लि। (कुत्ते और सियारों का व्याह)
२५७. का पर करूं शृंगार पिया मोरे आन्धर।	मोगुडु गुड्डिवाडैनपुडु सिंगारमेंदुकु ? (पति अंधा हो तो शृंगार किस लिए ?)
२५८. काबूल के बनिए।	बंदरु कोमट्लु, पालकोल्लु कोमट्लु। (बंदरु के बनिए, पालकोल्लु के बनिए)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
२५९. काबूल में भी गधे होते हैं।	प्रतिचोटा पावुलुंडने उंटाइ। (हर कहीं कबूतर जरूर होंगे)
२६०. काम का न काज का, दुश्मन, अनाज का।	अन्न चोरवेगानि अक्षरपु चोख लेदु। (खाने के लिए तैयार है पर पढाई के लिए सुस्त है)
२६१. काम का काज को थर थर काँपे।	पनिकि पंदिरायुडु, तिंडिकि तिम्मरायुडु। (काम के लिए सुअर, खाने के लिए बंदर)
२६२. कायस्थ का बच्चा कभी न सच्चा।	कापुवानिनि नम्मरादु। ("कापु" पर विश्वास करना नहीं चाहिए)
२६३. कारण के बिना कारज नहीं होता।	कारणं लेकुंडा कार्यं पुट्टदु। (कारण के बिना काम नहीं पैदा होता है)
२६४. कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर।	कानुन्नदि काक मानदु। (जो होना है सो होगा ही)
२६५. काला अक्षर भैंस बराबर।	पोट्ट चिंचिना अक्षरंमुक्कलेदु। (पेट को चीरने पर भी अक्षर नहीं है)
२६६. काला ब्राह्मण, गोरा चमार।	नल्ल बापनोण्णी, तेल्ल कोमटोण्णी नम्मरादु। (काले ब्राह्मण पर, सफेद बनिये पर विश्वास नहीं करना चाहिए)
२६७. काली मुर्गी सफेद अंडे	काकि कडुपुन कोकिलम्म पुट्टिनट्लु। (जैसे कौए के पेट से कोयल का जन्म हुआ हो)
२६८. का वर्षा जब कृषी सुखाने।	पोलं एंडिन तर्वात वर्ष व्यर्थं। (खेत के सूखने के बाद वर्षा हो तो क्या फायदा ?)
२६९. कीचड़ में ढेला डालोगे तो छींट आवेगी।	अशुद्धंमीद रायि वेस्ते मोहं निंडा चिंदुतुंदि। (अशुद्ध पर पत्थर फेंको तो सारे मुँह पर छिटकता है)
२७०. कीडी संचे तीतर खाय पापी को धन पर ले जाय॥	पापि सोम्मु पापाल पालु। (पापी का धन पाप कर्मों में ही खर्च होता है।)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
२७१. कुँआ बेचा है तो कुएँ का पानी नहीं बेचा।	नुय्यि अम्मिते नूति नीळ्ळु अम्मिनट्लु कादु। (कुँआ बेचा है तो यह मतलब नहीं है कि कुएँ का पानी बेचा है)
२७२. कुएँ में की मेंढकी, करै सिंधु की बात।	नूतिलोनि कप्पवले या कूपस्थ मंडूकम् वले। (जैसे कुएं की मेंढकी)
२७३. कुछ नहीं तो थोड़ा सा भला।	असलु लेनिदानिकंटे उन्नदे मेले। (बिलकुल न होने से थोड़ा सा ही भला)
२७४. कुछ खोकर ही अकल आती है।	अनुभविंचिते गानि तेलिसि रादु। (अनुभव किए बिना मालूम नहीं होता)
२७५. कुत्ता भी दुम हिलाकर बैठता है।	कुक्क कूडा तोक जाडिंचे कर्चुंटुंदि। (कुत्ता भी दुम हिलाकर ही बैठता है)
२७६. कुत्ता भूँके हजार, हाथी चले बजार।	एनुगुनु चूचि कुक्कलु मोरिगिनट्लु। (हाथी को देखकर कुत्तों का भौंकना)
२७७. कुतिया की प्रयाग यात्रा।	कुक्क काशीकि पोइनट्लु। (जैसे कुत्ता काशी गया हो)
२७८. कुतिया चोरों मिल गई, पहरा किसका दे।	कंचे चेनु मेस्ते कापेमि चेयगलडु। (खेत की रखवाली के लिए, जो काँटो की हद रहती है, वही खेत को खा जाय तो किसान क्या कर सकता है ?)
२७९. कुत्ते की दुम बारह बरस तक में रही तो भी टेढ़ी की टेढ़ी	कुक्क तोक एन्निप्रयत्नालु चेसिना चक्कनवुतुंदा। (कुत्ते की पूंछ जितने भी कोशिश करें तो क्या ठीक बन सकती है ?)
२८०. कुत्ते की दुम लाख सीधी करो, फिर टेढ़ी की टेढ़ी।	कुक्क तोक एन्निप्रयत्नालु चेसिना चक्कनवुतुंदा। (कुते की पूंछ जितने भी कोशिश करें तो क्या ठीक बन सकती है ?
२८१. कुत्ते को घी नहीं पचता।	कनकपु सिंहासनमुन शुनकमु कूर्चुंडबेट्ट ... ... वेनुकटि गुण मेल मानु। (सोने के सिंहासन पर कुत्ते को बिठाया जाय—पुराना गुण क्यों छोड़ता है।)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
२८२. कुत्तों के भौंकने से हाथी नहीं डरते ।	एनुगुनु चूचि कुक्कलु मोरिगिनट्लु । (हाथी को देख कर कुत्तों का भौंकना)
२८३. कुसमय पड़े दुश्मन के हेत ।	कर्म कालिते वसुदेवुडोच्चि गाडिद काळ्ळु पट्टुकुन्नट्लु । (बदनसीबी के कारण बसुदेव का आकर गधे के पैर पकड़ना)
२८४. कुंजडी अपने बेरों को खट्टा नहीं बताती ।	तन चल्ल पुल्लदनि ता जेप्पु कोनुना ? (अपने मट्ठे को कौन खट्टा कहेगा ?)
२८५. कुआँ की माँटी कुआँ ई में लगि जाए	नूति मट्टि नूतुलोने उंटुंदि । (कुएँ की मिट्टी कुएँ में ही रहती है)
२८६. कूआ पानी, कृपन धन, गल बाँधे निकसाइ ।	लोभि सोम्मु लोकुल पालु । (लोभी का पैसा दूसरों के लिए खर्च होता है)
२८७. कूआ में कौ मेंडका, करै सिंधु की बात ।	कप्पलेरुगुना कडलि लोतु ? (घड़े की गहराई को मेंढक पहचान सकते है ?)
२८८. कूकर चौक चढ़ाइएं, चाकी चौट न जाइ ।	कुक्कनु अंदलंलो कूर्चोबेडिते कुच्चुलन्नी तेगकोरिकिंद्ध । (कुत्ते को पालकी में बिठाए तो उसका सत्यानाश कर देता है)
२८९. कृतिका तो कोरी गयी, अद्रा मेंह न बूंद ।	आरुद्र वान अदुनु वान । (आरुद्रा की वर्षा बहुत कम होती है)
२९०. कै गुरु जाने कोथरा, कै बनियाँ की हार ।	ऊरकने शेट्टि वरद बोडु । (बिना काम के बनिया भाड़ में भी नहीं जाता)
२९१. कोई मरे कोई मलहारे गाएँ ।	पिल्लिकि चेलगाटं, एलुककु प्राण संकटं । (बिल्ली का खेल, चूहे केलिए प्राण का संकट होता है)
२९२. कोऊ रूख जहाँ नहीं, तहाँ अरंडे रूख ।	ए चेट्टूलेनि चोट आमुदपु वृक्षमें महावृक्षमु । (जहाँ कोई पेड़ नहीं है, वहाँ अरंडी का वृक्ष ही महावृक्ष है)
२९३. कोइली के बचवा कोइली होइ हैं, फडवा मूहें छाय ।	काकिपिल्ल काके गानि कोकिल कादु । (कौए का बच्चा कौआ ही होता है लेकिन कोयल नहीं बन सकता)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
२९४. कोठी वाला रोवे छप्परवाला सोवे।	भाग्यवंतुनिके बेंगलेक्कुव। (भाग्यवान की ही चिंताएँ ज्यादा हैं)
२९५. कोयला होय न ऊजरा सौ मन साबुन धोय।	एलुक चर्मम् तेच्चि एडादि उतिकिना नलुपु नलुपेगानि तेलुपु कादु। (चूहे के चमड़े को लाकर साल भर धोएँ, वह काला ही रहता है पर सफेद नहीं होता)
२९६. कोयले की दलाली में मुंह काला।	नीच सहवासंवल्ल चेडुपु तप्पदु। (नीचों की संगति से नष्ट जरूर होगा)
२९७. कोरिया की खोरी, केसर कौ तिलक।	मिंग मेतुकुलेदुगानि मीसालकु संपेंग नूने। (खाने के लिए चावल भी नहीं, मूछों में लगाने के लिए संपंगी का तेल)
२९८. कौआ अपने शिसुन को सबसे जानत सेत।	काकिपिल्ल काकिकि मुद्दु। (कौए का बच्चा कौए का प्यारा)
२९९. कौआ चली हंस की चाल अपनी चाल भी भूल गयी।	हंस नडकलु राक पोए, काकि नडकलु मरचिपोए। (हंस की चाल नहीं आई, कौए की चाल भूल गई)
३००. कौड़ी काम का नहीं।	दम्मिडीकि कूडा मारदु। (दमडी के काम का भी नहीं)
३०१. कौडी नाहीं गाँठ में, करै ऊँट की बातें। या कौडी नाहीं गाँठ में, चले बाग की सैर।	डब्बु लेनिवाडु मुंदु पडवेक्किनट्लु। (जिसके पास पैसे नहीं, वही पहले नाव में बैठ गया)
३०२. कौडी मार बिटौरा चूकै।	मंत्रालकु चिंतकायल रालुना? (मंत्र पाठ से इमली गिरेंगे?)
३०३. कंगन देख्यौ हाथ में, कहा आरसी क्या?	मुंजेति कंकणानिकि अद्दमेल? (हाथ के कंगन के लिए आइना क्या?)
३०४. कंगली मे आटा गीला।	चस्तोंटे संधि मंत्रं। (मरते समय 'संधि' मंत्र का पाठ करना)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियां
३०५. क्या भूखे को बासन, क्या नींद को आसन।	आकलि रुचि एरुगदु, निद्र सुखमेरुगदु। (भूख रुचि को नहीं जानती, नींद सुख नहीं जानती)
३०६. क्वारी कन्या सेस वर।	पेळ्ळि कानिदानिकि ऊरंता मोगुळ्ळे। (अविवाहित लड़की के लिए शहर भर में अनेक पति)

ख

३०७. खग ही जाने खग की भाषा।	दोंगनु पट्टुटकु दोंगे कावालि। (चोर को पकड़ने के लिए चोर ही चाहिए)
३०८. खर को गंग न्हावाइए तऊ न छोड़े छार।	गंगलो मुनिगिना काकि हंस अगुना ?। (गंगा में डूबने पर कौआ हंस नहीं हो सकेगा?)
३०९. बानी की तौ बानि न जाई कुत्ता मूते टांग उठाई कुत्ता का क्या भीगा जाय।	कनकपु सिंहासनमुन शुनकमु कूर्चुंडबेट्टि शुभलग्नमुनन् दोनरग पट्टमु गट्टिन वेनुकटि गुण मेल मानु विनुरा सुमती" (सोने के सिंहासन पर कुत्ते को एक शुभ लग्न में बिठाये जाय और पट्टाभिषेक किया जाय, लेकिन वह अपने पुराने गुण को नहीं छोड़ता)
३१०. खरबूजे को देखकर तरबूजा भी रंग बदलता है।	चेट्टु रंगु चूचि पिट्टरगु मार्चुनु। पेड़ के रंग को देख कर पक्षी भी अपने रंग को बदलता है)
३११. खरी मजूरी चोखा काम।	ग्रासं लेनि कोलुवु, रसं लेनि काव्यं। (बिना ग्रास की सेवा, रस के बगैर काव्य व्यर्थ है)
३१२. खा कचौड़ी ओढ़ दुशाला, हो बैठेगा दम्मोवाला।	अप्पुचेसि पप्पु कूडु। (कर्ज लेकर खिचड़ी खाना)
३१३. खाएँ-पिएँ बधंमनो, सिर चुपरैं त्यौहार।	कडुपुनिंडा तिनि कडुपुलो नील्लु कदलकुंडा सुखम् अनुभविंचिनट्लु। (जैसे पेट भर खाकर, बिना कष्ट किए सुख का अनुभव करना)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
३१४. खाओ केक, कभी हजम नहीं होगा।	परुल नोल्लु कोट्टि तिंटे एवरू बागुपडरु । (दूसरों को बिगाड कर सुस्वादु भोजन करने वाले (सुख प्राप्त करने वाले) कभी जिंदगी में सफल नहीं होते)
३१५. खाक डाले चाँद नही छिपता।	बूडिदलोनि निप्पु। (खाक में छिपी अंगार)
३१६. खाद परै तो खेत, नहीं तो कूड़ा रेत।	एरुवुलेनि पैरु, परुवुलेनि रैतु। (खाद के बिना खेत और गौरव के बिना किसान व्यर्थ है)
३१७. खाने को हम और लड़ने को हमारा भाई।	तिंडिकि तिम्मराजु, पनिकि पोतुराजु। (खाने के लिए बंदरों का राजा जैसा है, काम के लिए भैंसा राजा)
३१८. खाय बकरी की तरह, रहे लकड़ी की तरह।	पोतुला तिन्ना पीचुला उन्नट्लु। (बकरे की तरह खाने पर भी लकडी की तरह पतला रहना)
३१९. खाल ओढाए सिंह की स्यार सिंह नहीं होय।	सिंहपु चर्मम् कप्पिते नक्क सिंहमगनाॅ। (सिंह का चमड़ा ओढ़ने पर सियार सिंह नहीं बनता)
३२०. खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचै।	एलुक मीदि कोपान इंटिकि चिच्चु पेट्टिनट्लु। (चूहे पर की नाराजगी से घर में आग लगाना)
३२१. खुदा की बात खुदा ही जाने।	भगवंतुनि लील भगवंतुनिके एरुक। (भगवान की लीला उसी को मालूम है)
३२२. खेत खाए गदहा, मार खाए जुलाहा।	चेसेदोकडु, अनुभविंचेदोकडु। (करता कोई है, भोगता कोई और है)
३२३. खेत खाय पड़िया, भँइस के मुँह झकझोरल जाय।	तप्पोकरिदी, दंडमोकरिदी। (गलती एक की और दंड दूसरे की)
३२४. खेते पौसा जो न किसाना। उसके घर दरिद्र समाना ।।	एरुवु लेनि पैरु, परुवुलेनि रैतु ओकटे। (खाद के बिना खेत और प्रतिष्टा रहित किसान एक समान हैं)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
३२५. खेती करै खाद से भर। सो अन कोठिला में लै धरै।	एरुवु वेस्ते एर्रीडैना पंडिस्ताडु। (खाद डाले तो बेवकूफ व्यक्ति भी खेती कर सकता है)
३२६. खेती करै वनिज को धावै। ऐसा डूबै थाह न पावै ।।	सेद्यगाडु व्यापारं चेयबोते अधः पातालनिकि पोक तप्पदु। (किसान व्यापार करने जाय तो उसका सतयनाश होना निश्चय है)
३२७. खेती तो थोड़ी केरै, मिहनत करे सिवाय। राम कहे वहि मनुष को, टोटा कबौ न आय ।।	पोलं कोंचेमैना परिश्रम चेस्ते पंट कावलसिनंत। (चाहे खेत थोड़ा भी हो, खूब मेहनत करने से मनचाह फसल मिल सकता है)
३२८. खोटा बेटा और खोटा पैसा कभी काम में आता।	समयमोस्ते मट्टि बंगारमौतुंदि। (समय पर मिट्टी भी सोना बन जाती है)
३२९. खोदा पहाड़ निकली चुहिया।	कोंडनु त्रव्वि एलुकनु पट्टिनट्लु। (पहाड़ खोद कर चूहे को पकड़ना)
३३०. खौर ही कुतिया, रेशम के झूल।	कनकपु सिंहासनमुन सुनकमु कूर्चुंड बेट्टि . . . . . वेनु कटि गुण मेलमानु विनरा सुमती। (सोने के सिंहासन पर कुत्ते को बिठाएँ वह अपना गुण नहीं त्यागता है।

ग

३३१. गमारि की टाँटि में अकलि होइ है।	पेदवाडु उपासमुंटे रोजुलुपेद्दवैनट्लु। (गरीब ने व्रत रक्खा तो दिन बड़े होगए)
३३२. गई छठी कौ बनिया, गुड़ दै पिन्नी खाइ।	कोमटि पूज चेयपोते कोमटि सोत्तु दोंगिलिंपबडिनट्लु। (बनिया के पूजा करने जाने पर उसके घर की चोरी होगई)
३३३. गई दुकानु जहाँ भई अथाई।	नलुगुरू चेरिन चोटे बजारु। (जहाँ चारों इकट्ठे होते हैं, वही बाजार है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
३३४. गई बात रे पाहुने, घी दै, आन्यौ तेल।	अल्लुनिकि नेय्यि लेदु, अल्लुनिवेंट वच्चिन वानिकि नूने लेदु। (दामाद के लिए घी नहीं, उसके साथी के लिए तेल भी नहीं)
३३५. गए थे रोजा छुड़ाने, गले पड़ी नमाज।	पुण्यानिकेडिते पापमेदुरोच्चिनट्ल्। (पुण्य कार्य करने गए तो पाप का सामने आना)
३३६. गए नमाज छुड़ाने, रोजा गले पड़ा।	कोत्त अप्पुकु पोते पात अप्पु पैन पडिंदि। (नया कर्ज लेने गए, तो पुराने कर्ज का भार भी पड़ गया)
३३७. गदहे की आँख में नोन दिया उसने कहा मेरी आँख फोड़ी	दुष्टुनिकि उपकारं चेय्य बोते अपकारं एदुरोच्चिनट्लु। (दुष्ट की सहायता करने चले तो खुद अपने को धोखा हो जाना)
३३८. गधा को नमक दिया गधा समझा आँख फोड़ी	गाडिदकेमि तेलुसु गंधपु पोडि वासना? (गधे को चन्दन की खुशबू का क्या पता?)
३३९. गदहा खेत खाय, जुलाहा मारा जाय।	तिन्न कुक्क तिनि पोते कन्न कुक्कनु पट्टिकाल्लु विरग कोट्टिनट्टु। (बाहर के कुत्ते ने खाना खाया तो अपने कुत्ते को पकड़ कर पैर तोड़ा)
३४०. गधा घोड़ा एक भाव।	गाडिद, गुर्रं ओकटेना? (गधा और घोड़ा दोनों एक ही हैं?)
३४१. गधा चढ़ै पाँचो असवार।	गाडिद सिंहासनमेक्किनट्लु। (जैसे गधा सिंहासन पर बैठ हो)
३४२. गधा धोने से बछड़ा नहीं होता।	एलुक चर्ममु तेच्चि एडादि उतिकिना नलुपु नलुपे गानि तेलुपु कादु। (चूहे की चमड़े को साल भर धोने पर भी वह काला ही रह जाता है, लेकिन सफेद नहीं होता)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
३४३. गधा न कूदी, कूदी कौन ।	(वेनुक कालितो) तन्नेदि गाडिद काक इंकेमि । (पीछे के पैर से) लात मारने वाला गधा नहीं तो और क्या होगा ?)
३४४. गधे के सिर के सींग ।	गाडिदकु कोम्मुलोच्चिनट्लु । (जैसे गधे के सिर सींग आ गए)
३४५. गधे को बाप बनाना ।	वसुदेवुडोच्चि गाडिद काल्लु पट्टिनट्लु । (जैसे वसुदेव का गधे के पाँव पकड़ना)
३४६. गया पेड़ जब बकुला बैठा । गया गेह जब मुडिया पेठा ।। गया राज जँह राजा लोभी । गया खेत जँह जमी गोभी	चेट्टु मीद कोंग वालिते चेट्टु सर्व नाशनं । (पेड़ पर बगुला बैठे तो पेड़ का सत्यानाश हो जायगा)
३४७. गया समय हाथ नहीं आता ।	गडचिपोइन कालमु तिरिगि रादु । (बीता हुआ समय वापस नहीं आता)
३४८. गरजने वाला बादल बरसता नहीं ।	उरुमुलु एक्कुवैते वान कुरियदु । (बादल ज्यादा गरजे तो वर्षा नहीं होती)
३४९. गरजे सो बरसे नहीं ।	मोरिगे कुक्कलु करुववु । (भौंकनेवाले कुत्ते नहीं काटते)
३५०. गरम पानी को ठंडा पानी का सहारा ।	वेडि नील्लकिचन्नील्लु सायं । (गरम पानी को ठंडे पानी का सहारा)
३५१. गरीब ने रोजे रखे तो दिन ही बड़े हो गये ।	पापि समुद्रानिकि वेल्लिना मोकालु दाका नील्लु । (पापी समद्र के पास भी जाय तो घुटने तक ही पानी आता है) या दरिद्रुडु उपवासं उंटे रोजुले युगालौताइ । (दरिद्र ने व्रत रखे तो दिन युग के समान होगए)
३५२. गरीबी में आटा गीला ।	दरिद्रुडु चेनु पेट्टिते वडगंड्लु । (गरीबी में खेती करे तो ओले पड़े)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
३५३. गाँठ का पूरा, मति का हीन।	धनवंतुडे कानि, बुद्धि मात्रमु शून्यं। (धनवान ही है मगर उसकी बुद्धि शून्य है)
३५४. गिरे में चार लात।	मूलिगे नक्क मीद ताटिकाय पड्डट्लु। (बीमारी से कराहने वाले सियार पर ताड़ का फल गिरना)
३५५. गुड़ देखकर ही चींटा निकलता है।	बेल्लमुन्नचोटे ईगलु मुसुरुताइ। (जहाँ गुड़ है वहाँ मक्खियाँ इकट्ठी होती हैं)
३५६. गुड़ दिए मरे तो जहर क्यों दिए	तीपितोने चस्ते विषमेंदुकु ? (मीठे से ही मरे तो विष की क्या जरूरत)
३५७. गुड़ न दे तो गुड़ की सी बात करें।	पेट्टिना पेट्टक पोइना मंचि माटलाडालि। (चाहे कुछ खिलाएं पिलाए या नहीं, मीठी बात तो करना चाहिए)
३५८. गुरु-खाँय गुलगुलनुते आनि करै।	तिन्निंटि वासालु लेक्किंचिनट्ल। (जिस घर का खाना, उसी घर की बासें गिनना)
३५९. गुरु गुड़ ही रह गया, चेला शक्कर हो गया।	गुरुवुनु मिंचिन शिष्युडु। (गुरु से बढ़ा हुआ चेला)
३६०. गूँगे की बात गूँगा ही समझे।	मूगवानि माट मूगवानिके एरुक। (गूगे की बात गूँगे को ही मालूम है)
३६१. गंगा के आगे कूप की खुदाई।	गंगा नदि दग्गर नुय्यि तव्विनट्ल। (जैसे गंगा नदी के पास कुआँ खोदना)
३६२. गंगा गए गंगादास जमुना गए जमुनादास।	एवरिकि वारे यमुना तीरे। (हर एक का अपना रास्ता)
३६३. गंजेड़ी भाई खिसके खाए पिए खिसके।	अरचेतिलो स्वर्गं चूपिंचि मोचेति दाका नाकिंचिनट्लु। (हथेली में स्वर्ग दिखाकर कोहनी तक चटवाना)
३६४. गंजी यार किसके दम लगाय खिसके।	अवुसरं तीरिन तरुवात अल्लुडु लंज कोडुकु। (काम बन जाने पर दामाद रांड के बच्चे के समान है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
३६५. गाम कौ जोगी जोगना, आन गाम कौ सिद्ध।	पोरुगिंटि पुल्लकूर रुचि। (पराए घर की खट्टी सब्जी ही स्वादिष्ट लगती है)
३६६. गाँम में दूसर, बाड़े में असर।	एक्कडिदक्कडुंटेने शोभ। (जहाँ की चीज वहीं रहे तो शोभा है)
३६७. गाडर पाली ऊन को लागी चरन कपास।	पुण्यानि केडिते पापं एदुरैनट्लु। (पुण्य के लिए गए तो पाप का सामने आना)
३६८. गाड़ी ऐ देखि के लाड़ी के पान फूल जाए।	पुलिनि चूचि नक्क वात पेट्टुकोन्नट्लु। (बाघ को देख के सियार अपने को जलाना)
३६९. गाड़ी बारे की नारि जनम दुखिया।	आडदै पुट्टुटकंटे अडविलो (मानै) चेट्टै पुट्टट मेलु। (स्त्री जनम लेने से जगंल में वृक्ष का जनम लेना अच्छा है)
३७०. गाय मारके जूता दान।	कावालनि लेंप पगुलकोट्टि क्षमार्पण चेप्पुकोन्नट्लु। (चाहते हुए थप्पड मारकर क्षमा माँगना)
३७१. गोद में बैठ कर आँख में उँगली।	ओल्लो कूर्चोनि कंट्लो पोडिच्चिनट्लु। (गोद मे बैठकर आँख में झोंपना)
३८२. गोद में लड़का, शहर में ढिंढोरा।	बिड्डनु चंकनेत्तुकोनि ऊरंता वेतिकिनट्लु। (बच्चे को बगल में उठाकर, गाँव भर उसी केलिए तलाश करना)
३७३. गौ मार, करता दान।	गोवुलु चंपि चेप्पुलु दानं चेसिनट्लु। (गायों को मारकर चप्पल दान में देना)

घ

३७४. घर आई दौलत को कौन लात मारे।	दग्गरकु वच्चिन सोम्मुनु कालु दन्निते काशीकि पोइना तिरिगि रादु। (पास आयी हुई दौलत को लात मारें तो काशी जाने पर भी नहीं आती)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
३७५ घर का जोगी जोगडा आन गाँव का सिद्ध।	महात्मुलुकु वारिंट गौरवम् उंडने उंडदु। (महात्मा लोगों का यश अपने घर में नहीं रहता है)
३७६. घर का भेदी लंका ढावे।	इंटि गुट्टु लंककु चेटु। (घर का रहस्य लंका के लिये हानिकारक है– लंका गाँव से मतलब है)
३७७. घर का मुर्गा दाल बराबर।	इंटि सोम्मु इप्प पिंडि पोरुगिंटि सोम्मु पोडि बेल्लमु। (अपने घर का माल 'इप्प' के आटे की तरह कडुआ तथा पराए घर का माल गुड के समान मीठा)
३७८. घर की खाँड किरकिरी चोरी का गुड़ मीठा।	पोरुगिंटि पुल्लकूर रुचि। (पराए घर की खट्टी सब्जी स्वादिष्ट है)
३७९. घर की खुनसु औ जर की भूख। छोट दमाद बराहे ऊख। दूबर खेती बड रहा भाय। धाघ कहै दुख कहाँ समाय।	इंट अंतःकलहमु, ज्वरमु तरवात आकलि (ओकटे) (घर में अंतःकलह और बुखार के बाद की भूखें समान हैं— कष्ट देने वाले से मतलब है) इंटिकि चिन्न अल्लुडु, एंडिन चेरकु पंट, अविवेकि सोदरुडु दुखं कलिगिस्तारु। (घर का छोटा दामाद, सूखी ईख का फसल और पागल भाई दुखकारी होते हैं)
३८०. घर की माँडा इस्तरी।	इंटिकि दीप इल्लालु। (घर की ज्योति गृहिणी है)
३८१. घर की मुर्गी दाल बराबर।	पेरटि चेट्टु मंदुकु पनिकिरादु। (घर के पीछे का वृक्ष दवाई के लिए काम नहीं आता)
३८२. घर के घर, बाहर के बाहर।	पैदि पैना, लोनिदि लोपला। (ऊपर का ऊपर, अंदर का अंदर)
३८३. घर के ही मर्द हैं।	इंट्लो मात्रं मगवारु। (घर में ही मर्द है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
३८४. घर खीरु तौ बाहर खीरु।	इंट सुखमैते जगमेल्ला सुखमे। (घर में सुख हो, तो जग भर में सुख ही है)
३८५. घर घर शादी घर घर गम।	कष्ट सुखालु कावडि कुंडलु। (कष्ट और सुख काँवर के घड़े के समान है)
३८६. घर बसाके देखो।	इल्लु कट्टि चूडु पेल्लि चेसि चूडु (घर बनाके देखो, विवाह करके देखो)
३८७. घर बेचकर तीर्थ कौन करे?	इल्लु अम्मुकोनि तीर्थाटनं चेसेदेवरु? (घर बेच कर तीर्थाटन कौन करेगा)
३८८ घर में आग लगाय अमालो अलग खडो।	तंटालु पेट्टि तमाशा चूचिनट्लु। (झगड़े पैदा कर तमाशा देखना)
३८९. घर में धान न पान, बीबी को बड़ा गुमान। या घर में मूंजी माँग नही और बाहर न्योते सब।	तिनेंदुकु तिंडिलेदु गानि मीसालकु संपेंग नूने। (खाने के लिए खाना नहीं पर मूछों के लिए संपगी का तेल)
३९०. घर में नइयाँ चुन चमन को, ठाकुर करों टोटी पै दो।	अंबलि त्रागेवानिकि मीसालोवत्तोडेवरु। (माँड़ पीने वाले के मूछों को पकड़ने वाला कौन)
३९१. घर रहे न तीरथ गए मुड मोलर मर रहे।	उभय भ्रष्टुत्वं, उपरि सन्यासं।
३९२. घर से खाना खा के निकला तो बाहर भी खाना मिलता है।	इंट गेलिचि रच्च गेलुवु। (घर में विजय हो तो बाहर भी विजय प्राप्त होगी)
३९३. घरहि जमाई लो घट्यौ खरो पूस दिन मान।	इल्लरिकमु कन्ना मालरिकमु मेलु। (ससुराल में हमेशा रहने से चमारों का कार्य करना भला)
३९४. घरु आए नाग न पूजिए, बाँबी पूजन जाय।	इंट दैवमुनु पूजिपक साधुवुनि पूजिप बोइनट्लु। (घर के भगवान की पूजा न करके साधु की पूजा करना)
३९५. घरु घरु चूल्है माँटी कै।	इंटिंटि की ओक मट्टि पोयि्य। (घर घर में मिट्टी का चूल्हा होता है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
३९६. घरु घरु देखों, एक ही लेखौ।	इंटिंटा तिरिगि अर्द्ध चेसुकोवालि। (घर घर में घूमकर समझना चाहिए)
३९७. घाघ बात आप मन गुनहीं। ठाकुर भगत न मूसर घनुही ।।	भाग्यवंतुनि भक्ति कोंग भक्ति ।। (भाग्यवान की भक्ति बगुले की भक्ति के समान है)
३९८. घायल की गति घायल जानै, दर्द न जाणै कोइ।	दिगिते गानि लोतु तेलियदु। (उतरे बिना गहराई मालूम नहीं होती)
३९९. घाव पर नमक छिड़कना।	पुंडुमीद कारं चल्लिनट्लु। (घाव पर मसाला छिड़कना)
४००. घास पर आग नहीं लगती ?	गड्डि कि निप्पंटदा ? (घास में आग नहीं लगती ?)
४०१. घी समारै रसोइ, नाँमु बहू को।	वंटवानि वंटकानिकि इंटिवारिकि पेरु। (रसोई के पकवानों से घर वाले का नाम होना)
४०२. घोड़ा घास से यारी करे तो खाए क्या ? या घोड़ा घास नहीं खाए तो क्या खाता है ?	गुर्रमु गड्डि तिनक मरेमि तिंटुंदि ? (घोड़ा घास नहीं खाए तो क्या खाता है ?)
४०३. घोड़े को देखकर मेंढकी नाल ढुकाना चाहती है।	पुलिनि चूचि नक्क वात पेट्टुकोन्नट्लु। (बाघ को देखकर सियार अपने बदन को जलाना)
४०४. घोड़े को लात और आदमी को बात।	मनिषि कोक माटा, कुक्क कोक देब्बा। (आदमी के लिए एक बात, कुत्ते के लिए एक लात)
४०५. घाघरी को साख नजीक हार ज्याय।	भार्य इंटिवारु स्वंत चुट्टालु तल्लि इंटिवारु दूरपु चुट्टालु; तंड्रि इंटिवारु सह वारसुलु कनुक विरोधुलु अवुतारु। (पत्नी के घरवाले खुद के नातेदार, माँ के घरवाले दूर के नातेदार और पिता के घरवाले होने के कारण विरोधी होते हैं)

च

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
४०६. चटका मघा पटकि गा ऊसर । दूध—भात में परिगा मूसर ।।	मख पुब्बलु वरुपिस्ते महाभयं ।
४०७. चढत जो बरसै चित्तरा । उतरत बरसै हस्त । कितनौ राजा डाँड ले, हारे ना गिरहस्त ।।	हस्तलो आदि पंटा, चित्तलो चिवरि पंटा । (हस्ता नक्षत्र में शुरूआत का फसल और चित्ता नक्षत्र में अंत का फसल व्यर्थ है)
४०८. चन्दन विष व्यापत नहीं लपटे रहत भुजंग ।	अग्गिकि चेदलंटवु । (आग को दीमक नहीं लगते)
४०९. चमके पच्छिम उत्तर ओर । तब जानो पानी है जोर ।।	पडमर मेरिसिन पदि घडियलकु वान । (पश्चिम दिशा में बिजली चमकने के दस घड़ी के बाद वर्षा होगी)
४१०. चलते चोर लंगोटी लाभ ।	चच्चिन वानि पेंड्लिकि वच्चिंदे कट्णम् । (मरते गरीब की शादी में जो भी पैसा मिले वही दहेज है)
४११. चलते बैर के आर लगाना ।	कूसे गाडिद वच्चि मेसे गाडिदनु चेरचिंदट । (चिल्लाने वाला गधा आकर चरने वाले गधे को बिगाड़ दिया)
४१२. चली छाछ को नागरी, पाछेपीठि कै मोरि ।	अवुसरानिकि पोइ दय चूपिनट्लु । (अपना काम निकालने जाकर दूसरों पर दया दिखाना)
४१३. चार दिन क़ी चाँदनी, फिर अंधेरी रात ।	चीकटि कोन्नाल्लु, वेन्नेल कोन्नाल्लु । (अंधेरा कुछ दिनों के लिए और उजाला कुछ दिनों के लिए या आदिवारं नाडु अंदलं, सोमवारंनाडु जोलि । (रविवार को पालकी, सोमवार को झोली)
४१४. चार कवर भीतर तब देवता पीतर ।	अप्पुचेसि पप्पु कूडु । (उधार लेकर स्वादिष्ट भोजन करो)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
४१५. चारि पैसा की हाँडिया फूटी, परि कुत्ता की जाति पहचानी गई।	डब्बु पोयिना बुद्धि तेलिसि वच्चिंदि। (पैसा खर्च होने पर भी अकल का तो पता चला)
४१६. चारि महीना ताल कौ, चारि महीनौ हाल कौ।	सुखदुःखालु, वेलुगु-नीडलु, भगवंतुनि लीललु। (सुख-दुख, अंधेरे उजाले, भगवान की लीलाएँ हैं)
४१७. चाहे भगवान वरदान भले ही करे, पुजारी वरदान नहीं करता।	देवुडु वरमिच्चिना पूजारि वरमिव्वडु। (भगवान वर प्रदान करे, लेकिन पूजारी वर नहीं देता है)
४१८. चिकना घड़ा।	दुन्नपोतुमीद वर्षं कुरिसिनट्लु। (भैंसे पर वर्षा होने के सहरा)
४१९. चिकना मुँह पेट खाली।	विग्रहपु पुष्टी, नैवेद्य नष्टी। (रूप में हष्टपुष्ट है पर खाना कुछ नहीं खा सकता)
४२०. चिड़ा चिड़ी की लड़ाई, चाल चिड़ा में आए।	आलु मगल मध्य कोट्लाट अद्दमीद पेसरगिंज पडिनंत सेपु। (पति-पत्नी के बीच का झगड़ा उतना ही समय तक का है जितना कि आइने पर मूँग का दाना गिरकर टिकता है)
४२१. चिड़यों की मौत, गँवारों की हँसी	पिल्लिकि चेलगाटं, एलुककु प्राण संकटं। (बिल्ली के लिए खेल, चूहे के लिए प्राणसंकट)
४२२. चिराई में कौआ, मनाई में नौआ (धूर्त हैं)	पक्षुल्लो काकि, मनषुल्लो मंगलि घूर्तुलु। (पक्षियों में कौआ, आदमियों में नाई धूर्त है)
४२३. चिराग तले अंधेरा।	दीपमु मुड्डिक्रिंदने चीकटि। (चिराग के नीचे अंधेरा)
४२४. चित्रा बरसे तीन जाय। मेथी, मास, उखार॥	चित्तलो चल्लिते चिट्टेडू कावु। (चित्रा नक्षत्र में बोवाई करें तो मुट्ठी भर भी दाने पैदा नहीं होते)
४२५. चीजु गँमावौ आयनी, चारै गारी दे। या चारु बिचरौ कहा करै, जब धनी खबरि न लेइ॥	ताने पोगोट्टुकोनि दोंगमीद पेडिते दोंगेमि चेयगलडु? (खुद खोकर चोर पर इलजाम लगाए तो वह क्या करे)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुग की लोकोक्तियाँ
४२६. चील के घोंसले में माँस कहाँ।	ग्रद्द गूटिलो माँसमेक्कड ? (चील के घोंसले में मांस कहाँ है)
४२७. चींटी के पर निकले।	चीमकु रेक्कलु वच्चिनट्लु। (जैसे चींटे के पर निकल आए हों)
४२८. चुल्लू भर पानी में डूब मरना।	दोसेडु नीललो मुनिगि चच्चुट। (चुल्लू भर पानी में डूब मरना)
४२९. चूहे का बच्चा बिल ही खोदता है।	एलुक पिल्ल गादिकि कन्नं पेट्टिनट्लु। (चूहे का बच्चा कुठले में छेद करता है)
४३०. चेजे कह मनै चलार देख। ब्याह कह मनै माडर देख	इल्लु कट्टि चूडु पेंड्लि चेसि चूडु (घर बनाके देखो, शादी करके देखो)
४३१. चेरी लातन कूटिऐ, दहयौ गुसायन खाइ।	अपकारिकि नुपकारमु। (हानि पहुंचाने वाले की सहायता)
४३२. चैत क पछिवाँ भादौं जला। भादौ पछिवाँ माघ का पला॥	चैत्रंलो गालि बागा वीस्ते भाद्रपदंलो वर्षं कुरुस्तुंदि। भाद्रपदंलो पडमर गालि वीस्ते ओडगंड्ल तप्पवु। (चैत में तेज हवा चले तो पानी बरसेगा। भादों में पश्चिमी हवा चले तो ओले जरूर पड़ेंगे)
४३३. चैत मास जो बीज बिजोवै। भरि बैसाखहि टेसू धावै॥	चैत्र मासंलो मेरुपुलु मेरिस्ते वैशाखंलो वर्षं कावलसिनंत। (चैत में बिजली चमके तो वैशाख में काफी वर्षा होती है)
४३४. चोर का साथी गिरहकट।	सत्संगतिकि सज्जनुले समकूडुतारु। (सत्संगती के लिए सज्जन ही इकट्ठे होते हैं)
४३५. चोर की दाढ़ी में तिनका।	गुम्मडिकाय दोंगंटे बुजालु तडुमुकोन्नट्लु। ("कुम्हाडे का चोर" कहा गया तो अपने कंधों का टटोलना)
४३६. चोरकी माँ कोठी में मूंड देकर रोती है	दोंग तल्लिकि एड्डव भयमु। (चोर की माँ को रोने से डर)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
४३७. चोर के पैर नहीं होते ।	अवद्धानिकि अंतु लेदु । (झूठ का अंत नहीं)
४३८. चोर को चोर ही पकड़ सकता है।	दोंगनु दोंगे पट्टगलडु । (चोर को चोर ही पकड़ सकता है)
४३९. चोर चोर मौसेरे भाई।	दोंगनु दोंग एरुगुनु । (चोर चोर को जानता है)
४४०. चोर जुवारी, गँठकटा, जार और नार छिनार। सौ सौगंध खाय जो, घाघ न करु इतबार ।।	दोंग, जूदगाडु, व्यभिचारि वंदलादि ओट्लु पेट्टिना नम्मरादु । (चोर, जुवारी और व्यभिचारी चाहे सैकड़ौ सौगंध खाएँ फिर भी उन पर विश्वास नहीं करना चाहिए)
४४१. चोर से कहे चोरी कर, और शाह से कहे जागते रह।	दोंगकु तलुपु तीसि दोरनु लेपिनट्लु । (चोर के लिए दरवाजा खोलकर मालिक को जगाना)
४४२. चोरी का माल मोरी मे।	दोंग सोम्मु ए पनिकी अच्चिरादु । (चोरी का माल किसी काम में नहीं आता)
४४३. चोरु वै तौ पिटतौ, खाँम तौ न देखैं।	दोंगनु बंधिचिनप्पुडु चूचारु कानि दोंगिलिंचिनपुडु कादु । (चोर को पकडते समय देखा पर चोरी करते समय नहीं)
४४४. चोर न कह चोरी कर, साहूकार नै।	दोंगकु तलुपु तीसि दोरनु लेपिनट्लु । (चोर के लिए दरवाजे खोलकर मालिक को जगाना)
४४५. चंदन की चुटकी भली, गाड़ी भला न काठ।	गंगि गोवुपालु गंटेडैननु चालु, कडिवेडैननेमि खरमु पालु । (गाय का दूध चम्मच भर भी काफ़ी है। गधे का दूध घड़ा भर भी हो तो क्या फायदा ?)

छ

४४६. छःग्रह एकै राशि बिलोकै। महाकाल को दीन्हो कोकौ।	षड्ग्रहालू ओके राशिलो एकत्रितमैते करुवु काटकाल कावालनि तेच्चि पेट्टुकुन्नट्ले । (यदि छहों ग्रह एक ही राशि में एकत्रित हो जायँ तो अकाल को चाहते हुए निमंत्रण देकर लाने के समान है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
४४७. छछूंदर के सिर में चमेली का तेल।	मिंग मेतुकु लेदु, मीसालकु संपेंग नूने। (खाने के लिए चावल का कण तक नहीं, मूछों के लिए संपंगी का तेल)
४४८. छटाँक चून चौबारे में रसोई।	पेरु गोप्पा, ऊरु दिब्बा। (नाम बड़ा, गाँव में कूड़ा करकट)
४४९. छप्पर का फूस नहीं, ड्योढी पर नाच।	मिंग मेतुकु लेदु, मीसालकु संपेंग नूने। (खाने के लिए चावल का कण तक नहीं, मूछों के लिए संपंगी का तेल)
४५०. छाछि माँगन चली पीठिपीछे धोना।	ओकटि चेय बोयि मरोकटि चेसि वच्चिनट्लु। (एक काम करने जाकर कुछ और ही काम करके लौटना)
४५१. छाँडे बने न संग्रहै, ज्याँ कुल भाहि कपूत।	कलिगिनदि काल त्रन्निते तिरिगि रादु। (मिली हुई चीज को अस्वीकार करें तो फिर कभी नहीं मिलती)
४५२. छींकते ही नाक कटी।	तुम्मिते ऊडे मुक्कु एन्नाल्लुंटुंदि। (छींकने पर ही नाक गिर जाय तो वह कितने दिन तक रहेगी)
४५३. छुरी खरबूजे पर गिरे तो खरबूजे की हानी, खरबूजा छुरी पर गिरे तो खरबूजे की ही हानि। या छुरी ककड़ी पर पड़े अथवा ककड़ी छुरी पर।	मुल्लुवच्चि अरटाकु मीद पड्डा, अरटाकु मुल्लु मीद पड्डा अरटाकुके मोसं। (काँटा केले के पत्ते पर गिरे, या केले का पत्ता काँटे पर गिरे; तो केले के पत्ते का ही नुकसान है)
४५४. छूछी हाँडी, बाजे टन टन।	एमीलेनि आकुलु एगिरेगिरि पडताइ। (खाली पत्ते उड़ उड़ कर गिरते हैं)
४५५. छोटा मुँह बड़ी बात।	पिट्ट कोंचें, कूत घनं। (छोटी चिड़िया, बोली घना)
४५६. छोटे मुँह बड़ी बात।	चिन्न नोटिकि पेद्द माट। (छोटे मुँह को बड़ी बात)
४५७. छोटी सींग और छोटी पूँछ। ऐसी बरदलि हौ बे पूछ।	चिन्न कोम्मुलु, चिन्न तोक गल एद्दु चाला मंचिदि। (छोटे सींग और छोटी पूँछ वाली बैल बहुत अच्छी होती है)

ज

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
४५८. जइ किर खज्जइ मांस ता बज्झइकिं गले।	मांसं तिंटामनि एमुकलु मेडकु कट्टकोंटामा ? (यदि मांस भी खाते हों तो क्या हड्डियों को गले में बाँधते हैं ?)
४५९. जग ईश्वर का, मुलक बादशाह का।	शिवुनि आज्ञ लेक चीमैना कुट्टदु। (शिव की आज्ञा के बिना चींटी भी नहीं काटती)
४६०. जग में देखे रावरे, मुख देखे की प्रीति ।।	मुख स्तुति लोकंरीति। (मुख स्तुति करना लोक की रीति है)
४६१. जनम के दुखिया नाम सदा सुख।	पेरु गंगानम्मा, तागबोते नील्लु लेवु। (नाम गंगानम्मा, पीने गए तो पानी नहीं)
४६२. जब तक साँस तब तक आस	उच्छ्वास निःस्वासालुन्नंतवरकू आशे। (जब तक उच्छ्वास और निःस्वास चलती रहेगी, तब तक आशा बनी ही रहती है)
४६३. जब लौं संपति प्रीति है, विपति पड़े अन रीति।	आपत्कालंलोने निजमैन मैत्रि तेलुस्तुंदि ।। (आपत्ति के समय में ही सच्ची मित्रता का पता चलेगा)
४६४. जबरदस्त कौ ठेंगा सिर पर।	नोरु कलवारिदे राज्यं। (जो ज्यादा बोल सके, उसी का जमाना है) या बडिते गलवानिदे बर्रे। (जिसकी लाठी, उसकी भैंस)
४६५. जबरदस्त मारे और रोने न दे।	कोट्टि नोरु मूइंचिनट्लु। (मार कर मुँह बंद कराना)
४६६. जब वह देना चाहता तो, छप्पर फाड़ कर देता है।	इष्टमुंटे दार्लु मेंडु। (इच्छा हो तो कितने ही रास्ते निकल सकते हैं)
४६७. जब हम तूँ राजी तउ का करि हैं काजी।	मनं मनं ओकटैते बैटवारेमिचेस्तारु ? (जब हम सब एक हो तो बाहरवाले क्या कर सकते हैं ?)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
४६८. जल की मछली जल में ही भली।	एक्कडि वस्तुवु अक्कडुंटेने अंदं। (प्रत्येक वस्तु का अपने स्थान पर रहने से ही शोभा है)
४६९. जल में रह कर मगर से बैर ?	नीटिलो उंडि मोसलितो वैरमा ? (पानी में रहकर मगर से वैर ?)
४७०. जले पाँव की बिल्ली।	कालुकालिन पिल्लि। (जले पाँव की बिल्ली)
४७१. जल्दी का काम शैतान का।	आत्रगानिकि बुद्धि मट्टु। (जल्द बाज की बुद्धि मंद होती है)
४७२. जस दूल्हा तस बनी बरात।	गंतकु तगिन बोंत।
४७३. जहाँ ऊख नहीं, वहाँ अरण्ड प्रधान।	ए चेट्टूलेनि चोट आमुदं वृक्षं महावृक्षमु। (जहाँ कोई पेड़ नहीं है, वहाँ अरण्डी का वृक्ष ही प्रधान वृक्ष है)
४७४ जहाँ गाय, वहाँ गाय का बछड़ा।	तल्लेक्कडो, पिल्ला अक्कडे। (जहाँ माँ रहती है, वहीं बेटी भी रहती है)
४७५. जहाँ गुड़ होगा वहीं चींटे होंगे।	बेल्लमुन्न चोटे ईगलु मुसुरुताइ। (जहाँ गुड़ होगा, वहीं मक्खियाँ इकट्ठी हो जाती हैं)
४७६. जहाँ गुल है, वहाँ काँटा भी है।	पुव्वेक्कडो, मुल्लू अक्कडे। (जहाँ फूल है, वहीं काँटा भी)
४७७. जहाँ चार बासन होंगे, वहाँ खटकेंगे भी।	नलुगुरू एक्कड चेरिते अक्कडे कोट्लाट। (चारों जहाँ इकट्ठा होते हैं, वहीं झगड़ा)
४७८. जहाँ चारि काछी, उहाँ बात आछी।	नलुगुरु पेद्दलू चेरिन चोटे मंचि माटलु जरुगुताइ। (जहाँ चारों सज्जन इकट्ठे होंगे, वहीं अच्छी बातें चलती हैं)
४७९. जहाँ चारि, कोरी, उहाँ बात बोरी।	नलुगुरु दुष्टुलू कूडिते व्यर्थप्रसंगं। (चारों दुष्ट मिल जायँ तो बेकार की बाते होंगी)
४८०. जहाँ चाह, वहाँ राह।	मनसुंटे मार्गमुंदि। (मन हो तो रास्ता जरूर है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
४८१. जहाँ जाय भूखा, तहाँ पड़े सूखा।	पापि समुद्रानिकि पोइना मोकाल्लदाका नीरु। (पापी आदमी समुंदर में भी जाय तो घुटनों तक का पानी)
४८२. जहाँ न पहुँचे रवि, तहाँ पहुचे कवि।	रवि गांचनिचो कवि गांचुने कदा। (यदि सूरज देखे नहीं तो कवि तो देखता है)
४८३. जहाँ भगवान है, वहीं मंदिर।	देवुडेक्कडो गुडी अक्कड़े। (जहाँ भगवान, वहीं मंदिर भी)
४८४. जहाँ मुर्गा नहीं होता, वहाँ क्या सबेरा नहीं होता?	ना कोडि लेकपोते तेल्लवारदा? (मेरा मुर्गा नहीं हो, तो क्या सबेरा नहीं होगा)
४८५. जान न पहचान्, चारि महीना साझे रहि जान दै।	ऊरू पेरू एरुगनिवानितो सहवासं चेस्ते सर्व नाशनं। (जिसका नाम, गाँव तक नहीं जानते, उससे यारी करें, तो सत्यानाश होगा)
४८६. जाके पाँय न फरी बिवाई। सो क्या जाने पीर पराई॥	दिगितेगानि लोतु तेलियदु। (उतरे बिना गहराई का पता नहीं लगता है)
४८७. जाके सिर पै बोझ है, सोई करै निबाह।	मोसेवानिकि गानि तेलियदु कावडि बरुवु। (ढोने वाले को ही भार का पता लगता है)
४८८. जाकौ बनियाँ यारु, वाइ दुसमनु का दर द्वार।	कोमटिवानितो माटा, कोतितो सय्याटा। (बनिए से बात करना बंदर से खेल के बराबर है)
४८९. जार कहै सुन जाटनी, इसी गाँव में रहना। ऊँट बिलैया ले गयी, हाँ जूँ हाँजू करना॥	पदुगुराडुमाट पाटयै धर जेल्लु। (संसार में दस आदमियों की बात को ही मान्यता मिलेगी)
४९० जात में कौन बड़ा, कौन छोटा।	जातिलो पेद्द एवरु? चिन्न एवरु। (जाति में कौन बड़ा? कौन छोटा?)
४९१. जा घरु नाएँ बड्डा, सो घरु डिग्गमडिग्गा।	पेद्दिंटिकि गौरवालु मेंडु। (बड़े घर की अनेक प्रशंसाएँ)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
४९२. जानने वाले के हजार रास्ते ढूंढने वाले का एक।	तेलिसिनवारिकि वेय्यि दारुलु, वेतिकेवानिकि ओकटे दारि। (जानने वाले के लिए हजार रास्ते ढूंढने वाले के लिए एक ही रास्ता)
४९३. जान बची लाखों पाए।	ब्रतिकि उंटे बलुसाकु तिनि उंड वच्चु। (जिंदे हों तो पत्ते भी खाकर रह सकते हैं)
४९४. जान बची लाखों पाए।	ऊपिरि उंटे उप्पु अम्मुकोनि ब्रतुकवच्चु। (दम रहे तो नमक बेच कर भी जी सकते हैं)
४९५. जितना आटा उतनी रोटी	पिंडि कोद्दी रोट्टे (जितना आटा, उतनी रोटी)
४९६. जितना गुड़ उतना मीठा। या जितना चादर हो, उतने ही पैर पसारो।	बेल्लं कोद्दी तीपि। (जितना गुड़ उतना मीठा)
४९७. जितने लोग उतने राय।	पुर्रैकोक बुद्धि जिह्व कोक रुचि। (प्रत्येक मस्तिष्क की अलग अलग बुद्धि, प्रत्येक जीभ की अलग अलग रुचि)
४९८. जिन ढूँढा तिन पाइया गहरे पानी पैठ।	तिंटेगानि रुचि तेलियदु, दिगितेगानि लोतु तेलियदु। (खाए बिना रुचि मालूम नहीं होती उतरे बिना गहराई का पता नहीं लगता)
४९९. जिसका ब्याह उसी के गीत।	ए रोटि दग्गर आ रोटि पाटे। (जिस ऊखले के पास उसी का गाना)
५००. जिसका हाथ लोई उसका सब सोई।	डब्बुन्नवाडिदे राज्यं। (पैसे वाला का ही जमाना है)
५०१. जिसकी गोद में बैठना, उसकी दाढ़ी खसाटना।	तिन्निंटिवासालु लेक्कपेट्टुट। (जिस घर में खाना, उसी के बाँस गिनना)
५०२. जिसकी लाठी उसकी भैंस।	नोरुन्नवानिदे राज्यं। (जो ज्यादा बोल सके, उसी का जमाना)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
५०३. जिसके हाथ डोई, उसका सब कोई। या जिसकी गाँठ में पैसा उसी के सब यार।	कलिगिन वारिकि अंदरू चुट्टाले। (पैसे वाले के सब नातेदार ही है)
५०४. जिसको पिया चाहे वही सुहागिन।	मगड़ुवल्लनम्मनु मारी वल्लदु। (जिसको अपना पति प्यार नहीं करता, उसको भूत भी प्यार नहीं करते)
५०५. जिस डाल पर बैठे, उसी को काटे।	तानु कूर्चुन्न कोम्मने नरुक्कोन्नट्लु। (उसी डाल को काटना जिसपर खुद बैठे हों)
५०६. जिस थाली में खाना, उसी में छेद करना। या जिस बर्तन में खाना, उसी में छेद करना।	तिन्निंटिवासालु लेक्किंचिनट्लु। (जिस घर में खाना, उसी के बाँस गिनना)
५०७. जिस बढ़ई के पास औजार नहीं वह किससे लकड़ी चीलेगा।	गोड्डलि लेकुंटे कट्टेलु चील्चेदेला। (कुल्हाड़ी नहीं, तो लकड़ी को कैसे काटा जाय।
५०८. जीभ भी जली स्वाद भी न आया।	डब्बू पोयि शनी पट्टिनट्लु। (पैसा भी गया और शनी ने भी ग्रस्त करलिया)
५०९. जूठ्या हाथ से गंडकडो की कन्या मारै।	एंगिलि चेत्तो काकुलकुं कूडा विसरकूडदु। (जूठे हाथ से कौओं के लिए भी खाना नहीं देना चाहिए)
५१०. जेकर उँचा बैठना, जोकर खेत निचान। ओकर बैरी का करै, जेकर मीत दीवान॥	गोप्पवारितोसहवासं शीलवंतुलैना आप्त मित्रुलु गल वानिकि शत्रुवुलेंतमदैतेनेमि ? (बड़ों के साथ व्यवहार और सज्जन मित्र मंडली रखने वाले के जितने भी शत्रु होंगे, तो क्या बात है)
५११. जेठ मास जो तपै निरासा, तो जानो बरखा की आसा	ज्येष्टलो एंड एक्कुवैते वर्षं तप्पदु। (जेठ के महीने में धूप ज्यादा हो, तो वर्षा जरूर होगी)
५१२. जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ासी, कहहु तूल केहि लेखे माहीं।	तलुपुल म्रिंगेवानिकि अप्पडालु लोटलोट। (किवाड़ों को निगल जाने वाले के लिए पापड़ क्या चीज है ?)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
५१३. जेहे हाथ, उहे हाथ।	चेतिकि चिक्किते सोम्मु गट्टिदि। (हाथ में आया हुआ पैसा ही सुरक्षित है।)
५१४. जैसा आया वैसा गया।	एला वच्चाडो, अलागे पोयाडु। (जैसा आया, वैसा गया)
५१५. जै दिन जेठ बहे पुरवाई। तै दिन सावन धूरि उड़ाई ॥ या जब चेठ बहै पुरवाई तब सावन धूल उड़ाई ॥	ज्येष्टंलो तूर्पुगालि, श्रावणंलो घूलि घुमारं। (जेठ में पूरब की हवा और सावन में आँधी चलने लगतीहै)
५१६. जैसा राजा, वैसी प्रजा।	यथा, राजा, तथा प्रजा।
५१७. जैसी तेरी कामरी, वैसे मेरे गीत।	ए एंडका गोडुगु। (जैसी धूप वैसी छतरी)
५१८. जैसी बहै बयार, तब तैसी दीजै पीठ।	ए गालिकि आ चाप एत्तिनट्लु। (हवा की रुख के अनुसार 'पाल' उठाना)
५१९. जैसेई कंता घर रहे, तैसेई रहे बिदेस।	वीरपत्निकि भर्त एक्कडुन्ना संतोषमे। (वीर पत्नी का प्रिय कहीं भी हो, वह संतुष्ट रहती है)
५२०. जैसे देखो चोल्हरा, तैसोई बन्यो बनाव।	बट्ट कोट्टी कुट्टु। (कपड़े के अनुसार सिलाई)
५२१. जैसौ देखौ साँथरो, तैसो पाइ पसारि।	चापनुचूचि काल्लु चाचालि। (चटाई को देख कर ही पाँव पसारना चाहिए)
५२२. जो कहु मग्घा बरसै जल, सब नाजों में होगा फल।	मखा, पुब्बलु करुवैते महाक्षामम्। (मघा और पुब्बा में वर्षा कम हो तो महाक्षाम होगा। या मख पुब्बलु ओरुपैते मा अन्न सेद्यं मा सेद्यं मन्ने। (मघा और पुब्बा में वर्षा कम हो, या बिलकुल न हो, तो मेरी और अपने भाई की खेती का नाश ही होगा)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
५२३. जो गदहा हर जोतिऐ, तो क्यों लीवै बैल।	गाडिद पोलं दुन्निते एद्देंदुकु ? (गधा ही खेत को जोते तो बैल किस काम का ?)
५२४. जो जस करै सो तस फल चाखा।	एवरु चेसिन कर्म वारनुभविंचक तप्पदु। (प्रत्येक को अपने कर्म का फल भोगना पड़ता है)
५२५. जो जागे सो पाए।	मेल्कोन्नवारे पोंदुतारु। (जो जगे रहते हैं, वे ही पाते हैं)
५२६. जो जोगी था सो उठ गया, आस नहीं भभूत।	तात चस्ते बोंत नादि। (दादा मरे तो बिस्तर मेरा)
५२७. जोगी जोगी लड़े खप्पर का नुकसान।	जोगी जोगी रासुकुंटे बूडिद रालुतुंदि। (जोगी जोगी घिसें तो भस्म गिरेगा)
५२८. जो चिअ बालई गावी सो चेव य अज्जुणो होय।	आवुलु मल्लिंचिनवाडे अर्जुनुडु। (जो गाय वापस लावे, वही अर्जुन है)
५२९. जो जस करै सो तस फल चाखा।	एवरु चेसिन खर्म वारनुभविपक तीरदु। (प्रत्येक को अपने कर्म का फल भोगना ही पड़ेगा)
५३०. जोता को काँटा बुवै ताहि बोव तू फूल।	अपकारिकि नुपकारमु। (अपकारी की सहायता करना चाहिए)
५३१. जो दिन अनंद सों पीबन कौ फल सोई।	सुखपु दिनाले जीवित घडियलु। (सुख के दिन ही जीवन में मुख्य हैं)
५३२. जो बदरी बादर माँ खमसे, कहैं मड्डुरी पानी बरसै।	उरिमिते वान कुरियक मानदु। (बादल गरजें तो वर्षा जरूर होगी)
५३३. जो बरसेगा उत्तरा। नाज न खावै कुत्तरा।	उत्तर चूचि एत्तर गंपा। (उत्तरा नक्षत्र को देखके खेतीबारी का काम शुरू कर दो)
५३४. जो बरसे पुनर्वस स्वाती। चरखा चले न बोले ताँती	पुनर्वसु स्वाति वानलतो प्रत्ति सर्वनाशनं। (पुनर्वसु और स्वाती में वर्षा हो तो कपास का सत्यानाश हो जाता है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
५३५. जो बोवोगे, वही काटोगे।	ए वित्तनं नाटिते अदे पंट। (जो बोवोगे, वही फसल)
५३६. जोहै दाझयौ दूध की, पीवै फूँके छाँछ।	अनुभविस्ते गानि तेलिसिरादु। (अनुभव किए बिना मालूम नहीं होता)
५३७. ज्यों ज्यों भीजैं कामरी, त्यौं त्यौं भारी।	कंबलि तडिचिन कोद्दी बरुवु। ('कंबल भीगते भीगते भारी होता जाता है)
५३८. जंगल में मोर नाचा किसी ने न देखा।	अडवि काचिन वेन्नेल। (जंगल की चाँदनी)
५३९. जीमड़ली मेरी आलपताल, ठोल सह मेरो लाडलो कपाल।	तल्लिकि तगिन बिड्डा, इंटिकि तगिन पंदिरि। (जैसी माँ वैसी बेटी; जैसा घर वैसा शामियाना)

झ

५४०. झरबेरी के जंगल में बिल्ली शेर।	ए चेट्टू लेनि चोट आमुदं वृक्षमें महावृक्षमु। (जहा कोई वृक्ष नहीं है, वहाँ अरंडी का वृक्ष ही महावृक्ष है)
५४१. झूठ के पाँव नहीं होते।	अबद्धालकि अंतु लेदु। (झूठ का अंत नहीं है)
५४२. झूठा खाते है मीठे के लालच।	तीपिकाशपडि एंगिलिकूडु तिन्नट्लु। (मीठे के लालच में झूठा खाना खाना)
५४३. झूठौ खइ ऐ मीठें कूं।	दरिद्रानिकि एंगिले तीपि। (दरिद्रता में झूठा ही मीठा है)
५४४. झूठ बोलना और खाक खाना बराबर।	अबद्धमाडिते गड्डि तिन्नट्ले। (झूठ बोलें तो घास खाने के बराबर है)

ट

५४५. टट्टी की ओर से शिकार खेलना।	दोड्डि दारिनुंची कोट्लाडुट। (पीछे के रास्ते से लड़ना)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
५४६. टट्टू मारें ताजी त्रास। (काजी मारै तुर्की कापै)	मंत्रालकु चिंतकायलु रालुना ? (मंत्रों से इमली गिरेंगे ?)
५४७. टुकड़ा देदे बछड़ा पाल्या सींग हुआ जब मारण चाल्या	पिल्लि पिल्लनु प्रेमगा पेंचिते पेद्दै तनने कोरिकिनट्लु। (बिल्ली के बच्चे को प्यार से पाला जाय, तो उसके बडे होने पर मालिक को काटता है)

ठ

५४८. ठाली नाइन मूँडै पटा।	पनिलेनि मंगलि पिल्लि तल गोरिगिनट्लु। (जैसे बेकार का नाई बिल्ली की हजामत करता है)
५४९. ठेस लगल पहाड़ पर, कोडी धर सिलवट।	चेरुवु मीद कोपं वस्ते मुड्डि कडुक्कोवडं मानि वेसिनट्लु।
५५०. ठोकर लगी पहाड की, तोडे घर की सिल।	मुड्डिमीद तंते मूति पल्लु रालिनट्लु। (पीछे लात मारी, तो मुँह के दाँत निकल जाना)

ड

५५१. डायन भी अपने बच्चे को नहीं खाती।	काकिपिल्ल काकिकि मुद्दु। (कौए का बच्चा कौए को प्यारा होता है)
५५२. डूबा वंश कबीर का उपजे पूत कमाल।	सुपुत्रा कोंप पीकरा। (सुपुत्र वंश का नाश करता है)
५५३. डुबती नाव को पार लगाना।	मुनिगे नावनु ओड्डु चेर्चिनट्लु। (जैसे डूबती नाव को पार पहुँचाना)
५५४. डूबते को तिनके का सहारा।	मुनिगेवानिकि गड्डिपोच आधारं। (डूबते को तिनके का सहारा)
५५५. डेढ़ बकाइन देसिए, मीयाँ बैठे बाग।	सोमारितनं मोदलुकु चेटु। (आलसीपन बहुत खतरनाक है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
५५६. डेढ़ सुहारी छाक में, परसे ही ते गीत।	अन्निदानमुललोकी अन्नदानमु मेलु। (सभी दानों में अन्नदान श्रेष्ट है)

ढ

५५७. ढाक चढ़त बारी गिरै करै राव सों रोस।	अलपुडेलिल अधिकारितो विरोधं पेट्टुकुन्नट्लु। (अल्प का अपने अधिकारी से वैर करना)
५५८. ढिंढोरा शहर में, लड़का बगल में।	बिड्डनु चंकनेत्तुकोनि ऊरंता तिरिगिनट्लु। (बच्चे को बगल में उठा कर शहर भर उसी की तलाश में चक्कर काटना)
५५६. ढोली बोलै जाय अकास। अब नाहीं बरखा कै आस॥	तूरीगलु आकाशान, एगिरिते वर्षं कुरुस्तुंदि। (बरै आसमान में उड़े तो वर्षा होगी)

त

५६०. तन बदन, ओला हो जाना।	ओल्लु मंचैपोइनट्लु। (तन का बरफ हो जाना)
५६१. तन बदन की सुधि न रहना।	ओल्लु तेलियक पोवुट। (तन की सुधि न रहना)
५६२. तन सुखी तो मन सुखी।	ओल्लु बागुंटे मनसु बागुंडुनुट। (तबीयत ठीक हो तो मन भी ठीक रहेगा)
५६३. तपा जेठ मे जो चुइ जाय। सभी नखत हलके परिजायँ।	मंडुवेसंगिलो (ज्येष्ठ मासंलो) वर्षं कुरिस्ते तिरिगि वर्षं अरुदु। (गर्मी के दिनों में वर्ष हो, तो फिर वर्षा बहुत कम होती है
५६४. तपै मिरगसिर जोय। बरखा पूरन होय॥	मृगशिरलो एंड तपिस्ते वर्षं तप्पदु। (मृगसिरा में कड़ी धूप हो, तो वर्षा जरूर होगी)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
५६५. तलवार का घाव भर जाता है, बात का घाव नहीं भरता।	गायमुनु सहिंपवच्चु गानि, माटनु सहिंचुट कष्टमु । (घाव की पीड़ा सही जा सकती है पर बात को सहना कठिन है)
५६६. ताली दोनों हाथों से बजती है।	रेंडु चेतुलू कलिस्तेने चप्पट्लु म्रोगुताइ। (दोनों हाथों के मिलने पर ही तालियाँ बजती हैं)
५६७. तिनके की ओट पहाड।	कोंडंत रायिकि सूदंत दारमु। (पहाड़ जैसे पत्थर के लिए सुइ भर धागा)
५६८. तिनके को पहाड कर दिखाना।	गोरंतनु कोंडंत चेसि चूपुट। (नाखून की सी चीज को पत्थर जैसे करके दिखाना)
५६९. तिर्‌या चरित्रं, पुरुषस्य भाग्यं विधौ न जानति कृतो न रानी।	आडदानि हृदयं, पुरुषुल भाग्यं ब्रह्मकैना तेलियरानिदि। (स्त्री का हृदय और पुरुष का भाग्य: इनका पता ब्रह्मा को भी नहीं चलता)
५७०. तीतर बरनी बादरी, रहै गगन पर छाय। कहै घाघ सुन भड्डरी, बिन बरसे ना जाय।	आकाशंलो नीलि मेघालु व्यापिस्ते वर्षं तप्पदु। (आकाश पर नीले बादल छाएँ तो वृर्षा जरूर होती है)
५७१. तीतर बरनी बादरी, विधवा काजर रेख। ई बरसे वह घर करे, उह में मीन ना मेख॥	वेधव मुंड मोहान्नि बोट्टु पेट्टिनट्लु। (जैसे विधवा के मुँह पर तिलक लगाना)
५७२. तीन तिकट महा विकट।	मुग्गुरु कलिस्ते मूडु मुक्कलैनट्लु। (तीन व्यक्ति मिल जायँ तो सर्वनाश हो जाना निश्चित है)
५७३. तीन फंकिया टीका, मधुरी बानी। चोर चाईं इहे निसानी॥	अवतारं महायोगी, असलु चूस्ते जोगि जोगी (सन्यासी)। (महायोगी का रूप, असल में सन्यासी)
५७४. तीन बैल दो महरी, काल बैठ वा डेहरी।	इद्दरु भार्यल मोगुडु इरुकुन पड्डट्लु। (दो पत्नियों वाला तकलीफों में फँस जाता है)
५७५. तीर न सही तो तुक्का ही सही।	अंता काक कोंचेमैना सरे। (पूरा नहीं तो थोड़ा ही भला)
५७६. तुम्हारे मुँह में खाक	नो नोटलो कारं कोट्टा। (तुम्हारे मुँह में मिर्च डाला जाय)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
५७७. तुम्हारे मुँह में घी शक्कर।	नी नोट्लो पालू, पंचदारा पोय्या। (तुम्हारे मुँहमें दूध और चीनी डाला जाय)
५७८. तिल धरने की जगह न होना।	सूदि मोन पेट्टेंदुकैना चोटु लेदु। (सुई की नोंक रखने की भी जगह नहीं)
५७९. तिलों में तेल नहीं।	नुव्वुल्लो नूने लेदु। (तिलों में तेल नहीं)
५८०. तू भी रानी, मै भी रानी। कौन भरे कुएँ का पानी॥	अंदरू अंदलमेक्किते मोसेवारेवरु ? (सब पालकी पर चढ़ें तो उसको ढोने वाले कौन होंगे)
५८१. तू मुझ को, मैं तुझ को।	नीवु नाकू, नेनु नीकू आसरा। (तुम मेरे लिए और मैं तुम्हारे लिए सहारे है)
५८२. तेती पाँव पसारिए, जेती लाँबी पैर।	मंचमुन्नंता काल्लु चाचु को। (जितनी चारपाई हो, उतने ही पाँव पसारो)
५८३. तेली का तेल जले, मियाँ जी की गाँड जले।	कंदकि लेनि दुरद कत्तिपीटकेंदुकु ? (कंद (मूल विशेष) मे ही खुजली नहीं तो चाकू के लिए खुजली क्या ?)
५८४. तेली के बैल को घर ही कोस पचास	गानुग एद्दुकु इल्ले कावलसिनंत। (कोल्हू के बैल को घर ही बहुत कुछ है)
५८५. तेली जोड़े पली पली, रहमान लुढावे कुप्पा।	तंड्रि पैसा पैसा चेर्चि पेडिते कोडुकु रेंडु चेतुलतोनू दोचिनट्लु। (बाप ने पाई पाई इकट्ठा किया तो पुत्र का सारे पैसे को एक दम खर्च करना)
५८६. तेलुतौ तिलीनु में ते ई निकरै।	नुव्वुलनंचे कदा नूने वच्चेदि। (तिलों से ही तो तेल निकलता है)
५८७. तोते की तरह याद करना।	चिलुक पलुकुलु पलुकुट। (तोते की तरह बोलना)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
५८८. तोहि बवरानी का परी, तू अपनी निरबेरी।	तन्नु मालिन धर्मम् मोदलु चेड्डु बेरमु। (अपना ख्याल किए बिना धर्म किया जाए तो खुद ही खतम हो जाता है)
५८९. तंदुरुस्ती हजार नियामत।	आरोग्यमे महाग्भयमु। (आरोग्य ही महाभाग्य है)

थ

५९०. थाली फेंकी तो सिर पर ही गिरे।	इसुक पोसिना रालनंत। (धूल फेंकने पर नीचे भी न गिरना—ज्यादा भीड़ से मतलब है)
५९१. थोथा चना बाजे घना।	विग्रह पुष्टि, नैवेद्य नष्टि। (रूप तो हृष्टपुष्ट है, पर खाने में बहुत कमजोर है)

द

५९२. दखिनी कुलखिनी। माघ पूस सुलखिनी॥ (खेती के लिए दक्षिणी वायु कुलक्षिणी और वही यदि माघ, पूस में चले तो सुलक्षणी अर्थात् अच्छी है)	व्यवसायानिकि दक्षिणपु गालि मंचिदि। (खेती के लिए दक्षिणी हवा श्रेष्ठ है)
४९३. दबी बिल्ली चूहों से कान कतरवाती है।	बलवंतमैन सर्पमु चलि चीमल चेत चच्चु। (बलवान सर्प भी चींटी के द्वारा मारा जा सकता है, अर्थात् चींटी भी बड़े सर्प को मार सकती हैं)
५९४. दबे पर, सब शेर।	लोकुविस्ते काकुलु सैतं निंदिस्ताइ। (दबने से कौए भी निंदा करने लगते है)
५९५. दमड़ी की बुढ़िया टका सिर मुंडाई। या दमड़ी मुरगा टका चैथाई।	दम्मिडी मुंडकु एगानी क्षवरं। (दमड़ी की रांड को दो पैसे की हजामत) या अर्द्ध रूपायि पेल्लिकि आरु रूपायल बाणासंचा। (अठन्नी के व्याह में छ: रुपए की आतिशबाजी)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
५९६. दम लगाई और दमेड़ी भाई खिसके ।	अवुसरं तीरिन तरुवात अल्लडु लंज कोडुकु । (काम बन जाने बाद दामाद भी रांड के बच्चे के समान है)
५९७. दवा को पथ्य और बात को सत्य ।	मंदुकु पथ्यं, माटकु सत्यं । (दवा को पथ्य, बात को सत्य)
५९८. दाँतों में जबान की तरह रहना ।	तललो नालुक, पूसललो दारमु वले । (मुँह का जीभ मूँगो के धागे की तरह)
५९९. दाता दे भंडारी का पेट फूले ।	देवुडु वरमिच्चिना पूजारि वरमिय्यडु । (भगवान वर भले ही प्रदान करे, पर पुजारी वर नहीं देता है) या सत्रं कूटिकि अय्यंगारि सिफ़ारसु । (धर्मशाला में खाने के लिए पुजारी की सिफारिश)
६००. दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते ।	दानमु चेसिन आवुकु दवड पललु एंचबोकु । (दान की गाय के जबड़े के दाँत मत गिनो)
६०१. दाम बनावे काम ।	धनमूलमिदं जगत् ।
६०२. दाम सवारे काम बड़ी बहू का नाम ।	पेरोकरिदी, फलमोकरिदी । (नाम किसी का, फल किसी और का)
६०३. दाल नहीं गलता ।	पप्पुलुडकवु । (दाल नहीं गलते)
६०४. दाल भात में ऊँट के ठेहुन । या दाल भात में मूसर चंद ।	पानकंलोनि पुडकवले । (शरबत में तिनका जैसा)
६०५. दाल में नमक ।	कूरलो उप्पंत । (साग में नमक का-सा)
६०६. दिन को बादर रात को तारे । चलो कंत जहँ जीवैं बारे ।।	पगटि वेळ मब्बुलु, रात्रि नक्षत्रालु उदयिस्ते अकालं वस्तुंदि । (दिन के समय बादल और रात को तारे उदित हों तो आकाल पड़ेगा)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
६०७. दिन दूनी रात चौगनी।	रात्रिपगल्लु पेरुगुट। (रातों दिन बढ़ना)
६०८. दिन देखा न रात।	रात्रिपगल्लु तेलियकंडा। (रात और दिन का भी फरक न मालूम होना)
६०९. दिन में गरमी रात में ओसा कहै घाघ बरखा सौ कोसा।	पगलु एंडा, रात्रि मंचू उंटे वर्षानिक आश लेदु। (दिन में गर्मी हो और रात को ओस गिरे तो वर्षा की आशा खतम हो जाती है)
६१०. दिमाग आसमान पर है।	कल्लु नेत्तिकेक्किनट्टु। (आखें आसमान पर हैं)
६११. दिल की जगह पत्थर है।	गुंडे रायगुट। (दिल का पत्थर हो जाना)
६१२. दिवाली को बोए दिवालिया।	दीपावलिकि दिव्वेतं पंट। (दीपावली तक फसल बड़ी हो जाती है) या दीपावलिकि वित्तिते इंटिंटा दीपावळे। (दीपावली के दिन बोवाई करें तो घर-घर दीवाली)
६१३. दीवार के भी कान होते हैं।	गोडलकु चेवुलुंटाइ। (दीवार के भी कान होंगे)
६१४. दुःख गया राम विसरा।	गट्टु चेरिन तरुवात पडववानितो पोट्लाडिनट्लु। (किनारे पर पहुँचने के बाद नाव वाले से झगड़ा करना—मतलब निकालना)
६१५. दुधार गाय की लातहु भली।	इष्टमुन्नवानि पिय्य इंगुवतो समानम्। (प्रिय जन की टट्टी भी हींग के समान है)
६१६. दुनिया का मुँह कौन रोक सकता है ?	लोकानिकि नोरू मूसेवारेवरु ? (लोक के मुँह को कौन बंद करे सकता है ?)
६१७. दुबरे क मेहर गाँव भरे क सरहज या भौजाई।	बीदवाडि पेल्लां अंदरिकी वदेने। (गरीब की बीबी सब की भाभी)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
६१८. दुमुँहा साँप।	रेंडु तलल पामु। (दो सिर वाला साँप)
६१९ दुरी हर खेती कर हर बानी। एक बैल से भली कुदारी ॥	ओंटि एद्दु कंटे पिकास मेलु। (एक ही बैल से कुदाली भली)
६२०. दुविधा मे दोनों गए माया मिली न राम।	उभय भ्रष्टुत्वं, उपरि सन्यासं।
६२१. दूध का जला छाछ को फूँक फूँक कर पीता है।	ओक सारि कालु जारिते प्रति अडुगू चूचि चूचि वेस्तारु। (एक बार पाँव फिसल जाय तो हर कदम देख–देख कर रखते हैं)
६२२. दूध का जला छाछ से डरे।	वेडिपालतो नोरु काल्चुकोनि मजिगनु चूचि भयपडुट्लु। (गरम दूध से मुह जला कर छाछ को देखने पर डर जाना)
६२३. दूध का दूध पानी का पानी।	पालकि पालु, नीटिकि नीरु। (दूध का दूध, पानी का पानी)
६२४. दूध के दाँत नहीं टूटे।	पालपल्लु कूडा ऊडलेदु। (दूध के दाँत भी नहीं टूटे)
६२५. दूध में पड़ी मक्खी की तरह।	कुडितिलो पड्ड एलुक वले। (चावल के धोवन के पानी में पड़े चूहे की तरह)
६२६. दूर के पहाड चिकने हैं।	दूरपु कोंडलु नुनुपु। (दूर के पहाड चिकने है)
६२७. दूर ही से सलाम करना।	दूरं नुंचे नमस्कारं चेयुट। (दूर से ही नमस्ते करना)
६२८. देत न बने बुनामनी, हर्यी लगावै सूत।	वडकुटकु पत्ति लेकपोयिना वस्त्रानिकि रंगु वेसिनट्लु। (कातने के लिए रुई भले ही न हो, पर कपड़े पर रंग चढ़ाना)
६२९. देबी दिनु काटै, औरु पंडा परचौई, मांगौ।	देवुनि पूजकु पूजारि अदृष्टवंतुडु। (भगवान की पूजा में पुजारी की भली किस्मत)
६३०. दो कौडी का आदमी	कानीकि मारनिवाडु (कौडी का भी आदमी नहीं)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
६३१. दो तोई, घर खोई।	इंट्लो रेंडु कुंपटलु, इंटिलो अंतःकलहमू। (घर में दो चूल्हे और घर में अंतःकलह)
६३२. दौलत चलती फिरती छाँव है।	चंचलेलक्ष्मी।

ध

६३३. धन राजा मेदनियाँ, घर घर बाजे नथनियाँ।	राम राज्यंलो इंटिटा सुखमु। (राम राज्य में घर-घर में सुख ही सुख है)
६३४. धन से धन कमाया जाता है।	डब्बुतोने डब्बु संपादिंचवच्चु। (पैसे से ही पैसा कमाया जा सकता है)
६३५. धनुष पड़े बंगाली, मेंह साँझ या काली।	तूर्पुन इन्द्र धनस्सु, दूरान वर्षं। (पूरब में इन्द्रधनुष हो, तो दूर पर वर्षा होगी)
६३६. धर्म का ही जय है।	धर्ममे जयमु। (धर्म ही जय है)
६३७. धर्म री गाय रा दाँत कई देखण।	दानमु चेसिन आवुकु दवड पल्लु, एंचबोकु। (दान की गाय के दाँत मत गिनो)
६३८. धान गिरै सुभागे का। गेहूँ गिरै अभागे का।	अदृष्ट वंतुनि पोलंलो वरि अभाग्युनि पोलंलो गोधुमलु पंडुनु। (भाग्यवान के खेत में धान, अभाग्य के खेत में गेहूँ पैदा होते हैं)
६३९. धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।	चाकलिवानि गाडिद वले। (धोबी के गधे की तरह)
६४०. धोबी रोवे धुलाई को मियाँ रोवे कपडें को।	पिल्लगलवाडु पिल्लकु एडिस्ते काटिवाडु कासुकु एड्चिनाडट। (बच्ची वालो बच्ची के लिए रो उठा, तो स्मशान का नौकर पैसे के लिए रो उठा) या गोड्डुवाडु गोड्डुकु एडिस्ते गोडारिवाडु तोलुकु एड्चिनाडट। (जानवर वाले ने जानवर के लिए रोया तो चमार ने चमड़े के लिए रोया)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
६४१. धोवती के भीतरु सब नंगे।	पर्दा वेनुक अंता पटारमे। (पर्दे के पीछे सब असलियत है)

न

६४२. न इधर का, न उधर का।	रेंटिकि चेड्डु रेवड्डु। (दोनों तरफ से बिगड़ा हुआ आदमी)
६४३. न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।	वेणु लेकपोते वेणु गानमें लेदु। (वेणु ही नहीं तो वेणुगान भी नहीं)
६४४. नई जवानी माँझा ढीला।	मीसालु वच्चेटप्पुडु देशालु कानरावु। (मूँछों के निकलते समय देश नहीं दिखाई देते)
७४५. नए चिकनियाँ, बगल में ईन्ट।	कोत्त कोत्तगा वच्चि कुत्त एगरवेसिंदट। (अभी-अभी आकर अपना अधिकार जमाना)
६४६. न तोका न मोका भर साईं में झोंका।	अम्म पेट्टा पेट्टदु, अडुक्कु तिनानिव्वदु। (माँ खिलाती भी नहीं, भीख माँगने भी नहीं देती)
६४७. नदी किनारे रुखड़ा, जब जब होइ विनास।	नदि ओड्डुन निवासं, माट माटकी गंडं। (नदी किनारे वास, बात-बात पर खतरा)
६४८. नदी के धार में तिनके से बहे।	नदी प्रवाहंलो गड्डिपोचवले। (नदी के प्रवाह में तिनके की तरह)
६४९. नदी—नाव का संयोग।	नदीनाव संयोगमु। (नदी नाव संयोग)
६५०. ननद के ननद होयला।	आत्त ओकिंटि कोडले। (सास भी एक घर की बहू ही है)
६५१. नमक की भार बारा जानता है।	मोसेवानिके गानि बरुवु तेलियदु। (ढोने वाले को ही भार का पता लगता है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
६५२. नया धोबी, नाई पुराना।	चाकलि क्रोत्त, मंगलि पात। (धोबी नया, नाई पुराना)
६५३. नया मुल्ला अल्ला ही पुकारे।	कोत्त वैष्णवुनिकि नामालु मेंडु। (नए वैष्णव के तिलक ज्यादे हैं)
६५४. ना अति बरखा, ना अति घूप। ना अति बकता, ना अति चूप।	"अति" एप्पुडू पनिकिरादु। (अति कभी नहीं होना चाहिए)
६५५. ना धोबिया के दूसर जनक्खा। ना गदहा के दूसर मदकरा	चाकलि वानिकि गाडिद तप्प मरो जंतुवू लेदु, गाडिदकु चाकलि वाडु तप्प मरो यजमानी लेडु। (धोबी के लिए गधे के अलावा दूसरा कोई जानवर नहीं है, गधे के लिए धोबी के अलावा दूसरा मालिक भी नहीं है)
६५६. नाई की बरात में सभी ठाकुर।	मंगलिवानि पेल्लिकि अंदरू पेद्दले। (नाई की बरात में सभी बडे हैं)
६५७. नाई को देखकर बाल बढ़ जाते हैं।	मंगलिनि चूस्ते जुट्टु पेरुगुतुंदि। (नाई को देखें तो बाल बढ़ते हैं)
६५८. नाच न जानै आँगन टेढ़ा।	आडनेरक अंगणं वंकर अन्नट्लु। (नाच न जानते हुए भी आंगन को टेढ़ा कहना)
६५९. नाच न निकसी तौ भले, घूँघट काहे देति।	भोगमुदानिकि मुसुगेंदुकु। (वेश्या को घूँघट क्यों ?)
६६०. नाचै कूदे बाँदरा, टूक जोगना खाइ।	कोतिकि कोब्बरिकाय दोरिकिनट्लु। (जैसे बंदर को नारियल मिला हो)
६६१. नाज बौहरौ लै गयौ, भुस लै गयी बियार	धनिकुनिकि पिंडिवंटलु, बीदवानिकि अंबलि। (धनवान को पकवान, गरीब को माँड)
६६२. नादान की यारी और जी को जंजाल।	वेर्रिवानितो स्नेहं वेय्यिविधाल नष्टं। (अज्ञानी से स्नेह करने से अनेक नष्ट होते हैं)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
६६३. नानी के आगे ननसाल की बात करना।	तल्लि पुट्टिल्लु मेनमाम वद्द पोगिडिनट्लु। (माँ के मायके की मामा के यहाँ प्रशंसा करना)
६६४. ना बाबा आवै, ना घंटा बाजै।	पूजारि लेक पोते पूज आगिंदे। (पुजारी नहीं हो तो पूजा रुक जाती है)
६६५. नाम कपुरचंद, खुशबू गोबर की भी नहीं।	इंटि पेरु कस्तूरिवारु, इंट्लो गब्बिलाल कंपु। (घर का नाम 'कस्तूरी' है, घर में चमगादडों की बदबू)
६६६. नाम बड़े दर्शन छोटे।	पेरु गोप्पा, ऊरु दिब्बा। (नाम मशहूर है, गाँव कूड़ा करकट)
६६७. नामु गरीबा, बगल में ईंट।	असलु बीदैना अनभविंचेदि महाभोगं। (असल में गरीब हैं, पर महाभोग का अनुभव करते हैं)
६६८. नारि धर्म पति देव न दूजा	पतिए प्रत्यक्ष दैवमु। (पति ही भगवान है)
६६९. नारियल का पानी, नहीं जानता खट्टा कि मीठा।	कोब्बरि कायलोनि नील्लु तीपो पुलुपो एवरिकि तेलुसु। (नारियल का पानी मीठा है या खट्टा, किसको मालूम है ?)
६७०. निकम्मो नाई पाटला मूँडै।	पनिलेनि मंगलि पिल्लि तल गोरिगिनट्लु। (बेकार का नाई बिल्ली का सिर मुँड़ाया)
६७१. निकसुती लुगाई, देसु की भाभी।	वेर्रिवानि भार्य लोकमंतटिकी वदेन। (पागल की पत्नी देश भर की भाभी है)
६७२. निर्बल के बल राम।	दिक्कुलेनिवानिकि देवुडे दिक्कु। (जिसका कोई आसरा नहीं, उसका भगवान ही आसरा है)
६७३. नीचन से व्याहार बिसाहै, हंसि कै मागै दम्मा। आलस नींद निगोड़ी घेरै, घग्घा तीनि निकम्मा।।	नीचुलतोतिरिगेवाडू, सोमरि पोतू, निद्र पोतू महादरिद्रुल (नीचों से व्यवहार करने वाला, आलसी, ज्यादे समय तक सोनेवाला—महा दरिद्र हैं)
६७४. नौ नगद न तेरह उधार।	अप्पु आरु वेल कंटे रोक्कं मूडु वंदलु मेलु। (उधार के छः हजार से नकद के तीन सौ भले)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
६७५. नौ सौ चूहे खाइ कै, बिल्ली हज को चली।	चेप्पेदि श्रीरंग नीतुलू, दूरेवि दोम्मरि गुडिसेलू। (नीति की बातें कहना, वेश्या गृहों में घूमना)
६७६. नंगी कहा न्हाइ, कहा निचोरै।	बीदवानिकि तिनेंदुकेमुंदि ? (गरीब के लिए खाने को क्या है)
६७७. नंगी नाचै धंमा को होइ।	डब्बुकोसं एप नैना चेयालि। (पैसे के लिए किसी भी काम को करना पड़ता है)

प

६७८. पढ़े तो हैं, पर गुने नहीं।	चदुवंटे वुंदि गानि, गुणं शन्यं। (पढ़ाई तो है, गुण शून्य है)
६७९. पत्थर पर झोंक नहीं लगती।	निप्पुकु चेदलंटवु। (आग में दीभक नहीं लगते)
६८०. पत्थर भी घिस जाता है।	कोट्टिकोट्टिगा तीस्ते कोंडकूडा समसिपोतुंदि। (थोड़ा-थोड़ा करके निकालें तो पहाड़ भी खतम हो जाता है)
६८१. पत्थर मारे मौत नहीं आती।	गुंड्रातितो कोट्टिना चावुलेदु। (बड़े पत्थर से मारने पर भी मौत नहीं)
६८२. पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे।	चेप्पेवि श्रीरंगनीतुलु, दूरेवि दोम्मरि गुडिसेलु। (सभी नीति की बातें कहते हुए वेश्याओं के घरों में जाना)
६८३. परखैया को दोष क्या अपनों खोटो दाम।	मन बंगारं मंचिदैते कंसालि एमि चेयगलडु ? (अपना सोना श्रेष्ट हो, तो सुनार क्या कर सकता)
६८४. परमारथ के कारण साधुन धरा शरीर।	परोपकारार्द्धमिदं शरीरं।
६८५. पराधीन सपनेहूँ सुख नाहिं।	स्वतंत्रमु खर्गलोकमु, परतंत्रमु प्राण संकटमु। (स्वतंत्रता स्वर्गलोक है, परतंत्रता से प्राण का संकट है)
६८६. परायौ पूत परदेसी दाखिल होइ।	परायिवानि पुत्रुडु एक्कडुन्ना ओकटे। (पराए का पुत्र कहीं भी हो, कोई भी फरक नहीं पडता है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
६८७. पहले आत्मा, फिर परमात्मा।	तन्नुमालिन धर्ममु मोदलु चेड्डु बेरमु। (अपना ख्याल किए बिना धर्म करना, खुद केलिए हानिकारक हैं)
६८८. पहले घर में, पीछे मस्जिद में।	इंट गेलिचि रच्च गेलुचु। (घर में जीत पाकर बाहर जीत पाओ)
६८९. पहले चूमते गाल काटा	अभ्यासं लेनि रेड्डि अंदलमेक्किते अटू इटू अइंदट। (अभ्यास के बिना रेड्डी (जाति विशेष) पालकी पर चढ़ा तो पालकी डोलने लगा)
६९०. पहाड़ के सामने राई।	एनुगु मुंदु सूदि (हाथी के सामने सुई)
६९१. पाँच पंच मिलि कीजे काज, हारे जीते न आवै लाज।	नलुगुरु कलिसि चेस्ते जयाजपेयालकु तावु लेदु। (चारों मिलकर काम करें, तो जीत और हार के लिए जगह नहीं है)
६९२. पांचों उँगलियाँ घी में।	रोट्टे विरिगि नेतिलो पड्डट्लु। (जैसे रोटी कटकर घी में गिरी हो)
६९३. पाँचो उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं।	ऐदु वेल्लू समानंगा उंडवु। (पाँचो उँगलियाँ बराबर नहीं होते)
६९४. पान देले सातू ना, पनही दे ले पूआ।	अपकारिकि उपकारं, उपकारिकि अपकारं। (धोखेबाज की सहायता, सहायता करने वाले को धोखा)
६९५. पानी कलसा गरन होय, चिरई नहाए धर। अंडा ले चूंटी चढ़े बरखा होय भरपूर॥	कप्पनि ऊरेगिस्ते वर्षं तप्पदु। (मेंढक का जुलूस निकाला जाए तो वर्षा जरूर होगी) या तूरीगलु एगिरिते वर्षं वस्तुंदि। (बर्रे आसमान में उड़ें, तो वर्षा होगी)
६९६. पानी मथने से घी नहीं निकलता।	नील्लु चिलिकि वेन्न पोंदगलमा? (क्या पानी मथ कर मक्खन निकाल सकते है?)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
६९७. पानी में कौ बास है, कें मगर सों बैर ।	नदिलो उंडि मोसलितो वैरमा ? (नदी में रह के मगर से क्यों वैर ?)
६९८. पापी का मन सदा शंकित रहता है।	पापिष्टिकि मनस्सुलो अनुमानं एक्कुव । (पापी के मन में शंका ज्यादा होती है)
६९९. पापी को धन पर ले जाय ।	लोभुल सोम्मु लोकुल पालु। (लोभी का धन लोगों के वश में हो जाता है)
७००. पिसनहारी के छोहरा, चाबैनै कौ लाभ।	पिसिनारि पुत्रुडुकि आकलुन्ना एमि लाभं । (पिसनहारी के पुत्र को भूख भी लगे, तो क्या फायदा ?)
७०१. पीते बरन चमकत करै सबैन सुबरन होय	मेरिसेदंता बंगारं कादु (चमकनेवाला सब कुछ सोना नहीं है)
७०२. पुक्ख पुनर्वसु भरे न ताल। तो फिर भरि हैं अगली साल ।।	पुनर्वसु पुष्यालकु पूरेडु ऐना तडवदु । (पुनर्वस और पुष्य मास की वर्षा से गड्ढा भी गीला नहीं होता)
७०३. पूरब के बादर पश्चिम जाय। पतरी पकावै मोटी खाय ।।	मेघं तूर्पु नुंची पडमरकु व्यापिस्ते वर्षं । (पूरब से पश्चिम की तरफ यदि बादल फैले, तो वर्षा होगी)
७०४. पूरब धनुही पश्चिम भान। घाघ कहै बरखा नियरान ।।	तूर्पुन इंद्र धनस्सु, दूरान वर्षं । (पूरब में इंद्रधनुष, दूर पर वर्षा)
७०५. पुराना वैद्य, नए ज्योतिषी ।	पात वैद्युडू, कोत्त ज्योतिष्कुडू । (पुराना वैद्य, नया ज्योतिषी)
७०६. पेट करें खाँव—खाँव, माँगे के टिकुली।	तिनेंदुकु तिंडि लेदुगानि, मीसालकु संपेंग नूने (खाने को खाना भी नही, मूंछों के लिए संपंगी का तेल)
७०७. पेट जो चाहे सो करावै।	पोट्ट ए पनैना चेस्तुंदि । (पेट कुछ भी करा सकता है)
७०८. पेट पालना कुत्ता भी जानता है।	पोट्ट गडुपुकोवडं कुक्ककु कूडा तेलुसुनु। (पेट गुजारना कुत्ते को भी मालूम है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
७०९. पूस में दूना माघ सवाई।	पुष्यमि कुरिस्ते पूरि पिट्टैना तडवदु फाल्गुन मासपुवान * पदि पनुलकु चेरुपु। (पूस की वर्षा से एक छोटी चिड़िया भी भींग नहीं सकती, फागुन की वर्षा दस कामों को विगाड़ती है।)
७१०. पैसा स्वाद कूँ, कै बात कूँ।	डब्बंटे आशा, मोगुडंटे घोषा। (धन की आशा, पति से शरम)
७११. पूछो दिन की, बताए रात की।	उप्पुंदा अंटे चिंतपंडु उंदन्नट्लु। (नमक के लिए पूछा जाय तो दूकानदार का कहना कि इमली है)
७१२. पूत के पाँव पालने में ही दिखाई देते हैं।	पेंपुडुलोने पुत्रुनि गुणालु तेलुस्ताइ। (पालने में ही पुत्र के गुण मालूम होते हैं)
७१३. पूस बोवै पीस खाए।	पुष्य मासंलो वित्तिते चेतिनिंडा पंटे। (पूस के महीने में बोवाई करें, तो हाथ भर फसल—काफी फसल से मतलब है)
७१४. पेट भर खाना और नींद भर सोना।	कडुपुनिंडा तिनि गाढंगा निद्रपोवुट। (पेट भर खाकर गहरी नींद सोना)
७१५. पेट सौ किसब करावै।	कोटि विद्यलू कूटि कोरके। (करोडों विद्याएँ भोजन के लिए ही हैं)
७१६. पेट है या गड्ढा।	कडुपा, कंभं चेरुवा। (पेट है या कंभम् का तालाब?)
७१७. पंच कहै बिल्ली तो बिल्ली।	पदुगुराडुमाट पाटियै धर जेल्लु। (धरती पर दसों की बात मूल्यवान होती है) या पदिमंदी नडचिंदि बाट, पदिमंदी पलिकिंदि माट। (दसों के चलने का रास्ता ही रास्ता है, दसों के मुँह से निकलने वाली बात ही मान्य है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
७१८. पंडित सोइ जो गाल बजावा।	नीतुलु चेप्पेवाडे पंडितुडु। (नीति की शिक्षा देने वाला ही पंडित है)
७१९. प्यासा कुएँ के पास जाता है, कुआँ प्यासे के पास नही जाता।	चेरुवुमीद अलुकैते चेडेदेव्वरो? (तालाब पर नाराज हो जाय तो बिगड़ने वाला कौन? ––खुद का नष्ट होगा)
७२०. प्रात: काल खटिया ते उठिके, पियौ तुरंतै पानी। ता घर वैद कभी ना आवै। बात घाघकै जानी ।।	प्रोद्दुन्ने लेचि मंचिनीरु त्रागिते आरोग्यानिकि चाल मंचिदि। (सुबह उठते ही पानी पीना, सेहत के लिए अच्छा है)
७२१. प्राण जाय पर मान न जाय।	प्राणं पोइना मानं दक्किंचुकोवालि। (प्राण चले जायँ, लेकिन मान की रक्षा करना चाहिए)
७२२. प्रिय मोरे बालम, हम तरुणी।	मुसलिदानिकि पडुचु मोगुडु (बुढ़िया का जवान पति)

फ

७२३. फकीर को कंबल ही दुशाला है।	गतिलेनम्मकु गंजे पानकमु। (जिस का कोई ठिकाना नहीं है, उसके लिए माँड ही शरबत है)
७२४. फटा मन और फटा दूध फिर नहीं मिलता।	विरिगिन मनस्सू, विरिगिन पालू तिरिगि कलुववु। (फटा मन, फटा दूध फिर नहीं मिलते)
७२५. फलेगा सो झड़ेगा।	पेरुगुट विरुगुट कोरके।
७२६. फूल नहीं पंखुड़ी सही।	पुव्वु कापोते मोग्गैना सरे (फूल नहीं तो कली ही सही)

ब

७२७. बकरी का सा मुँह हमेशा चलाते रहना।	मेक पोतुला एप्पडू मेस्तू उंडुट। (बकरे की तरह हमेशा खाते रहना)

पत्र-पत्रिकाओं में प्राप्त लोकोक्तियों संबंधी लेखों का विवरण

नाम पत्रिका	वर्ष	लेख का शीर्षक	लेखक
१. अजन्ता (हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद)	जन. ५५	तेलुगु कहावतें	श्री दोनेपूडि राजाराव
२. ,, ,,	,,	कन्नड कहावतें	श्री डी. एस. नारायण राव
३. ,, ,,	,,	राजस्थानी कहावतें	श्री एफनजुल नबीखान
४. ,, ,,	अप्रैल ५५	मराठी कहावतें	श्रीमती ललिता देवी
५. ,, ,,	सित. ५५	कहावतों का महत्व	डा. कन्हैया लाल सहल
६. आजकल	जुला. ५५	लोक साहित्य में वर्षा संबंधी विश्वास	श्री नारायण प्रसाद सिनहा जहानाबादी
७. कल्पना	मार्च ५२	कहावत की परिभाषा	डा. कन्हैयालाल सहल
८. ,,	जु. अग. ५२	कहावत का रूप	,, ,,
९. ,,	मई ५४	कहावत और मुहावरा	,, ,,
१०. किशोर (बाल शिक्षा समिति पटना)	अप्रैल ४४	कालिदास के भोजपुरी मुहावरे	श्री राम दहिन मिश्र
११. ग्राम सेवक (किताब घर, पटना)	जु. ५५	दक्षिण बिहार की लोकोक्तियाँ	श्री उमेश विद्यार्थी
१२. ,, ,,	अग. ५५	भड्डरी की कहावतें (वर्षा)	श्री सत्यदेव नारायण अस्थाना
१३. ,, ,,	सित. ५५	दक्षिण बिहार की लोकोक्तियाँ	श्री उमेश विद्यार्थी
१४. ,, ,,	नव. ५५	उत्तर बिहार की लोकोक्तियाँ	श्री पारदर्शी
१५. जनपद हिंदी जनपदीय परिषद, काशी	कार्तिक २००९	बुंदेली कहावतें	श्री हर गोविंद गुप्त
१६. ,, ,,	वैसाख २०१०	मगही कहावतें	श्रीकान्त शास्त्री
१७. दृष्टिकोण अखिल भारती हिंदी शोध मंडल, पटना	जुलाई ५५	कहावत की व्युत्पत्ति	श्री कन्हैयालाल सहल

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
७२८. बकरी की जान गयी खाने वाले को मजा न आया।	डब्बू पोयि शनि पट्टिनट्लु। (पैसा भी गया और शनि ग्रस्त भी हो गया)
७२९. बकरी बाघ एक ही घाट पानी पीते हैं।	पुली, मेका ओके ओड्डुन नीरु त्रागिनट्लु। (जैसे बाघ और बकरी एक ही किनारे पर पानी पीते हों)
७३०. बगल मे लडका, शहर मे ढिंढोरा।	चंकलो पिल्लनेत्तुकोनि ऊरंता वेतकिनट्लु। (जैसे बगल में बच्चे को उठा कर शहर भर में ढूंढना)
७३१. बडे बरतन की खुरचन भी बहुत होती है।	पेद्दवारिंटिकि दुरद एक्कुव। (बड़े घरवालों की खुजली---पैसा खर्च करने की ज्यादा है)
७३२. बनिए का लड़का गिरेगा तो कुछ देख कर ही गिरेगा।	लाभं लेनिदे सेट्टि वरद पोडु (फायदा के बिना बनिया भाड़ में नहीं जाता है)
७३३. बनिए की सलाम बेगरज़ नहीं होती।	कोमटि दण्णं ऊरिकेने उंडदु। (बनिए की नमस्ते व्यर्थ नहीं होती)
७३४. बयार चले ईसाना। ऊँची खेती करो किसाना।	ईशान्यपु गालिकि वट्टें वर्षं। (ईशान्य की हवा चले तो अधिक वर्षा होगी) या ईशान्यं गालि व्यवसायानिकि अनुकूलं (ईशान्य की हवा खेती के लिए अनुकूल है)
७३५. बहुत करै सो और को थोड़ी करै सो आप को।	(भूमि) अधिकंगा उंटे इतरुलकु लाभं, तक्कुवुंटे तनकु लाभं। (जमीन) ज्यादा हो, तो दूसरों को लाभ और कम हो तो अपने को लाभ)
७३६. बरस छिना के कातनें, एके कपरा होइ।	संवत्सरमंता वडकिना ओक बट्ट कादु (साल भर कातने पर भी एक भी कपड़ा नहीं बनता)
७३७. बर से ब्याह, नखत से खेती।	मंचि कुमारुनि चूचि पेंड्लि, नक्षत्रान्नि चूचि व्यवसायं चेयालि। (अच्छे वर को ढूंढ कर शादी, नक्षत्र को देख कर खेती करनी चाहिए)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
७३८. बरेली के पागल ।	बंदरु पिच्चिवाल्लु । (बंदरु के पागल)
७३९. बली को बली ही पहचानता है ।	दोंगनु दोंगे पट्टालि । (चोर को पकड़ने के लिए चोर ही चाहिए)
७४०. बहन के हाथ भैया, सास के साथ जमैया ।	अल्लुडिकि अत्ताश, बापडिकि पप्पाश । (दामाद को सास की आशा, ब्राह्मण को दाल की आशा)
७४१. बहुत मिठाई में कीड़े पड़ते हैं ।	नेय्यमु कय्यमु कोरके । (ज्यादा दोस्ती झगडे के लिए ही है)
७४२. बहू डटौवै जेब को, माँ डटोव पेट को ।	तल्लि कडुपु चूडु, पेल्लां वीपु चूडु । (माँ बच्चे के पेट पर ध्यान रखती है, पत्नी पीठ की तरफ देखती है)
७४३. बाघ सूखा होने पर भी घास नही खाता ।	पुलि बक्क बडिते चारिकलु बक्क पडताया ? (बाघ दुबला हो जाय तो उस पर की लकीरें दुबली कैसे होंगी)
७४४. बाँझ क्या जाने प्रसूत की पीड़ा ।	गोड्रालिकेमि तेलुसु प्रसव वेदन ? (जिसके बच्चे नहीं हैं, ऐसी स्त्री को प्रसव वेदन का क्या पता?)
७४५. बाढ़ै पूत पिता के धर्मा । खेती उपजै अपने कर्मा ।।	तंड्रि पुण्यं कोद्दी कोडुकु, तन पुण्यं कोद्दी सेद्यं । (पिता के पुण्य के अनुसार पुत्र, और अपने कर्मानुसार खेती)
७४६. बात करी अगाध के, काम करी गीध के ।	माटलु चूस्ते कोटलु दाटुताइ, काल्लु कंदकालु कूड़ा दाटवु । (बातों मे तो किले भी पार कर दिये जाते हैं; पैर तो कंदकों को भी पार नहीं कर पाते)
७४७. बात पत्थर की लकीर ।	माटंटे राति मीद गीत । (बात तो पत्थर की लकीर है)
७४८. बात रह जाती है, समय निकल जाता है ।	कालं पोयिना माट निलिचिपोतुंदि । (समय के बीत जाने पर भी बात रह जाती है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
७४९. बातों से काम नहीं चलता।	माटलतो पनुलु कावु । (बातों से काम नहीं बनते)
७५०. बादर ऊपर बादर धावै। कह भड्डर जल आतुर आवै।	कारु मब्बुलु कम्मिते वर्षं कुम्मरिस्तुंदि । (घने बादल छाएँ, तो जोरदार वर्षा होगी)
७५१. बाँभन-नाऊ-कूकरा ए जाति देख गुर्राऊ	ब्राह्मडु, मंगलि, कुक्का-जातिकि मंचिवि कावु । ब्राह्मण, नाई और कुत्ता--ये जाति से अच्छे नहीं हैं)
७५२. बाप न भैया, सब से भला रुपैया।	डब्बुदग्गर चुट्टमूलेदु, पक्कमू लेदु । (पैसे के मामले में न नातेदारी है, न संबंध है)
७५३. बाप न मारी मेंडकी, बेट तीरंदाज।	पंडित पुत्रः परमशुंठः ।
७५४. बार घोड़ी पार रसिया । (इस पार घोड़ी उस पार रसिया)	ताताचार्युलं तद्दिनानिकी, पीर्ल पंडुगकू संबंधमेदि ? (ताताचारी की मरण क्रिया और पीरों के त्यौहार में क्या संबंध है?)
७५५. बासी बचै न कुत्ता खाइ।	कुक्क कूडा पासितिनदु । (कुत्ता भी बासी नहीं खाता)
७५६. बाहर खुशबू, भीतर बदबू ।	इंटिपेरु कस्तूरिवारु, इंट्लो गब्बिलाल कंपु । (घर का नाम कस्तूरी और घर में चमगादड़ों की बदबू)
७५७. बाहर लामी-लामी धोती, घरे मसुरे की रोटी ।	पैकि पटारं, लोन लोठारं । (बाहर ठाट बाट, अंदर कुछ नहीं)
७५८. बिना बुलाए जाए, टाडें टाडें गावै।	पिलुवनि पेरंटमुनकु पोरादु । (बिना बुलाए कहीं जाना नहीं चाहिए)
७५९. बिना बैल न खेती करै, बिना भैयन के रार। बिना मेहरारू घर करै, चौदह साख लबार।	एद्दुलेनि सेद्यं, चद्दिलेनि पयनं (बैल के बिना खेती, सुबह खाए बिना कहीं जाना--व्यर्थ हैं)
७६०. बिना रोए तो माँ भी दूध नहीं पिलाती।	अडगदे अम्मैना पेट्टदु (या) तल्लैना एडवंदे पालिव्वदु । (बिना माँगे माँ भी नहीं खिलाती (या) बिना रोए दूध नहीं देती)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
७६१. बिल्ली की म्याऊँ से डर लगता है।	पिल्लि अर्पुलके भयमेस्तुंदि। (बिल्ली की आवाज से ही डर लगता है)
७६२. बिल्ली के गले में घंटा कन बाँधेगा।	पिल्लि मेडलो गंट कट्टेदेवरु ? (बिल्ली के गले मे घंटी कौन बाँधेगा ?)
७६३. बिल्ली के भागों छींका टूटा।	वेतुक बोइन तीर्थमेदुरैनट्लु (जिस तीर्थ की तलाशी में गए, उसका सामने आना)
७६४. बिस मिल्लाह ही गलत है।	श्रीराम लोने हंसपादु। (श्रीराम लिखने में ही गलती अर्थात् आरंभ मे ही अशुभ शकुन दिखाई पड़ना)
७६५. बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लेय।	गडिचिदि मरिचि जरुगनुन्नदि आलोचिंचुको। (बीते को भूल कर भविष्य के बारे में सोच लो)
७६६. बीबी गयी सासरे, घंघरिया मोथ मिली।	तात चस्ते बोंत नादि। (दादा मरे तो बिस्तर मेरा)
७६७. बुढ़ापे में सभी सीता हो जाती हैं।	पापटलो वेन्ट्रुक नेरिस्ते पत्तित्तु। (माँग के बाल सफेद हों तो पतिव्रता हो जाती है)
७६८. बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम।	मुसलि मुतुकलो तोलिसमर्त। या मुसलि वाडिकि दसरा पंडुग। (बूढ़े को दशहरो मनाने का शौक)
७६९. बैठा बनिया क्या करे, बटखरे या डंडी को इधर से उधर करे।	कोमटी कोमटी एमि चेस्तुन्नावंटे वलकपोसुकोनू, एत्तुकोनू अन्नट्लु। (बनिए से जब पूछा गया कि वह क्या कर रहा है, तो उसने जवाब दिया कि नीचे फैलाना और इकट्ठा करना ही काम है—पैसे को बार बार गिनना ही काम है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
७७०. बूढी बरद, पाट की नाथ ।	चस्तोंटे संधि मंत्रं । (मरते समय 'संधि' मंत्र का पाठ करना अर्थात् ज्यादा परेशान करना)
७७१. बूढ़े को बूढ़ा कहो तो चिढ़ जाए।	उन्नमाटंटे उलुकेक्कुव । (सच्ची बात कहने से झुंझलाहट ज्यादा)
७७२ बूंद बूंद से तालाब भरे।	ओक्कोक्क चुक्कतोने चेरुवु निंडुतुंदि। (एक-एक बूंद से ही तालाब भरता है)
७७३. बेगानी खेती पे झींगुर नाचे ।	ऊरिवाल्ल सोत्तुकु उरि पोसुकुंटारु। (गाँव वालों की संपत्ति की प्राप्ति के लिए प्राणार्पण भी करते हैं)
७७४. बे बाल वाले मडवा गइलो, डोंकी पोंछि के माथे लपलैं ।	पिलुवनि पेरंटमुनकु पोरादु । (बिना निमंत्रण के किसी के यहाँ नहीं जाना चाहिए)
७७५. बे सिर पैर की बातें।	तलातोका लेनि माटलु । (बिना सिर और पूँछ की बातें)
७७६. बैल की कमजोरी से खेती और पत्नी की रुलाई से जीवन सुखमय नहीं होते।	एद्दु एड्चिन व्यवसायं, आलि एड्चिन संसारं मुंदुकु रावु (बैल के रोने से खेती, पत्नी के रोने से घर–दोनों की अभिवृद्धि नहीं होती)
७७७. बंदर की आशनाई घर में आग लगाई ।	कोति पंचायती कोंपलार्पुतुंदि । (बंदर की पंचायत घर का नाश कर देती है)
७७८. बंदर के हाथ आइना ।	कोति चेत पूलदंड । (बंदर के हाथ फूलों की माला)
७७९. बंदर के गले में मोतियों का हार ।	कोति मेडलो बंगारपु गोलुसु। (बंदर के गले मे सोने का हार)
७८०. बंदर के हाथ में नारियल।	कोतिकि कोब्बरिकाय दोरिकिनट्लु । (जैसे बंदर को नारियल मिला हो)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
७८१. बंदर को मिली हल्दी की गाँठ, पनसारी बन बैठा ।	कोतिकि पेत्तनमिस्ते गोदावरिकडुंगा ईदिंदट । (बंदर को अधिकार दिया जाय तो गोदावरी में तैरने लगेगा)
७८२. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद ?	गाडिदकेमि तेलुसु गंधपुपोडि वासन ? (गधे को क्या मालूम चंदन की खुशबू) या पंदिकेमितेलुसु पन्नीवु वासन ? (सूअर को क्या मालूम गुलाब जल की खुशबू)
७८३. ब्याज–भाडौ–दच्छिना, पीछे रहे सा कच्छ नाँ ।	वड्डी दक्षिणल विषयंलो वेनुकाडिन लाभं वुंडदु । (ब्याज, दक्षिणा आदि के संबंध में आगा-पीछा करने से लाभ नहीं होता)
७८४. ब्या कह मनै मांड देख, श्वे जो कै मनै चलार देख ।	इल्लु कट्टि चूडु, पेंड्लि चेसि चूडु । (घर बनाके देखो, शादी करके देखो)

भ

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
७८५. भंइसि सुखी जो उबहा भरै । राँड सुखी जो सब का मारै ।	गुड्डिवानिकि तोडिवाल्लु कूडा गुड्डि अइते संतोषम् (अंधे के साथी भी अंधे हों, तो उसे संतोष होगा)
७८६. भगवान जो करता है, भले के लिए करता है ।	भगवंतुडेमिचेसिना मन मंचिके । (भगवान जो कुछ करे, वह हमारी भलाई के लिए ही है)
७८७. भड़मूजे की लड़की केसर का तिलक ।	अंबलि त्रागेवानिकि मीसालु बट्टे वारु कोंदरु । (माँड पीने वाले की मूँछो पर ताव देने वाले कुछ और लोग होते है)
७८८. भरै न भरनु देइ ।	अम्म पेट्टा पेट्टदु, अडुक्कु तिनानिव्वदु । (माँ खिलाती भी नहीं, भीख माँगने भी नहीं देती)
७८९. भरे पेट पर शक्कर खारी ।	तिनगा तिनगा गार्लु चेदैनट्लु । (खूब खाने पर बड़े भीकहुए लगते हैं)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
७९०. भले का जमाना नहीं ।	मंचिकि रोजुलु उंडवु । (भले के दिन नहीं होते)
७९१. भात लपेटयौ साग है, साग लपेट्यौ भात ।	नूकलु चल्लिते काकुलु करुवा ? (चावल फेंकें तो कौओं की क्या कमी ?)
७९२. भात होगा तो कौआ बहुत आएंगे ।	नूकलु चल्लिते काकुलु करुवा? (चावल फेंकें तो कौओं की क्या कमी ?)
७९३. भादैं जै पछिवाँ व्यारी । तै दि भाध में पड़ै तुसारी ।	भाद्र पदंलो पडमट गालि एन्नि दिनालु वीस्ते माघ मासंलो अन्निदिनालु वडगल्लु पडताइ । (भाद्र के महीने में पश्चिमी हवा जितने दिनों के लिए चलती है, माघ में उतने दिनों के लिए ओले गिरते है)
७९४. भुस ऊपेरकी लीयनों, ज्यों बारु की भीत ।	कुक्ककु वेषं वेसिना मोरगक मानदु । (कुत्ते को (नया) वेष धारण कराने पर भी वह भौंके बिना नहीं रहता)
७९५. भूख कै लगावण कोनी, नींद कै बिछावण कोणी । या क्या भूख को बासन, क्या नींद को आसन ।	आकलि रुचि एरुगदु, निद्र सुखमेरुगदु । (भूख रुचि को नहीं जानती, नींद सुख नहीं जानती)
७९६. भूख में किवाड़ ही पापड़ ।	तलुपुलु मिंगेवानिकि अप्पडालु लोटलोट । (किवाडों को निगल जाने वाले के लिए पापड़ कुछ नहीं)
७९७. भूख मे चने भखाने ।	आकलि रुचि एरुगदु । (भूख रुचि को नहीं जानती)
७९८. भूखा क्या नहीं करता ?	आकलि अइनवाडु धर चेडगोट्टनु । (भूखा आदमी धरती को खराब कर देता है)
७९९. भूखे का पेट बातों से नहीं भरता ।	आकलिवानि पोट्ट मांटलतो निंडदु । (भूखे का पेट बातों से नहीं भरता)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
८००. भूत भी मार से भागता है।	देवुडिकन्ना देब्बे गरुवु। (भगवान से मार ही भला)
८०१. भूतन पै तेई पूत माँगै है।	पिसिनारिनि दानमडिगिनट्लु। (कंजूस से दान माँगने जैसा)
८०२. भेड़ जु माँती देखिए, मेंगनि माँती देख।	गोर्रे कंटे गोर्रे एरुव मुख्यमु। (भेड़ से भेड़ का खाद मुख्य है।)
८०३. भेड़ पूँछ भादैं नदी को गहि उतरौ पार।	कुक्कतोक पट्टि गोदावरीदिनट्लु। (कुत्ते की पूँछ पकड़ कर गोदावरी में तैरना)
८०४. भैंस के आगे बीन बजाना।	दुन्नपोतु चेविलो वीण वाइंचिनट्लु। (भैंसे के कान में बीन बजना)
८०५. भैं सोबै, भूँखन मरै, जमैं की बै हैन बरात।	पिल्लिकि चेलगाटं एलुककु प्राण संकटं। (बिल्ली का खेल, चूहे को प्राण का संकट)

म

८०६. मघा के बरसे, माता के परसै। भूखा न मांगे फिर कुछ हरसे।	मखलो वर्षं तल्लिचेति कूटितो समानं। (मखा नक्षत्र में वर्षा, माँ के हाथ के खाने के समान है)
८०७. मछली के बच्चे को तेरना कौन सिखावै।	चेप पिल्लकु ईत नेर्पे देवरु? (मछली के बच्चे को तैरना कौन सिखाता है?)
८०८. मन का पान अपमान का लड्डू।	प्रीतिलेनि कूडु पिंडाकुडितो समानमु। (प्रीति के बिना खाना खिलाना 'पिंडो' के समान है)
८०९. मन चंगा तो कठौती मे गंगा।	मनश्शांतितो अंता सुखमे। (मन की शांति हो, तो सब सुख ही है)
८१०. मन भोगिया करंमु दरिद्री।	चदिवेदि रामायणं, पडगोट्टेवि देवस्थलालु। (पढ़ना रामायण, मंदिरों का सत्यानाश करना)
८११. मरद मुए नाँव के, ना मरद मुए पेट के। या मरद नाम के लिए, कायर पेट के लिए मरते हैं।	वीरुलु पेरु कोसं, पिरिकिवाल्लु पोट्ट कोसं पडि चस्तारु। (बहादुर नाम के लिए, कायर पेट के लिए मरते हैं)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
८१२. मरे को मारे शाह मदार ।	चच्चिन वानिनि इंकेमि चंपुतावु ? (मरे को और क्या मारोगे ?)
८१३. मरे पूत की आँख कचौली सी	चच्चिन वानिकि कल्लु चारेडु । (मरे हुए की आँखें बड़ी)
८१४. महा वृष्टि चलि कूरी क्यारी, जिमि स्वतंत्र मैं बिगरति नारी ।	तिरिगि तिरिगि आडदि चेडनु, तिरुगक मगवाडु चेडनु । (ज्यादा घूम कर स्त्री और बिना घूमे पुरुष बिगड़ जाते हैं)
८१५. माँ के पेट से कोई सीखकर नहीं निकलता ।	पुट्टुक तोने एवरू नेर्चुकोनि रारु । (जन्म से ही कोई सीखकर नहीं आते)
८१६. माँ गैल डीकरी ।	तल्लिनि चूचि पिल्लनु, पाडिनि चूचि बर्रेनु । (माँ को देखकर लड़की को, पशुसंपदा को देखकर भैंस को परखना चाहिए)
८१७. माँ गल डीकरी, घड़ा गल ठीकरी ।	तल्लिचालु पिल्लकु तप्पुतुंदा ।
८१८. माँ ते पूत पिता के घोर । नाहीं ढेर ते थारै थोर ।।	प्रती मानवुनिलोनू तल्लिलक्षणातु कोद्दो गोप्पो उंडक मानवु (प्रत्येक भक्ति में माँ के लक्षण कुछ न कुछ होंगे ।)
८१९. माँ तौ डोलै पुथी पुथी, कूँपूत बिटैराई बकसै ।	युवराजु तंड्रि परम बीद । (राज कुमार का पिता अत्यन्त गरीब है)
८२०. माँ भी बच्चे को बिना रोए दूध नहीं देती ।	तल्लि ऐना एडवनिदे पालिव्वदु । (माँ भी रोए बिना दूध नहीं देती)
८२१. माँगे भेस रुकामनी, करै पड़ा कौ मोल ।	वेषं वेसिनंतने गुणं मारदु । (वेष धारण करने से ही गुण नहीं बदलता)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
८२२. माघ न ऊमस जेठ क जाड़ा। पहिले भरिगा गाडा। कहै घाघ हम होष बियोगी। कुआ खोदिके धोइहैं धोबी।	माघंलो एंडा, ज्येष्टंलो चली उंडि, ओषाढ़ंलो मोदटि वर्षानिके चेरुवुलु निंडे वर्षं कुरिस्ते आ प्रदेशंलो उंडटं चाला अरिष्ट करं। (माघ में गर्मी, जेठ में सर्दी हो और आसाढ़ की पहली वर्षा से ही तालाब आदि भर जाएँ, तो ऐसे प्रदेश में रहना खतरनाक है)
८२३. माघ पूस जो दखिना चले। तो सावन के लछेना भले।	पुष्यमि, माघ मासाल्लो दक्षिणपु गालि वीस्ते श्रावणंलो वर्षा बागा कुरुस्तुंदि। (पौष और माघ के महीनों में दखिनी हवा चले तो सावन में वर्षा काफी होगी)
८२४. माघ मास जो परे न सीत। महँगा नाज जानियो भीत।।	माघमासंलो माकुलु वणकुताइ। (माघ मास में बड़े बड़े वृक्ष भी सर्दी की वजह से काँप जाएँगे)
८२५. मानें तो देव, नाई तो भीत को लेड। (या) माने तो देव नही तों पत्थर।	नम्मिते दैवमु, नम्मकपोते रप्प। (विश्वास करें तो देव, नहीं तो पत्थर)
८२६. मार के आगे भूत भागे।	देवुनिकंटे देब्बे गुरुवु। (भगवान से मार ही अच्छा गुरु है) (या) देब्बकु देय्यं कूडा हडलुतुंदि। (मार से भूत भी डरजाता है)
८२७. मार बफाती खीचरी, यै घर आज न काल।	नेडो रेपो सुखदुखालु इंटिंटिकी तप्पवु। (आज या कल सुख-दुख घर घर में जरूर होंगे)
८२८. मारा घुटने पै लगा आँख पै।	मुड्डि मीद तंते मूति पल्लु रालिनट्लु। (पीछे लात मारी, तो मुंह के दाँत निकल आए)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
८२९. मारा चोर उपासा पाहुन ।	देब्बल् तिन्न दोंग, उपासमुन्न अतिथि तिरिगिरारु । (मार खाया हुआ चोर, उपवास किया हुआ मेहमान कभी वापस नहीं आते)
८३०. मारे सिपाही, नाम सरदार का	कष्टमोकरिदी, फलितमोकरिदी । (मेहनत किसी की, फल किसी का)
८३१. माल मुफ्त बेरहम ।	पोरुगिंट चूडरा ना पेद्द चेय्यि । (मेरी उदारता दूसरों के घर में देखो)
८३२. माल मुफ्त, दिल बेरहम ।	अत्तसोम्मु अल्लुडु दानं चेसिनट्लु । (सास के धन को दामाद द्वारा दान में देना)
८३३. मिट्टी पकड़े सोना होता है ।	पट्टिनदेल्ल बंगारमगुट । (जो हाथ में आए, वही सोना हो जाए)
८३४. मियाँ की जूती मियाँ जी के सिर ।	ना चेतितो ना कन्ने पोडवटमा ? (अपने हाथ से अपनी आँख फोड़ना)
८३५. मियाँ जी की जूती मियाँ जी का सिर ।	तन्नु कट्टेंदुकु त्राल्लु ता देच्चुकुन्नट्लु । (अपने को बांधने केलिए खुद रस्सी लाना)
८३६. मीठी बानी बोलिकै सब का मन हर लेइ ।	नोरु मंचिदैतेने ऊरु मंचिदि । (मुँह की बात अच्छी हो तो गाँव भर अच्छा है)
८३७. मुफ्त की शराब काजी को भी हलाल ।	तेरगा ओस्ते रोजंता पडि तिन्नट्लु (मुफ्त में मिले तो दिन भर डटके खाना)
८३८. भैंढकी भी नाल ढुकाना चाहती है ।	पुलिनि चूचि नक्क वात, पेट्टुकुन्नट्लु । (बाघ को देख कर सियार अपने पर लकीर बनाने के लिए खुद को जलाना चाहता है)
८३९. मुर्दे पर जैसी सौ मन मिट्टी वैसे हजार मन ।	निंडा मुनिगिन तर्वात चलेमिटि ? (पूरा डूबने के बाद ठंड क्या है ?)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
८४०. मुँह आस मुँह मा, नव रुपैया मुद्र देखाई ।	तेल्ल रुपाइला उंदि मोहं चूडु । (देखो तो सफेद रुपया जैसा मुँह है)
८४१. मुँह पर कहे सो मूँछ का बल ।	मूतिमीद मीसं उटे मुखं मीद चेप्पालि । (मुँह पर मूँछ हो तो मुँह पर कहना चाहिए)
८४२. मुँह पर कुछ, पीठ पीछे कुछ ।	मुँदोक माटा, वेनुकोक माटा । (सामने एक बात, पीछे एक बात)
८४३. मुँह माँगी मौत नहीं मिलती ।	कोरिना चावु रादु । (चाहने पर भी मौत नहीं आती)
८४४. मुँह में राम, बगल में छुरी ।	अंगिटलो बेल्लं, आत्मलो विषं । (मुँह मे गुड़, आत्मा में जहर) या नोट चक्केर, कडुपुलो कत्तेरा । (मुँह में शक्कर, पेट में कैंची)
८४५. मुँह में लगाम नहीं ।	नोटिकि कल्लें लेदु । (मुँह के लिए लगाम नहीं)
८४६. मूँसे बिल बिला में साँप रहे ।	चीमलु पेट्टिन पुट्टलु पामुलकि रुवैनट्लु । (चींटियों बनाये हुए बिल सांपों के लिए निवास योग्य बनना)
८४७. मेरी बिल्ली और मुझी से म्याँउ ।	तिन्निंटवासालु लेक्किंचुट । (जिस घर मे खाना, उसी घर के बाँस गिनना)
८४८. मेरी तेरे आगे, तेरी मेरे आगे ।	नादि नी मुंदू, नीदि ना मुंदू । (मेरा तुम्हारे आगे, तुम्हारा मेरे आगे)
८४९. मेरी सी मेरे आगे, तेरी से तेरी आगे	ए एंडकागोड्डुगु । (जैसी धूप, वैसी छतरी)
८५०. मैं खेती का कहता हूँ, वह खलिहान का सुनता है ।	नेनोकटि चेपिते वाडोकटि विंटाडु । (मैंने कुछ कहा, तो वह कुछ और सुनता है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
८५१. मैहता दुरे पयार में, को कहि बैरी होइ।	तप्पोकरिदी, शिक्ष मरोकरिदी। (गलती एक की, दंड किसी और का)
८५२. मोर पंख बादर उठे, राँडा काजर रेख। वह बरसे वह घर करे, यामे मीन न मेख।	आकाशंलो इन्द्र धनस्सु एर्पडिते वर्षं तप्पदु। (आसमान में इन्द्र धनुष दिखाई पड़े, तो वर्षा जरूर होगी)
८५३. मँगनी के बैल के दांत नही देखे जाते।	दानमु चेसिन आवुकु दवुड पल्लु एंचबोकु। (दान की गाय के जवड़े के दांत मत गिनो)
८५४. मंगल को जो परै दिवारी।	दीपावलि मंगलवार वस्ते कर्षकुनिकि कंटि सुखं, व्यापारिकि अपार दुखं। (दिवाली मंगलवार के दिन पड़ जाय, तो किसान को सुख और व्यापारी को ज्यादा दुःख होता है)
८५५. मरे पूत की आँख कचोला सी।	चच्चिन वाडि कंड्लु चारेडंत। (मरे हुए की आंखे चौड़ी होती है)
८५६. माँ गैल डीकरी।	तल्लिकि तगिन बिड्ड, इंटिकि तगिन पंदिरि। (जैसी माँ, वैसी बेटी; जैसा घर, वैसा शामियाना)

र

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
८५७. रंडुआ की बेटी, कहा जाने कनबा की सारि।	सानेदानि कूतुरुकि तंड्रेवरु ? (रांड की बेटी का बाप कौन)
८५८. रंग जाइ न राउर जझै।	वीरुलु युद्धमंटे वेरुवरु। (बहादुर युद्ध से नहीं डरते)
८५९. रस्सी जल गयी, पर बल नहीं गया।	चित चच्चिना पुलुपु चावदु। (इमली मर जाय पर खट्टापन खतम नहीं होता)
८६०. रहिए भुक्ख रहिए सुक्ख।	पस्तुंडिना सुखमनुभंविचालि। (रोजे रक्खें पर सुख भोगना चाहिए)
८६१. रहे निरोगी जोरकेम खाय।	अल्पाहारी सदा सुखी।

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
८६२. राई घरै न तिल बधै या करमारी रेख ।	ब्रह्म व्रासिन व्रात चेरुपुवारेवरु ? (ब्रह्मा के लेख को मिटानेवाले कौन ?)
८६३. राई का पहाड़ ।	गोरंतनु कोंडंत चेयुट । (नाखून की-सी चीज को पहाड बनाना)
८६४. राजा कहे उधर ही पछाँह ।	राजेदारैते प्रजलादारि । (राजा का जो रास्ता है, प्रजा का वही रास्ता)
८६५. राजा को दान, परजा को न्हान बरुबरि होइ ।	राजुकु धर्म बुद्धि उंडालि । (राजा को धर्म बुद्धि चाहिए)
८६६. राजा ही चोरी करै, न्याय कौन घर जाइ ।	राजे नेरं चेस्ते न्यायं चेप्पेदेवरु ? (राजा ही गलती करे, तो न्याय कौन करेगा)
८६७. रांड के पाम सुहागिलु लागी है जा मेंना मोंसी ।	वेधवमुंड मुखान्नि बोट्टु पेट्टिनट्लु । (जैसे विधवा स्त्री के मुख पर तिलक लगाना) या मुंडमोपिक काल्लु मोक्किते नीवु नालेक्कने वर्द्धिल्लमनि दीविंचिदट । (राँड के पैरों पडकर पूजा करने लगी तो उसने आशीर्वाद दिया कि तुम भी मेरी तरह सौभाग्यवती बनो)
८६८. राँड तौ बुही जा कौ भैया, मरि जाय, खसमु तौ दूसरौ करि लै ।	साने माटलु नम्मरादु । (वेश्या की बातों पर विश्वास करना नहीं चाहिए)
८६९. राँड, साँड अरु अन्ना भैंसा बिगरि जावैतो होवै कैसे ।	उंपुडु कत्ते, आंबोतु, दुन्नपोतु कोपगिस्ते अंता चेटे । (रखैल, साँड, या भैंसा बिगड जायँ, तो सब खतरा ही है)
८७०. रात भर रोई, एक भी न मरा ।	रात्रंता एड्चिना ओक्करू चावलेदु । (रात भर रोने पर एक भी न मरा)
८७१. रानी को राजौ प्यारौ, कानी को कानी प्यारौ ।	काकि पिल्ल काकिकि मुद्दु । (कौए का बच्चा कौए को प्रिय)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
८७२. राम राम जपना, पराया माल अपना ।	चदिवेदि रामायणं, पडगोट्टेदि देवलालू । (पढना रामायण और मंदिरों का नाश करना)
८७३. रूखा ना बिरीछ तहाँ रेंड पर भान ।	ए वृक्षं लेनि चोट आमुदं वृक्षमे महावृक्षमु । (जहाँ कोई पेड़ नहीं, वहाँ अरंडे का वृक्ष ही महावृक्ष है)
८७४. रोग का घर खाँसी लड़ाई का घर हाँसी ।	नव्वु नालुगु विधाल चेटु । (हँसी चार प्रकार से हानिकारक है)
८७५. रोहिनि जो बरसै नहीं बरसै जेठा मूर । एक बूँद स्वाती पड़ै, लागौ तीनों तूर ।।	मूल मुरुग कुरियुनु, ज्येष्ट चेडकुरियुनु । (मूला में और ज्येष्ट में जोरों की वर्षा होगी) स्वाति कुरुस्ते मोती पंट । (स्वाती में पानी बरसे तो मोती का फसल—मूल्यवान या बढ़िया फसल होगा)

ल

८७६. लकड़ी के बल बंदरी नाचै ।	कोल आडिते कोति आडुनु । (लकड़ी के साथ ही बंदर भी नाचता है)
८७७. लटा हाथी किटो राम ।	पुलि बक्क पडिते चारलु बक्क पडुना ? (बाघ यदि कमजोर हो जाए तो पट्टियाँ कमजोर होंगी क्या ?)
८७८. लाग बसन्त, ऊख पकन्त ।	वसंत ऋतुवु आरंभंतो चेरकु पंटकु वच्चनु । (वसंत के आगमन से ईख का फसल आरम्भ होता है)
८७९. लाखु जाटु पिंगल पढ़ै, परि एकु भुचलागी रहै ।	भक्ति लेनि पूज पत्रि चेटु । (भक्ति रहित पूजा से फूल और पत्ते व्यर्थ होते हैं)
८८०. लातों के भूत बातों से नहीं मानते ।	मंत्रालकु चिंतकायलु रालुना ? (मंत्रों से इमली गिरेगी ?)
८८१. लाल गुदडी में नहीं छिपता ।	कुप्पलोनि मणि । (राख की मणियाँ)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
८८२. लालच बुरी चीज है।	दुराश दुःखमुनकु चेटु । (दुराशा दुःख का कारण है)
८-३. लिखे न पढ़े नाम मुहम्मद फाजिल।	मेडिपंडु चूड मेलिमैयुंडु पोट्टविप्पि चूड पुरुगुलुंडु । (रामाफल देखने में शुद्ध सोना-सा लगता है, पर काट के देखने पर कीड़े ही कीड़े निकलते हैं)
८८४. लेहु परौसिनि झोंपड़ी, नित उठि करती राइ।	एदुटि वानि सोम्मुकु नित्यमू जगडमे । (पराए माल के लिए रोज झगड़ा ही है)
८८५. लोक का डर, न परलोक का डर।	इह परलोकालंटे भयमु लेदु । (इह और पर लोकों से डर नहीं)
८८६. लोमड़ी के अंगूर खट्टे ।	नक्ककि अंदनि द्राक्षपल्लु पुल्लन । (लोमड़ी को पकड़ में न आने वाले अंगूर खट्टे लगते हैं)

व

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
८८७. वक्त नहीं रहता, बात रह जाती है।	कालं गडचिपोइना माट उंडिपोतुंदि । (समय के बीत जाने पर भी बात रह जाती है)
८८८. वक्त पड़े पर जानिए को बैरी को मीत ।	अवसरं वच्चिनपुडे असलैन स्नेहितुडेवरो शत्रुवेवरो तेलुस्तुंदि । (जरूरत पड़ने पर ही यह मालूम होता है कि सच्चा दोस्त कौन है, दुश्मन कौन है)
८८९. वहाँ तक हँसाए जो रो न दे।	एड्चेवरकू नव्विंचिनट्लु । (रोने तक हँसाना—इतना हँसाना कि रोना आ जाय)
८९०. वा दाता ते सूम भलौ जो पहले ई करि दे नाँइ।	अंत्य निष्टूरानिकन्ना आदि निष्टूरमे मेलु ।
८९१. वायु बहेगी उत्तरा। माँड पियेंगे कुत्तरा।	उत्तरपु गालिकि पंट जोरु । (उत्तर की हवा बहे, तो फसल ज्यादा)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
८९२. विधि कर लिखा को मेटन हारा ।	नोसट व्रासिन व्रालु चेरिपेदेवरु ? (ललाट के लेख को मिटाने वाले कौन ?)
८९३. विधि का लिखा न होवै आन। बिना तुला ना फूटै धान ।।	तुललो वानकु धरणि पंडुनु । (तुला की वर्षा से फसल तैयार होगा)
८९४. विपत पड़ी तब मानी मेंट ।	कष्टालल्लोने दैवं गुर्तुकु वस्ताडु । (कष्ट के समय में भगवान की याद आती है)
८९५. विष रस भरा कनक कटोरा जैसे मन मलिन तन सुंदर कैसे मधुर बानी दगाबाजी की निशानी	अंगिट बेल्लं ; आत्मलो विषमु । (मुँह में गुड़, आत्मा में विष)
८९६. वेश्या केरा पूत ज्यों, कहै कौन सू बाप।	लंजबिड्डकु तंड्रि एवरु ? (वेश्या के बच्चे का बाप कौन)
८९७. वे ही बातें पर्दे पर वाह वाह ! और वे ही किताबों में थू थू ।	मुँदु पोगिडि, वेनुक तिट्टिनट्लु । (सामने प्रशंशा कर पीछे गालियाँ देना)

श

८९८. शेर का बच्चा शेर ही होता है, सियार नहीं।	पुलि पिल्ल पुलि काक नक्क अवुतुंदा ? (बाघ का बच्चा बाघ नहीं तो सियार कैसे होगा ?)
८९९. शौकीन बुढ़िया चटाई का लहंगा ।	मुसलि वाडिकि दसरा पंडुग । (बूढ़े को दशहरे का त्यौहार जैसा)

स

९००. सच का जमाना नहीं ।	निजानिकि रोजुलु लेवु । (सच के दिन नहीं)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
६०१. सबइ राति रोई, परि एकुई मर्‌यौ ।	रात्रंता एड्चिना ओकरू चावलेदु । (रात भर रोने पर एक भी न मरा)
६०२. सब दिन जात न एक समान ।	रोजुलन्नी ओकला गडववु । (सभी दिन एक समान नहीं बीतते)
६०३. सब सब करियै तिर्‌या भेद न दीवै ।	आडदानि नोट नुव्वु गिंजैना नानदु । (स्त्री के मुँह मे तिल का एक बीज भी नहीं भींगती—स्त्री से कोई बात बता दी जाय और उसको गोपनीय रखने के लिए कहा जाय तो वह बात उसके मुँह में उतनी देर तक भी नहीं छिपती जितनी देर तिल के भींगने में लगे)
६०४. सब से जी प्यारा होता है ।	अन्निटि कंटे प्राणं तीपि । (सब से जान मीठा है)
६०५. सबसे भली चुप ।	अंदरितोनू मौनं मंचिदि । (सब के साथ मौन रहना अच्छा है)
६०६. सबेरे का मेह साँझ का मेहमान ।	संदकाड वच्चिन वाना, सगपोद्दुन वच्चिन चुट्टं पोरु । (शाम की वर्षा और दुपहर को आया हुआ मेहमान नहीं जाते)
६०७. समय चूकि पुनि का पछताने ।	चेतुलु कालिन तरुवात आकुलु पट्टुकोनि लाभमेमि ? (हाथ जल जाने के बाद पत्तों को पकड़ने से क्या फायदा ?)
६०८. समय पड़े की बात, बाज पर झपटे बगुला।	कानि कालमुनकु कर्रे पामु अवुतुंदि । (बुरे समय में काठ ही साँप हो जाता है)
६०९. शरीर के रोगी की दवा नहीं, मन के रोगी की कहाँ ?	मनो व्याधिकि मंदुलेदु । (मनोव्याधि के लिए दवा नहीं है)
६१०. सहज पके सो मीठा होइ ।	चेट्टुनि पंडितेने रुचि । (पेड़ मे ही पके, तो रुचिकर होता है)

हिंदी की लोकोक्तियां	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
६११. ससुराल सुख की सार जो रहे दिना दो चार ।	ओकटि रेंडु रोजुलैते अत्तवारिल्लु स्वर्गंतो समानमु । (एक या दो दिन केलिए तो ससुराल स्वर्ग के समान है)
६१२. साग गले वैसे ही पड़ोसी गले ।	एदुरु पेट्टि कुदुरु कट्टिंचुकुन्नट्लु ।
६१३. साँच कहै तो मारन धावै ।	निजमाडिते निष्ठूरमु । (सच्ची बात बुरी लगती है)
६१४. साँच को आँच नहीं ।	यदार्थानिकि एडु आलोचनलु अक्करलेदु । (यथार्थ के लिए (सात) सलाह व्यर्थ हैं)
६१५. साँझै धनुष बिहानै पानी । कहै घाघ सुनु पंडित ज्ञानी ।।	सायंकालं इंद्र धनस्सु एर्पडिते त्वरलोने वर्षं । (शाम को इंद्र धनुष हो जाय तो जल्दी ही वर्षा होगी)
६१६. साठी बुध नाठी ।	अरवै एंड्लैते आर्लु मर्लु । (साठ साल हो जायँ तो फिर छः साल की स्थिति आ जाती है)
६१७. सात-पाँच की लाकड़ी एक जाने कौ बोझु ।	ओकपनिकि नलुगुरु कलिस्ते गड्डिपोचतो समानं । (एक ही काम के लिए चारों मिल जाएँ, तो तिनके के समान है)
६१८. सात सेवाती धान उपाठ ।	स्वाति वित्तनं, स्वाति कोपुलु । (स्वाती नक्षत्र बोआई और फसल के लिए श्रेष्ट है)
६१९. साँप का कटा रस्सी से डरता है ।	पामु काटु तिन्नवाडु ताडंटे जडुस्ताडु । (साँप से काट खाया हुआ रस्सी से डरता है)
६२०. सारी रामायण पढ़ गए, यह न मालूम हुआ कि राम राक्षस था या रावण ।	रामायणमंता विनि रामुडुकि सीत एमौतुंदन्नट्लु । (सारा रामायण सुनकर यह पूछना कि राम के लिए सीत क्या लगती है)
६२१. साँप को मारना है तो ठीक से मारना चाहिए ।	पामुनु गुड्डुलोने हतमार्चालि । (साँप को अंडे की स्थिति में ही खतम करना चाहिए)
६२२. साँप मरे न लाठी टूटे ।	कर्र विरुग कोट्टकुंडा पामुनु चावगोट्ट । (लकड़ी तोडे बिना साँप को मार डालो)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
९२३. साँमन् के अंधे को हरा ही हरा दीखता है।	पच्च कामेर्ल वानिकि लोकमंता पच्चने। (पीलिया के रोगी को सारा लोक पीला ही लगता है)
९२४. सारी देग में एक ही चावल देखा जाता है।	मेतुकु ओकटि पट्टि चूस्ते चालु। (एक चावल को पकड़ कर देखना काफी है)
९२५. सावन ऊखम, भादों जाड़। बरखा मारे ठाढ़ ककाड़ ।।	श्रावणंलो एंडा, भाद्रपदंलो चली एक्कुवते पेद्द वर्ष। (सावन में धूप, भादों में ठंड ज्यादा हो, तो बड़ी वर्षा होगी)
९२६. सावन पहिले पाख में, दशमी रोहिनि होइ। महँग नाज अरु स्वल्प जल, विरला विलसै कोइ ।।	श्रावणमासपु मोदटि पक्षंलो रोहिणी कार्ते कलिगिते धान्यं अति प्रियं। (सावन के प्रथम पक्ष में रोहिणी नक्षत्र हो जाय तो अनाज बहुत होता है)
९२७. सावन भादों खेत निरावै। तब गृहस्त बहुत सुख पावै।	श्रावण भाद्रपदाल्लो पोलान्नि नीरु पेट्टिन रैतु सदा सुखिचुनु। (सावन, भादों में जो किसान खेत की निराई करता है वह सदा सुख पाता है)
९२८. सावन सुक्रन दीसै, निहचै पड़ अकाल।	श्रावण मासंलो शुक्रतार हस्तमिस्ते आ संवत्सरं करुवु काटक तप्पदु। (सावन में शुक्रतारा का अस्त हो, तो उस साल में अकाल जरूर पड़ेगा)
९२९. सावन शुक्ला सप्तमी, गगन स्वच्छ जो होय। कहै घाघ सुन मड्डुरी, पुहुमी खेती होय ।।	श्रावण शुक्ल सप्तमि नाडु आकाशं निर्मलंगा उंटे पंटलु सर्व नाशनं। (सावन शुक्ला सप्तमी के दिन आसमान निर्मल हो, तो— वर्षा न हो तो—खेती का सर्वनाश होगा)
९३०. सास की चीज जमाई पुन्न करै।	अत्त सोम्मु अल्लुडु दानं चेसिनट्लु। (सास की संपत्ती को दामाद का दान में दे देना)
९३१. सिर चला जाय पर आन न जाय।	तल पोइना पकवु पोरादु। (सिर चला जाय पर आन न मिटना चाहिए)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलगु की लोकोक्तियाँ
९३२. सिर मुँडाते ही ओले पड़े ।	दरिद्रुडु तल कडिगिते वडगंड्लु । (गरीब सिर धोने लगा तो ओले पड़े)
९३३. सीधी उँगली घी नहीं निकलता ।	वेलु वंकर पेडितेगानि वेन्न रादु । (उंगली टेढ़ी किए बिना मक्खन नहीं निकलता)
९३४. सुनिए सब की करिए मन की ।	अंदरू चेप्पेदि विनि तोचिनट्लु चेय्यि । (सब की बातें सुन कर अपने मन के अनुसार करो)
९३५. सूत न कपास कोरी लट्ठम लट्ठ ।	चेलो प्रत्ति चेलो उंडगाने नीकु मूरडु, नाकु बारडु अन्नट्लु । (खेत का सूत खेत में ही रहने पर भी यह कहना कि एक हाथ का कपडा, तुम्हारे लिए, मेरे लिए एक व्योहं का कपडा)
९३६. सूने घर के पाहुनों, ज्यों आवै त्यों जाइ ।	लेनि वानिंटिकि वच्चिन अतिथि वच्चिन दारे तिरिगि पोवुनु । (गरीब के घर आया हुआ मेहमान जिस रास्ते से आया, उसी से जायगा)
९३७. सूनों घर मिडयँन कौ राज ।	खाली इल्लु देय्याल कोंप । (खाली घर भूतों का घर)
९३८. सूरदास खल कारी कामरि चढ़ै न दूजौ रंग ।	एलुक चर्ममु तेच्चि एडादि उतिकिना नलुप नलुपे गानि तेलुपु कादु । (चूहे का चमड़ा ला कर साल भर धोने पर भी वह काला ही रहता है पर सफेद नहीं होता)
९३९. सोई नारि सबतें बड़ी, जाकी कोठी ज्वार ।	धन धान्यालु कलिगिन इल्लाले सौभाग्यवति । (धनी घर की स्त्री ही सौभाग्यवती है)
९४०. सोना धूल में भी चमकता है ।	मट्टिलोनैना बंगारं मेरुस्तुंदि । (मिट्टी में भी सोना चमकता है)
९४१. सोलहों आनों ठीक है ।	पदहारणालु निजं । (सोलह आने सत्य है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
६४२. सौ गाहा सूआ पढ्यौ, अंत बिलाई खाइ।	एंत प्रयत्निंचिना कुक्क तोक वंकरे । (जितना भी कोशिश करें फिर भी कुत्तेकी पूँछ टेढ़ी ही रहती है)
६४३. सौ दिन चोर के एक दिन साह का ।	दोंगतनमु, रंकुतनमु दागवु । (चोरी, जारी नहीं छिपती)
६४४. सौ बातन की बात।	पदुगूरु अन्नदे माट। (दसों का कथन ही ठीक बात है)
६४५. संकटे देवी सुमरो तोय, सुख के खबर बिखर चयी मोय । या सुख के माथे सिल परौ, नाम हिए ते जाय। बलिहारी वा दुःख की, पल पल नाइ रटाइ ।	आपद मोक्कुलु संपद मरपुलु । (दुःख में भगवान पर कुछ चढ़ाने के वादे करके सुख में भगवान को भूलना)
६४६. सबरे का मेह, साँझ का मेहमान ।	संदकाड वच्चिन वान, सगपोद्दुन वच्चिन चुट्टं । (शाम की वर्षा, दुपहर का आया मेहमान)
६४७. संपत होइ तो घर भलौ, नातर भलौ विदेश।	संतति लेनि इल्लु चावडि कोट्टं । (संतान रहित घर पशुशाला के समान है)
६४८. हटुआ बैठ न देत नहि, कहै झुक तौ सौ तोल ।	गुक्क तिरगकुंडा माट अडिगिनट्लु । (ऐसा लगातार पूछना कि दम भी न ले सके)
६४९. हथिया पूँछ डोलावै, घर बैठे गेहूँ आवै।	हस्तलो चिनुकुलु पडिते इंटिनिंडा ओड्ले । (हस्ता में थोडी सी वर्षा हो तो घर भर में धान ही धान)
६५०. हथिया बरसे चित्रा मँडराय। घर बैठे किसान रिरियाय ॥	हस्त कुरवक पोते वित्तिन वाडू वित्तनिवाडू ओकटे । (हस्ता में वर्षा नहीं हो, तो बोवाई किया हुआ आदमी और न किया हुआ आदमी बराबर है—फसल नहीं होती)
६५१. हर एक काम की कुछ इंतिहा भी है ।	ए पनिकैना आदी, अंतमू उंटाइ । (किसी भी काम के आदि और अंत होंगे)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुग की लोकोक्तियाँ
९५२. हँसिया निगलत ही सुख पइ है ।	नव्वु नालुगु विधाल चेटु । (हँसी चार तरह से हानिकारक है)
९५३. हस्ता बरसै चित्रा मँडराय । घर बैठें किसान सुख पाय ।	हस्तलो वर्ष, चित्तलो मेघालु कर्षकुनिकि सौख्य । (हस्ता में वर्षा, चित्रा में बादल किसान के लिए सुखकारी हैं)
९५४. हाकिम की अगारी और घोडे की पिछारी न आवै ।	वैद्युनि मुंदड्गू, गुर्रपु वेनुकड्गू हानिकरमुलु । (वैद की जल्दबाजी, घोड़े का पिछला कदम बढ़ाना हानिकर हैं)
९५५. हाथ की लकीरे नहीं मिटते ।	चेतुलोनि गीतलु मायवु । (हाथ में लकीरें नहीं मिटते)
९५६. हाथ कंगन को आरसी क्या ?	मुंजेति कंकणमुनकद्दमेला ? (हाथ के कंगन केलिए आइने की क्या जरूरत ?)
९५७. हाथ पकड कर पहुँच पकड़ना	व्रेलु चूपिते हस्तं मिंगिनट्लु । (उँगली दिखाने पर हाथ निगल जाना)
९५८. हाथ बेचे हैं तो जात नहीं बेची ।	रेक्कलम्मुकुंटे जाति नम्मुकोलेदु । ((पंख) हाथ बेचे तो जाति को नहीं बेचा)
९५९. हाथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और ।	चेप्पेदोकटी, चेसेदोकटि । (कहना कुछ, करना कुछ)
९६०. हाथी के गैल आया ही कुत्ता घुसै या हाथी चले बाजार, कुत्ता भूँखे हजार	एनुगुनु चूचि कुक्कलु मोरिगिनट्लु । (हाथी को देख कर कुत्त भूँखना)
९६१. होइ है सोई जो राम रचि राखी ।	ब्रह्म व्रासिन व्रालु तप्पुतुंदा ? (ब्रह्म की लेखी से बचना संभव है ?)
९६२. होनहार बिरवान के होत चीकने पात ।	पुव्वु पुट्टगाने परिमलिस्तुंदि (फूल के खिलते ही खुशबू आ जाती है)

हिंदी की लोकोक्तियाँ	तेलुगु की लोकोक्तियाँ
६६३. है सब का गुरुदेव रुपैया ।	डब्बु मुड्डिलो देवुडुन्नाडु । (पैसे में परमात्मा है)
६६४. हाँ कौ मरै, ना कौ जीवै ।	'आ अटे चच्चि, कादंटे ब्रतिकिनट्लु । ("हाँ" कहने से मरना, 'नहीं' कहने से जीना)
६६५. हंते कू हनिए, पाप दोष ना गिनिए ।	हंतकुनि निंदिंचुट कंटे दंडिंचुट मेलु । (हंतक की निंदा करने से दंड देना भला)

परिशिष्ट—२

कुछ संस्कृत की लोकोक्तियाँ जो प्राय: हिन्दी और तेलुगु—दोनों भाषाओं में प्रयुक्त हैं

१. अजीर्णे भोजनं विषम्
२. अतिविनयं धूर्तलक्षणम्
३. अति सर्वत्र वर्जयेत्
४. अधिकस्याधिकम् फलम्
५. अल्पविद्यो महागर्वी
६. अल्पारंभं क्षेमकर
७. अल्पाहारी सदासुखी
८. अहिंसा परमो धर्म:
९. आचार: परमो धर्म:
१०. आलस्यादमृतं विषम्
११. अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्
१२. उदरनिमित्तम् बहुकृतवेषम्
१३. उद्योगम् पुरुषलक्षणम्
१४. उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी :
१५. कष्टे फले
१६. कण्टकेनैव कण्टकम्
१७. कालस्य कुटिला गति :
१८. कृषितो नास्ति दुर्भिक्षम्
१९. को धर्म: कृपया विना
२०. कोप पापश्च कारणम्
२१. गतजलसेतुबन्धनम्
२२. चिन्ता जरा मनुष्याणाम्
२३. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी
२४. जीवन् भद्राणि पश्यति
२५. जीवे जीवस्य भोजनम्
२६. दैवी विचित्रा गति:

२७. दैवोपि दुर्बलघातकः
२८. धनमूलमिदं जगत्
२९. धर्मान्तु चिन्तयेत्प्राज्ञः
३०. धर्मो रक्षति रक्षितः
३१. न च दैवात् परमं बलम
३२. परोपकारार्थमिदं शरीरम्
३३. परोपकाराय सतां विभूतयः
३४. पत्रं नैव यदा करीलविटपे दोषो वसंतस्य किम् ?
३५. बुद्धि कर्मानुसारिणः
३६. भिन्नरुचिर्हि लोकः
३७. भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम्
३८. महाजनो येन गतः स पंथा
३९. मौनं अर्द्धांगीकारम्
४०. मौनं सम्मति लक्षणम्
४१. मौनं सर्वार्थसाधनम्
४२. यथा राजा तथा प्रजा
४३. यत्र आकृतिः तत्र गुणाः वसन्ति
४४. वचने को दारिद्रः
४५. विद्याविहीन पशुः
४६. विनाशकाले विपरीत बुद्धिः
४७. विषस्य विषमौषधम्
४८. शठे शाठ्यं समाचरेत्
४९. शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्
५०. शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि
५१. शुभस्य शीघ्रम्
५२. संतोषं परमं सुखम्
५३. सत्यमेव जयते नानृतम्
५४. सर्वे गुणा कांचनमाश्रयन्ति
५५. सत्यान्नास्ति परो धर्मः
५६. साहसाद् भजते लक्ष्मीः
५७. हितं मनोहारि च दुर्लभ वच

परिशिष्ट—३

बृंद कि उक्तियाँ

१. रस अन रस समझै न कछू, पढ़ै प्रेम की गाथा।
बीछू मंत्र न जानई, साँप पिटारे हाथ।।

२. दीबो अवसर को भलो, जासो सुधरै काम।
खेती सूखे बरिबो, धन को कौनै काम।।

३. मूरख को पोथी दई, बांचन को गुन गाय।
जैसे निरमल आरसी, दई अंध के हाथ।।

४. स्वारथ के सब ही सगे, बिन स्वारथ कोउ नाहिं।
सेवे पंछी सरस–तरु, निरस भए उड़ि जाहिं।।

५. कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर।
समय पाय तरुवर परै, केतकि सींचैं नीर।।

वेमन्ना कि उक्तियाँ

१. कुक्कतोक तेच्चि गोट्टंबु जेचिन।
ग्रोलि चेंतनुंडु गोंत तडवु।।
एंत जेप्प जेडुगु पंतंबु मोगुना।
विश्वदाभिराम विनुरवेमा।।

२. एलुक तोक देच्चि एडादि युतिकिन।
नलुपु नलुपे कानि तेलुपु गादु।।
कोय्यबोम्म तेच्चि कोट्टिन पलकुन
विश्वदाभिराम विनुरवेमा।

३. कनरानिदि परतत्वमु
विनरानिदि गुरुनि निंद। विनि, कनियुनु गा
ननरानिदि पेद्दल गति
मनरानिदि मान हानि। महिलो वेमा।।

४. कलिगिन मनुजुंडु कामुडै सोमुडै।
मिगुल देजमुनु मेरय्चुनुंडु।।
वित्त हीनुडैन नुत्त सन्यासिरा।
विश्वदाभिराम विनुरवेमा।।

इस प्रकार के उदाहरण तेलुगु और हिंदी में जितने भी नीति ग्रंथ हैं (जैसे सुमती शतकमु, कृष्ण शतकमु, नरसिंह शतकमु आदि और कबीर, तुलसी, सूर, विद्यापति आदि की रचनाएँ) सभी प्राप्त हो जाती हैं।

परिशिष्ट—४

४. जाति संबंधी लोकोक्तियाँ

४.० जातियों से संबंधित लोकोक्तियाँ

४.०१ ब्राह्मण जाति संबंधी लोकोक्तियाँ

४.०२ क्षत्रिय

४.०३ बनिया

४.०४ कायस्थ

४.०५ चमार

४.१ पेशेवार जातियों से संबंधित लोकोक्तियाँ

४.११ नाई

४.१२ धोबी

४.१३ सुनार

४.१४ लुहार

४.१५ ग्वाला

४.२ मुसलमान

हिंदी में प्राप्त लोकोक्तियों संबंधी ग्रंथों का विवरण

सन् १६०० से पूर्व लोकोक्तियों संबंधा कार्य का विवरण

				सन्
१.	डिक्शनरी आफ दी हिंदुस्थानी प्रोवेर्ब्स	ले.	यस. डब्ल्यू. फैलन	१८८६
२.	लोकोक्ति कौमुदी	सं.	सुधाकर द्विवेदी	.. १८९०
३.	बिहार प्रोवेर्ब्स	ले.	जान क्रिश्चियन	.. १८९१
४.	प्रोवेर्ब्स एण्ड फोकलोर आफ कुमाऊँ एण्ड गढ़वाल	ले.	गंगादत्त उप्रैती	.. १८९४
५.	कहावत कल्पद्रुम	सं.	दर्यावसिंह	.. १८९७
६.	हिंदी कहावत सागर	ले.	विलियम जानसन	.. १८९८

सन् १६०० से १६५० तक का हुआ कार्य

७.	कहावत संग्रह	ले.	संत प्रसाद	.. १६०२
८.	लोकोक्ति अर्थात् कहावत्	ले.	सिद्धेश्वर शर्मा	.. १६०५
९.	लोकोक्ति अर्थात् कहावत्	ले.	सिद्धेश्वर शर्मा	.. १६०७
१०.	कहावत सागर	सं.	प्रभुनारायण मुखतार	.. १६१३
११.	लोकोक्ति संग्रह	ले.	रामरतन	.. १६१५
१२.	मगही कहावत संग्रह	ले.	उमाशंकर भट्टाचार्य	.. १६१६
१३.	कहावतों का गुटका	ले.	दुर्गावती बाई	.. १६२२
१४.	हिंदी लोकोक्ति कोश	ले.	विश्वंभरनाथ खत्री	.. १६२३
१५.	कहावत रत्नाकर	प्रका.	भारत धर्म सिंडिकेट	.. १६२६
१६.	घाघ और भड्डुरी	सं.	रामनरेश त्रिपाठी	.. १६३१
१७.	मुहावरे और लोकोक्ति	ले.	गिरीशचन्द्र जोशी	.. १६४१
१८.	कहावत कोश और सूक्तियाँ	ले.	शंकर गंगाधर जोशी	.. १६४३
१९.	राजस्थानी कहवताँ	ले.	नरोत्तमदास स्वामी	.. १६४९
२०.	हिंदी मराठी लोकोक्तियाँ	ले.	वैशंपायन	.. १६५०

सन् १९५० पश्चात् हुआ कार्य

				सन्
२१.	हिंदी मुहावरे और कहावतें	ले.	रामायन शरन	.. १९५१
२२.	मालवी कहावतें	ले.	रतन लाल मेहता	.. १९५२
२३.	लोकोक्ति और मुहावरे	ले.	बहादुर चंद शास्त्री	.. १९५३
२४.	घाघ और भड्डरी	प्रका.	हिंदी साहित्य मंदिर, बनारस	.. १९५४
२५.	लोकोक्ति तथा मुहावरे	ले.	गोविन्द दास	.. १९५४
२६.	राजस्थानी भीलों की कहावतें	ले.	फूल जी भाई भील	.. १९५४
२७.	कहावतों की कहानियाँ	ले.	महाबीर प्रसाद पोद्दार	.. १९५५
२८.	घाघ और भड्डरी	सं.	कमला प्रसाद रे	.. १९५७
२९	घाघ और भड्डरी	सं.	देव नारायण द्विवेदी	.. १९५७
३०.	राजस्थानी कहावतें: एक अध्ययन	ले.	कन्हैयालाल सहल	.. १९५८
३१.	राजस्थानी कृषी कहावतें	ले.	जगदीश सिंह जलोटा	.. १९५९
३२.	मुहावरा और लोकोक्तियाँ	ले.	सुमेर जी केसरीचंद जैन	.. १९५९
३३.	बुंदेली कहावत कोश	ले.	कृष्णानंद गुप्त	.. १९६०
३४.	भारतीय क्रिष कहावतें	ले.	रामेश्वर अशान्त	.. १९६०
३५.	राजस्थानी कहावतें	सं.	कन्हैया लाल सहल	.. १९६१
३६.	घाघ और भड्डरी की कहावतें	सं.	संपूर्णानंद	.. १९६३
३७.	भोजपुरी कहावतों का सांस्कृतिक अध्ययन	ले.	सत्यदेव ओझा	.. ..
३८.	भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन	ले.	शशि शेखर तिवारी	.. ..

अंग्रेजी ग्रंथ

APPERSON, G. L. — *English Proverbs and Proverbial Phrases*, London, 1929.

BARRY, CHARLES P. — *Collier's Encyclopaedia*, Vol. **16**, I ed., New York, P. F. Collier & Sons, 1952.

CHAMPION, S. G. — *Racial Proverbs*, London, George Routledge & Sons Ltd., 1938.

CHRISTIAN, JOHN — *Bihar Proverbs*, London, Paul, Trench, Trubner & Co., Ltd., 1891.

DORRISON, JOHN — *A Classical Dictionary of Hindu Mythology*, IX ed., London, Routledge & Kegan Paul.

FALLON, S. W. — *Dictionary of Hindustani Proverbs*, Benares, Medical Hall Press, 1886.

FINLAY, JOHN H. — *Nelson's Perpetual Loose-Leaf Encyclopaedia*, Vol. **10**, New York, Thomas Nelson & Sons, 1926.

FRAZER, SIR JAMES — *The Golden Bough*, Abridged edition, London, Macmillan & Co., 1954.

HAMILTON, SIR JOHN — *The Universal Encyclopaedia*, Vol. **8**, London & New York, The Educational Book Co., Ltd.

HASELTINE & SMITH — *The Oxford Book of English Proverbs*, II ed., London, 1948.

HASTINGS, JAMES — *Encyclopaedia of Religion and Ethics*, Vol. **5**, Edinburgh, 1918.

HOCKETT, CHARLES F. — *A Course in Modern Linguistics*, New York, The Macmillian Co. Ltd., 1958.

HORNBY, A. S. — *The Advanced Learner's Dictionary of Current English*, 8th impression, London, Oxford University Press, 1957.

LEACH, MARIA — *Standard Dictionary of Folk-Lore, Mythology and Legend*, New York, Funk & Wagnalls Co., 1949.

MUNWARING, REV. A. — *Marathi Proverbs*, Oxford, Clarendon Press, 1899.

NELSON, WILLIAMS A. — *Webster's New International Dictionary of English Language*, Vol. **2**, London, G. Bell & Sons.

PETTIT, HENRY — *A Dictionary of Literary Terms*, Revised edition, The University of Denver Press, 1951.

RAJU, P. T. — *Telugu Literature*, Bombay, International Book House.

RODALE, J. I. — *The Word Finder*, Emmaus, Pennsylvania, Rodale Press.

SHIPLEY, T. JOSEPH — *Dictionary of Word Literature*, Revised ed., New York, The Philosophical Library, 1953.

SHIPLEY, T. JOSEPH — *Dictionary of Word Origin*, II ed., New York, The Philosophical Library, 1945.

SMITH, W. G. — *Oxford Dictionary of English.*

STEPHENS, T. A. — *Proverb Literature*, W. Bouser, 1930.

TAYLOR, C. RALPH — *The Home University Encyclopaedia*, Vol. **10**, New York, Books Incorporated Publishers, 1957.

TRENCH, R. C. — *Proverbs and Their Lessons*, London & New York, 1905.

VASU, NAGENDRANATH — *Encyclopaedia Indica*, Vol. **20**, Calcutta, Nagendranath Vasu & Viswanath Vasu, Visvakosh Lane, 1922.

WHITING, B. J. — *Harvard Studies and Notes in Philology and Literature*, Vol. **13**, Cambridge, Harvard University Press, 1931.

WILLIAMS, MOENIER — *Sanskrit-English Dictionary*, Oxford, 1899.

WINNICK, CHARLES — *Dictionary of Anthropology*, London, Peter Owen Ltd.

Chamber's Encyclopaedia, Vol. **11**, London, George Newnes Ltd., 1955.

Encyclopaedia Americana, Vol. **22**, New York, Chicago, American Corporation, 1951.

Encyclopaedia Britanica, New York, Funk & Wagnalls Co., 24th ed. 1959.

New English Dictionary, Oxford University Press.

Standard Dictionary of the English Language (International Edition), combined with *Britanica Word Language Dictionary*, Vol. **1**, Part 1, 1959.

The Caxton Encyclopaedia, Vol. **3**, London, New York, The Caxton Publishing Co., Ltd. First Published, 1960.

The World Book of Encyclopaedia, Illinois, Field Enterprises Corporation, 1958.

सहायक ग्रंथ सूची

हिंदी ग्रंथ

अग्रवाल, वासुदेवशरण .. पृथ्वी पुत्र, सस्ता साहित्य मंडल, १९४९।

'अयाचित' हनुमच्छास्त्री .. तेलुगु और उसका साहित्य।

उपाध्याय, कृष्णदेव .. भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

" " .. लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन, इलाहाबद, १९५७।

गुप्त, ओमप्रकाश .. मुहावरा मीमांसा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, १९६०।

गुप्त, रमाशंकर .. सूक्तिसागर, प्रकाशन शाखा, सूचनाविभाग, यू. पी. १९५९।

गुलाबराय .. हिंदी लोकोक्ति और मुहावरे, भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली, १९५७।

जोशी, लक्ष्मीलाल .. मेवाड़ की कहावतें, हिंदी विद्यापीठ, उदयपुर, १९४६।

जोशी, शंकर गंगाधर .. कहावत कोश और सूक्तियाँ, नवभारत मुद्रण मंदिर, अहमदाबाद।

तिवारी, भोलानाथ .. हिंदी मुहावरा कोश, किताब महल, इलाहाबाद।

तिवारी, शशिशेखर .. भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन (अप्र. शोधप्रबंध, हिंदी विद्यापीठ, आगरा, १९६२।

त्रिपाठी, रामनरेश .. हिंदी मुहावरे, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

" " .. कविता कौमुदी, भाग ५, नवनीत प्रकाशन, बंबई।

" " .. हमारा ग्राम-साहित्य, प्रयाग हिंदी मंदिर, १९५१।

दर, मोहन कृष्ण .. कश्मीर का लोक साहित्य, आत्माराम एंड संस, दिल्ली, १९६३।

दास, खेमराज श्रीकृष्ण .. कहावत कल्पद्रुम, श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, १९५४।

द्विवेदी, देवनारायण .. घाघ और भड्डरी की कहावतें, वाणी–विहार, वाराणसी, १९५७।

परमार, श्याम .. भारतीय लोक साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, १९५४।

पाण्डे, त्रिलोचन .. कुमाऊँ का लोक साहित्य, अलमोड़ा बुक डिपो, अलमोड़ा, १९६२।

भागवत, दुर्गा .. लोक साहित्याची रूपरेखा, मराठी ग्रंथ संग्रहालय, मुंबई, १९५६।

भील, फूलजी भाइ .. राजस्थानी भीलों की कहावतें, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर, १९५४।

मलसियानी, बालमुकुंद अर्श .. मुहावरे और कहावतें, आत्माराम एंड संस, दिल्ली, १९५७।

'माधव', भुवनेश्वरप्रसाद मिश्र .. कहावत कोश, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, १९६६।

मिश्र, रामदहिन .. बृहत् मुहावरा कोश, ग्रंथमाला कार्यालय, पटना, १९५९।

मेहता, रतनलाल .. मालवी कहावतें, राजस्थानी विश्वविद्यालय, उदयपुर १९५०।

" " .. राजस्थानी कृषि कहावतें, " "

'राधे, राधे', चन्द्रभान .. लोकोक्ति और मुहावरे, मथुरा।

वर्मा, व्रजेश्वर .. अनुशीलन (धीरेन्द्र वर्मा विशेषांक, ३० मई, १९६०, भारतीय हिंदी परिषद, इलाहाबाद।

सत्येन्द्र .. लोक साहित्य विज्ञान, शिवलाल अग्रवाल एंड कं., आगरा, १९६२।

सत्येन्द्र .. ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन, साहित्य रत्न भंडार, आगरा, १९४९।

सहल, कन्हैयालाल .. राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन, भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली १९५८।

सांकृत्यायन, राहुल .. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास–१६वां भाग, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं. २०१७ वि.।

" " .. हिंदी साहित्य कोश, प्रथम सं., ज्ञानमंडल, वाराणसी, सं. २०१५।

सिंह, सत्यव्रत .. भोजपुरी लोकगाथा, प्रथम सं., हिन्दुस्तानी अकादेमी, इलाहाबाद।

'सुमन', अम्बाप्रसाद .. कृषक जीवन संबंधी ब्रजभाषा शब्दावली।

	नाम पत्रिका	वर्ष	लेख का शीर्षक	लेखक
१८.	धर्मयुग	२५ जुलाई ५४	लोकोक्तियों में वर्षा वर्णन	देवेन्द्र पाल सुहृद
१९.	भोजपुरी (भोजपुरी कार्यालय, आरा)	माघ २००९	भोजपुरी कहउति	शिव प्रसाद सिंह
२०.	,, ,,	जेठ २०१०	,, ,,	,,
२१.	,, ,,	आषाढ़	,, ,,	,,
२२.	,, ,,	अगस्त ५३	कहाउति	परमेश्वरी लाल गुप्त
२३.	,, ,,	कुआर २०१०	भोजपुरी कहाउति	,, ,,
२४.	,, ,,	अगहन २०१०	,, ,,	,, ,,
२५.	,, ,,	,,	खेती की कहाउति	रामगणेश पाण्डे
२६.	,, ,,	जनवरी ५४	भोजपुरी कहाउति	परमेश्वरीलाल गुप्त
२७.	,, ,,	,,	कहाउति	श्री पांडे जगन्नाथ प्रसाद सिंह
२८.	,, ,,	मार्च ५४	,,	शिवप्रसादसिंह
२९.	मंगल प्रभात हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा	दि. ५०	कहावतों का महत्व	रसूल अहमद
३०.	मधुकर (श्री वीरेन्द्र केशव, साहित्य परिषद, टिकमगढ़)	१५ जन. ४१	बुंदेलखंडी कहावतें	हरगोविंद गुप्त
३१.	मधुकर	१ जन. ४१	बुंदेलखंड बुझौवल और पहेलियाँ	श्री शिव सहाय चतुर्वेदी
३२.	,,	,,	,,	,, कृष्ण बिहारी लाल खरे
३३.	,,	१ अप्रैल ४१	बुंदेलखंडी कहावते	हर गोविंद गुप्त
३४.	,,	१६ मार्च ४१	,,	,,
३५.	,,	,,	,,	,,
३६.	,,	१ मई ४१	बुंदेलखंडी बुझौवल	कु. शकुंतला देबी
३७.	,,	१ सि. ४१	बुंदेलखंडी पहेलियाँ	श्री चन्द्रभाल विशारद
३८.	,,	१६ दि. ४१	,,	व्रज गोपाल खरे

	नाम पत्रिका	वर्ष	लेख का शीर्षक	लेखक
३९.	मधुकर	१ जन. ४२	देहाती कहावतें	पं. प्रयाग नारायण संगम
४०.	,,	१६ जन ४२	,,	,, ,,
४१.	,,	,,	बुंदेलखंडी पहेलियाँ	,, ,,
४२.	,,	१६ मई ४२	,,	कृष्णानंद गुप्त
४३.	,,	मार्च ४४	,,	कोमल चन्द्र
४४.	,,	मार्च ४६	लोकोक्ति साहित्य का महत्व	डा. वासुदेव शरण अग्रवाल
४५.	राजस्थानी भारती (ही सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर)	अप्रैल ४६	राजस्थान की वर्षा संबंधी कहावतें	श्री सरस्वती कुमार
४६.	,, ,,	,,	राजस्थानी लोक साहित्य-- कहावतें वर्षा ऋतु के गीत	,,
४७.	,, ,,	जु.–अक्टूबर ४६	राजस्थानी कहावतें	मुरलीधर व्यास
४८.	,, ,,	अप्रैल ५०	राजस्थानी कहावताँ तौ मुहावरा	चौ. शिवसिंह गोयल बिड़ला
४९.	विक्रम (विक्रम कार्यालय, उज्जैन, मालवा)	फरवरी ५१	मालवी ग्राम साहित्य पहेलियाँ	की चिंतामणि उपाध्याय
५०.	,, ,,	मई ५२	,, ,,	,,
५१.	वीणा (तुकोगंज, इंदौर)	फरवरी ५१	पहेलियाँ	श्री श्याम परमार
५२.	शोध पत्रिका (साहित्य शोध संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर)	आषाढ़ २०१०	कहावत का उद्भव और प्रचलन	कन्हैया लाल सहल
५३.	संगम (साप्ताहिक, लीडर प्रेस, इलाहाबाद	२२ जुलाई ५१	कहावतें	कृष्ण नंद गुप्त
५४.	साहित्य (बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन, पटना)	अप्रैल ५५	कहावत की परिभाषा	श्याम परमार

	नाम पत्रिका		वर्ष	लेख का शीर्षक	लेखक	
५५.	साहित्य संदेश (साहित्य रत्न भंडार आगरा)		जून ५५	लोकोक्ति साहित्य	श्याम परमार	
५६.	सुमित्रा (सुमित्रा प्रकाशन, कानपूर)		सित. ५२	कहावतों की कहानियाँ	नारायणप्रसाद अरोड़ा	
५७.	हिंदुस्थानी (हिंदुस्थानी एकाडिमी, प्रयाग)		जुलु. ३३	अवधी की कुछ पहेलियाँ	रामाज्ञा द्विवेदी	
५८.	,,	,,	अप्रैल ३९	भोजपुरी लोकोक्तियाँ	डा. उदय नारायण तिवारी	
५९.	,,	,,	जुलाई ३९	,,	,,	,,
६०.	,,	,,	अप्रैल ४०	भोजपुरी मुहावरें	,,	,,
६१.	,,	,,	,,	,,	,,	,,
६२.	,,	,,	जन.–मार्च ४१	,,	,,	,,
६३.	,,	,,	अक्ट.–दिस. ४२	भोजपुरी पहेलियाँ	,,	,,
६४.	साहित्य		अप्रैल ५७	राजस्थान की जाति संबंधी कहावतें	कन्हैयालाल सहल	
६५.	,,		अप्रैल ५५	कहावत की परिभाषा	,,	,,
६६.	,,		जुलाई ५६	कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन	,,	,,

तेलुगु ग्रंथ

कार, कप्तान एम. डब्ल्यू .. तेलुगु सामेतलु, वाविल्ल राममूर्ति शास्त्रुलु एंड कं., मद्रास।

कृष्णमूर्ति, विद्वान पी. .. लोकोक्ति मुक्तावळि (दी माडर्न पब्लि. तेनोलि, १९५५।

गंगाधरम्, नेदुनूरि .. पसिडि पलुकुलु, क्षातीय जान मंदिर, मद्रास, १९६०।

,, ,, .. व्यवसाय सामेतलु, विश्व साहित्य माला, राजमंड्री, १९५६।

चलपतिराव, नंदिराजु .. आन्ध्र लोकोक्ति चंद्रिका, सी. एल. एस. पब्लिकेशन, १९०६।

राममूर्ति शास्त्रुलु, वाविल्ल .. वेमन पद्यमुलु (विथ कमेंटरीज़), १९५५।

वेंकटशास्त्री, मुसुनूरि .. न्याय मुक्तावळि, एम. वी. शास्त्री एंड संज़, राजमंड्री, १९४८।

सत्यनारायण, विश्वनाथ .. तेलुगु सामेतलु, आन्ध्र प्रदेश-साहित्य एकाडेमी, हैदराबाद, १९५६।

तेलुगु सामेतलु, लिटरेचर कमेटी, गुंटूर, १९३३।

तेलुगु सामेतलु, कोंडपल्लि वीर वेंकय्या एंड संज़, राजमंड्री, १९४१।

ERRATA

Page	Line	For	Read
१	११	समाधन	समाधान
	२१	सपन्नता	संपन्नता
२	८	मौविक	मौखिक
	२६	विशष	विशेष
	३१	५३९	५३०
३	५	खत	खेत
	१४	गर्म	गर्भ
	२६	हो	है
५	२३	अपालंभ	उपालंभ
	३०	अद्घाटन	उद्घाटन
६	२	धनीभूत	घनीभूत
९	३०	-माग	—भाग
१०	१९	मुख	मुँह
११	२	हनिष्कर्ष	निष्कर्ष
	११	परस्परा	परम्परा
१२	८	अत्ययन	अध्ययन
	१४	भले	भूले
१३	४	भिन्न-	भिन्न—
	२१	प्रय्युत्पन्नमति	प्रत्युत्पन्नमति
१६	७	लोकोक्यिों	लोकोक्तियों
१७	२	सहित्य	साहित्य
	८	यद्यप	यद्यपि
१८	३	तलुगु	तेलुगु
	२८	अध्ययों	अध्यायों
१९	२	भोजपृरी	भोजपुरी
	८	शोधे	शोध
२१	२५	पशुपिक्षी	पशुपक्षी
२२	२४	सेबंधी	संबंधी
	२७	संबेधी	संबंधी
२३	८	भेवाड़	मेवाड़
२५	१०	युगात्मक	युग्मात्मक
	११	निष्कर्णवाक्य	निष्कर्षवाक्य
	१२	सेडित पध	खंडित पद्य

Page	Line	For	Read
२७	५	अमाव	अभाव
	१२	अध्ययन	अध्याय
	२७	मंबंधी	संबंधी
२८	२७	शैलो	शैली
	२९	अर्य	अर्थ
२९	२५	सत्ला	सल्ला
३०	२३	काट	कादु
	२६	चवकेर	चक्केर
	२७	उषलब्व	उपलब्द
३१	१४	कासुगलवाड	कासुगलवाडे
	२२	रूद	रूप
३२	३	उमका	उसका
	९	तमी	तभी
	२७	तुक–मुवत	तुक–मुक्त
३३	५	समह	समूह
३५	२७	नेर्पा	नेर्पु
३८	१५	प्रष्टि	दृष्टि
	३१	पा	पर
४०	४	इत्रु	इतर
	६	काक्कु	काल्लु
	१२	विधावा	विधवा
४२	१३	पत्यर	पत्थर
	१५	प्राजीन	प्राचीन
	३०	Jospeson	Jesperson
४५	२३	प्राकुतिक	प्राकृतिक
४६	३०	मधा	मघा
४७	७	अका	अकाल
	१५	वित्रा	चित्रा
५२	३	ऊपजारु	ऊपजाऊ
	७	जुड्ड	जुट्टु
	२६	हरारू	मेहरारु
५३	३०	ग्रहणय	ग्रहणीय
५५	२५	विषशता	विशेषता
५६	Last line	भमिनि	भूमिनि

Page	Line	For	Read
५७	२	भसा	भैंसा
	३	काटन	काटने
	७	का	पर
	१३	कियो	किएँ
६१	१	जाती	जाति
६२	१६	बत्तों	बत्तें
	२२	अटि	अंटे
६४	२५	होगी	होगे
	२६	लोकोत्कियों	लोकोत्कियाँ
६७	६	–मरा	–भरा
६८	१७	कक्कंबीद	कल्लंबीद
	२०	मूपुल	भूपुल
६६	८	कभी	कमी
७१	६	पानि	पनि
७३	१४	ढोगतनं	दोगतनं
७४	११	नहीं	नहीं रह
	१५	बदलडु	वदलडु
	१६	तभूय	तथ्य
	२४	अंटुकुंट् दि	अंटुकुंटुंदि
७७	३	इनम	इनमें
	५	काम	कम
८३	२०	मूल	भूल
८५	७	एवारि	एवरि
८७	१४	सात	साल
६२	१६	मृडाते	मँुडाते
६४	८	म	माँ
	२१	तीक्कलो	वील्ललो
६६	२२	छोड़ा	घोड़ा
६७	४	कुळ्ळकोक	कुक्ककोक
	१३	लकर	लेकर
	१४	भसी	ऐसी
	१७	झेनों	दीनों
६८	१३	रहस्थ	रहस्य
६६	६	सत्यभ्	सत्यमु

Page	Line	For	Read
१०४	१६	प्रयत्न	प्रयत्न में
११०	३	रेवड	रेवड़ु
११३	११	ओर	जोर
११४	१८	सके	इसके
१२०	१६	कर्णंड़ु	कर्णुड़ु
१२४	६	कहाना	कहानी
१२६	३	सिबका	सिक्का
१२८	१६	बीरबर	बीरबल
१३४	११	—पठन	—गठन
१६४	१३	मेंडका	मेंढका
२३३		omit the page	
२३४	१	add परिशिष्ट ४	
	२	ग्रंथों	ग्रंथो
		संबंधा	संबंधी
	११	सनू	सन्
२४४	४	जान	ज्ञान